सृजन

भाग 1

कक्षा 11 के लिए सृजनात्मक लेखन और अनुवाद की पाठ्यपुस्तक

SRIJAN

PART 1

Textbook in Creative Writing and Translation for Class XI

© NCERT
not to be republished

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930
पुनर्मुद्रण
मई 2017 ज्येष्ठ 1939
जनवरी 2019 पौष 1940
फरवरी 2025 फाल्गुन 1946

PD 2T RSP

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

₹ 210.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. कॉम्प्लेक्स, ओखला, इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-899-7

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलूर 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग/Publication Team

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग Head, Publication Division	: *एम.वी. श्रीनिवासन* : *M.V. Srinivasan*
मुख्य संपादक Chief Editor	: *बिज्ञान सुतार* : *Bijnan Sutar*
मुख्य व्यापार प्रबंधक Chief Business Manager	: *अमिताभ कुमार* : *Amitabh Kumar*
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) Chief Production Officer (In charge)	: *जहान लाल* : *Jahan Lal*
संपादक Editor	: *मरियम बारा*/Mariam Bara : विजयम शंकरनारायणन/ *Vijayam Sankaranarayanan*
सहायक उत्पादन अधिकारी Assistant Production Officer	: *सायुराज ए.आर.* : *A.M. Vinod Kumar*

आवरण, सज्जा
श्वेता राव

चित्र
इरफ़ान

Cover and Layout
Shweta Rao

Illustrations
Irfan

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा यह भी सुझाती है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ज़्यादा से ज़्यादा विकल्प उपलब्ध कराए जाएँ। इसे ध्यान में रखते हुए परिषद् ने कुछ ऐसे नए विषय क्षेत्रों से विद्यार्थियों का परिचय कराने का निश्चय किया जो सृजनात्मक दृष्टिकोण और अंतरविषयी समझ विकसित करने में विशेष रूप से सहायक हों। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर इस तरह की समझ और कौशल विकसित करने में सृजनात्मक लेखन और अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। बहुभाषी सामग्री से भरपूर यह पुस्तक युवा पीढ़ी को इस क्षेत्र में आगे आने के लिए एक अनूठा अवसर दे सकती है। एन.सी.ई.आर.टी. यह उम्मीद करती है कि इस पुस्तक का यह नवाचारमूलक दृष्टिकोण अध्यापकों और विद्यार्थियों दोनों को इस बात के लिए प्रेरित करेगा कि वे भाषा और साहित्य संबंधी अपनी जानकारी को रोज़मर्रा के सामाजिक अनुभवों और उनसे जुड़े विमर्शों के साथ समन्वित कर सकें।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को

© NCERT not to be republished

मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार श्री अशोक वाजपेयी, सलाहकार प्रोफ़ेसर अरुण कमल तथा निगरानी समिति द्वारा विशेष आमंत्रित सदस्य सुश्री राजी सेठ की आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
सितंबर 2008

© NCERT
not to be republished

FOREWORD

The National Curriculum Framework (NCF), 2005, recommends that children's life at school must be linked to their life outside the school. This principle marks a departure from the legacy of bookish learning which continues to shape our system, and causes a gap between the school, home and community. The syllabi and textbooks developed on the basis of NCF signify an attempt to implement this idea. They also attempt to discourage rote learning and the maintenance of sharp boundaries between different subject areas. We hope these measures will take us significantly further in the direction of a child-centered system of education outlined in the National Policy on Education (1986).

One of the key recommendations of the NCF is to increase the number of options available at the senior secondary level. Following this recommendation, the National Council of Educational Research and Training (NCERT) has decided to introduce certain new areas highlighted in the NCF for their potential for encouraging creativity and interdisciplinary understanding. Creative Writing and Translation constitute a major example of the space available for interdisciplinary understanding and skill development in the higher secondary classes. The present textbook attempts to provide a unique opportunity to the young for pursuing this area in a bilingual text. NCERT hopes that the innovative approach of this textbook will inspire both teachers and students to combine the knowledge of language and literature with everyday social experiences and the discourses associated with them.

This initiative can succeed only if school principals, parents and teachers recognise that given space, time and freedom, children generate new knowledge by engaging with the information passed on to them by adults. Treating the prescribed textbook as the sole basis of examination is one of the key reasons why other resources and sites of learning are ignored. Inculcating creativity and initiative is possible if we perceive and treat children as participants in learning, not as receivers of a fixed body of knowledge.

These aims imply considerable change in school routines and mode of functioning. Flexibility in the daily time-table is as necessary as rigour in implementing the annual calendar so that the required number of teaching days is actually devoted to teaching. The methods used for teaching and evaluation will also determine how effective this textbook proves for making children's life at school a happy experience, rather than a source of stress or boredom. Syllabus designers have tried to address the problem of curricular burden by restructuring and reorienting knowledge at different stages with greater consideration for child psychology and the time available for teaching. The textbook attempts to enhance this endeavour by giving higher priority

© NCERT not to be republished

and space to opportunities for contemplation and wondering, discussion in small groups, and activities requiring hands-on experience.

NCERT appreciates the hard work done by the syllabus and textbook development committee. The work for developing this interactive textbook was challenging and the painstaking efforts by its Chief Advisor, Shri Ashok Vajpayi and its Advisor, Professor Arun Kamal are praiseworthy. The Council is grateful to Ms. Rajee Seth, the special invitee of the monitoring committee. We are indebted to the institutions and organisations, which have generously permitted us to draw upon their resources, materials and personnel. We are especially grateful to the members of the National Monitoring Committee appointed by the Department of Secondary and Higher Education, Ministry of Human Resource Development, under the Chairpersonship of Professor Mrinal Miri and Professor G. P. Deshpande, for their valuable time and contribution. As an organisation committed to systemic reform and continuous improvement in the quality of its products, NCERT welcomes comments and suggestions which will enable us to undertake further revision and refinement.

DIRECTOR
National Council of Educational
Research and Training

New Delhi
September 2008

© NCERT not to be republished

यह पुस्तक

बच्चे सहज ही सृजनात्मक होते हैं। उनकी यह सृजनात्मकता तरह-तरह से अभिव्यक्त होती है। भाषा रचने की तो उनमें स्वाभाविक क्षमता होती है। अगर उनकी इस क्षमता की पहचान शुरुआत में ही हो जाए तो इसे और निखारा जा सकता है। खासतौर से उच्चतर माध्यमिक स्तर तक आते-आते अभिव्यक्ति के नए माध्यमों की बारीकियों से परिचय हो तो विद्यार्थियों की रचनात्मकता नए आयाम लेगी। साथ ही वे भाषा साहित्य को रोज़मर्रा के सामाजिक मुद्दों और विमर्शों से जोड़कर देखने में समर्थ हो सकेंगे। ऐसे में इस पुस्तक का साथ उनमें अच्छा लिख सकने का विश्वास भर सकता है।

इस पुस्तक का निर्माण एक बहुभाषी बच्चे की परिकल्पना के साथ हुआ है। इसमें चार इकाइयाँ हैं। प्रत्येक इकाई में हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में समानांतर सामग्री दी गई है, वह भी एक ही ज़िल्द में। एन.सी.ई.आर.टी. ने पहली बार ऐसी पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया है। दोनों ही भाषाओं में स्वतंत्र रूप से अध्यायों को लिखा गया है। विद्यार्थियों से यह अपेक्षा होगी कि वे दोनों भाषाओं में लिखी सामग्री को पढ़ें ताकि उनकी अभिव्यक्ति दोनों भाषाओं में आसानी से आवाजाही कर सके। अनुवाद कौशल में भी यह सहायक रहेगा। इसके माध्यम से कम से कम दो भाषाओं की सृजनात्मक विशेषताओं से विद्यार्थी एकसाथ रू-ब-रू होंगे। इसमें दी गई गतिविधियाँ भी दोनों भाषाओं की सामग्री को जोड़ती हैं जो बहुभाषी संदर्भ रचने में समर्थ हो सकती है। अनुवाद इसका एक ज़रूरी हिस्सा है। इसके माध्यम से विद्यार्थी अनुवाद में सृजनात्मक अभिव्यक्ति के प्रति सचेत हो सकेंगे।

सृजनात्मकता हममें ऊर्जा भरती है। यही हमें विभेदों का आदर करना सिखाती है और विभिन्नता और अनेकता में रस लेना भी। हरेक व्यक्ति सर्जनात्मक होता है, बच्चे तो बड़ों से भी ज़्यादा। सींची जाने पर सृजनात्मकता अंकुरण बन प्रत्येक विद्यार्थी के स्वतंत्र विकास का ज़रिया हो सकती है। बढ़िया ढंग से लिखे गए शब्द दुनिया को नए ढंग से रचने की ऊर्जा देते हैं। ज़ाहिर है रचने की इस ऊर्जा को शुरुआत में ही दिशा मिल जाए तो आने वाले कल का इतिहास बिलकुल नया और ताज़ा होगा क्योंकि लिखित शब्द दस्तावेज की तरह होते हैं। इनका प्रभाव भी बिलकुल भिन्न होता है।

यह पुस्तक सृजनात्मकता संबंधी बनी-बनाई धारणा में बदलाव की माँग करती है। रचने की कला किसी जन्मजात प्रतिभा की मोहताज़ नहीं होती। वह कहीं भी और कभी भी पनप सकती है, क्योंकि सबके भीतर वह बीज मौजूद है। यह पुस्तक उन्हें पहचानने का एक अवसर दे सकती है।

आज अलग-अलग क्षेत्रों, रूप विधा के साथ-साथ अलग-अलग अनुशासनों में ऐसा लेखन हो रहा है जिसकी नयी भाषा और उसका नया व्याकरण सृजनात्मकता की नयी संभावनाओं की ओर ले जाता है। साहित्य के साथ-साथ अनुवाद और मीडिया का क्षेत्र ऐसा ही है। पूरी दुनिया से जुड़ने में ऐसे लेखन की बड़ी भूमिका है। ज़ाहिर है अगर ऐसे सृजनात्मक लेखन से युवाओं/युवतियों की ऊर्जा भी जुड़ती है तो पूरी दुनिया को रचनात्मक ढंग से जुड़ने में मदद मिलेगी।

अनुवाद तो सृजनात्मकता से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। दो से अधिक भाषाएँ साधे बिना भारत में जल्दी किसी का काम नहीं चलता। हमारे संदर्भ की बहुभाषिकता रोज़मर्रा की ज़िंदगी से ताल्लुक

© NCERT not to be republished

रखती है। एक दिन के लिए भी सिर्फ़ एक भाषा में बँधकर रह जाना हमारे लिए संभव नहीं। फिर भी अकसर हम बंद खाँचों में बाँधकर भाषा पढ़ते-पढ़ाते हैं। बोल-चाल में भले ही हम एक भाषा की पंक्ति से शुरू कर दूसरी भाषा की पंक्ति पर खत्म करें–कक्षा में हमारा ज़ोर एकभाषिकता पर रहता है और शुद्धतावादी दृष्टिकोण इस कदर हम पर हावी रहता है कि भाषिक हेल-मेल से हम भरसक परहेज़ ही कर जाते हैं। हर भाषा के अलग-अलग अवयव जानना-समझना ज़रूरी है पर उतना ही ज़रूरी है भाषाओं का गठबंधन/तुलनात्मक अध्ययन। हमारे रोज़मर्रा के अनुभव का हिस्सा है अनुवाद, जिसमें अनुवादक की कल्पनाशीलता और संवेदनशीलता एक बड़ी भूमिका निभाती है, इसीलिए अनुवाद मौलिक रूप में सृजनात्मक होता है। हमारे बहुलतावादी समाज में एकभाषिकता की कृत्रिमता पर एक प्रश्नचिह्न लगाता है यह पाठ्यक्रम, साथ ही भाषिक कौशल के विकास की सम्यक्-व्यापक योजना रखता है।

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के मूल्यांकन में समग्र दृष्टिकोण की माँग करता है। यहाँ मूल्यांकन की भूमिका विद्यार्थी की सृजनात्मकता और उनकी सृजनात्मक लेखन संबंधी जानकारी को आकार देकर पैना बनाना है। उनकी रुचि और भावनाओं को रचनात्मक दिशा तलाशने में मदद करना है। इस प्रक्रिया में अध्यापकों को हरेक विद्यार्थी के लिए मूल्यांकन संबंधी अलग-अलग विधियों और औज़ारों को अपनाना होगा। विद्यार्थी की समझ और विकास को जाँचने के लिए उनकी समस्याओं, उनके आत्मविश्वास, उनकी क्षमता को नजदीक से पहचानना होगा।

मूल्यांकन की इस प्रक्रिया में अंकों या 'ग्रेड' द्वारा जाँचने की बजाय संरचनात्मक सुझाव देकर विद्यार्थी की अभिव्यक्ति को असरदार बनाना होगा। यह प्रक्रिया उनके सृजनात्मक विकास में सहायक होगी। इसलिए लिखित परीक्षा मात्र मूल्यांकन में सहायक नहीं हो सकती, लिखित परीक्षा के साथ-साथ विभिन्न तरीकों से विद्यार्थी का निरीक्षण जैसे पोर्टफ़ोलियो में किए गए कार्य, बातचीत, सामूहिक कार्य में साझेदारी, विद्यार्थी के स्वयं के मूल्यांकन को वरीयता देनी होगी। विद्यार्थी की मौलिकता को बनाए रखना मूल्यांकन का सबसे ज़रूरी पक्ष होगा। इसके लिए पुस्तक में दी गई गतिविधियों को तो कराएँ ही, कक्षा की माँग के अनुसार कुछ नयी गतिविधियों की जगह हमेशा बनाएँ।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि रचनात्मक प्रक्रिया किसी रचना से कम महत्वपूर्ण नहीं होती। कुछ रच सकने के अहसास तक पहुँचना या उसे जानना विद्यार्थियों की सृजनात्मक मौलिकता (खासतौर से भाषा में सृजनात्मकता) की पहचान कर उसे सही दिशा देने में सहायक होगा, जो इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है।

अध्यापकों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि वह हरेक विद्यार्थी से एक तरह की सृजनात्मक क्षमता की अपेक्षा न करे। हर विद्यार्थी की भिन्न और मौलिक क्षमता और रुचि को ध्यान में रखकर ही उन्हें दिशा देना अध्यापकों का दायित्व होना चाहिए। उनकी भूमिका मित्रवत होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी, शिक्षक और शिक्षा के बीच एक संवादात्मक रिश्ता बन सके। विद्यार्थी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति की आज़ादी विद्यार्थी के तनाव को कम कर उनके आत्मविश्वास और आत्मसंयम को बढ़ाएगी। यह प्रक्रिया उन्हें अभिव्यक्ति की ऐसी भाषा देने में समर्थ होगी जिससे भाषाओं, कलाओं, संस्कृतियों के बीच का रास्ता बेरोक-टोक, शांतिपूर्ण और मज़बूत हो सकेगा।

About This Book

Children have an innate creative ability which manifests itself in many forms. Their natural flair for creativity in language, if identified early, can lead to further creative growth and enhancement of their skills. Exposure to the nuances of contemporary and diverse forms of creative expression at the Higher Secondary level can facilitate discovery of new dimensions of creative expression in language and literature. The endeavour of this book is therfore to enable students to recognise their talents and write confidently.

Srijan has been developed keeping in view a bilingual child and it is for the first time that NCERT has developed a bilingual book (Hindi and English). There are four units in the book. Each unit has been developed in Hindi as well as in English. These are parallel texts and not exact translations. Students are expected to read both sets of units as this would hone their linguistic abilities in both the languages and would also develop their translation skills. The units in Hindi and English are linked with activities that are numbered in continuation so that students visit both texts and come across enriching examples in both languages. Translation, which is an inherent part of this course, creates a bilingual context. This will also enable the learners to appreciate the fact that translation is also a creative activity.

The book aims to change certain pre-conceived notions related to creative skills, the foremost among which is that creativity is inborn only in some of us. In fact, everyone is creative; children are more so. With proper guidance and training every student's creative potential can be tapped and developed. Creativity teaches us to respect diversity and to derive pleasure in variety. What is required is to give proper direction to the inherent creative energy in students so that a better tomorrow can be scripted. As we all know, a well-written piece has the strength to change/formulate opinions.

Today, creative writing has been revitalised with a spirit of innovation and experimentation. New forms of writing, with their unique expressions and grammar have emerged in the fields of literary writing, translation and media. With the creative use of both language and literature, students will be able to represent and reflect upon contemporary social realities, diverse thoughts, languages and cultures.

The study of two or more languages is essential in India. No person can confine herself or himself to a single language. In schools, however, we study languages as watertight compartments. While conversing we may begin the sentence in one language and end it in another, but in the classroom we emphasise exclusivity and purity. This book attempts to bridge the gap between experienced reality and pedagogical practice by recognising that

© NCERT
not to be republished

although it is important to know the individual features of every language, it is also essential in our multilingual context to look at them comparatively. This can be achieved by introducing students to translation as a creative activity.

The course on Creative Writing and Translation demands that the assessment of the students should be holistic. The role of assessment is to hone the knowledge and skills of creative writing among students, and also to provide direction to their field of interest. On the basis of this the teacher can evolve an individualised approach or strategy appropriate for her/his students. The teacher will also have to identify the problems, ascertain the level of confidence, and capabilities of the students.

The students' assessment should not be made merely in terms of marks or grades; rather, constructive feedback from the teacher would be more effective. Therefore written texts alone are not sufficient as a means of assessment. They should be combined with the teacher's observations and assessment of the student's work throughout the year through portfolios, oral presentations, group-work, students' self-assessment etc. The learner's individual expression should be given due space in the process of assessment.

There are a variety of activities in the book. However, new activities should be created according to the interests and needs/demands of the students. We must remember that the creative process is as important as the product, and the learner should be encouraged to enjoy the process, which is the primary objective of this course.

The inherent challenge before teachers in teaching this discpline lies in the fact that all the students do not have the same level of creativity and understanding. Teachers need to guide the students according to the individual's interest and creativity. The teacher's role in a learner-centered environment is that of a facilitator and friend. This will encourage constant dialogue between the teacher and the student. Also, a positive attitude and freedom of expression will go a long way in lowering the anxiety levels of learners, while raising their self-confidence and self-discipline. This course would provide students with a medium to creatively interact with diverse cultures and languages thereby contributing towards creating harmony and peace.

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति
TEXTBOOK DEVELOPMENT COMMITTEE

मुख्य सलाहकार/CHIEF ADVISOR

अशोक वाजपेयी, *पूर्व अध्यक्ष*, ललित कला अकादमी
Ashok Vajpayi, *Former Chairperson*, Lalit Kala Academy

सलाहकार/ADVISOR

अरुण कमल, *प्रो़फ़ेसर*, पटना विश्वविद्यालय, पटना
Arun Kamal, *Professor*, Patna University, Patna

मुख्य समन्वयक/CHIEF COORDINATOR

रामजन्म शर्मा, *प्रो़फ़ेसर एवं अध्यक्ष*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
Ram Janma Sharma, *Professor and Head*, Department of Languages, NCERT, New Delhi

सदस्य/MEMBERS

अनामिका, *रीडर*, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली
Anamika, *Reader*, Satyawati College, Delhi

अनुराधा, *पी.जी.टी.*, सरदार पटेल विद्यालय, लोधी इस्टेट, नयी दिल्ली
Anuradha, *P.G.T.* , Sardar Patel School, Lodhi Estate, New Delhi

अनुराधा मारवा, *रीडर*, ज़ाकिर हुसैन कॉलेज, नयी दिल्ली
Anuradha Marwah, *Reader*, Zakir Husain College, New Delhi

आनंद प्रधान, *रीडर*, आई.आई.एम.सी., दिल्ली
Anand Pradhan, *Reader*, IIMC, Delhi

इंदु बाला, *पूर्व प्रधानाचार्य*, डी.टी.ई.ए. स्कूल, आर.के. पुरम्, नयी दिल्ली
Indu Bala, *Former Principal*, DTEA School, R.K. Puram, New Delhi

देवेंद्रराज अंकुर, *प्रो़फ़ेसर*, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली
Devendraraj Ankur, *Professor*, National School of Drama, New Delhi

नूतन झा, *अध्यापिका*, मीरांबिका स्कूल, नयी दिल्ली
Nutan Jha, *Teacher*, Mirambika School, New Delhi

प्रयाग शुक्ल, *संपादक*, रंग-प्रसंग, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली
Prayag Shukl, *Editor*, *Rang Prasang*, National School of Drama, New Delhi

शारदा, *वरिष्ठ प्रवक्ता*, डाइट, आर.के. पुरम्, नयी दिल्ली
Sharda, *Sr. Lecturer*, DIET, R.K.Puram, New Delhi

© NCERT not to be republished

सुकृता पॉल कुमार, *रीडर*, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
Sukrita Paul Kumar, *Reader*, University of Delhi, Delhi

हेमा राघवन, *पूर्व डीन,* छात्र कल्याण, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
Hema Raghavan, *Former Dean of Students' Welfare*, University of Delhi, Delhi

सदस्य समन्वयक/MEMBER–COORDINATORS

संध्या सिंह, *प्रोफ़ेसर*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी.,नयी दिल्ली
Sandhya Singh, *Professor*, Department of Languages, NCERT, New Delhi

कीर्ति कपूर, *प्रोफ़ेसर*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
Kirti Kapur, *Professor*, Department of Languages, NCERT, New Delhi

© NCERT not to be republished

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में सामग्री सहयोग के लिए नेहरू मेमोरियल संग्रहालय एवं पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी; फ़ोटोग्राफ़ के लिए राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली, सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली, मोनालिसा की फ़ोटोग्राफ़ के लिए दिलीप चिंचालकर, ख्याल परंपरा के चित्रों के लिए मधुमती पत्रिका, लाफ्टर एंड दी कारपेंटर के लिए नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, र्यून स्टोन के लिए बेरिग, अजंता के गुफ़ा-चित्र के लिए भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, रोमन कॉलोसियम के लिए फ्यूबर ऑफुस्को, कुडियट्टम के लिए श्रीकांत वी, 'एगमार्क' के लिए कृषि एवं सहकारिता विभाग तथा 'लाडली' के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग के प्रति हम विशेष आभारी हैं।

इसके निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए परिषद् कंप्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के *प्रभारी* परशराम कौशिक; *डी.टी.पी. ऑपरेटर* सचिन कुमार और विजय कुमार; *कॉपी एडीटर* पूजा नेगी और नीना चंद्रा के सहयोग के लिए हम कृतज्ञ हैं।

ACKNOWLEDGEMENT

For permission to reproduce copyright pictures in this book, NCERT would like to thank the National Gallery of Modern Art, New Delhi for 'Laughter' and 'The Carpenter'; Berig for 'Rune Stone'; Archaeological Survey of India for the painting from the Ajanta Caves; Fubar Obfusco for 'the Colosseum', Rome; Sreekanth V. for 'Kudiyattam Performace'; Dilip Chinchalkar for the photograph of 'Mona Lisa'; *Madhumati Patrika* for the pictures of 'Khayal'; the National School of Drama, New Delhi; Sardar Patel Vidyalaya, New Delhi; Department of Agriculture and Cooperation for 'AGMARK'; and Department of Women and Child Development for 'Ladli'. NCERT would also like to thank Nehru Memorial Museum and Library, and Nagri Pracharini Sabha for providing material for this book.

The Council also acknowledges the services of Parash Ram Kaushik, *Incharge*, Computer Station, NCERT; Neena Chandra and Pooja Negi, *Copy Editors*; Sachin Kumar and Vijay Kumar, *DTP Operators*.

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

© NCERT not to be republished

विषय सूची/CONTENTS

आमुख ...iii
Foreword ...v
यह पुस्तक ...vii
About This Book ...ix

1. सृजनात्मकता और लेखन / CREATIVITY AND WRITING ... 1

- *I. सृजनात्मकता क्या है? ... 4*
- *II. लेखन में सृजनात्मक अभिव्यक्ति ... 12*
  - *I. What is Creativity? ... 16*
  - *II. Creative Expression in Writing ... 24*

2. साहित्यिक लेखन / LITERARY WRITING ... 31

- *I. साहित्यिक लेखन — एक परिचय ... 34*
- II. साहित्यिक लेखन ... 41
  - *I. Literary Writing — an Introduction ... 58*
  - *II. Literary Writing ... 67*

3. मीडिया / MEDIA ... 85

- *I. मीडिया लेखन का संक्षिप्त परिचय ... 88*
- *II. मीडिया लेखन ... 94*
  - *I. Media Writing — an Introduction ... 128*
  - *II. Media Writing ... 135*

4. अनुवाद / TRANSLATION ... 161

- *I. अनुवाद — एक संक्षिप्त परिचय ... 164*
- *II. अनुवाद के विविध रूप ... 172*
  - *I. Introducing Translation ... 184*
  - *II. Types of Translation ... 202*

© NCERT not to be republished

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1]**[SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC]** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the [2][unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949 do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

1. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

© NCERT not to be republished

1

सृजनात्मकता और लेखन

Creativity and Writing

11132CH01

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

I. सृजनात्मकता क्या है?

- सृजनात्मकता के विविध रूप
- रोज़मर्रा के जीवन में सृजनात्मकता
- भाषा में सृजनात्मकता

II. लेखन में सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- साहित्यिक लेखन
- मीडिया लेखन
- अनुवाद

I. What is Creativity?

- Forms of Creativity
- Creativity in Everyday Life
- Creativity through Language

II. Creative Expression in Writing

- Literary Writing
- Media Writing
- Translation

© NCERT not to be republished

सृजनात्मकता से रू-ब-रू

दुनिया की हर छोटी से छोटी चीज़ की अहमियत पहचानना रचनात्मक अनुभव हो सकता है।

समूह कार्य

1. आइए पहचानें
   - समूह में बँटकर चार-पाँच वस्तुओं (जैसे–फूल, पत्ता, पिन, रद्दी कागज़, पैंसिल, पुराना कार्ड, डिब्बा, स्ट्रा, सूखी डाली आदि ऐसी कोई भी चीज़ ले सकते हैं) से कुछ भी बनाएँ।
   - अपने बनाए हुए कार्य को एक शीर्षक भी दें।
   - इसके बाद प्रत्येक समूह अपनी रचना का मौखिक विवरण प्रस्तुत करें।

2. बातचीत कर जानें
   - सृजनात्मकता क्या है, आपकी नज़र में?
   - क्या इसमें सौंदर्य है?
   - क्या इसमें कल्पना है?
   - क्या इसमें अवलोकन का कोई स्थान है?
   - क्या इसमें पूर्व जानकारी की कोई भूमिका है

   ऐसे अन्य कई बिंदु हो सकते हैं।

Reprint 2025-26

कलम रुकती नहीं ...

क्या यह संभव है कि भला कोई जंगल में हो घंटाभर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज़ न देखे? मुझे – जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता – सैकड़ों रोचक चीज़ें मिलती हैं, जिन्हें मैं छूकर पहचान लेती हूँ। मैं भोज-पत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान मैं टहनियों में नयी कलियाँ खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने में अपार आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती हूँ, तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर कानों में गूँजने लगते हैं। अपनी अँगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियाँ या घास का मैदान किसी भी महँगी कालीन से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समाँ मेरे जीवन में नया रंग और खुशियाँ भर जाता है।

–हेलेन केलर

(हेलेन केलर (1880-1968, अमेरिका) एक ऐसा नाम है जो घोर अंधकार के बीच भी रोशनी देता रहा। कल्पना कीजिए कि जो न सुन सकता हो, न देख सकता हो फिर भी वह लिखना-पढ़ना और बोलना सीख ले, भरपूर आशा-आकांक्षा के साथ जीवन जीने लगे और उसके योगदान दुनिया के लिए यादगार बन जाएँ! ऐसी थीं हेलेन केलर।)

© NCERT not to be republished

अपारे काव्यसंसारे
कविरेकः प्रजापतिः।
यथास्मै रोचते
विश्वं तथैव परिवर्तते।।
— ध्वन्यालोक, आचार्य आनंदवर्धन

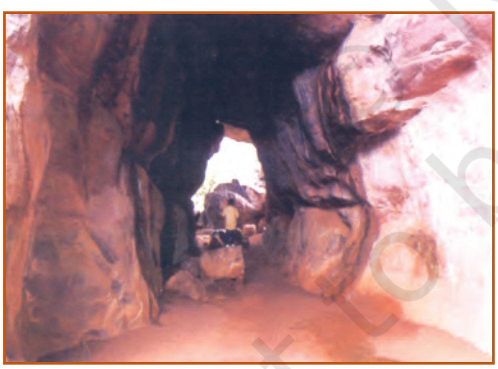

भीमबेटका की गुफ़ा के चित्र

1. सृजनात्मकता क्या है?

अगर हम अपने आस-पास नज़र डालें तो पाएँगे कि हर जगह, हर वस्तु में जो जीवित है, कुछ न कुछ हो रहा है। सामने का पीपल का पेड़, जो सारे पत्ते झाड़ चुका था, नए लाल पत्तों से भर रहा है! क्यारी में लगा भिंडी का पौधा अपने फूल गिरा अब बहुत छोटी-सी भिंडी बाहर ला रहा है। अमरूद के रूखे पेड़ का हरा फल धीरे-धीरे पक रहा है। आम की मंजरियाँ पहले छोटे टिकोलों में, फिर पूरे हरे फल में, फिर हरा फल पीले पके फल में, और फिर उस फल की गुठली से कत्थई पत्तों वाला नन्हा पौधा – यह क्रम चलता रहता है। यही तो प्रकृति की सृजनात्मकता है। प्रकृति सबसे बड़ी सर्जक है।

मनुष्य ने भी प्रकृति से यह गुण सीखा। आरंभ से ही वह भी प्रकृति के साथ-साथ और समानांतर सृजन करता आ रहा है। जब वह गुफाओं में रहता था तब भी उसने गुफाओं की दीवारों पर तरह-तरह के चित्र बनाए। भोपाल के पास भीम बैठका में बहुत प्राचीन गुफाएँ हैं। वहाँ ऐसे चित्र हैं।

पहले मनुष्य फल इकट्ठा करता था और जानवरों का शिकार करता था। आगे चलकर मनुष्य ने अन्न उपजाना (खेती करना) शुरू किया। **खेती बहुत बड़ा सृजन है**। धान के बिरवे से लेकर चावल के दानों का हमारी रसोई में पहुँचने तक लगातार सृजन होता रहता है। इसी सृजन और श्रम के दौरान मनुष्य ने गान और नृत्य भी रचे। **नृत्य सबसे आदिम कला है**। यहाँ शरीर ही माध्यम है। मनुष्य ने जीवन जीते हुए सौंदर्य की सृष्टि की। हर चीज़ में, हर काम में सौंदर्य है। खेतों की सुघड़ क्यारियाँ, पेड़ों की पाँतें, नदियों के घाट, रहने

© NCERT not to be republished

के घर, पहनने के कपड़े – सब में मनुष्य ने सुंदरता की रचना की। जब हम माँ को रोटी पकाते देखते हैं तो लगता है 'दुनिया की सबसे आश्चर्यजनक चीज़' बन रही है। रोटी का गोल-गोल बनना और तवे पर फूलना – यही तो सृजन है। सोचने पर लगता है कि इस एक गोल, पकी हुई, भाप भरी रोटी के पीछे कितना श्रम, समय और मन लगा होगा। गेहूँ की बुवाई से लेकर रोटी के फूलने तक – सृजनात्मकता की सबसे बड़ी गाथा है।

मिट्टी को आकार देते हाथ

सृजनात्मकता के विविध रूप

इसी तरह मिट्टी का एक लोंदा आकार लेता है। देखते ही देखते गीली मिट्टी का एक गोला घूमते चाक पर कारीगर की हथेलियों के बीच सँवरते-सँभलते सुघड़ सुराही में बदल जाता है। कभी-कभी यह देखकर आश्चर्य होता है कि मनुष्य का हाथ कैसे मिट्टी को सुडौल आकार दे देता है। इसी तरह मूर्ति भी बनती है। शुरू में कुछ भी नहीं होता। बस पुआल, बाँस की खपच्चियाँ और मिट्टी। देखते ही देखते मनुष्य की देह जितनी बड़ी आकृति बन जाती है। पत्थर को तराशकर, पहाड़ को काटकर ऐलोरा की महान मूर्तियाँ बनीं। कई बार एक ही रचनाकार अपने आप को कई कला रूपों में अभिव्यक्त करता है। रवींद्रनाथ ठाकुर, महादेवी वर्मा, शमशेर आदि ऐसे ही रचनाकार हैं।

महादेवी वर्मा का एक रेखांकन

रोज़मर्रा के जीवन में सृजनात्मकता

सृजनात्मकता के विषय में जब हम सोचते हैं तो आमतौर पर साहित्यकारों, चित्रकारों, फिल्मकारों आदि जैसे कुछ खास व्यक्तियों की उपलब्धियों की बात ही दिमाग में पहले कौंधती है। निस्संदेह अपने क्षेत्र में ये सृजनशील हैं, पर सृजनशीलता का पटल इन जाने-माने व्यक्तियों की कृतियों से कहीं अधिक विस्तृत है। पहली बात जो सृजनशीलता के विषय में समझने की है, वह यह कि इसे जनसाधारण की रोज़मर्रा की ज़िंदगी की गतिविधियों में भी

© NCERT not to be republished

गतिविधि 1 ◆ Activity 1

आपको कहाँ-कहाँ किस-किस रूप में सृजनात्मकता का अहसास हुआ –

- *अपने आस-पास घटने/होने वाली ऐसी गतिविधियों की सूची बनाइए।*
- *उनमें से किसी एक का वर्णन कीजिए।*

How and in which forms have you experienced creativity?

- *Make a list of creative activities that you see happening around you.*
- *Describe any one in your own words.*

देखें गतिविधि/Activity 4 पृष्ठ 18

देखा, अनुभव किया जा सकता है। जैसे कि, कैसे एक प्राइमरी स्कूल का शिक्षक बच्चों को बेहतरीन कहानियों के ज़रिये इतिहास के पाठ यूँ पढ़ाता है कि बच्चों में कल्पनाशीलता और विषय के प्रति विशेष रुचि जग उठती है; कहीं एक स्त्री अपने शिशु की देखभाल करती है और बहुत कम आय में ही अपनी गृहस्थी को सुघड़, सुव्यवस्थित ढंग से चलाकर उसके घिसे-पिटे ढर्रे में एक नवीनता, एक सौंदर्य लाती है या कहीं एक माली पौधों की पहचान, चुनाव तथा देखभाल इतनी निपुणता से करता है, जैसे कि उसे वनस्पति शास्त्र की पूरी जानकारी हो। कहने का मतलब कि सृजनशीलता **हम क्या करते हैं** इसमें नहीं, वरन् खासतौर पर इसमें है कि **हम उसे किस प्रकार करते हैं।** हमारे लिए उस छोटे से काम का या बात का क्या अर्थ है। इसी अर्थ में **सृजनात्मकता उपयोगिता से परे है।**

कल्पना सृजनात्मकता का उत्स है

सुबह उठकर जैसे घर साफ़-सुथरा करते हैं, चीज़ें करीने से रखते हैं, चादर बिछाते हैं, मन को भी खँगालने-सँवारने, सिलवटों से उबारने की ज़रूरत पड़ती है। हार्दिक संवाद इसमें हमारी मदद करते हैं। माँ रोटी गोल बेलती है; ठेकुए पर साँचे से फूल बनते हैं; आखिर क्यों? कल्पनाएँ क्यों बनती हैं?

बँधे-बँधाए, एक ढर्रे पर होने वाले स्टिरियोटाइप रूटीन, मशीनी काम-काज और रंग-ढंग किसी भी व्यक्ति को मानवीय गरिमा से गिराते हैं। सच्चा मनुष्य हर क्षण, हर कदम पर एक अज्ञात पेड़ लगाता चलता है, सबके जीवन में नया रस-रंग भरता चलता है। यही उसकी सृजनात्मकता का आग्रह है। पढ़ना-लिखना, चित्र बनाना, नाचना-गाना, मूर्ति बनाना ही सृजनात्मक काम हों, ऐसा नहीं है। जीवन के पेंच सुलझाने वाला, प्रकृति और मानव मन-मस्तिष्क के रहस्य समझाने वाला, अपने घर और समाज की सुख-सुविधा और मानसिक सुख-शांति में इज़ाफ़ा करने

© NCERT not to be republished

वाला छोटे-से-छोटा काम सृजनात्मक है। हर वह काम सृजनात्मक है जो **बृहत्तर हित के लिए एक खास तरह की टीस और प्रेरणा के साथ सौ कष्ट उठाकर भी मनोयोगपूर्वक किया गया हो** – कोई उदास बैठा हो तो उसे हँसा देना, बहुत बड़ा बोझ लेकर चलने वाले का बोझ उठा देना, दृष्टिहीन व्यक्ति को सड़क पार ले जाना, किसी की नैतिक कुहेलिका सुलझाने में मदद करना, किसी का आर्थिक-मानसिक अवलंब बनना – सब नेक काम सृजनात्मक आवेगों के तहत ही होते हैं।

(संवेदनशीलता का उत्कर्ष ही सृजनशीलता है)

इस बार कोलकाता गया तो कई नए अनुभव हुए। पहला, किंचित आश्चर्य-भरा अनुभव तो यही हुआ कि कविता के श्रोता अब भी हैं और बड़ी संख्या में मौजूद हैं। सिर्फ़ वे रास्ते हम भूल गए हैं जिनसे होकर उन तक पहुँचा जा सकता था। इस मुद्रण के युग में यह थोड़ा विचित्र लग सकता है, पर सच यही है कि मुद्रित पाठ की जड़ता की अपेक्षा जीवंत वाचिक संप्रेषण आज भी ग्रहीता तक पहुँचने का सबसे विश्वसनीय माध्यम है। ... एक अनुमान के अनुसार, तीन दिन तक चलने वाले उस समारोह में कोई पाँच हज़ार श्रोता प्रतिदिन आते हैं जिनमें से अधिकांश युवा होते थे। इस 'पाप कल्चर' से आक्रांत समय में युवा पीढ़ी का इतनी बड़ी संख्या में कविता के साथ जुड़ाव गहरी आश्वस्ति का कारण था। यह सिर्फ़ कोलकाता में संभव था – जहाँ एक चिड़िया के बच्चे के बिजली के तार से चोट खाकर सड़क पर गिर जाने के कारण, आज भी, कुछ देर के लिए यातायात अवरुद्ध हो सकता है। सर जगदीश चंद्र बोस रोड पर घटित होने वाली यह छोटी-सी घटना कोलकाता की स्मृति का हिस्सा बन चुकी है जहाँ भीड़-भरी दोपहरी में एक गौरैया का बच्चा सड़क के बीचोंबीच गिर पड़ा था और दोनों ओर से कुछ समय के लिए आवागमन अवरुद्ध हो गया था। इस मामूली-सी घटना और कविता के प्रति किसी शहर के रुझान के बीच कोई सीधा-संबंध नहीं है। पर, मुझे लगता है कि यह मामूली-सी घटना इतनी मामूली नहीं है कि इसे बंगीय मानस की कोरी भावुकता कहकर टाल दिया जाए। कविता के लिए पाँच हज़ार की भीड़ का इकट्ठा होना और एक घायल चिड़िया के लिए भागती हुई भीड़ का सड़क पर ठहर जाना, इन दो अलग-अलग घटनाओं के बीच कोई न कोई रिश्ता ज़रूर होना चाहिए।

–कब्रिस्तान में पंचायत, केदारनाथ सिंह

देखें गतिविधि/***Activity* 5 पृष्ठ 21**

© NCERT not to be republished

भाषा में सृजनात्मकता

इसी रचनात्मक आवेग के तहत धीरे–धीरे मनुष्य ने भाषा बनाई। भाषा में गीत बनाए। हमारे लोकगीत ऐसे ही बने। सिर्फ़ बोलकर, गाकर ये गीत शताब्दियों से चले आ रहे हैं, जैसे यह आदिवासी गीत–

हे सालू!
चलो हे सुग्गा! चलो!
ऊपर टोले में पीपल का फल खाने चलें!
हे सालू! चलो, हे सुग्गा! चलो!
नीचे टोले में बड़ का फल चखने चलें!

या

रास्ते में साखू का फूल लहरा रहा है!
रास्ते में वो युवती मुसकुरा रही है!

बाद में मनुष्य ने लिखना सीखा। तब उसने गीतों को लिखना शुरू किया। बोलते तो सब हैं। अलग–अलग भाषाओं में हर मनुष्य बोलता है। बहुत से लोग लिखते भी हैं। चिट्ठियाँ लिखते हैं; रोज़ के खर्च का हिसाब लिखते हैं; फोन नंबर लिखते हैं; लेकिन हर आदमी कहानी नहीं लिखता; हर आदमी कविता नहीं लिखता। कविता–कहानी लिखना बाकी रोज़मर्रा के लेखन से अलग है। यहाँ तक कि डायरी लिखना, आत्मकथा या संस्मरण लिखना भी बाकी लिखने से अलग है। इसके लिए भाषा जानना ही काफ़ी नहीं है। इसके लिए भाषा को बढ़िया से जानना, भाषा का निपुणता से व्यवहार करना और भाषा में कुछ नया करना ज़रूरी है। सृजनात्मकता का अर्थ है **कुछ नया करना** और **नए तरीके से करना**। जब हम भाषा में यह करते हैं तो उसे भाषिक सृजन कहते हैं। यहाँ नयी बात को सबसे अच्छे शब्दों में, सबसे अच्छे क्रम से रखा जाता है। जैसे, शुरू में हमने पेड़ों में नए पत्ते आने की बात की। हिंदी के बड़े कवि निराला इसी बात को इस तरह से कहते हैं–

'रूखी री यह डाल वसन वासंती लेगी'

बसंत की इसी घटना को, निराला अनेक कविताओं में रखते हैं–

फूटे हैं आमों में बौर
भौंर वन वन टूटे हैं

© NCERT not to be republished

या फिर

पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल

अथवा

उग आए अंकुर जीवन,
धान ज्वार अरहर औ सन
बही पुन: गंध से पवन
पके आम की

देखिए कि कैसे जिसे हम सब रोज़ देखते हैं उसे निराला ने कविता में बदल दिया है – डाल पत्तों से लदी है। यह डाल कहीं हरी है, कहीं लाल है। यानी पत्ते बिलकुल नए हैं, लाल हैं। फिर उन्होंने आमों में बौर फूटने की बात की है। आम के गंध की बात की है। यह सब उन्होंने देखा, सूँघा और कहा। शब्द भी अधिकतर रोज़–ब–रोज़ के हैं। लेकिन जिस तरह उन्होंने लिखा है हम ठीक वैसे ही नहीं बोलते। उन्होंने शब्दों को खास तरह से जोड़ा है। जैसे 'आमों में बौर फूटे हैं' को उन्होंने कर दिया 'फूटे हैं आमों में बौर', इस तरह पंक्ति में नया संगीत आ गया। फिर अगली पंक्ति में उन्होंने 'भौंरे' को 'भौंर' कर दिया और 'वन वन टूटे हैं' में 'टूटे' जोड़कर उसकी तुक फूटे से मिला दी तथा 'वन' को दो बार लिखकर वन की अनेकता को दिखलाया। यह सारा कुछ जो निराला ने किया वही तो भाषा में सृजनात्मकता है। यह काम हर कविता, हर रचना में अलग–अलग तरह से होता है। कई बार कुछ अलग से नहीं होता, बस सीधी सी पंक्ति होती है, जैसे नज़ीर अकबराबादी की कविता है–

हमने भी गुड़ मँगा के बँधवाए तिल के लड्डू

या

प्रभात फेरी का यह गीत

उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई
अब रैन कहाँ जो सोवत है

गतिविधि 2 ◆ Activity 2

रेल से यात्रा करते हुए आपने फेरीवालों को फुटकर सामान बेचते हुए देखा होगा। जिस फेरीवाले के बेचने के तरीके ने आपका ध्यान आकृष्ट किया, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

While travelling by train you must have observed many hawkers selling diverse items/wares. Write about a hawker whose style caught your attention.

© NCERT not to be republished

रघुवीर सहाय की कविता–

पानी पानी
बच्चा बच्चा
हिंदुस्तानी
माँग रहा है
पानी पानी

पर यहाँ भी शब्दों का चुनाव और उनका क्रम महत्त्वपूर्ण है।

जैसे मूर्तिकार मिट्टी या पत्थर में काम करता है, चित्रकार रंगों और रेखाओं का व्यवहार करता है, संगीतकार ध्वनियों का संयोजन करता है, वैसे ही भाषा का सर्जक भाषा में काम करता है। यह भाषा उसने नहीं रची है। भाषा पहले से थी। भाषा सबकी है। लेकिन इस भाषा में वह नया अर्थ उत्पन्न करता है जिसका प्रभाव दूसरों पर पड़ता है। नया अर्थ भरने के लिए वह शब्दों से खेलता भी है, जैसे यह कविता-अंश देखें –

चीज़ों को उनके नाम से याद करना सृजनात्मकता है

क्या लाल? क्या लाल?
अड़हुल के फूल लाल!
आरती के पात लाल!
सुग्गे की चोंच लाल!
यह लाल! वह लाल!
मेरी रोशनाई लाल!
आपकी कलम लाल!
इनकी किताब लाल!
उनकी जिल्द लाल!
किसी के गाल लाल!
किसी की आँख लाल!
यह लाल! वह लाल!

–नागार्जुन

देखिए कि किस तरह खेल-खेल में नागार्जुन ने इतनी प्यारी कविता बना डाली। हम जो पहेलियाँ, चुटकुले, नारे, बाल-गीत सुनते-सुनाते हैं उनमें भी यह खेल चलता है। शब्द बहुत मज़े की चीज़ है। 'एलिस इन वंडरलैंड' में शब्दों का खेल बहुत मज़ेदार है (इकाई चार में देखें)। बांग्ला में 'आबोल-ताबोल' भी बहुत मज़ेदार किताब है।

कविता, कहानी, आत्मकथा, डायरी सबमें भाषा का यह गुण रहता है, लेकिन कविता में सबसे ज़्यादा। कोई भी व्यक्ति रचना कर सकता है अगर उसके पास कहने को कुछ

© NCERT not to be republished

है और वह उस भाषा को बोलता है। प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'ईदगाह' के इस अंश को पढ़कर देखें तो लगता है कि प्रेमचंद ने कितनी सरलता से अपनी बात कह दी। यही सृजनात्मकता है –

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की हैं। कुछ गिलट और कुछ नकली गहनों की। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण न था। वह सब आगे बढ़ जाते हैं। हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे खयाल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है; अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी? फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी।

–ईदगाह, मानसरोवर भाग-1

यहाँ प्रेमचंद ने सीधे-सादे शब्दों में जो कहना था वो कह दिया है, कोई बनावट नहीं है। यहाँ यही सृजनात्मकता है। **सच को ज्यों का त्यों कह देना बहुत आसान है और बहुत कठिन भी।** भाषा का व्यवहार अलग-अलग विधाओं, जगहों और ज़रूरतों के अनुसार बदलता रहता है। मान लीजिए, कि कहीं कोई दुर्घटना हुई है तो उसका वर्णन साफ़-साफ़ भाषा में करना ही सृजनात्मक होना है। लेकिन कई बार मन के गूढ़ भावों और प्रकृति की जादूगरी को शब्दों में बाँधने के लिए जटिल या संश्लिष्ट बिंबों की ज़रूरत पड़ सकती है। उदाहरण के लिए –

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो

गतिविधि 3 ◆ Activity 3

- *गुलमर्ग की यह तसवीर क्या कहती है? देखिए और लिखिए।*
- *आपकी कल्पना लेखन की कौन सी विधा बन पाई है, यह भी बताइए।*

- *Write what this picture of Gulmarg communicates.*
- *Also, state in which form of writing your imagination takes shape on looking at the picture.*

© NCERT not to be republished

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और ...
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।

—शमशेर बहादुर सिंह

II. लेखन में सृजनात्मक अभिव्यक्ति

भाषा में यह सृजनात्मकता आज हमारे सामने कई रूपों में मौजूद है। मोटे तौर पर इसके तीन रूप हैं – साहित्य, मीडिया और अनुवाद। ऊपर साहित्य संबंधी कुछ उदाहरणों के माध्यम से हमने सृजनात्मक बिंदुओं को जानने का प्रयास किया। आगे मीडिया और अनुवाद पर चर्चा करेंगे।

मीडिया – अपने आस-पास की चीज़ों, घटनाओं और लोगों के बारे में ताज़ा जानकारी रखना मनुष्य का सहज स्वभाव है। जिज्ञासा का भाव उसमें प्रबल होता है। यही जिज्ञासा समाचार और व्यापक अर्थों में मीडिया का मूल तत्त्व है। मीडिया लेखन का विकास भी मनुष्य की सहज जिज्ञासा को शांत करने के प्रयास के रूप में ही हुआ। वह आज भी इसी मूल सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए काम करता है। समाचारों का दायरा जनरुचि और जनहित के आधार पर बदलता रहता है। मीडिया का बुनियादी तत्त्व है – नयापन। समाचार अगले दिन मुरझा जाने वाले फूल की तरह होता है। पुराना अखबार कोई नहीं पढ़ना चाहता। मीडिया के क्षेत्र में जोसेफ़ पुलित्ज़र का नाम प्रसिद्ध है, उनका कहना है, "समाचार वह है जो मौलिक, सबसे अलग, नाटकीय, रोचक, विचित्र, भावनात्मक और किसी हद तक रोमांचकारी हो, जिस पर लोग चर्चा करें।"

देखें गतिविधि/Activity 6 पृष्ठ 27

मीडिया लेखन आपको न केवल पूरी दुनिया से जोड़ता है बल्कि दुनिया को रचने में मीडिया की भूमिका सबसे बड़ी होती है। तुरंत प्रभाव वाले आपके हर शब्द समाज की दिशा तय कर सकते हैं। लेकिन जनसंचार माध्यमों का लोगों पर सकारात्मक के साथ-साथ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। इन नकारात्मक प्रभावों के प्रति लोगों का सचेत होना बहुत ज़रूरी है। इसीलिए मीडिया लेखन का दायित्व और बढ़ जाता है। यहाँ तथ्यों को सीधे-सीधे

© NCERT not to be republished

बिना किसी घुमाव के प्रस्तुत करना ही सृजनात्मकता होगी। उदाहरण के लिए –

'स्त्री शक्ति के कवच में पेश हुआ आरक्षण बिल'
'महिला आरक्षण बिल पर बीस निकला यूपीए'
'महिला आरक्षण बिल हंगामे में पेश'
'राज्य सभा में पेश हुआ महिला आरक्षण बिल'
'महिलाओं के आरक्षण का एक चरण पूरा'

इन पाँचों समाचार शीर्षकों में तथ्य की स्पष्टता तीसरे वाले शीर्षक में अधिक ठीक से हो पाई है। यद्यपि काफ़ी हद तक सभी सीधे-सीधे समाचार ही लिखे गए हैं।

अनुवाद – हर भाषा में रचना होती है और उसका तरीका लगभग एक जैसा ही होता है। ज़रूरी है उस भाषा से प्रेम, लगाव, गहरी पहचान और दोस्ती। रवींद्रनाथ ठाकुर ने बांग्ला भाषा में रचना की। देखिए उनकी एक प्रसिद्ध कविता का यह अंश –

यदि तोर डाक शुने केऊ न आशे, तबे एकला चलो रे।
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे। *(बांग्ला)*

तेरी आवाज़ पे कोई ना आए, तो फिर चल अकेला रे
चल अकेला, चल अकेला, चल अकेला रे *(हिंदी)*

यहाँ कवि ने अपनी बात सीधे-सीधे रख दी है। जैसे हम बोलते हैं वैसे ही। सरल वाक्य में, जिसका गहरा प्रभाव हमारे हृदय पर पड़ता है। फिर **एकला चलो** को तीन बार लिखकर कवि ने जो संगीत रचा, वह समवेत स्वर जैसा प्रभाव उत्पन्न करता है। यही सृजनात्मकता है। भाषा का ऐसा व्यवहार जो अधिक से अधिक लोगों को अधिक से अधिक समय तक प्रभावित करता रहता है। हिंदी अनुवाद करते हुए अनुवादक कविता के इस मूलभूत प्रभाव को पकड़ने की कोशिश करता है – जैसे हिंदी में भी **चल-अकेला** के माध्यम से समवेत ध्वनि को बरकरार रखने और साथ ही बांग्ला भाषा के बांग्लापन को बनाए रखने की कोशिश हुई है। साहित्यिक लेखन और अनुवाद एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हैं। एक के बिना दूसरे का काम नहीं चलता, खासकर भारत-जैसे बहुभाषिक देश में। हमारी चेतना अनुवाद-चेतना है। हर कोई अनुवादक है क्योंकि वह एक साथ कम से कम दो भाषाओं का व्यवहार करता है। इस भाषा से उस भाषा में बात को ले जाता है। हो सकता है आप चाची से जो भाषा बोलते हों, मौसी से नहीं; नानी से जो भाषा बोलते हों, दादी से नहीं; दोस्तों से जो भाषा बोलते हों, शिक्षक से नहीं ... इस क्रम में एक कामचलाऊ अनुवाद तो लगातार करना पड़ता है। 'रामायण' और 'महाभारत' के ही जितने संस्करण हर भाषा में उपलब्ध हैं, अनुवाद का ही एक रूप माने जाएँगे।

© NCERT not to be republished

सृजनात्मकता हमें उम्मीद करना सिखाती है और बचाती है अतिरेकों से। शुद्ध बौद्धिकता या कोरी भावुकता का अतिरेक न अच्छा जीवन बरदाश्त करता है, न अच्छा सर्जनात्मक लेखन। इसका आदर्श है हृदय-बुद्धि संवाद। कलम उठानी हो या तलवार, कुदाल या कंप्यूटर का माउस, यह बात हमेशा-हमेशा याद रहे कि **जीवन और लेखन दोनों में अतिरेकों का निषेध है।**

जीवन बस वही नहीं है जो दिखाई देता है। प्रकट के पार भी बहुत-कुछ है। सर्जनात्मक लोग बहुत कल्पनाशील होते हैं। पाँच इंद्रियों के अलावा इनकी छठी इंद्रिय भी काफ़ी सजग होती है, जो बृहत्तर प्रकृति और मानव-मन के सूक्ष्म संकेत जानने में उनकी मदद करती है। लेकिन छठी इंद्रिय भी पाँचों इंद्रियों की सक्रियता से ही सक्रिय होती है, शक्ति पाती है। इसीलिए एक रचनाकार अपनी सभी इंद्रियों को अनवरत सक्रिय तथा जागृत रखता है। कहा भी गया है कि 'जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि' यानी कवि या रचनाकार के लिए कुछ भी गोपन नहीं है। रचनाकार निरंतर देखने, सुनने और सूँघने आदि का अभ्यास भी करते हैं। मामूली चीज़ों में भी सौंदर्य ढूँढ़ लेते हैं।

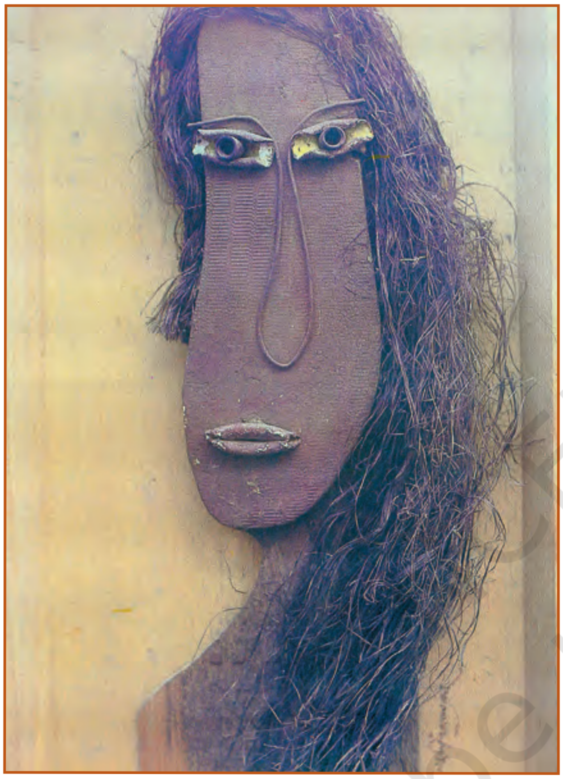

विष्णु चिंचालकर की मोना लिसा, जो एक हवाई चप्पल पर बनी है

इसी अर्थ में साहित्य साधना है और साहित्यकार दृष्टा जिसकी छहों इंद्रियाँ सजग हो सकती हैं, वह रोम-रोम से देख सकता है, सबकी तरफ़ से सोच सकता है, परकाया प्रवेश का मज़ेदार खेल खेल सकता है।

क्या अंधेरे वक्त में भी
गीत गाए जाएँगे?
हाँ, अंधेरे के बारे में भी
गीत गाए जाएँगे।

– बेर्टोल्ट ब्रेष्ट

not to be republished

Understanding Creativity

The ability to appreciate and understand beauty in the world around us can be a creative experience.

1. Group Activity

Let us learn what creativity is.

- *Divide yourselves in groups and create an object using four – five items (such as flower, leaf, pin, waste paper, old cards, cardboard box, straw, twigs etc.).*
- *Give a suitable title to your work.*
- *Each group will present its work to the class.*

2. Group Discussion

- *Creativity is inherent in all of us.*
- *It encompasses beauty.*
- *It involves imagination.*
- *Observation plays a role in creativity.*
- *Knowledge / experience enhances creativity.*

Think of other such points relevant to creativity.

And the pen writes on...

Creativity is the act of turning new and imaginative ideas into reality.

– Rollo May

And as imagination bodies forth
The forms of things unknown,
The poet's pen turns them to shapes
And gives to airy nothing
A local habitation and a name.

– William Shakespeare

You cannot use up creativity. The more you use, the more you have.

– Maya Angelou

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

There is no doubt that creativity is the most important human resource of all. Without creativity, there would be no progress; and we would be forever repeating the same patterns.

– EDWARD DE BONO

Laughter, *a painting by Benode Behari Mukherjee*

Born with a severe eye problem, Benode Behari continued to paint and do murals even after he completely lost his vision.

I. *What is Creativity?*

The world around us pulsates with the energy of shaping and creating anew. Life is a continuous process of creation. Human beings too have this inherent ability to create, and as we become conscious of our creative powers, we start experiencing life around us more keenly and meaningfully. The ability to appreciate beauty in the world around us can be a very creative experience. You must have seen leaves change colour with the seasons — sometimes rich green, sometimes vibrant yellow, earthy brown, glowing orange or even rich red, looking splendid against a deep blue sky. Nature, through its cyclic formations, revitalises our creativity. Each colour, shape and size manifested in nature inspires us to say something in words or present it in some other form. As Henry David Thoreau said, "The world is but a canvas to the imagination."

If we look around we will find that nature renews itself every moment. It's life cycles are artful and beautiful. Humans have always taken inspiration from nature and have given expression to creativity in various ways and in different forms. Watching a flowing river, observing clouds sailing with the wind, looking at snow-covered mountain peaks, admiring undulating sand dunes, seeing waves gently crashing over sand and the abundance of human activities around us can lead to a creative expression in any form.

If we look back at our cultural heritage we find enormous and magnificent examples of human creativity through the centuries.

The Carpenter, *a painting by Nand Lal Bose*

Let us take the example of a potter. A lump of clay takes a beautiful shape in her/his hands. Similarly, a stone takes the shape of a mesmerising sculpture in the hands of a sculptor.

See गतिविधि/Activity 1 on Page 6

Forms of Creativity

Creativity is an umbrella term that encompasses various domains. There is creativity in art, literature and in all forms of human activity. A painter paints, a sculptor sculpts, a dancer depicts moments of life and a writer portrays her/his vision in words.

Sometimes artists express their creativity through different media which compliment each other. For example, the inter-relationship between painting and poetry can be seen in the works of the famous litterateur Mahadevi Verma. There is a commonality in her chosen art forms: one conveys through words and the other through strokes.

Sculptors at work

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल!
युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर!
सौरभ फैला विपुल धूप बन,
मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन;
दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल गल!
मधुर-मधुर मेरे दीपक जल!

– महादेवी वर्मा

गतिविधि 4 ◆ Activity 4

महादेवी वर्मा एक रचनाकार और चित्रकार भी थीं। ऐसे अन्य कलाकारों के बारे में जानकारी हासिल कीजिए जिन्होंने एक से अधिक कलारूपों में अभिव्यक्ति की हो। कक्षा में इस पर चर्चा कीजिए। इसे समन्वित कर प्रदर्शित कीजिए।

Mahadevi Verma was a painter and creative writer. Find out about other creative artists who have expressed themselves through various media. Share your information with the class. Also collate and display it.

Did you know that William Blake is known for his poetry, painting, print-making and engravings? Of all the famous littérateurs of the English language, he is remembered for combining different art forms. His works are now considered seminal in the history of poetry and visual arts.

Given below is an extract from his poem 'The Tyger' along with a picture of the original plate by Blake for the poem.

Tyger! Tyger! burning bright
In the forests of the night,
What immortal hand or eye
Could frame thy fearful symmetry? ...

When the stars threw down their spears,
And watered heaven with their tears,
Did he smile his work to see?
Did he who made the Lamb make thee?

Many art forms flourish in the company of each other. Creative people often set new trends in the arts and in literature. G.D. Rossetti, who was an artist, first painted the picture depicting 'The Blessed Damozel' and later transformed it into poetry as well.

© NCERT not to be republished

The blessed damozel leaned out
From the gold bar of heaven;
Her eyes were deeper than the depth
Of waters stilled at even;
She had three lilies in her hand,
And the stars in her hair were seven.

Creativity in Everyday Life

Creativity is manifest in our daily lives. The simple things in life that bring us joy — picking up stones of different shapes and sizes and colouring them, arranging flowers, doing needle work, laying the table for dinner, decorating one's room, and also the way one dresses are all examples of creativity in everyday life.

Creativity is usually associated with 'newness' and 'originality'. There is, however, another aspect to it that is equally important — 'appropriateness'. The creative work, besides being new and original, should also be appropriate to its context. To achieve this, a familiarity with the chosen form is needed. For example, the artist paints new and original paintings with complete awareness of her/his art. Just as she/he needs to know her/his materials and medium, so does a writer. A natural flair for creative expression needs to be enhanced by 'training' and 'nurturing'.

Creativity in needle work

See गतिविधि/Activity 2 on Page 9

Creativity and Imagination

Imagination is the unique ability to create mental images or pictures. This includes the ability to think of new and interesting ideas and ways of expression. A rich imagination is an essential element for creativity. Creative artists look at things and perceive aspects that are not visible from the outside or the surface. This is not the same as 'to see'. 'To perceive' means to look deeply into something.

Keen observation and imagination make it possible for us to appreciate and have an uncommon perspective of common objects as well as ourselves. For example, neem trees are commonly found and all of us are aware of their medicinal properties, but Kunwar Narain perceived neem flowers in a way that others did not. Read and enjoy the following extract from his poem, 'The Neem Flowers'.

© NCERT not to be republished

When in bloom
The big Neem tree in our courtyard
Used to fill the house
With a bitter-sweet
Medicinal smell.
Tiny white flowers
Like soap-bubbles
Floated in the wind,
One or two would get caught
In Mother's long hair
When she returned from the patio
After watering the Tulsi plant.

So if you have the desire to express yourself, and are endowed with a keen observation and a fertile imagination, you too can express yourself through the medium of words or any other medium of your choice.

Creativity requires synthesis and integration. The transformative process of creativity comprises various stages of which analysis and reflection are important features. Let us take a simple example that all of us are familiar with. All of us enjoy watching a movie or a play. Next time you watch a film or play, spend a little time reflecting on what you have seen and experienced. For instance, there are plays which are 'open-ended'. The playwright does not provide you with a solution to the problem presented in her/his play; you have to find your own solution. This kind of thinking leads to new ideas.

Wide-ranging and diverse experiences also stimulate creativity. These experiences may be purely sensual such as the visual delights provided by the bounteous beauty of nature, the soothing auditory sensation of listening to a musical concert or the song of a cuckoo, or even the intellectual or spiritual joy of hearing a discourse by a scholarly or wise person. Such experiences not only thrill us, but give us a distinct feeling of harmony and ecstasy that exalt us to a higher plane of living. There are also times when we experience deep sadness and despair which are equally unforgettable. It is these powerful experiences which form part of that 'something' which urges us to express. The poet, in the following poem, has given expression to her experience of beauty through the medium of words; someone else perhaps would have expressed the same in some other form.

Beauty

Beauty is seen
In the sunlight,
The trees, the birds,
Corn growing and people working
Or dancing for their harvest.

© NCERT not to be republished

Beauty is heard
In the night,
Wind sighing, rain falling,
Or a singer chanting
Anything in earnest.

Beauty is in yourself.
Good deeds, happy thoughts
That repeat themselves
In your dreams,
In your work,
And even in your rest.

– E-Yeh-Shure

Experiences are transient — they remain for a short time and once they are over, the impact is lost and we only remember them as fading moments. But if the mind is trained to focus and absorb experiences in their entirety, the mind retains them and provides rich content for expression.

Have you ever reflected on what creative writing is all about? It is an art like painting, music, dance, sculpture — a form of self-expression. It is an activity that combines

- a basic desire to create something
- a keen awareness of the world around (that includes nature, people, society etc.)
- a rich imagination
- an ability to use words meaningfully and skilfully
- a fairly good amount of knowledge and information
- a keen sense of observation
- an urge to react to or to represent various stimuli.

The human mind is a master computer. It is amazing how many gigabytes of information it can store and release instantly, as and when required. Have you ever wondered how in a flash while sitting in the classroom, you can travel far back in time and recall all that happened in your childhood? It takes less than one-hundredth of a second to retrieve the stored information. What a marvellous computer the

गतिविधि 5 ◆ **Activity 5**

सृजनात्मकता हमारे चारों तरफ़ बिखरी हुई है लेकिन हम इसे अक्सर महसूस नहीं कर पाते। क्या आपने कभी इस पर विचार किया? कक्षा में चर्चा कीजिए।

There is creativity all around us but most of the time we don't notice it. Have you ever reflected on this? Discuss in class.

© NCERT not to be republished

human brain is — the random access memory (RAM) that it provides is better than any man-made computer! As a creative writer, you need to absorb, reflect, store and recall all that you experience in your daily life.

Though we may read many books, newspapers, magazines, short stories, poems, only a few of them make an impact on us. Similarly, we witness many things happening around us, but only a few of them affect us so deeply that we respond intensely. It does not matter whether our response is positive or negative as long as we are not indifferent to the experience. This response could very well become the subject of any form of creativity.

As a creative writer, you articulate your intense experience and response in the appropriate form — a story or a poem or an article. Images take hold of you and, when you recollect them, and allow the free flow of emotions and experiences, they often choose their own form. Creativity cannot be artificially propelled; it is a flow that cannot be reined in. Nelson Mandela, South Africa's first Black President, in his autobiography, *Long Walk to Freedom*, has given expression to the intense experiences of his life. An extract is given below.

It was only when I began to learn that my boyhood freedom was an illusion, when I discovered as a young man that my freedom had already been taken from me, that I began to hunger for it. At first, as a student, I wanted freedom only for myself, the transitory freedoms of being able to stay out at night, read what I pleased and go where I chose. Later, as a young man in Johannesburg, I yearned for the basic and honourable freedoms of achieving my potential, of earning my keep, of marrying and having a family — the freedom not to be obstructed in a lawful life.

© NCERT not to be republished

When we speak of the forms of creativity it is important to remember that creative individuals exist in each and every field of human activity — from the most humble to the most exalted. The form their creativity takes depends on the field of activity they are pursuing. The flowering of their creativity into greatness, however, depends on what kind of training they acquire and how developed their field of activity is at that particular time.

Creativity through Language

Language is one of the basic tools for creativity. It gives people numerous ways and means to express themselves. Language skills are, therefore, essential for communication and self-expression. Just as a sculptor works on a stone, or a painter works with colours and a magician manipulates the bits of sound, a writer works in a language — the language she/he is born into or is intimate with. She/he creates in the language by bringing about absolutely new or unknown combinations and permutations of

words, giving, as Shakespeare said, "... to airy nothing a local habitation and a name".

Language is both the medium and the material for the writer. Exploiting language for its maximum effect brings out creativity. This involves a fusion of words, gestures, tones, sounds and shapes. Creative language also includes figures of speech such as metaphors, similes, homonyms and alliterations. In the following stanza the poet, Robert Burns, has used two similes to describe his love: 'red, red rose' and 'a melody'.

0, my love is like a red, red rose,
that's newly sprung in June.
0, my love is like a melody,
that's sweetly play'd in tune.

We all know that love can neither be seen nor heard; it is an emotion that is 'felt'. In these lines the repetition of the word 'red' is extremely unusual and effective. By associating a rich colour and a sweet sound with love, the poet, Robert Burns, is not only being original and expanding the meaning of love but also bringing the emotion much closer to the reader.

A good writer is one who has clarity of thought and expression. Let us suppose you want to write about a place that you may have visited. Visual specifics help us in writing about the grandeur of the place. We get these visual specifics by training our eyes — not just to see, but to look into the core of every object in the place. When we describe the place through specifics, we present verbal photography. In the following passage from 'And Thus Flows the Narmada', Royina Grewal makes the visual image of Amarkantak come alive.

At Amarkantak I find a pastoral world of superlative beauty, the colours as unreal as tinted postcards. Wide golden meadows parted by the narrow blue stream of the holy river are framed by deep-shadowed sal forests. The red laterite soil of the road contrasts with many shades of green.
A small bridge, little more than a culvert, spans the Narmada. She is here a little stream barely six feet wide, sparkling blue and tumbling gently westwards. A river in her infancy. It seems impossible that the water she will discharge into the sea equals the combined volume of three great northern rivers — the Ravi, the Beas and the Sutlej.

Similarly, when we write about a song or a musical concert, we must not just hear the music but listen to it, feel it, and express in words its rich and soothing impact on us. For example, in Wordsworth's poem, 'The Solitary Reaper', the poet listens to a song that is sad and plaintive, and wonders whether the girl was singing about unhappy, far-off things, like

© NCERT not to be republished

battles fought long ago; or if it was a song about some natural sorrow, loss, or pain. This is a good example of auditory specifics. Though sight and sound are the two basic senses that give us specifics, other senses like smell, touch and taste too can assist us in embellishing our description.

Behold her, single in the field,
Yon solitary Highland Lass!
Reaping and singing by herself;
Stop here, or gently pass!
Alone she cuts and binds the grain,
And sings a melancholy strain;
O listen! for the Vale profound
Is overflowing with the sound.

To be a creative writer, one has to be sensitive to people, the environment, society and its issues. To achieve this one also has to be a good reader. A good reader reflects on and analyses the work of others, and this is where one's journey as a creative writer begins. A creative writer is one who also observes, reflects, imagines and develops the skill of using the right word at the right place.

See गतिविधि/Activity 3 on Page 11

II. Creative Expression in Writing

Literary Writing

Literary writing is an expression of life through the medium of language which is aesthetically pleasing. It is a vital record of what writers have seen, experienced, thought and felt. In literary writing imagination plays the most important and defining role, accompanied with deep realisation of life's experiences and embellished with creative and artistic features. Literary writing is carefully structured and words are used for their flow, sound, as well as emotive and descriptive qualities. Literary writers also use rhyme, rhythm, alliteration, irony, dialogue and a number of other devices while writing a particular piece of prose, poem or play. A literary writer may express her/his ideas, thoughts, reminiscences and themes in any form.

Read the following dialogue from Moliere's play, *The Bourgeois Gentleman* (Act II, Scene 4), and find out what he says about prose.

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

PHILOSOPHY MASTER : To make the point most terse. What isn't verse is prose, and what's not prose is verse.
MONSIEUR JOURDAIN : And this, the way I speak. What name would be applied to the —
PHILOSOPHY MASTER : The way you speak?
MONSIEUR JOURDAIN : Yes.
PHILOSOPHY MASTER : Prose.
MONSIEUR JOURDAIN : It's prose?
PHILOSOPHY MASTER : Decidedly.
MONSIEUR JOURDAIN : Oh, really? So when I say: "Nicole bring me my slippers and fetch my nightcap," is that prose?
PHILOSOPHY MASTER : Most clearly.
MONSIEUR JOURDAIN : Well, what do you know about that! These forty years now, I've been speaking in prose without knowing it! How grateful am I to you for teaching me that! So, what I wish to tell the gentle lady is: "Fair Marquise, your lovely eyes make me die of love," but in a way that's elegant, and nicely turned.

Prose is everyday thoughts or speech put on paper and contextualised in a formal structure. Literary prose is seen as a combination of formal writing and imagination. It includes essays, novels, short stories, plays and some other literary genres such as biography, autobiography, memoirs, anecdotes and literary journalism.

While prose may lend itself to logical and analytical discourses, poetry may lend itself to experiences of strong emotion, expressed in a lyrical poem or in free verse. When one seeks to celebrate an event or a person, one may resort to the ode.

As a creative writer, you may express yourself in any way depending on your theme and your special talent for poetry, prose or drama. The following extract is from the poem 'Song of Myself' by Walt Whitman which is very close to prose.

A child said What is the grass? fetching it to me with full hands;
How could I answer the child? I do not know what it is any more than he.
I guess it must be the flag of my disposition, out of hopeful green stuff woven.

Verse, on the other hand, is a metrical arrangement of words. Today it is largely used in poetry writing, jingles and slogans.

The following nursery rhyme is written in verse.

© NCERT not to be republished

Starry Nights, *a painting by Van Gogh*

Twinkle, twinkle, little star,
How I wonder what you are!
Up above the world so high,
Like a diamond in the sky!

When the blazing sun is gone,
When he nothing shines upon,
Then you show your little light,
Twinkle, twinkle, all the night.

Then the traveller in the dark,
Thanks you for your tiny spark,
He could not see which way to go,
If you did not twinkle so.

The author, Vikram Seth, has written a full length novel *The Golden Gate* in verse. Here is an extract from it.

John's looks are good. His dress is formal.
His voice is low. His mind is sound.
His appetite for work's abnormal.
A plastic name tag hangs around
His collar like a votive necklace.
Though well-paid, he is far from reckless, ...

Literary writing embodies certain distinguishing characteristics. It is a contemplative, imaginative mode of writing which uses words not just to convey information, but as an art form. Ultimately it is a response to life.

There is a well-known Tamil proverb which says that 'you can ladle the soup out of a pot only if the soup is in it'. The primary requisite for writing is to have 'something' to write about. What is this 'something' and how can it be obtained? This 'something' can be an idea, a thought or an experience, a feeling of joy and excitement, an unforgettable person or incident. If you have 'something' within you, you may seek an outlet to express it either in the form of an essay or a novel or a short story or a poem. However, do not compel yourself to do something for which you do not feel inspired. You can choose the form appropriate to the experience that you want to express.

Media Writing

Today, mass media plays an important and prominent role in our daily lives and its influence is increasing day by day. The media boom has led to a demand for a wide range of communication systems. Information regarding current events, trends, issues and society is collected, analysed, verified and then presented. Its presentation can be through print or electronic

© NCERT not to be republished

Going back to the ancient world, drama in different cultures was probably the first mass-media as it was performed for a large audience and communicated a message as well.

media since media is specifically envisioned and designed to reach a very large audience. It does require creativity to capture the attention of the readers/listeners/viewers. New forms of communication like radio, television, the Internet, mobile phone etc. require an entirely new kind of writing. Earlier cinema had created new modes of writing like screenplays and scripts to meet the demands of the new form. Advertising too requires creative and innovative expressions to capture the interest of the target audience.

The growth of media is driven by technology that has made it possible to reproduce material in large numbers for the public. Contributions are made from the liberal arts, humanities, science and other fields. Thus, media is very closely connected with society and culture.

The focus, however, should not only be on disseminating information by reproducing it in large volumes. The presentation of information should meet certain standards. Media writing has to be objective, straightforward and just. Media plays a crucial role in highlighting the good as well as the wrong in society. The following news item is an example of how media brings us closer to incidents and happenings in our country as well as the world.

गतिविधि 6 ◆ **Activity 6**

दिनोदिन बाघों की घटती संख्या को ध्यान में रखकर अखबार के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

Prepare an advertisement for a newspaper to spread awareness about the depleting number of tigers.

__New Delhi__: Twenty-two children — eighteen boys and four girls — have been selected for the National Bravery Awards 2007. Four will be given posthumously.

The coveted Bharat Award has been bagged by Babita (17) and Amarjeet (15) from Haryana. They saved several of their schoolmates from drowning when their bus fell into the Western Yamuna Canal.

Introducing the children to the media on Friday, Indian Council for Child Welfare president Gita Siddhartha said, "The awards are aimed at giving due recognition to children

© NCERT not to be republished

who distinguish themselves by performing outstanding deeds of bravery and meritorious service and inspire other children to emulate their example. The awardees will receive a medal, a certificate and cash."

The Sanjay Chopra Award has gone to six-year-old Yuktarth Shrivastava of Chhattisgarh. He saved his sister from stray dogs. The Geeta Chopra Award has been conferred posthumously on 14-year-old Lalrempuii of Mizoram.

Source: The Hindu, *19 January 2008*

Media writing is not restricted to journalists or publishing houses. Common citizens can also make contributions to the media as citizen journalists. This allows all of us to contribute towards larger causes such as : a world that is green and serene.

Translation

In knowing and understanding the world around us, translation plays a major role. Since its inception, translation has played the indispensable role of transferring messages across languages and cultural barriers. By doing so it continuously weakens the fences between languages, brings out their similarities and finds points of convergence amongst differences.

We would not have been able to read the works of great writers and thinkers such as Plato, Aristotle, Darwin, Einstein, Varahmir, Kalidasa, Anton Chekhov, Guy de Maupassant, Premchand, Rabindranath Tagore, Subramania Bharti, Qurratulain Haider, Saadat Hasan Manto etc. if their works had not been translated. The aesthetic sensibility of world literature can only be enjoyed through translations. For example, Rabindranath Tagore's *Geetanjali*, for which he won the Nobel Prize, was originally written in Bangla. His work received worldwide recognition because it was translated into English and most languages of the world.

India is a multilingual and multicultural country. Its diversity can be celebrated in the real sense of the word by understanding and appreciating its diverse literatures and this is being done through translation.

In the fields of education, science and technology, mass communication, commerce, tourism etc. the need for translation has increased greatly. Translation allows us to tap the rich knowledge base that exists in different languages and cultures of the world.

In this unit we have discussed some of the features of creative writing. Let us conclude by observing what a classical writer has to say about creative writing in the following *shloka* from *Kavyaprakash* by Acharya Mammat.

© NCERT not to be republished

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे।।
काव्यप्रकाश, प्रथम उल्लास, आचार्य मम्मट

It is explained in Hindi and English below.

आचार्य मम्मट ने *काव्यप्रकाश* में काव्य-लेखन (सृजनात्मक लेखन) की तीन विशेषताओं का उल्लेख किया है– शक्ति अर्थात् प्रतिभा; निपुणता – जो सांसारिक व्यवहार, शास्त्र तथा काव्य (साहित्य) के सूक्ष्म निरीक्षण से प्राप्त होती है; काव्यज्ञ या साहित्यकारों की शिक्षा और साहित्य का निरंतर अभ्यास। इन तीनों गुणों का समन्वित रूप सृजनात्मक रचना के लिए आवश्यक है।

Acharya Mammat in his *Kavyaprakash* has specified three important characteristics of poetry writing (creative writing). These are — poetic genius; a minute study of people, objects, events and of the works of great poets; continuous practice of the teachings (creative writing) of eminent scholars. The above three, conjointly, constitute the source of creative writing.

Do you think the *shloka* summarises this chapter? Discuss.

© NCERT not to be republished

संवाद / Exercises

1. *दुनिया की छोटी से छोटी चीज़ की अहमियत पहचानना रचनात्मक अनुभव हो सकता है।*
   - *अपने अनुभव से कोई दो उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।*
   - *यह भी बताइए कि वह रचनात्मक क्यों है।*

   To understand and appreciate the significance of even the smallest thing in the world can be a creative experience.
   - *Explain with two examples from your experience.*
   - *Also state why you think these are creative.*

2. *कला और साहित्य को सृजनात्मक कहा जाता है, क्यों? दो उदाहरण देकर समझाइए।*
   Art and literature are called creative. Why? Elaborate with two examples.

3. *अभ्यास सृजनात्मकता को निखारता है, कैसे?*
   Practice enriches creativity. How?

4. इस चित्र को देखकर आपके मन में जो भी शीर्षक सूझते हैं, उन्हें लिखिए। (कम से कम पाँच)
Look at the picture and give it (at least five) different titles.

5. अपने परिवार के व्यक्तियों को आप रोज़ काम करते देखते हैं। उनके कामों में आपको कहाँ-कहाँ सृजनात्मकता नज़र आती है? लिखिए।
You observe your family members following a routine everyday. Do you perceive creativity in their work? Describe the same.

6. आपके मोहल्ले में सृजनात्मकता कहाँ नज़र नहीं आती? लिखिए।
Where do you not find creativity in your locality? Explain.

7. सृजनात्मकता आस-पास के वातावरण को सुंदर तो बनाती ही है, उसके साथ ही यह लोगों के जीवन को भी छू जाती है। अपने विचार लिखिए।
Creativity makes the surroundings beautiful and touches the lives of people. Express your views.

8. परीक्षा का आज अंतिम दिन है।
Today is the last day of the exams.

आज विद्यालय लंबी छुट्टी के बाद फिर खुला है।
The school has reopened after a long vacation today.

इस बीच क्या हुआ – अपने संस्मरण लिखिए।
What happened during the intermediate period — write down your reminiscences.

9. 'परिवर्तन सृष्टि का नियम है' – साहित्य और कला इससे अछूते नहीं हैं। इसीलिए समय के साथ-साथ विधाएँ भी नया रूप लेती हैं। उदाहरण देकर समझाइए।
'Change is the law of nature'— art and literature are also part of this. That is why with the passage of time forms of writing also change. Discuss in class.

not to be republished

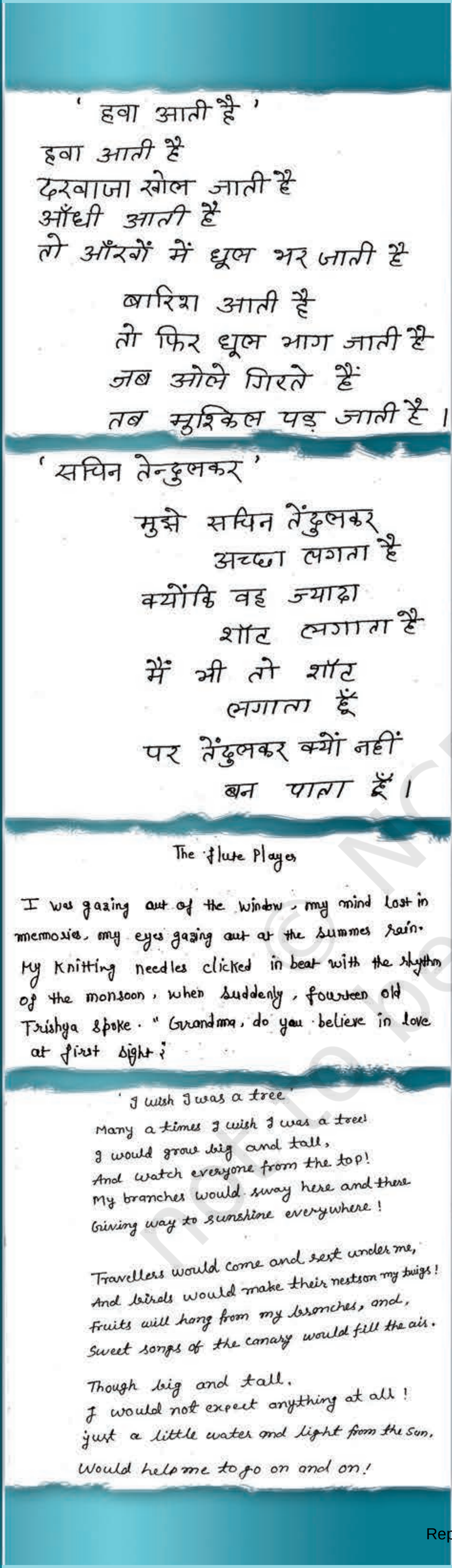

2

साहित्यिक लेखन

Literary Writing

11132CH02

© NCERT
not to be republished

I. साहित्यिक लेखन – एक परिचय

II. साहित्यिक लेखन

- नाटक लेखन
- आत्मकथात्मक लेखन

I. *Literary Writing — an Introduction*

II. *Literary Writing*

- *Writing Drama*
- *Autobiographical Writing*

© NCERT not to be republished

साहित्यिक अभिव्यक्ति से रू-ब-रू

विद्यार्थियों में छिपी रचनात्मकता को आकार देने और उनमें रच सकने का विश्वास पैदा करने के लिए अभिव्यक्ति की आज़ादी ज़रूरी है।

समूह कार्य

1. शब्दों को पहचानें
   - सभी बच्चे आठ-आठ पुराने कार्ड के टुकड़े लेकर आएँगे।
   - अब 'फूल' शब्द ब्लैक-बोर्ड पर लिखा जाएगा।
   - 'फूल' शब्द को लेकर विद्यार्थियों के मन में जो भी विचार आए, उसे कार्ड के एक टुकड़े पर लिखेंगे। उनका विचार एक शब्द, दो शब्द, तीन शब्द या एक वाक्य में हो सकता है।
   - लिखे गए कार्ड सभी से एकत्र कर लिए जाएँगे।
   - फिर से ऊपर वाली गतिविधि दोहराई जाएगी सात नए शब्दों के साथ। अगले शब्द हो सकते हैं – आग, काँटा, जल, झरना, हवा, बरखा आदि।
   - अब एक शब्द से जुड़े कार्ड एक समूह को दिए जाएँगे। वे उन सभी कार्डों को जोड़कर एक कविता लिखेंगे। एक ही शब्द / पंक्ति को एकाधिक बार प्रयुक्त किया जा सकता है। एकाध शब्द को घटाया / बढ़ाया भी जा सकता है।
   - कविताएँ बुलेटिन बोर्ड पर प्रदर्शित की जाएँ।

2. रचनाओं को जानें, सराहें
   - इकाई एक (पृ.3) की शुरुआत के अपने अनुभवों को सब विद्यार्थी शब्दबद्ध करेंगे। किसी भी ढंग से / किसी भी विधा में लिख सकते हैं।
   - प्रत्येक विद्यार्थी अपनी रचना का अंकन स्वयं करें कि वह किसके नज़दीक है कविता, कहानी या संवाद आदि के।
   - अपनी रचना का विश्लेषण करें कि आपने इसी रूप में क्यों लिखा।

कलम रुकती नहीं ...

लेखकवृन्द प्रायः अपने काल के विधाता होते हैं। उनमें अपने देश को, अपने समाज को दुख, अन्याय और मिथ्यावाद से मुक्त कराने की प्रबल आकांक्षा होती है।

यह समय जीवन संग्राम का है। आज हम जो शिक्षित कहलाते हैं, तटस्थ होकर अन्याय होते नहीं देख सकते।

– प्रेमचंद

(प्रेमचंद (सन् 1880–1936) हिंदी कथा-साहित्य के शिखर पुरुष माने जाते हैं। कथा-साहित्य के इस शिखर पुरुष का बचपन अभावों में बीता। स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद पारिवारिक समस्याओं के कारण जैसे-तैसे बी.ए. तक की पढ़ाई की। एम.ए. करना चाहते थे लेकिन आर्थिक अभावों के कारण नौकरी करनी पड़ी। पत्नी शिवरानी देवी के साथ अंग्रेज़ों के खिलाफ़ आंदोलनों में हिस्सा भी लेते रहे। राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ने के बावजूद लेखन कार्य सुचारु रूप से चलता रहा। उनके जीवन का राजनीतिक संघर्ष उनकी रचनाओं में सामाजिक संघर्ष बनकर सामने आया जिसमें जीवन का यथार्थ और आदर्श दोनों था।)

© NCERT not to be republished

पढ़ते या सुनते वक्त कोई भी नज़्म केवल कवि की नहीं रहती; पाठक या श्रोता उसे अपनी बना लेता है; उसको अपनी ज़िंदगी के ब्योरों से जोड़कर पढ़ता है।

–चोला टाकियाँवाला, हरभजन सिंह

I. साहित्यिक लेखन – एक परिचय

अभी तक आप सृजनात्मकता के अलग–अलग पहलुओं से परिचित हो चुके होंगे। उदाहरण के लिए सृजनात्मकता क्या है, वह कैसे हमारे दिन–प्रतिदिन के आचार–व्यवहार और संस्कारों से जुड़ी हुई है और अनायास ही हमारे कार्यकलापों में अभिव्यक्त होती रहती है। यदि सृजनात्मकता को मात्र लेखन तक सीमित करके भी परिभाषित किया जाए तो भी हमें उससे पहले उसके कई दूसरे रूपों को पहचानना होगा। जैसे कि साहित्य से अलग कला रूप और माध्यम अर्थात् चित्रकला, मूर्तिकला, शिल्पकला जैसी ललित कलाएँ और गायन, नृत्य, संगीत और रंगमंच जैसी प्रदर्शन कलाएँ सृजनात्मकता के माध्यम से अपनी एक अलग पहचान बनाती हैं। अब यदि हम लेखन अथवा साहित्य में सृजनात्मकता की बात करें तो वहाँ भी पहले हमारे लिए भाषा में सृजनात्मकता को परिभाषित करना ज़रूरी हो जाता है जिसके विषय में आप पिछली टिप्पणियों में काफ़ी जानकारी प्राप्त कर चुके होंगे।

आदिवासी नृत्य

यहाँ हम मुख्य रूप से लेखन में सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अलग–अलग रूपों पर चर्चा करेंगे। जैसा हमने अभी स्पष्ट किया है कि जिस प्रकार दूसरे कला रूपों और माध्यमों में अभिव्यक्ति के अलग–अलग रूप होते हैं उसी प्रकार लेखन में भी यह अभिव्यक्ति कई रूप और आकार ग्रहण करती है। उदाहरण के लिए – कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, आत्मकथा, रिपोर्ताज, संस्मरण और निबंध इत्यादि। ज़ाहिर है कि यह सूची और भी लंबी हो सकती है लेकिन हम यहाँ कविता, कहानी और नाटक की तीन मुख्य अभिव्यक्तियों की चर्चा करेंगे।

NCERT not to be republished

कविता

इसमें कोई संदेह नहीं कि पूर्व हो या पश्चिम, साहित्य की पहली अभिव्यक्ति के रूप में **कविता** का ही जन्म हुआ। इसीलिए कविता को मानवता की मातृभाषा कहा जाता है। यदि हमारे यहाँ रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की रचना हुई, तो पश्चिम में भी होमर के इलियड एवं ओडेसी जैसे महाकाव्यों से ही साहित्य की शुरुआत मानी जाती है। इसमें कोई दो राय नहीं कि भाषा और लिपि के निश्चित होने के बाद ही इन महाकाव्यों के हमें लिखित रूप मिलने शुरू होते हैं। लेकिन इनकी मौखिक परंपरा बहुत पहले ही शुरू हो चुकी थी जिसमें कभी एक गायक द्वारा, कभी दो गायकों द्वारा और कभी गायकों के समूह द्वारा जगह-जगह घूम-घूमकर इन महाकाव्यों को गा-गाकर सुनाने का प्रचलन शामिल था। देखा जाए तो आज भी भले ही महानगरों में इस परंपरा का लोप हो गया हो, लेकिन हमारे यहाँ अभी भी अलग-अलग राज्यों के क्षेत्रों में अलग-अलग बोलियों और भाषाओं में गा-गाकर सुनाने की ये परंपराएँ विद्यमान हैं। उदाहरण के लिए, पश्चिम बंगाल में *बाउल*, छत्तीसगढ़ में *पंडवानी*, बुंदेलखंड में *आल्हा ऊदल,* राजस्थान में *पाबू जी के पड़* के नाम लिए जा सकते हैं। फिर जैसे-जैसे समाज, सभ्यता और संस्कृति का विकास होता गया और हमारी जीवन पद्धति में भी वैज्ञानिक, औद्योगिक और राजनैतिक क्रांतियों के कारण अभूतपूर्व बदलाव आते चले गए तो उसी अनुपात में कविता ने भी नए-नए रूप ग्रहण किए। महाकाव्य, प्रबंधकाव्य, खंडकाव्य, छंदमय कविता, छंदमुक्त कविता, नयी कविता, अ-कविता—बहुत से उतार-चढ़ाव के बीच से गुज़रकर कविता का वर्तमान स्वरूप हम तक पहुँचा है।

बंगाल का बहुप्रसिद्ध बाउल नृत्य

गतिविधि 7 — Activity 7

फ़ोटोग्राफर यादगार क्षणों को कैमरे में कैद कर लेता है और रचनाकार यह काम शब्दों से करता है। आप अपने यादगार अनुभवों को दर्ज कीजिए। इनमें से किन्हीं दस अनुभवों को अपने पोर्टफ़ोलियो के लिए लिखिए। यह भी बताइए कि यह किस विधा के नज़दीक है और क्यों?

A photographer captures memorable moments with her/his camera and a creative writer does this with words. Maintain a record of your experiences. Write about any ten experiences for your portfolio. Also state which form of writing they are close to and why?

देखें गतिविधि/Activity 10 पृष्ठ 59

© NCERT not to be republished

छंदोबद्ध कविता

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

–शिवमंगल सिंह 'सुमन'

छंद मुक्त कविता

हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाए।
वह हमें आकार देती है।
हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार, सैकतकूल,
सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी हैं।
माँ है वह। है, इसी से हम बने हैं।

– सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

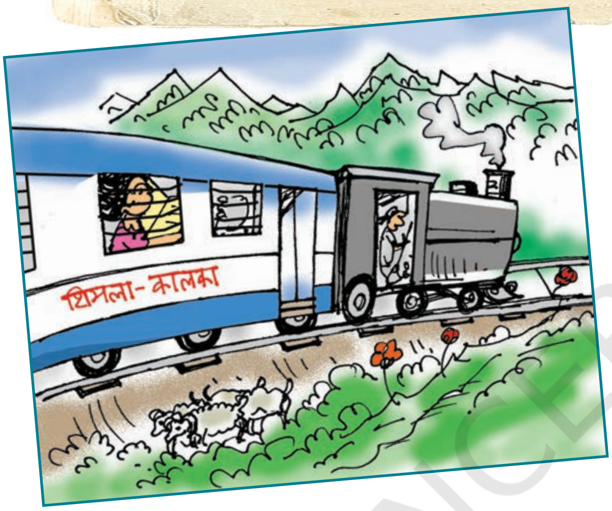

लेकिन एक बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि अंततः कविता को पढ़कर अथवा सुनकर ही अनुभूत किया जा सकता है। जिस प्रकार कवि उसकी रचना अपने एकांत में करता है, उसी प्रकार एक पाठक भी उसे एकांत में पढ़कर उसका रसास्वादन कर सकता है। ज़रूरी नहीं कि उसके लिए नाटक, फ़िल्म अथवा दूसरे प्रदर्शन माध्यमों की तरह एक पूरे समूह की अनिवार्यता हो।

कहानी

इसी से मिलती-जुलती यात्रा **कहानी** ने भी तय की है। लोग रात में अलाव के पास बैठे या तारों के नीचे बैठे अपने ही जैसे लोगों की बात करते थे; जन्म से लेकर मृत्यु तक, जो कुछ उनके जीवन में घटा, उस सबकी बातें; यहीं से कहानी बनी। आप सब ने ऐसी लोक कथाएँ सुनी होंगी – 'एक समय की बात है एक राजा था और एक रानी थी। राजा मर गया और फिर रानी भी मर गई। किस्सा गया वन में, सोचो अपने मन में।' लोग रात-रात भर कहानी सुनाते थे। आज भी राजस्थान में यह परंपरा जीवित है। विजयदान देथा की *बाता राँ फुलवारी* ऐसी ही कहानियाँ हैं। *अलिफ़ लैला, कथा सरितसागर* भी ऐसी ही महान कहानियाँ हैं। एक तरह से तो जब महाकाव्यों को गा-गाकर सुनाने की परंपरा का चलन शुरू हुआ

था, कहानी अपने आप में उसमें शामिल थी। इस बात को यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं कि अंततः कोई भी कला माध्यम क्यों न हो, वह अपने अंतिम रूप और आकार में एक कहानी ही अभिव्यक्त कर रहा होता है। लेकिन आज जिस रूप में हम कहानी की लिखित विधा से परिचित हैं उसका विकास निश्चय ही भाषा के विकास से जुड़ा हुआ है। इसे दूसरे शब्दों में यूँ भी कहा जा सकता है कि जहाँ कविता जैसे माध्यम में आज भी अभिव्यक्ति सहज रूप से चली आती है उसके विपरीत कहानी का संबंध मुख्य रूप से गद्य भाषा से ज़्यादा जुड़ा हुआ है और यह तो एक इतिहास सम्मत तथ्य है कि लिखित गद्य का जन्म काव्य के बाद ही संभव हुआ। क्योंकि जीवन और समाज में धीरे-धीरे जिस तरह की जटिलताओं का समावेश होता गया, उनके भीतर से गद्य जैसे माध्यम का ही जन्म होना था। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला कहते हैं – 'गद्य जीवन संग्राम की भाषा है'। औद्योगीकरण के आने के साथ ही छापेखाने आए। इसके आने से लिखित गद्य का विकास तथा प्रसार हुआ।

'ख्याल परंपरा' के ये चित्र राजस्थान में किस्सागोई के प्राचीन रूप को प्रदर्शित करते हैं

यहाँ इस बात को अवश्य रेखांकित किया जाना चाहिए कि पश्चिम में कहानी के लिए 'शॉर्ट स्टोरी' जैसी संज्ञा प्रचलित है लेकिन हमारे यहाँ वह एक ही शब्द 'कहानी' के नाम से जानी जाती है। जैसा कि उसके रूप और आकार से स्पष्ट है, वह जीवन के किसी एक कालखंड, घटना अथवा स्थिति का चित्र प्रस्तुत करती है और उसी के माध्यम से वह बड़ी से बड़ी बात कहने की कोशिश करती है।

यहीं हम कहानी से मिलते-जुलते लेकिन अपने फैलाव में एक बड़े फ़लक को समेटे हुए दूसरे माध्यम उपन्यास की चर्चा भी कर सकते हैं। जहाँ बाकी सारे माध्यम बहुत पहले से अस्तित्व में आ चुके थे, उपन्यास का जन्म और विकास पिछले लगभग चार सौ सालों में ही हुआ। यद्यपि हमारे यहाँ 'कादम्बरी' संज्ञा के अंतर्गत लंबी कहानियों और पश्चिम में भी 'राबिन हुड' जैसे आख्यानों की परंपरा है, लेकिन जिस विधा को आज हम उपन्यास

के नाम से जानते हैं, वह इनके बाद ही आई। शायद उसके उद्भव का कारण यही है कि जिस प्रकार से हमारा जीवन जटिल से जटिल होता गया है, उसकी अभिव्यक्ति के लिए उपन्यास जैसे विस्तृत माध्यम की ज़रूरत ही थी।

नाटक

शायद यह जानकारी आपको काफ़ी रोचक जान पड़े कि कविता के बाद अभिव्यक्ति के जिस रूप ने अपना विकास किया वह **नाटक** है। यद्यपि यह भी एक सच्चाई है कि नाटक के जन्म में कविता और कहानी के गा–गाकर अथवा वाचन करने की परंपरा का बहुत बड़ा हाथ है, तथापि लिखित रूप में कविता के बाद पहले नाटक आया और कहानी तो बहुत बाद की चीज़ है। इसीलिए पहले–पहल नाटक काव्यात्मक ही लिखे गए। हमारे यहाँ बेशक नाटक की रचना में शुरू से ही गद्य और काव्य का मिश्रण रहा है, लेकिन पश्चिम में तो यूनानी नाटकों से लेकर 18वीं शताब्दी तक लिखे गए मोलियर के नाटकों में भी कविता का ही इस्तेमाल होता रहा। यहाँ तक कि जब 19वीं शताब्दी में यथार्थवादी नाटकों का दौर आया तब भी उनकी भाषा से यही अपेक्षा रही कि वह पोएटिक प्रोज़ अर्थात् काव्यात्मक गद्य में लिखे जाएँ। यहाँ यह प्रश्न सहज ही उठाया जा सकता है कि कविता के बाद अभिव्यक्ति की दूसरी विधा के रूप में नाटक का ही जन्म क्यों हुआ? इसका सीधा–सादा उत्तर यही है कि जिस तरह की संक्षिप्तता, सघनता और व्यंजना की अपेक्षा कविता के शब्दों से की जाती है, ठीक वही अपेक्षाएँ नाटक से भी होती हैं। कविता और नाटक हमेशा अपनी बात सीधे और सपाट शब्दों में अभिव्यक्त करने की बजाय बिंबों और प्रतीकों की दृश्यात्मकता के माध्यम से करते हैं। इसीलिए नाटक को दृश्यकाव्य भी कहा गया है। उदाहरण के लिए –

महंत : बच्चा गोबरधनदास! कह, क्या भिक्षा लाया? गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।

गोबरधनदास : बाबा जी महाराज बड़े माल लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई है।

महंत : देखूँ बच्चा! (मिठाई की झोली अपने सामने रखकर खोलकर देखता है) वाह! वाह! बच्चा! इतनी मिठाई कहाँ से लाया? किस धर्मात्मा से भेंट हुई?

गोबरधनदास : गुरु जी महाराज! सात पैसे भीख में मिले थे, उसी से इतनी मिठाई मोल ली है।

महंत : बच्चा! नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीज़ टके सेर मिलती है, तो मैंने इसकी बात का विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन–सी नगरी है और इसका कौन राजा है जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर ही खाजा है?

© NCERT not to be republished

गोबरधनदास : अंधेर नगरी चौपट्ट राजा,
टके सेर भाजी टके सेर खाजा।
महंत : तो बच्चा! ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके ही सेर खाजा हो।

दोहा

सेत सेत सब एक से, जहाँ कपूर कपास।
ऐसे देस कुदेस में, कबहुँ न कीजै बास।।
कोकिल बायस एक सम, पंडित मूरख एक।
इंद्रायन दाड़िम विषय, जहाँ न नेकु बिवेक।।
बसिए ऐसे देस नहिं, कनक-वृष्टि जो होय।
रहिए तो दुख पाइए, प्रान दीजिए रोय।।

– अंधेर नगरी, भारतेंदु हरिश्चंद्र

'अंधेर नगरी' नाटक का एक दृश्य

क्योंकि यहाँ शब्दों के साथ-साथ उनके भीतर से दृश्य पैदा होने की संभावनाएँ भी भरपूर होती हैं, इसीलिए कहानी की तुलना में नाटक एक वर्णित माध्यम न होकर एक घटित माध्यम कहलाता है अर्थात् यहाँ कहानी की तरह शब्दों के माध्यम से किसी भी स्थिति का वर्णन या चित्रण मात्र नहीं होता वरन् वह अपने पूरे साकार रूप में हमारी आँखों के सामने घटित होती दिखाई देती है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि जहाँ कहानी, उपन्यास, रिपोर्ताज और संस्मरण आदि विधाएँ वर्णित या वर्णनात्मक शैली का प्रयोग करती हैं, वहाँ नाटक में घटित अथवा घटनात्मक क्रियात्मक शैली के बिना काम नहीं चल सकता।

कविता वाचन से नाटक का आरंभ माना जा सकता है। नाटक को 'पंचम वेद' भी कहा जाता है। लव-कुश पहले दो वाचक हैं। फिर वाचन को अभिनय (enactment) में बदला गया। तत्कालीन स्थितियों पर भी व्यंग्य होने लगे। इस तरह कुछ हल्कापन, भद्दापन भी आने लगा। तब भारत में इसे नियंत्रित करने के लिए एक शास्त्र की रचना की गई जिसे नाट्यशास्त्र कहा जाता है। लगभग यहीं से विधिवत् नाटक की परंपरा का आरंभ माना जा सकता है। भास, कालिदास, शूद्रक, हर्ष, विशाखदत्त, भवभूति–ये शास्त्रीय परंपरा के नाटककार हैं। मध्यकाल में लोक-नाट्य परंपराएँ विकसित हुईं। इसके लिए तत्कालीन परिस्थितियाँ ज़िम्मेवार हैं। संस्कृत का लौकिक व्यवहार भी समाप्त हो गया। इसके समानांतर भक्तिकाल में सूफ़ियों-संतों ने लोक-भाषाओं का व्यवहार

© NCERT not to be republished

किया। उस समय जो नाटक आए वे मौखिक परंपरा में आते हैं। ये लोक-नाटक हैं। इनका कोई लिखित शास्त्र नहीं है। ये पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचित होते रहे। हर क्षेत्र की अपनी-अपनी विशेषता व्यक्त होती है और कुछ सामान्य, सर्वनिष्ठ तत्त्व भी हैं; जैसे – गीत, संगीत, नृत्य, सूत्रधार, विदूषक, संगीत मंडली जो रंगमंच पर बैठी रहेगी – ये तत्त्व सबमें मिलेंगे लेकिन उत्तर भारत में गायन पर ज़्यादा ज़ोर है। दक्षिण भारत की शैलियों में नृत्य, गीत, मुद्रा-विधान पर बल है। इसे यक्ष-गान (कर्नाटक की लोक शैली) और नौटंकी के तुलनात्मक अध्ययन से बहुत अच्छी तरह समझा जा सकता है। ये नाटक प्रायः जानी-पहचानी कहानियों पर हैं – रामायण, महाभारत। फिर नौटंकी में अमर सिंह राठौड़ या सुल्ताना डाकू जैसे चरित्र आ गए – ज़िंदगी के मिथक या चरित्र।

यदि हम नाटक और रंगमंच के इतिहास पर एक नज़र डालें, तो हमें नाटकों के अलग-अलग रूप दिखाई पड़ते हैं; जैसे – शास्त्रीय नाटक अर्थात् वे नाटक जो नाट्यशास्त्र में उल्लिखित नियमों और लक्षणों के आधार पर लिखे गए हैं। लगभग एक हज़ार ईस्वी तक चलने वाली शास्त्रीय नाट्य परंपरा के कुछ चिर-परिचित नाटककार हैं – भास, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त और भवभूति। स्वप्नवासवदत्ता, अभिज्ञानशाकुंतलम्, मृच्छकटिकम्, मुद्राराक्षस और उत्तररामचरित इनके सुप्रसिद्ध नाटक हैं। लोक-नाटक यानी वह नाटक जो खासतौर से मध्यकाल में आए, स्थानीय बोलियों और भाषाओं में मौखिक रूप में विकसित हुए। पारसी नाटक जो हमारे देश में ईरान से आकर बसे हुए पारसी व्यापारियों द्वारा चलाई गई नाटक कंपनियों के लिए लिखे गए। यथार्थवादी नाटक जो पश्चिम में 18वीं-19वीं शताब्दी के साहित्य एवं दूसरी कलाओं में आए प्रकृतवाद और यथार्थवाद की परंपरा में मुख्यतः इब्सन के नाटकों से प्रेरित होकर हमारे देश में लिखे और खेले गए। एब्सर्ड अथवा विसंगत नाटक जो दूसरे विश्वयुद्ध के आस-पास उभरे अस्तित्ववादी चिंतन से प्रेरित होकर लिखे गए। हमारे यहाँ इस तरह के नाटक सबसे पहले भुवनेश्वर ने लिखे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सृजनात्मक लेखन जब अभिव्यक्ति के अलग-अलग रूपों में हमारे सामने आता है तो उसकी विविधवर्णी छवियाँ अपने रंग और रूप से हर बार एक नए संसार की सृष्टि करती हैं। तकनीकी और सामाजिक विकास के साथ-साथ लेखन अभिव्यक्ति के अन्य रूपों का विकास हुआ जिनमें आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि विधाएँ आकार लेती रहीं।

© NCERT not to be republished

II. साहित्यिक लेखन

साहित्य को मात्र विधाओं में बाँटकर नहीं देखा जा सकता। कहने के अलग-अलग तरीके होते हैं। रचनात्मक ऊर्जा किसी बंधन को स्वीकार नहीं करती। जब बंधन टूटते हैं तब एक नयी विधा जन्म लेती है। इसीलिए कोई कहानी या उपन्यास कवितामय हो सकती है, जैसे विनोद कुमार शुक्ल का उपन्यास *दीवार में एक खिड़की रहती थी*। कोई कविता कहानीनुमा या नाटकीयता लिए हुए हो सकती है, जैसे धर्मवीर भारती का *अंधायुग*, नागार्जुन का *प्रेत का बयान*, निराला की *राम की शक्ति पूजा* या *तुलसीदास* आदि। तात्पर्य यह है कि *स्मृति और कल्पना के सहारे शब्दों में ढलती रचना सबसे पहले एक अभिव्यक्ति होती है जिसकी पहचान अलग-अलग विधा के रूप में बाद में होती है।*

> *'सोनसी किसी दिशा में नहीं जा रही थी, इसीलिए लगता था दिशाएँ सोनसी के पीछे चली आई थीं। केवल एक दिशा रघुवर प्रसाद के लिए आगे जाते हुए स्वयं सोनसी थी। सामने और आजू-बाजू का दृश्य सोनसी के पीछे आने के लिए अपनी बारी में खड़ा था। सोनसी के आगे निकलते ही उधर की धरती, पेड़-पत्ती सोनसी के पीछे आ जाते'। ...*
>
> *"रघुवर प्रसाद! भूली हुई साइकिल चलाते-चलाते याद आ जाएगी कि तुम्हारी साइकिल है, तब तुम याद की हुई साइकिल चलाते रहना।"*
>
> *—'दीवार में एक खिड़की रहती थी' की कुछ काव्यात्मक पंक्तियाँ,*
> *विनोद कुमार शुक्ल*

आपके सामने पूरी कायनात है जिसे आपकी इंद्रियाँ महसूस कर रही हैं, जिसे आप खुद अपना बनाना चाहते हैं। एक चित्रकार इसमें रंग भरता है, संगीतकार इसे गुनगुनाता है और लय पैदा करता है, एक शिल्पकार इसे आकार देता है। ज़ाहिर है अगर आपका संबंध शब्दों से है तो आप इसे अपना बनाने के लिए शब्दों का सहारा लेंगे।

> *"फिर मैं भी चौताल जोड़ने लगा और प्रसिद्ध कवियों के नाम से गाने लगा। मुझे लगता, ये मैंने नहीं लिखा है, कहीं पहले लिखा गया होगा जो मुझमें उतर आया।"*
>
> *– मेरे साक्षात्कार, त्रिलोचन*
> *(पद्मा सचदेव के साथ साक्षात्कार)*

लेखन की कोई तकनीक नहीं। जैसे ही आप कोई रचना लिखते हैं वह आपकी निजी थाती नहीं रह जाती। वह पूरे संसार की होती है। संसार को रचने में मददगार भी होती है। एक ऐसी दुनिया की पुनर्रचना जिसे कल फिर कोई रचेगा। इसीलिए किसी भी विधा के लेखन की कोई तकनीक नहीं होती। यह ज़रूर है कि हर मौजूदा लेखन जिन कारणों से अलग से पहचाना जाता है उन्हें ध्यान में रखकर लेखन की कुछ बारीकियों की

© NCERT not to be republished

ओर हमारा ध्यान जाता है। उन्हीं के भीतर से नए–नए प्रयोग भी किए जा सकते हैं और हर सचेत लेखक यह करता है। कृष्णा सोबती की *हम हशमत* और *शब्दों के आलोक में* ऐसी ही रचनाएँ हैं।

एक शाम

तारीख – 14 जून, 1975
मुकाम – शीला और भीष्म साहनी का घर
मुअज़्ज़िज़ – जनाब पी.ए. बारान्निकोव
मौजूद दोस्त – श्रीमती और श्रीकांत वर्मा,
श्री और श्रीमती राजेंद्र यादव (मन्नू भंडारी)
श्री और श्रीमती अजितकुमार (स्नेहमयी चौधरी)
श्री निर्मल वर्मा
श्रीमती उषा प्रियंवदा (उषा नेलसन)
श्रीमती मीरा कालिया, श्री रोमी खोसला, श्रीमती कल्पना खोसला, इन दोनों के साहबज़ादे मार्तंड बहादुर और मार्तंड साहिब के निशानेबाज़ मामूजान श्री वरुण साहनी।

दोस्तो, गरमी और उमस के बावजूद भीष्म के घर में यह शाम कुछ इतनी ज़िंदा रही कि हशमत ने ज़रूरी समझा कि इसका ब्योरा आपकी खिदमत में पेश कर दिया जाए।

हाँ, आप लोगों को कहीं मुगालता न हो जाए कि इस पार्टी में हशमत किस हैसियत से थे, सो आपको असलियत बता दें।

– हम हशमत, कृष्णा सोबती

(इसे ध्यान से पढ़िए और देखिए कि शुरुआत किस तरह हुई है। हशमत कौन हो सकता है? कार्यशाला में चर्चा कीजिए।)

कुछ नया लिखने और नया करने की यही चाहत वर्तमान समय में ऐसे लेखकों और लेखन को जन्म दे रही है जिनमें टटकापन है। उदाहरण के लिए – *बहुरूपिया शहर*, *संगतिन यात्रा* ऐसी ही रचनाएँ हैं।

आगे हम कुछ ऐसे साहित्यिक लेखन की बारीकियों की चर्चा करेंगे जिनका संबंध स्मृति से अधिक है।

© NCERT not to be republished

नाटक लेखन

नाटक का तंत्र लेखक को खुद निश्चित करना पड़ता है। नाट्य-तंत्र के नियमों से मार्गदर्शन होगा, लेकिन ऐसा नहीं कि उनके पालन से ही अच्छा नाटक लिखा जा सकता है। विश्व के बहुत से अच्छे नाटक तो इन नियमों के अपवाद ही साबित होंगे। नाटक का माध्यम खून में उतर जाना चाहिए, संज्ञा पर उसकी छाप उठनी चाहिए – तभी कोई लेखक अच्छा नाटक लिख सकता है।

– विजय तेंदुलकर

'जसमा ओडन' नाटक का एक दृश्य

जसमा : राजा, मैं तुझे एक बात पूछना चाहती हूँ।

सिद्धराज : पूछो!

जसमा : राजा, तुझे मिट्टी खोदना आता है?

सिद्धराज : (हँसता है) मिट्टी खोदने के लिए मेरे पास लाखों मजूर हैं।

जसमा : तो क्या तुझे मकान बनाना आता है?

सिद्धराज : मकान बनाने के लिए सैकड़ों कारीगर मेरे पास हैं।

जसमा : तुझे रसोई करनी तो आती ही होगी!

सिद्धराज : (खूब ज़ोर से हँसता है) हमारे महल में सैकड़ों रसोइये हाज़िर हैं।

जसमा : (तुच्छ भाव से) तो फिर राजा, तुझे आता ही क्या है? तेरी नौकरी चली जाए, तेरा यह राज और मुकुट गायब हो जाए तो तुझे भूखों मरना होगा। तुझे नौकर रखने के लिए कोई तैयार नहीं होगा – तुझसे तो हम लोग कहीं ज़्यादा अच्छे हैं। रूखी-सूखी ही सही, अपनी मेहनत की रोटी खाते हैं।

(स्वाभिमानी जसमा सिर ऊँचा किए चाचर के बाहर निकल जाती है, मानो बिजली कौंधती हो। अपमानित राजा आग-बबूला होकर चीखता है।)

मशहूर नाटक 'जसमा ओडन'[1] के इस अंश को ध्यान से पढ़ें, तो पाएँगे कि राजा सिद्धराज और एक आम स्त्री जसमा के बीच हुए ये संवाद यूँ तो कमज़ोर स्त्री और बलवान कामुक

1. 'जसमा ओडन' गुजरात के लोक जीवन से जुड़ी भवाई के 'वेश' की लोकनाट्य रचना है। इस रचना की संपादक शांता गांधी ने लोक कथा के पारंपरिक रूप को बनाए रखते हुए उसमें मध्यकालीन मूल्यों के स्थान पर आज के नए मूल्यों को रखने की कोशिश की है।

© NCERT not to be republished

पुरुष के बीच होने वाले संवाद की तरह हैं, पर इस छोटे से हिस्से में हाथ के काम के महत्त्व को खूबसूरत ढंग से कह दिया गया है। यह लेखक इसलिए कर पाया होगा कि वह एक ऐसी स्त्री को केंद्र में रखकर नाटक लिखना चाहता रहा होगा जो स्वाभिमानी तो हो ही और जो अपनी मेहनत को ही अपना संबल मानती हो। ऐसा करने के लिए वह अपने आस-पास की दुनिया में लोगों की बातचीत सुनता रहा होगा, तभी उस बातचीत को अपने नाटक की कथा-वस्तु में पिरो सका है।

संवादों को अपनी डायरी में दर्ज करते रहना यूँ तो कहानी या किसी भी लेखन में उपयोगी होगा लेकिन नाटक या एकांकी के लिए तो यह सबसे ज़रूरी तैयारी होगी। लेकिन इन्हें नाटक का हिस्सा बनाने में और क्या तैयारी की ज़रूरत होगी, आइए जानते हैं –

लगातार यह प्रश्न सामने आता रहा है कि कविता, कहानी, उपन्यास की तरह नाटक भी साहित्य के अंतर्गत ही आता है फिर इसकी रचना में क्या अंतर ज़रूरी हो जाता है। जब हम इस पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि नाटक अपनी कुछ निजी विशिष्टताओं के कारण बाकी दूसरी विधाओं से बिलकुल अलग हो जाता है। स्वयं हमारी भारतीय परंपरा में नाटक को दृश्यकाव्य की संज्ञा दी गई है। जहाँ से नाटक अपनी निजी एवं विशेष प्रकृति ग्रहण करता है वह है उसका लिखित रूप से दृश्यता की ओर अग्रसर होना। जहाँ साहित्य की अन्य विधाएँ अपने लिखित रूप में ही एक निश्चित और अंतिम रूप को प्राप्त कर लेती हैं, वहीं एक नाटक अपने लिखित रूप में सिर्फ़ एकआयामी ही होता है। जब उस नाटक का मंचन हमारे सामने आता है तब जाकर उसमें संपूर्णता आती है। निष्कर्ष यह है कि साहित्य की दूसरी विधाएँ पढ़ने या फिर सुनने तक की यात्रा तय करती हैं, पर नाटक पढ़ने, सुनने के साथ-साथ देखने के तत्त्व को भी अपने भीतर समेटे हुए है। इसीलिए नाटक लिखते समय नाटककार को नाटक की एक मूल विशेषता को हमेशा याद रखना होता है। वह है – **समय का बंधन**।

नाटककार अगर अपनी रचना को भूतकाल से अथवा किसी और लेखक की रचना को भविष्यकाल से उठाए, इन दोनों ही स्थितियों में उसे नाटक को वर्तमान काल में ही संयोजित करना होता है। यही कारण है कि नाटक के मंच-निर्देश हमेशा वर्तमान काल में लिखे जाते हैं। चाहे काल कोई भी हो, उसे एक विशेष समय में, एक विशेष स्थान पर, वर्तमान काल में ही घटित होना होता है। जैसे किसी ऐतिहासिक या पौराणिक घटना को कहानी, उपन्यास या कविता में उसके मूल संदर्भ में, उसी काल में, रखकर भी उसका पाठ किया जा सकता है, पर नाटक में उसे हमारी आँखों के सामने ही एक बार फिर घटित होना होता है। समय को लेकर एक और तथ्य यह है कि साहित्य की दूसरी विधाओं यानी कहानी, उपन्यास या फिर कविता को हम कभी भी पढ़ते या सुनते हुए बीच में रोक सकते हैं और कुछ समय बाद फिर वहीं से शुरू कर सकते हैं पर नाटक के साथ ऐसा संभव नहीं है।

© NCERT not to be republished

अब दूसरा महत्त्वपूर्ण अंग है – **शब्द**! वैसे यह साहित्य की सभी विधाओं के लिए आवश्यक होता है, पर साहित्य की ही दो विधाओं कविता और नाटक के लिए शब्द का विशेष महत्त्व है। नाटक की दुनिया में शब्द अपनी एक नयी, निजी और अलग अस्मिता ग्रहण करता है। हमारे नाट्यशास्त्र में भी वाचिक अर्थात् बोले जाने वाले शब्द को नाटक का शरीर कहा गया है। कहानी तथा उपन्यास शब्दों के माध्यम से किसी स्थिति, वातावरण या कथानक का वर्णन करते हैं या अधिक से अधिक उसका चित्रण कर पाते हैं। यही कारण है कि इसे वर्णित या फिर नैरेटिव विधा कह दिया जाता है। नाटककार के लिए ज़रूरी है कि वह अधिक से अधिक संक्षिप्त और सांकेतिक भाषा का प्रयोग करे जो अपने आप में वर्णित न होकर क्रियात्मक अधिक हो, उन शब्दों में दृश्य बनाने की भरपूर क्षमता हो।

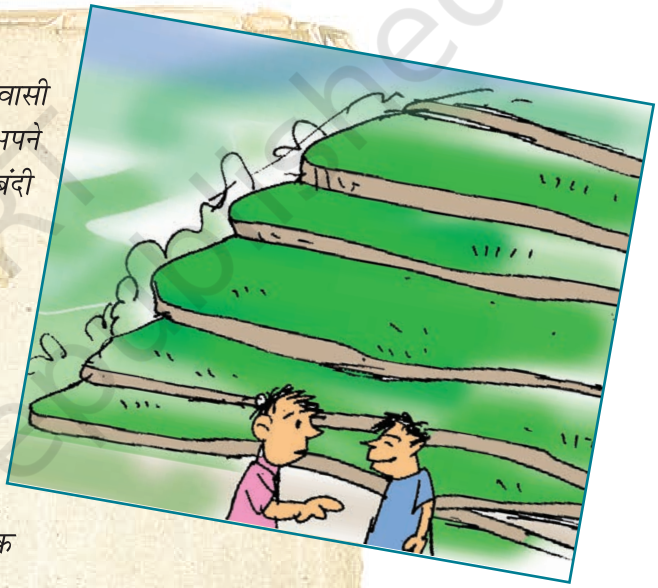

मानस हिरण

(यह नाटक हिमाचल प्रदेश के उत्तरी छोर पर स्थित आदिवासी क्षेत्र स्पीति में लिखा और खेला गया। लेखिका ने अपने शिविर के साथ वहाँ पाया कि वे लोग आपस में तुकबंदी खेलते हैं) जैसे–

यार! क्यों की तूने उसकी पिटाई।

दूसरा कहेगा : क्योंकि वह था मेरे दुश्मन का भाई।

तीसरा पूछेगा : क्या इसीलिए हुई थी लड़ाई।

चौथा बोलेगा : आज फिर करना उसकी धुनाई।

इसीलिए वहाँ के लोगों के लिए नाटक लिखना अधिक चुनौतीपूर्ण था। बहुत शोध और मेहनत के बाद जो नाटक तैयार हुआ, उसके शब्दों और उनके लयात्मक प्रयोग पर ध्यान दीजिए। उसकी शुरुआत इस प्रकार है –

(रंगमंच एक खेत है, जिसके बीच-बीच में नए कटे गेहूँ के ढेर हैं। एक कोने में, पीछे की ओर, बौद्ध गोम्पा (मठ) का स्तूप नज़र आ रहा है। चार-पाँच लोग जल्दी-जल्दी खेत से अनाज के ढेर उठाकर बाँध रहे हैं।)

तनडुप : जल्दी कर टशी। इस साल बर्फ़ जल्दी पड़ने की उम्मीद है।

टशी : हाँ, ठंड तो अचानक बढ़ गई है। पर क्या करें, अभी तो आधे खेतों की भी कटाई नहीं हुई।

तनडुप : बर्फ़ पड़ गई तो सब गया समझो।

टशी : सोनम कहाँ है? सुबह से दिखाई नहीं दिया।

तनडुप : वो विदेशी आया हुआ है ना। बस उसी के साथ घूम रहा होगा, दुमछल्ला बना।

टशी : इतना नहीं कि ज़रा हाथ बँटा दे तो कटाई जल्दी हो जाए।

तनडुप : उसे अमीर बनने के सपने देखने से फ़ुर्सत कहाँ है?

© NCERT not to be republished

दोरजे : इसीलिए तो विदेशियों के साथ लगा रहता है, इस उम्मीद में कि कोई अपने संग विदेश ले जाए।

(बाहर से तेनजिंग अंदर आती है। उसके हाथ में बँधा हुआ खाना है जिसे वो ज़मीन पर बैठकर खोलती है।)

तेनज़िंग : टशी, दोरजे, तनडुप आओ, खाना खा लो!

टशी : तू खा ले। हम पूरा खेत काटने के बाद खाएँगे।

तेनजिंग : माँ ने कहा है गरम-गरम खा लेना। आज वैसे ही ठंड बहुत है।

दोरजे : अच्छा ला, जल्दी दे दे। आज तो हवा भी बहुत है।

(तीनों बैठकर खाते हैं।)

– नूर ज़हीर

'किताबों में हलचल' नाटक का एक दृश्य

एक नाटक के लिए ज़रूरी होता है – **उसका कथ्य**। यह बात हमेशा ध्यान में होनी चाहिए कि नाटक को मंच पर मंचित होना है। यही कारण है कि एक नाटककार को रचनाकार के साथ-साथ एक कुशल संपादक भी होना चाहिए। पहले तो घटनाओं, स्थितियों अथवा दृश्यों का चुनाव, फिर उन्हें किस क्रम में रखा जाए कि वे शून्य से शिखर की तरफ़ विकास की दिशा में आगे बढ़ें, यह कला उसे अवश्य आनी चाहिए।

नाटक का सबसे ज़रूरी और सशक्त माध्यम है – **संवाद**। दूसरी किसी विधा के लिए यह कतई ज़रूरी नहीं कि वह संवादों का सहारा ले, लेकिन नाटक का तो उसके बिना काम ही नहीं चल सकता। नाटक के लिए तनाव, उत्सुकता, रहस्य, रोमांच और अंत में उपसंहार जैसे तत्त्व अनिवार्य हैं। इसके लिए आपस में विरोधी विचारधाराओं का संवाद ज़रूरी होता है। यही कारण है कि नायक-प्रतिनायक, सूत्रधार की परिकल्पना भारतीय या पाश्चात्य नाट्यशास्त्र में आरंभ से ही की गई थी।

वह कौन-सी चीज़ है जो एक सशक्त नाटक को एक कमज़ोर नाटक से अलग करती है। वह है – संवादों का अपने आप में वर्णित या चित्रित न होकर क्रियात्मक होना, दृश्यात्मक होना और लिखे तथा बोले जाने वाले संवादों से भी ज़्यादा उन संवादों के पीछे निहित अनलिखे एवं अनकहे संवादों की ओर ले जाना। उदाहरण के लिए, हैमलेट का यह प्रसिद्ध संवाद **टू बी और नॉट टू बी** या स्कंदगुप्त का **अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है** – अनगिनत संभावनाओं को उजागर कर देता है।

© not to be republished

नाटक स्वयं में एक जीवंत माध्यम है। कोई भी दो चरित्र जब भी आपस में मिलते हैं, तो विचारों के आदान-प्रदान में टकराहट पैदा होना स्वाभाविक है। यही कारण है कि रंगमंच प्रतिरोध का सबसे सशक्त माध्यम है। वह कभी भी यथास्थिति को स्वीकार कर ही नहीं सकता। इस कारण उसमें अस्वीकार की स्थिति भी बराबर बनी रहती है। उदाहरण के लिए, हम अंधायुग, तुगलक आदि नाटकों को देख सकते हैं। शुरुआत में दिए हुए जसमा ओडन को भी देखा जा सकता है। जसमा का अस्वीकार – राजा के प्रति।

नाटक लिखते समय यह भी अत्यंत ज़रूरी है कि नाटक में जो चरित्र प्रस्तुत किए जाएँ, वे सपाट, सतही और टाइप न हो। जिस प्रकार हम अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में किसी भी व्यक्ति को सिर्फ़ अच्छा या बुरा नहीं कह सकते, उसी तरह नाटक की कहानी में भी चरित्रों के विकास में इस बात का ध्यान रखा जाए कि वे स्थितियों के अनुसार अपनी क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करते चलें। हमें याद रखना चाहिए कि इन शब्दों को बोलने वाले पात्र मंच पर सचमुच के हाड़-माँस से युक्त जीवंत प्राणी होते हैं न कि कविता, कहानी और उपन्यास में उपस्थित रहने वाले शाब्दिक चरित्र। अतः संवाद जितने ज़्यादा सहज और स्वाभाविक होंगे, उतना ही दर्शक के मर्म को छुएँगे। यहाँ सहज-स्वाभाविक होने से आशय भाषा की सरलता से कदापि नहीं है। संवाद चाहे कितने भी तत्सम और क्लिष्ट भाषा में क्यों न लिखे गए हों, स्थिति तथा परिवेश की माँग के अनुसार यदि वे स्वाभाविक जान पड़ते हैं, तब उनके दर्शकों तक संप्रेषित होने में कोई मुश्किल नहीं होगी। इस दृष्टि से हम जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश, जगदीश चंद्र माथुर, विजय तेंदुलकर, गिरीश कर्नाड, व.व. कारंत, धर्मवीर भारती और सुरेंद्र वर्मा जैसे नाटककारों की भाषा में यह विशेषता देख सकते हैं। इसी के साथ जुड़ा दूसरा सवाल उस शिल्प और संरचना का भी है जिसके भीतर से नाटककार अपने कथ्य को व्यंजित करता है।

आज हिंदी के नाटककारों के पास शिल्प की दृष्टि से कई तरह के विकल्प मौजूद हैं। सबसे पहले तो स्वप्नवासवदत्ता,

गतिविधि 8 — Activity 8

दिए गए चित्रों को देखकर संवाद लिखिए।
Write dialogues based on the pictures given above.

© NCERT not to be republished

देखें गतिविधि/Activity 11 पृष्ठ 71

अभिज्ञानशाकुंतलम्, मृच्छकटिकम् और उत्तर रामचरित जैसे संस्कृत नाटकों का ढाँचा है जिसे हम पारिभाषिक शब्दावली में शास्त्रीय कहते हैं। एक लोक नाटकों का फ़ॉर्म है जिसमें कोई लिखित आलेख नहीं है और सब कुछ मौखिक रचना प्रक्रिया के माध्यम से घटित होता है। पारसी नाटकों का अपना एक अलग शिल्प है जो शेरो-शायरी, गीत-संगीत और अतिरंजित संवादों पर आधारित होता है। इब्सन की तर्ज़ पर यथार्थवादी नाटकों का अपना एक मुहावरा है जो मुख्यतः गद्य पर आश्रित है। इनके अतिरिक्त नुक्कड़ नाटक की अपनी अलग अहमियत है। यह नाटककार को तय करना है कि वह इनमें से किसी एक तरह के शिल्प का चुनाव करे, अलग-अलग विकल्पों के मिश्रण से अपनी एक नयी शैली तैयार करे अथवा इन सबको छोड़कर एक बिलकुल नया शिल्प लेकर प्रस्तुत हो। प्रायः कहा जाता है कि कथ्य अपना शिल्प स्वयं निर्धारित कर लेता है और यही सही स्थिति है। लेकिन जब-जब नाटककार ने पहले शिल्प या संरचना को निश्चित कर लिया और फिर उसमें किसी कथ्य कहानी को फिट करना चाहा तो ऐसी कोशिशें बहुत दूर तक कामयाब नहीं हुईं।

आत्मकथात्मक लेखन

ऐसे भी लोग हैं, जिनकी अतीत-संबंधी स्मृतियाँ बड़ी दुःखद और कटु हैं। ऐसे लोग वर्तमान और भविष्य की भी इसी रूप में कल्पना करते हैं। ऐसे भी लोग हैं, जिनकी अतीत-संबंधी स्मृतियाँ बड़ी मधुर और सुखद हैं। उनकी कल्पना में वर्तमान और भविष्य भी मधुर होते हैं। तीसरी किस्म के लोगों की स्मृतियाँ सुखद और दुःखद, मधुर और कटु भी होती हैं। वर्तमान और भविष्य-संबंधी उनके विचारों में विभिन्न भावनाएँ, स्वर-लहरियाँ और रंग घुले-मिले रहते हैं। मैं ऐसे ही लोगों में से हूँ।

– मेरा दागिस्तान (आत्मकथात्मक रचना), रसूल हमज़ातोव

प्रेमचंद ने कहा था कि कहानियाँ तो चारों तरफ़ हवा में बिखरी पड़ी हैं, सवाल उन्हें पकड़ने का है। ऐसा इसलिए है कि हर व्यक्ति और हर वस्तु का अपना-अपना जीवन होता है, बाकी सबसे अलग। उसका एक आरंभ, विकास और फिर अंत भी होता है। सबकी कोई न कोई कहानी होती है। जिस तरह एक व्यक्ति दूसरे से हू-ब-हू नहीं मिलता, वैसे ही उसकी अपनी जीवन-कथा भी दूसरे से नहीं मिलती। जो बड़े रचनाकार हैं वे एक कथा में अनेक लोगों की कथा ढूँढ़ लेते हैं। 'गोदान' केवल होरी की या 'हैमलेट' केवल हैमलेट की कथा नहीं रह जाती, सबकी कथा बन जाती है।

'ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो अपनी कथा न लिख सके। मेरी आत्मकथा मेरे जीवन की कथा है। यह केवल मेरी कथा है। और जहाँ तक मेरा जीवन दूसरों के जीवन को छूता है

© NCERT not to be republished

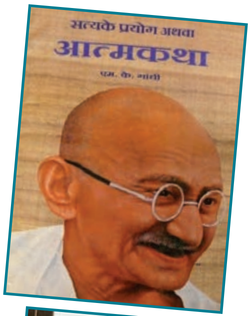

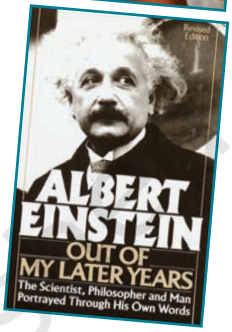

वहाँ तक यह दूसरों की भी कथा है। और जहाँ तक मेरा जीवन एक समय, समाज या समूह का प्रतिनिधि जीवन होता है वहाँ तक वह सबकी कथा बन जाती है।' महात्मा गांधी की आत्मकथा स्वयं उनके जीवन की कथा तो है ही, साथ-साथ वह समस्त देश तथा विश्व की भी कथा है। अपने समय के नेतृत्वकारी स्त्री-पुरुषों की आत्मकथा ज्ञानवर्द्धक तथा प्रेरणादायी होती है। आइंसटीन, चार्ली चैपलिन, ध्यानचंद, कुमार गंधर्व, वल्लतोल तथा आंबेडकर की जीवन-कथा हम सबके लिए महत्त्वपूर्ण हो सकती है। मुक्तिबोध ने कहा था –

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
...प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य-पीड़ा है

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन कथा में बदलने के योग्य है। यह जीवन है ही इसलिए कि उसे कथा में बदला जाए। आप कलम हाथ में लेते हैं और कागज़ पर कुछ लिखने लगते हैं। सबसे अच्छा है अपने ही जीवन से शुरू किया जाए। अपने बारे में, बचपन से लेकर अब तक जो-जो हुआ वह सब। यही तो आत्मकथा है। आत्मकथा की पहली शर्त है साफ़-साफ़ सच-सच कहना।

इसके लिए भी अभ्यास ज़रूरी है। नैतिक साहस ज़रूरी है। अगर पूरी आत्मकथा न भी लिखी जाए तो संस्मरण या डायरी लिखी जा सकती है। कई दिनों-वर्षों की डायरी आत्मकथा बन जाती है। गांधी जी ने डायरी के बारे में कहा था –

डायरी का विचार करके देखता हूँ तो मेरे लिए यह एक अमूल्य वस्तु हो गई है। जो सत्य की आराधना करता है, उसके लिए यह पहरेदार का काम करती है, क्योंकि इसमें सत्य ही लिखना है। ... एक बार नियमित लिखना शुरू करने पर हमें स्वयं ही सूझने लगता है कि क्या और कैसे लिखना है। हाँ, एक शर्त है। हमें सच्चा बनना होगा। इसके अभाव में डायरी खोटे सिक्के-सी हो जाती है। पर यदि इसमें सत्य हो तो यह सोने की मुहर से भी कीमती हो जाती है।

– हरिजन बंधु, 20.1.1933

ज़रूरत

प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण लोग अपने बारे में लिखते हैं। लेकिन जो साधारण लोग हैं उनका जीवन भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं होता। कहानी-कविता लिखने के पहले कई बार आत्मकथा रास्ता सुझाती है। इंग्लैंड में मज़दूर आंदोलन के बाद उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में अनेक मज़दूरों ने आत्मकथाएँ लिखी थीं। अपने देश में भी हाल के

© NCERT not to be republished

वर्षों में दलित-वंचित लोगों ने आत्मकथाएँ लिखी हैं जो केवल उनकी अपनी कहानी भर नहीं है बल्कि हमारे समाज की भी कहानी है। कहानी, उपन्यास, नाटक या कविता में सारा कुछ नहीं आ सकता और न ही उपन्यास या कविता सबकी कथा बन सकती है। इसीलिए आत्मकथा की ज़रूरत होती है। आत्मकथा का लिखा जाना यह साबित करता है कि हर मनुष्य महत्त्वपूर्ण है और यह भी कि हर मनुष्य रचना भी कर सकता है।

तैयारी

आत्मकथा लिखने के लिए अलग से किसी तैयारी की ज़रूरत भी नहीं होती। बस भाषा बोलनी-लिखनी आनी चाहिए। सच्चाई और सरलता आत्मकथा के विशेष गुण हैं, फिर आत्मकथा चाहे ध्यानचंद की हो, दया पवार की या सुनील गावस्कर की। यहाँ प्रख्यात वैज्ञानिक स्टीफेन हॉकिंग के अपने जीवन के बारे में लिखे गए इस अंश को देखा जाए—

I was born on 8 January, 1942, exactly three hundred years after the death of Galileo...
My father came from Yorkshire. His grandfather, my great-grandfather, had been a wealthy farmer...
My mother was born in Glasgow, the second child of seven of a family doctor...
We lived in Highgate, north London. My sister Mary was born eighteen months after me...
My earliest memory is of standing in the nursery of Byron House in Highgate, and crying my head off. All around me, children were playing with what seemed like wonderful toys. I wanted to join in, but I was only two-and-a-half, and this was the first time I had been left with people I didn't know...

यहाँ स्टीफेन हॉकिंग ढाई साल की उम्र से अपने जीवन को याद करना शुरू करते हैं। यह घटना है रोने की। इसी तरह से हर कोई अपने बारे में लिख सकता है। इस तरह याद करने की, ब्योरों तथा विवरणों को एकत्र करने की आदत भी पड़ती है जो एक रचनाकार के लिए बहुत ज़रूरी है। एक रचनाकार जो कुछ भी लिखता है उसमें उसकी याददाश्त या स्मृति का बड़ा योगदान होता है। कहा जाता है कि रचनाकार की हर कथा में उसकी आत्मकथा भी होती है।

यहाँ हम कुछ अन्य आत्मकथात्मक लेखन (संस्मरण, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत, डायरी, पत्र आदि) पर चर्चा करेंगे।

याद कीजिए आपने जो पहला पहाड़ देखा वह कैसा था? सोचिए तो आपने पहली बार नदी देखी तो कैसा लगा था? आज से दस साल पहले का अपनी माँ का चेहरा याद कीजिए, उसके साथ बिताए उन दिनों में अपने आपको खोजिए। अपने साथियों की अच्छी-बुरी बातें, छूटा हुआ स्कूल, गाँव, शहर अपनी स्मृति में ले आइए और इसे लिखने का प्रयास कीजिए।

© NCERT not to be republished

अगर आप ऐसा करेंगे तो जो रचना होगी वह कैसी होगी? शायद कुछ-कुछ ऐसी –

'बाबा के भय और पढ़ाई-लिखाई छूट जाने की चिंता से मुक्ति पाने के लिए मैं मा (माँ) के साथ बिताए दिन याद करने लगती और सोचती कि किसी तरह मा की माया-ममता-स्नेह-सुख फिर मिल जाता तो बड़े से बड़े कष्ट को भी मैं कष्ट न समझती। मा कितना चाहती थी कि मैं पढ़-लिख जाऊँ! उसका दबाव न होता तो जितना पढ़ सकी उतना पढ़ने का भी कोई अवसर नहीं देता। पढ़ना-लिखना कितनी मधुर चीज़ है यह स्कूल में कुछ समय बिताने के बाद अब समझ में आया है। पढ़ाई की बात से याद आता है कि इतिहास मेरा प्रिय विषय था। इतिहास में मुझे जो रस मिलता था वह किसी और विषय में नहीं और शायद इसी कारण इतिहास के मास्टर मुझे बहुत चाहते थे। वह हमें युद्धों के बारे में और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नवाब सिराजुद्दौला और न जाने कितने और राजा-रानियों नवाब-बादशाहों के बारे में बताते थे। मेरा मन होता उन सभी से मिलूँ, बातें करूँ जिनकी कथाएँ वह सुनाते। इतिहास पढ़ते-पढ़ते मुझे मा की बहुत याद आती। ऐसा क्यों होता था, यह मैं नहीं जानती। हो सकता है इसके पीछे वे बातें रही हों जो मा के चले जाने पर अड़ोस-पड़ोस के लोग हमारे बारे में बात करते थे। जैसे कि यह कैसा राजा-महाराजाओं जैसा सुखी परिवार था, बस एक व्यक्ति के चले जाने से तछ-नछ हो गया! होने को तो यह भी हो सकता है कि रानी लक्ष्मीबाई के, घोड़े पर अपने लड़के को बिठा, युद्ध के लिए निकल पड़ने की बात से मुझे वह दिन याद आ जाता रहा हो जब मेरे सबसे छोटे भाई को ले मा घर से निकल गई थी।'

–आलो-आँधारि, आत्मकथा, बेबी हालदार

देखें गतिविधि/Activity 12 पृष्ठ 75

गतिविधि 9 ◆ Activity 9

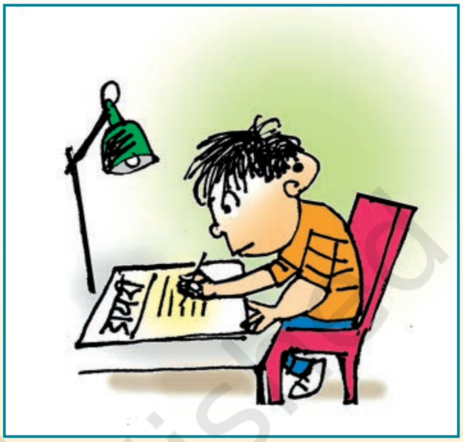

अपने परिवार, विद्यालय, दोस्त, खेल के मैदान का अवलोकन करते हुए एक महीने तक डायरी लिखिए। पन्नों को पलटकर देखिए कि यह आपको खुद को और आस-पास की दुनिया को समझने में कैसे मदद करती है।

Maintain a diary for a month based on your observations about your family, school, friends, playground etc. Analyse how this record helped you to understand yourself and the world around you.

© NCERT not to be republished

'आलो–आँधारि' बेबी की आत्मकथा के साथ–साथ एक ऐसी दुनिया की कहानी है जो हमारे साथ है, पड़ोस में है, लेकिन अनदेखी है।

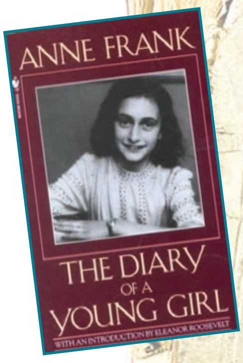

'मंगलवार की सुबह हमने पिछली रात के छोड़े हुए काम को पूरा करना शुरू किया। बेप और मिएप हमारे राशन कूपनों से शॉपिंग करने गईं और पापा ने ब्लैक आउट वाले परदे लगाए। मैंने रसोई का फ़र्श रगड़–रगड़ कर साफ़ किया। सवेरे से रात तक हम लगातार काम में जुटे रहे।

बुधवार तक तो मुझे यह सोचने की फ़ुर्सत ही नहीं मिली कि मेरी ज़िंदगी में कितना बड़ा परिवर्तन आ चुका है। अब गुप्त एनेक्सी में आने के बाद पहली बार मुझे थोड़ी फ़ुर्सत मिली कि तुम्हें बताऊँ कि मेरी ज़िंदगी में क्या हो चुका है और क्या होने जा रहा है।'

– ऐन फ्रैंक की डायरी का एक अंश

ऐन फ्रैंक (1929–1945) जर्मनी में पैदा हुई एक यहूदी लड़की थी। जर्मनी में जब नाज़ियों की सत्ता कायम हुई और यहूदियों पर अत्याचार शुरू हुए, तो वह परिवार समेत एम्सटर्डम चली गई। फिर नीदरलैंड पर भी नाज़ियों का कब्ज़ा हुआ और यहूदियों पर अत्याचार का दौर वहाँ भी शुरू हो गया। ऐसी स्थिति में जुलाई 1942 में उसका परिवार एक दफ़्तर के गुप्त कमरे में छुप कर रहने लगा। जहाँ दो साल बिताने पर वे नाज़ियों की पकड़ में आ गए और उन्हें यातना कैंप में पहुँचा दिया गया। इसी यातना कैंप में ऐन ने यह डायरी लिखी जिसका प्रकाशन उसकी मृत्यु के बाद द *डायरी ऑफ अ यंग गर्ल* (1947) के नाम से हुआ। यह बीसवीं सदी की सबसे ज़्यादा पढ़ी गई पुस्तकों में से है। इल्या इहरनबुर्ग ने एक वाक्य में इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता को रेखांकित किया है – "यह साठ लाख लोगों की तरफ़ से बोलने वाली एक आवाज़ है, एक ऐसी आवाज़ जो किसी संत या कवि की नहीं, बल्कि एक साधारण लड़की की है।"

'भारत के पैगोडा, मिस्र के पिरामिड, इटली के बाज़ीलिक मुझे माफ़ करें, अमरीका के राजमार्ग, पेरिस के बुलवार, इंग्लैंड के पार्क और स्विट्ज़रलैंड के पहाड़ मुझे क्षमा करें, पोलैंड, जापान और रोम की औरतों से मैं माफ़ी चाहता हूँ – मैं तुम सब पर मुग्ध हुआ, मगर मेरा दिल चैन से धड़कता रहा। अगर उसकी धड़कन बढ़ी भी, तो इतनी नहीं कि गला सूख जाता और सिर चकराने लगता। पर अब जब मैंने चट्टान के दामन में बसे हुए इन सत्तर घरों को फिर से देखा है, तो मेरा दिल ऐसे क्यों उछल रहा है कि पसलियों में दर्द होने लगा है, आँखों के सामने अँधेरा छा गया है और सिर ऐसे चकराने लगा है मानो मैं बीमार या नशे में धुत्त होऊँ!

© NCERT not to be republished

क्या दागिस्तान का छोटा-सा गाँव वेनिस काहिरा या कलकत्ते से बढ़कर है? क्या लकड़ियों का गट्ठा उठाए पगडंडी पर जाने वाली अवार औरत स्कैंडिनेविया की ऊँचे कद और सुनहरे बालों वाली सुंदरी से बढ़कर है?'

'त्सादा! मैं तुम्हारे खेतों में घूम रहा हूँ और सुबह की ठंडी शबनम मेरे थके हुए पैरों को धो रही है। पहाड़ी नदियों से भी नहीं, चश्मों के पानी से मैं अपना मुँह धोता हूँ। कहा जाता है कि अगर पीना ही है, तो चश्मे से पियो। यह भी कहा जाता है – मेरे पिता जी ऐसा कहा करते थे – कि मर्द केवल दो ही हालतों में घुटनों के बल खड़ा हो सकता है – चश्मे से पानी पीने और फूल तोड़ने के लिए। त्सादा, तुम मेरे लिए चश्मे के समान हो। मैं घुटनों के बल होकर तुमसे अपनी प्यास बुझाता हूँ।

मैं एक पत्थर देखता हूँ और उस पर मुझे मानो पारदर्शी-सी एक छाया नज़र आती है। यह मैं खुद ही हूँ, जैसा कि तीस साल पहले था। किसी कारण पड़ोस के गाँव में गया था। शायद पिता जी ने मुझे भेजा था।

हर कदम पर खुद अपने से ही, अपने बचपन, अपने वसंतों, अपनी बरसातों, फूलों, पतझर में झड़े हुए पत्तों से मेरी मुलाकात होती है।'

– मेरा दागिस्तान, रसूल हमज़ातोव

यह पुस्तक एक आत्मकथात्मक रचना है। अवार भाषा में लिखी गई और दुनिया भर में सराही गई जन कवि रसूल हमज़ातोव की यह रचना दागिस्तान के बहाने किसी भी देश के व्यक्ति के मातृभूमि से नितांत आत्मीय संबंधों की रचना है।

'मैंने तुम्हारे पोस्टकार्ड को कई बार उल्टा लटकाया और थपथपाया तो वह गिड़गिड़ाया और बोला, "मैं क्या करूँ? डाक्टर ने माना ही नहीं। मैंने तो आसमान की तरह फैलकर अपने को उनको समर्पित कर दिया, पर उन्होंने मुझे अपने वाक्यों से वंचित ही रखा और रोते-रोते, बधाई बाँधकर, पोस्ट-बॉक्स के अँधेरे घर में झोंक दिया। मैं मजबूर था। आया तो आप न मिले। रोता पड़ा रहा। खैर आपने स्नेह दिया। यही क्या कम है। कृतज्ञ हूँ। पर उल्टा लटकाने और थपथपाने से दिमाग में बल पड़ गया।"

– 'मित्र संवाद', केदारनाथ अग्रवाल का पत्र राम विलास शर्मा के नाम

साहित्यकारों के पत्र साहित्य को समझने में मददगार होते हैं। उसी तरह से जैसे मिर्ज़ा गालिब के पत्र खड़ी बोली हिंदी और तत्कालीन भारत के इतिहास की समझ विकसित करने में समर्थ हैं।

'बहुत बरस हुए, मैंने शेक्सपियर के 'ओथेलो' में पढ़ा था कि जिस आदमी की आत्मा संगीतविहीन है, जिसे मीठे सुर झकझोरते नहीं, वही धोखाधड़ी, षड्यंत्र

© NCERT not to be republished

कर सकता है, द्रोह कमा सकता है; वह आदमी काबिले-एतबार नहीं। जब मैंने ये पंक्तियाँ पढ़ी थीं तो मैं कितने समय तक ग्वालमंडी लाहौरवाली अपनी गली, अपने छोटे-से हारमोनियम और गली-मुहल्ले में अपनी परवानगी (बड़ा होने) के बारे में सोचता रहता। ज़ाहिर है इस हारमोनियम ने मेरी काव्य-रचना को ही नहीं, मेरी काव्यशास्त्रीय चेतना को भी प्रभावित किया है।'

– चोला टाकियाँवाला, हरभजन सिंह

'चोला टाकियाँवाला' में हरभजन सिंह ने अपनी साहित्यिक आत्मकथा लिखी है। चोला टाकियाँवाला के इस अंश में हरभजन सिंह को कोई पढ़ी हुई रचना याद आती है जो उनके खुद के साहित्यिक विकास से कैसे जुड़ जाती है। इसी अर्थ में किसी रचना की जड़ें कई देशों की मिट्टी में मिली हो सकती हैं।

उपर्युक्त अंशों को शुरुआत और अंत के साथ न पढ़ा जाए तो नहीं पता चलेगा कि ये कौन सी विधा में लिखे गए हैं। दरअसल इन अंशों का अलग-अलग रचनात्मक विधा के रूप में तो महत्त्व है ही, इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह भी है कि ये ही किसी भी बड़ी 'आत्मकथा' का अंग बन सकते हैं क्योंकि कुछ बातें सबमें मौजूद हैं, वे हैं–

- सच्चाई और सरलता, जो आत्मकथात्मक लेखन की पहली शर्त है।
- लेखक हर जगह मौजूद है पर हवा में सुगंध की तरह। रचना में रचनाकार की तरह, आत्मीयता के बावजूद तटस्थ। जैसे पढ़ने के लिए किताब को निश्चित दूरी की ज़रूरत होती है।
- स्मृति की प्रस्तुति ऐसे तरीके से हुई है कि पढ़ने वाला इसे अपने आप के साथ घटी घटनाओं की तरह देखने को विवश हो जाता है।
- छोटे-छोटे और सरल-सहज वाक्यों के द्वारा हुई इन रचनाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण बात है अवलोकन और उसका दायरा। (बेबी को इतिहास पढ़ते हुए उसकी माँ याद आती है। रसूल को अपने गाँव को देखते हुए उसके चश्मे, नदियाँ, पगडंडी और कई-कई देशों की मशहूर बातें याद आती हैं, तो ऐन को मुश्किल दिनों में भी याद रहता है रगड़-रगड़कर फ़र्श साफ़ करना और डायरी लिखने के लिए फ़ुर्सत के कुछ क्षण। केदारनाथ अग्रवाल को एक उम्र के बाद भी अपनापे वाला बचपन और उसके खिलवाड़–पत्र को उल्टा लटकाना ... नहीं भूलता। हरभजन सिंह को रचना करते हुए पूरे विश्व की रचना स्मरण हो आती है।)
- रचनाकार की यह सबसे बड़ी ताकत होती है कि वह एक ही समय में कई कालों, कई जगहों, कई लोगों के साथ रह सकता है। वह शब्दों से खेलता है

- शब्दों से यह खेल लेखन की बुनियाद है।

© NCERT not to be republished

ध्यान दें

- डायरी एक तरह का दैनिक दस्तावेज़ या रोज़नामचा है जिसमें एक दिन के ताज़ा-तरीन अनुभवों (खुशी के और दुख के क्षण) को रचनाकार अभिव्यक्त करता है। डायरी में रचनाकार अपने वर्तमान समय और भाव संसार के साथ पूरी तरह मौजूद होता है, इसीलिए इसमें तिथि और समय का भी महत्त्व होता है। अन्य आत्मकथात्मक लेखन में (पत्र को छोड़कर) यह ज़रूरी नहीं है। गजानन माधव मुक्तिबोध की प्रसिद्ध पुस्तक 'एक साहित्यिक की डायरी' में न तो तिथि क्रम है, न निजी प्रसंग, न कोई तथ्य, फिर भी सार्वजनिक मुद्दों को आत्मीयता के साथ प्रस्तुत करने के कारण लेखक ने इसे 'डायरी' कहा है।

- यात्रा वृत्तांत में स्थान, वहाँ की संस्कृति और लोगों का होना ज़रूरी है। 'मेरा दागिस्तान' का अंश देखने में संस्मरणात्मक यात्रा वृत्तांत की तरह लग सकता है, पर वह अलग इस मायने में है कि वहाँ गाँव के साथ-साथ रसूल मौजूद है – अपने को गाँव में बड़ा होते देखते हुए। गाँव की नदी और पगडंडी से बात करते हुए। इसीलिए यह आत्मकथात्मक रचना है। लेकिन कृष्णनाथ द्वारा लिखी 'स्पीति में बारिश' एक यात्रा वृत्तांत है क्योंकि यहा स्पीति का मौसम, समाज सब कुछ एक साथ प्रस्तुत हुआ है। उदाहरण के लिए, *'स्पीति में वसंत लाहुल से भी कम दिनों का होता है। वसंत में भी यहाँ फूल नहीं खिलते, न हरियाली आती है, न वह गंध होती है। दिसंबर से घाटी में फिर बर्फ़ पड़ने लगती है। अप्रैल-मई तक रहती है। यहाँ ठंडक लाहुल से ज़्यादा पड़ती है। नदी-नाले सब जम जाते हैं और हवाएँ तेज़ चलती हैं। मुँह, हाथ और जो खुले अंग हैं उनमें जैसे शूल की तरह चुभती है।'*

- पत्र वाले अंश की कोई अलग पहचान बन सकती है तो इसलिए कि वहाँ दो व्यक्ति मौजूद हैं। जो भी बातें हो रही हैं वह उन्हीं के इर्द-गिर्द हो रही हैं। उसका संबंध लिखने वाले और जिसके लिए लिखा जा रहा है उनके साथ सीधा होगा। यहाँ आत्मीयता प्रकट करने में संबोधनों के प्रयोग का महत्त्व होता है। तिथि यहाँ भी डायरी की तरह महत्त्वपूर्ण होती है।

किसी भी तरह के स्मृति आधारित आत्मकथात्मक लेखन के लिए ज़रूरी होगा कि अपने आस-पास की दुनिया को न केवल देखें बल्कि अपने भीतर महसूस करें और हमेशा-हमेशा के लिए शब्दों में बाँध लें। यह आदत दुनिया के साथ-साथ खुद को जानने में तो मददगार होगी ही, नयी दिशाएँ चुनने में भी सहायक होगी – वह चाहे भविष्य के रास्ते हों (एक दृढ़, सच्चे और ज़िम्मेदार व्यक्ति के रूप में चुनौती को स्वीकार करने वाले) या फिर लेखन की नयी दिशाएँ (कहानी, कविता, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत हो या फिर किसी अखबार में बृहत्तर समुदाय को संबोधित करता कोई लेख), इसलिए आत्मकथा लिखने का अभ्यास वास्तव में रचनाकार बनने की पहली तैयारी है।

© NCERT not to be republished

अगली बार जब किसी पेड़, पहाड़, समुद्र, व्यक्ति को यात्रा के दौरान देखें तो यह देखना न भूलें कि वह आपकी अब तक देखी हुई दुनिया से अलग कैसे है, क्योंकि सृजनात्मकता दुनिया को भीड़ की तरह नहीं, अलग-अलग निजी अस्तित्व के साथ देखना सिखाती है। आपका मित्र आपको क्यों अच्छा लगता है, यह तो जानें ही, अपनी खुशी और दुख का हालचाल लेना भी न भूलें। अपने को अभिव्यक्त करके अपने आत्मविश्वास का हालचाल तो मिलेगा ही, आपका यह लेखन आपकी दुनिया का विस्तार करता है, यह भी पता चलेगा।

कलाकार कोई विशेष प्रकार का मनुष्य नहीं होता, बल्कि हर मनुष्य एक विशेष प्रकार का कलाकार होता है।

– आनंद कुमार स्वामी

लेखनी से आँसुओं तक – एक लंबी हिस्सेदारी

समूह के रूप में हमने जब पहली बार डायरी लिखने का मन बनाया, तो पहला सवाल उठा कि डायरी तो हमने कभी लिखी नहीं है! फिर इसे लिखेंगे कैसे? क्या लिखेंगे, क्या नहीं? समूह को अपना लिखा पूरा सुनाएँगे कि कुछ ही हिस्से? इन सारे प्रश्नों के जवाब हमने आपस में चर्चा करने के बजाय सीधे डायरी लेखन के माध्यम से ही खोजने शुरू किए। दिसंबर 2002 की गुलाबी धूप में हम में से कुछ लोग एक ही चटाई पर बैठकर अपने-अपने जीवन में लीन हो गए, कुछ पेड़ों के तले और कुछ मुँडेरों पर या दालानों में बिखर गए। हम सबने एक घंटा डायरी लिखी, अधिकतर अपने बचपन पर।

– संगतिन यात्रा

(सीतापुर के पास के एक गाँव के अलग-अलग जाति, धर्म, वर्ग की स्त्रियों की एक ऐसी रचना-यात्रा जिसे ऋचा द्वय ने कलमबद्ध किया 'संगतिन यात्रा' के नाम से।)

© NCERT not to be republished

Understanding Literary Writing

Creativity flourishes with freedom of expression. The aim is to facilitate confidence in expression irrespective of the creative form.

1. Group Activity

- *Each student should bring eight cuttings of old cards.*
- *The word 'flower' should be written on the blackboard.*
- *Students will write any thought or words associated with the word 'flower' on a separate card. This may be one/two words or a small sentence.*
- *The cards should be collected from all the students and kept in separate piles.*
- *The exercise should be repeated with seven different words such as — fire, thorn, water, waterfall, wind, rain etc.*
- *Now all the card-piles associated with one word should be given to one group of students and they should be asked to write a poem using all/most words written on the cards. Effort should be made not to repeat one word too often.*
- *All the poems thus written should be displayed on the class notice board.*

2. Enjoy and appreciate your own creative work

- *All students should be asked to write their experiences with reference to the activities given on Page 15, Unit I. Students may choose any form of writing.*
- *Each student should assess her/his own work — whether it is prose, poetry or dialogue.*
- *Students should be encouraged to analyse why they chose that particular form of writing.*

And the pen writes on...

Sensitive, responsive, eagerly welcomed everywhere, the drama, holding the mirror up to nature, by laughter and by tears reveals to mankind the world of men.

– George P. Baker

Men are mortal. So are ideas. An idea needs propagation as much as a plant needs watering. Both will otherwise wither and die.

– B. R. Ambedkar

The man who writes about himself and his own time is the only man who writes about all people and about all time.

– George Bernard Shaw

The drama is complete poetry. The ode and the epic contain it only in germ; it contains both of them in a state of high development, and epitomises both.

– Victor Hugo

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

Literature adds to reality, it does not simply describe it. It enriches the necessary competencies that daily life requires and provides and, in this respect, it irrigates the deserts that our lives have already become.

– C.S. Lewis

I. Literary Writing — an Introduction

Creativity manifests itself in various forms of art and literature. It is also a reflection of our culture and society and is closely associated with our day-to-day life. Just as for a painter the paints and brush are her/his medium of creativity, for a creative writer words are the medium that give creative expression to her/his imagination and observation. Creative writing fulfils a writer's desire to invent, explore and share.

Before we talk about different forms of creative expression, read the following extracts. They represent different forms of writing.

Bholi did not know what exactly a school was like and what happened there, but she was glad to find so many girls almost of her own age present there. She hoped that one of these girls might become her friend.

The lady teacher who was in the class was saying something to the girls but Bholi could understand nothing. She looked at the pictures on the wall. The colours fascinated her — the horse was brown just like the horse on which the Tehsildar had come to visit their village; the goat was black like the goat of their neighbour; the parrot was green like the parrots she had seen in the mango orchard; and the cow was just like their Lakshmi. And suddenly Bholi noticed that the teacher was standing by her side, smiling at her.

"What's your name, little one?"

– an extract from 'Bholi',
a short story by K.A.Abbas

© NCERT not to be republished

His loud sharp call
seems to come from nowhere.
Then, a flash of turquoise
in the pipal tree
The slender neck arched away from you
as he descends,
and as he darts away, a glimpse
of the very end of his tail.

– an extract from 'The Peacock', a poem by Sujata Bhatt

As for music, she explains, "It pours in through every part of my body. It tingles in the skin, my cheekbones and even in my hair." When she plays the xylophone, she can sense the sound passing up the stick into her fingertips. By leaning against the drums, she can feel the resonance flowing into her body. On a wooden platform she removes her shoes so that the vibrations pass through her bare feet and up her legs...It is intriguing to watch Evelyn Glennie function so effortlessly without hearing...

– an extract from 'The Sound of Music' by Deborah Cowley

Peacocks in Gond art

See गतिविधि/Activity 7 on Page 35

You can see from the above excerpts that in writing, creative expression can take any form, for example, a story, poem, essay, play, autobiography or reminiscence. This is because form and content are like the two sides of a coin. The content and your style of writing will give direction to your chosen form. In this unit we will discuss three forms of expression — poetry, prose and play.

Poetry

Poetry is a form of art which uses rhyme and rhythm to arouse in the audience both sensuous and emotional responses. Some of the forms of poetry are the ode, sonnet, lyric, dramatic monologue, verse, satire and free verse. Poetry in the oral tradition has a long history predating literacy. The oldest surviving poem is the Epic of Gilgamesh, from the third millennium BCE*

गतिविधि 10 — Activity 10

अच्छी रचनाओं को पढ़ना लेखन में सहायक होता है। अपनी पढ़ी हुई रचनाओं (4–5) का एक संकलन तैयार कर पोर्टफोलियो में लगाएँ और लिखें कि आपने उन्हें क्यों चुना?

Reading well-written pieces helps one to write well. Make a collection of the pieces (4 – 5) that you have read for your portfolio. Give reasons why you chose them.

**BCE — Before the Common Era — now used in place of BC*
CE — Common Era — used in place of AD

© NCERT not to be republished

A Rune Stone

in Sumer in Mesopotamia (Iraq), based on the life of the historical King Gilgamesh. Our ancient Vedas (1700–1200 BCE), and the later epics like the *Ramayana* and the *Mahabharata*, followed by the Greek epics like *The Iliad* and *The Odyssey* (800–675 BCE), have been composed in poetic form and were recited and sung in ancient societies. The longest of these epic poems are the *Mahabharata* and the Tibetan *Epic of King Gesar*.

In early times, poetry was the only means of recording oral history and narratives. The earliest records of poetry are found on monoliths, rune stones and stelae. Ancient poetry has come to us initially from oral transmission, and later through writing and printing. Poetry of the ancient times has helped to preserve the ancient historical, cultural and religious traditions of the pre-literate societies. In early times the introduction of writing made poets take to different forms of poetry. During the nineteenth century, however, these forms were given up in favour of free verse.

There are three major genres in poetry: epic poetry, lyric poetry and dramatic poetry. While epic poetry is usually a narrative of considerable length, lyrics are shorter, more personal in nature and are often sung to the musical accompaniment of the lyre (hence the term lyric). In the sixth century, choric poetry was introduced and this became an integral part of drama. In more recent times, the introduction of electronic media and the increase in poetry-reading have led to a resurgence of performance poetry. In the late twentieth century the rise of the singer-songwriter, rap culture etc. has led to an increase in the popularity of poetry.

Given below are examples of free verse and a rhymed poem.

Wind, come softly.
Don't break the shutters of the windows.
Don't scatter the papers.
Don't throw down the books on the shelf.
There, look what you did — you threw them all down.
You tore the pages of the books.
You brought rain again.

– an extract from 'Wind' by Subramania Bharati
(Translated from the Tamil)

© NCERT not to be republished

Drive my dead thoughts over the universe
Like withered leaves to quicken a new birth!
And, by the incantation of this verse,
Scatter, as from an unextinguished hearth
Ashes and sparks, my words among mankind!
Be through my lips to unawakened earth
The trumpet of a prophecy! O Wind,
If Winter comes, can Spring be far behind?

– an extract from 'Ode to the West Wind'
by P.B. Shelley

Of all the genres, poetry allows the greatest freedom of subject matter and approach. A poem represents its topic in a striking and original way whatever the range and variety of its references and detail. The theme of a poem is focused and unified through its imagery and structural control. A poem should contain a clear sense of the writer's imaginative, emotional, and intellectual involvement with the topic and evoke a similar response in the reader as fully as possible.

Prose

Story as a form of prose has come to us through the oral tradition. In ancient times, before the printing press was invented, oral singing/recitation was the only means of narrating a story. We have seen how the two great Greek epics, *The Iliad* and *The Odyssey*, and our own Indian epics the *Ramayana* and the *Mahabharata*, have come to us from the ancient oral, story-singing tradition. Each day, the poet would narrate an episode and these episodes were long enough to be sung at one sitting. The overall arc of the epic emerged from these episodes put together.

A scene from a Jataka Tale *depicted in the Ajanta Caves*

Other forms of story are folk tales and fables such as *Dastan*, *Aesop's Fables*, *Panchatantra*, and *Grimm's Fairy Tales* that continue to be popular even today. In the eighteenth century, with the first translation of *Arabian Nights* (or *Thousand and One Nights*) the short story form took root in France. In the nineteenth and the twentieth centuries, modern short stories became popular all over the world and this trend continues even today.

© NCERT not to be republished

Short stories have a well thought out plot that revolves around a single incident. The entire story spans a short period of time and has just a few characters. Read the following extract from the story 'The Lost Child' and see how Mulk Raj Anand has been able to capture the attention of his readers from the very beginning of the story.

> *It was the festival of spring. From the wintry shades of narrow lanes and alleys emerged a gaily clad humanity. Some walked, some rode on horses, others sat, being carried in bamboo and bullock carts. One little boy ran between his father's legs, brimming over with life and laughter.*
>
> *"Come, child, come," called his parents, as he lagged behind, fascinated by the toys in the shops that lined the way.*
>
> *He hurried towards his parents, his feet obedient to their call, his eyes still lingering on the receding toys. As he came to where they had stopped to wait for him, he could not suppress the desire of his heart, even though he well knew the old, cold stare of refusal in their eyes.*
>
> *"I want that toy," he pleaded.*

A novel is the extended form of the short story. It has a narrative with a large number of characters, multiple plots or even a single plot that is full of complex situations, detailed delineation of characters and descriptive passages. During the seventeenth century the novel began to establish itself as a standard literary type in England and France, and by the early eighteenth century it had become a popular form of writing.

> *Novels deal with historical, romantic, realistic and social topics. There are also semi-autobiographical novels, for example, Mary Lamb's* Human Bondage, *Harbhajan Singh's* Chola Taakian Wala *and* Mera Dagistan *by Rasool Hamzatov. Some novels are even written in verse form like* The Golden Gate *by Vikram Seth.*

> *You must have read stories written by writers such as Premchand, Rabindranath Tagore, Anton Chekhov, Leo Tolstoy, O. Henry, Ruskin Bond, Khushwant Singh. These short story writers have also written novels.*

The eighteenth century, also known as the Age of Prose, saw the rise of the middle class in England. The newly emerging educated middle class wanted quick access to good and easily comprehensible reading material; not too abstract and difficult but easy and light reading. This called for a new form of writing that was simple, direct, easy, enjoyable, witty and informative. Hence, prose was a natural choice.

> *The eighteenth century also saw the development of Science as the Royal Academy of Sciences was established. As you all know, scientific principles and theories require clear and unambiguous prose. Scientific writings demand logical derivations and clarity of thought expressed with precision. Prose was therefore the natural choice of this period.*

In India prose writing emerged in the nineteenth century in almost all the modern Indian languages. It was the establishment of printing presses

© NCERT not to be republished

that gave impetus to prose writing. Earlier prose writings in India were in the form of letters and documents but the genre got a real fillip when newspapers and magazines were introduced in the early nineteenth century. This period also marks the growing importance of the English language in India.

Cover page of a recent reprint of the novel, Indirabai, *written at the end of the nineteenth century*

The Nationalist Movement in the 1880s began to infuse a reformist and popular spirit into Indian literature. Most writings in protest against oppression were in the form of essays, novels and short stories. Theatre and films became popular media and novels were 'performed' for masses to enjoy. Indian literature began to incorporate contemporary themes and issues and by the early twentieth century the novel, essay and short story had emerged as major forms of expression in regional languages.

The various literary forms of expression in prose are essay, novel, drama, biography and autobiography, travelogue, short story, one-act play, satire etc. Among these the essay as a literary form of writing became very popular in the twentieth century as it offers a wide range to accommodate new forms of expression to experiment with.

Essays are meant to be an authentic presentation of personal ideas, thoughts, temperament and a reflection of one's true self. They are brief and present the writer's personal point of view, insight and experience and also engage the reader's attention. The reader has the freedom to say 'I agree to disagree'. Such a freedom makes your reader an 'interactive reader' who is ready to follow your line of thinking.

The essay as a literary device holds good for personal anecdotes and autobiography, descriptive writings with a good eye for detail, and for scientific, literary and philosophical treatises of a higher plane. The essay should have a flow that makes it easy for the reader to understand its theme. This means that you must have an organised structure that takes your thoughts step by step to make it easy for your reader to follow through. And last but not the least, the style you employ should be simple, elegant and clear with no ambiguity or jargon. You will also find that sometimes essays have a narrative like a story and vice-versa. Thus we can say that literary forms influence each other and this is how new forms emerge.

The following extract from G.N. Devy's essay on 'Tribal Verse' attracts our attention towards the rich and oral literatures of the tribes not only through its content but also because of its lucid style.

*The roots of India's literary traditions can be traced to the rich and oral literatures of the tribes/*adivasis*. Usually in the form of songs or chanting, these verses are expressions of the close contact between the world of nature and the world of tribal existence. They have been orally transmitted from generation to generation and have survived for several ages. However, a large number of these are already lost due to the very fact*

© NCERT not to be republished

of their orality. The forces of urbanisation, print culture and commerce have resulted in not just the marginalisation of these communities but also of their languages and literary cultures. Though some attempts have been made for the collection and conservation of tribal languages and their literatures, without more concerted efforts at an accelerated pace, we are in danger of losing an invaluable part of our history and rich literary heritage.

Drama

Drama in some form is found in almost every society, primitive and civilised, and has served a wide variety of functions in it. It is one of the earliest forms of visual performances that combine music, dance, dialogue, action and spectacle. The origin of dramatic forms lies in epic narrations done in ancient times, where the story was told with intonation or change of voice. From this platform emerged the *sutradhar* or 'the chorus' (if more than one person) who introduced the play and the characters to the audience. Drama evolved over time by the addition of physical action and movements to the voices of the characters. Costume, stage-setting and lighting further added to the visual spectacle. Drama thus became a wholesome performance incorporating various elements.

Drama as a form of expression developed after poetry. Its origin can also be traced back to the oral tradition of poetry and story but the genre developed as a written form much before the written form of story. Therefore, we find that earlier drama was written in verse both in Indian and Western literature. Later, poetic prose was used in dramatic expression and this type of drama is also referred to as poetic drama. But after the nineteenth century, prose has largely been used in drama. The similarity between drama and poetry is that both these forms are not necessarily descriptive because the emphasis is more on symbols, signs and metaphors.

Indian drama can be traced back to dramatic episodes described in the *Rigveda*. These episodes dealt with human concerns as well as the gods. In ancient times drama was patronised by the kings as well as village assemblies. The earliest theoretical account of Indian drama is *Natya-Shastra* of Bharata that may be as old as the third century BCE. Known as the fifth Veda, the *Natya-Shastra* suggests that drama had its origins

in the art of dance which is true of the origin of drama all over the world. The text not only gives minute details about what is to be portrayed in a drama but how the portrayal should be done. It is a rich resource for both playwrights and actors.

Famous early Indian playwrights include Bhasa, Shudraka, Kalidasa and Asvaghosa. Some of the outstanding plays of these writers are Swapnavasavadatta, Mrichhakatikam, Abhigyanshakuntalam *and* Sariputraprakarana *respectively. The stories from the* Ramayana *and the* Mahabharata *have often been used for plots in Indian drama and this practice continues even today.*

Classical theatre traditions in India have continued to influence modern theatre. Till the fifteenth century, Sanskrit dramas were performed on stage. It was in the seventeenth century that *Loknatya* or the People's Theatre revived the art form.

The eighteenth century witnessed the rise of Modern Indian Drama which made great strides from 1850 to 1940. The resurgence of drama in different parts of the country saw the establishment of the Hindi *Rangmanch*. At the same time, due to the colonial impact, there was a rise in western drama. The Parsis too contributed a lot to the development of theatre by starting their own theatre company. Their practice of theatre was characterised by great detailing of props and stage-décor.

In the twentieth century, drama depicted contemporary social issues. Vijay Tendulkar's *Ghashiram Kotwal*, Girish Karnad's *Tughlaq*, Mohan Rakesh's *Aadhe Adhure* and Mahesh Dattani's *Final Solutions* are some of the examples of famous modern Indian plays. They employed everyday scenes and modern techniques of stage and setting to highlight the issues related to society.

The origins of Western theatre can be traced to ancient Greece. The Greeks had two kinds of drama, tragedy and comedy. Tragedy is the older and more famous of the two types, introduced in 534 BCE, while comedy is generally dated some half century later, around 486 BCE. But both genres were important to the Greeks, and were performed several times during the year as part of religious and agricultural festivals.

The Colosseum in Rome, one of the most famous amphitheatres of ancient times

In Greek drama also, dramatic expression was in verse form.

© NCERT not to be republished

Verse was used in the plays of the middle ages, the tragedies of English Renaissance and also by T.S. Eliot. Only at the end of the nineteenth century, when naturalistic realism became the mode, were the characters in dramas expected to speak and behave as in real life.

> *Drama gained popularity from the twelfth to the sixteenth century (Medieval Drama). During this period the 'mystery plays' and the 'morality plays' became popular. They personified human qualities and emotions (these were made the dramatic characters), debating and acting as if they were human. Most famous of these works was* Everyman *(c.1509-19), which has regained popularity and respect in the twentieth century and features characters such as Fellowship, Knowledge and Good Deeds.*
>
> *It was the artistic and cultural movement called the English Renaissance that brought in the renaissance of English drama. The three great playwrights of this period were Christopher Marlowe, William Shakespeare and Ben Jonson. Marlowe's outstanding work was* Dr Faustus*, an original mix of the Medieval Morality play with the Renaissance temper. However, Shakespeare was the outstanding dramatist of the late sixteenth and early seventeenth centuries. He wrote historical, tragic and comic plays. Some of his works include* King Lear, Hamlet, Macbeth *and* The Merchant of Venice.
>
> *There was a lull in English dramatic activities for nearly 200 years before the advent of Oscar Wilde and Bernard Shaw who wrote on social issues. The first half of the twentieth century saw the rise of poetic drama by T.S.Eliot and W.B.Yeats. English drama once again gained popularity in the second half of the twentieth century — sometimes referred to as 'post-war drama'. This has been achieved despite the powerful influence of cinema in the twentieth century. The outstanding writers of this period include John Osborne with his* Look Back in Anger*, Samuel Beckett with his* Waiting for Godot *and Harold Pinter with his* The Birthday Party*. Some other famous playwrights include Bertolt Brecht, Henrik Ibsen, Arthur Miller etc.*

Drama deals with a variety of themes. There are religious plays that deal with God, abstract virtues and spiritual matters. There are also secular plays dealing with social issues — both contemporary and topical. Plays can satirise society, or they can gently illuminate human weaknesses. Drama is the most wide ranging of all the arts; it not only represents life but is also a way of looking at life, of creating 'models' of life.

Folk drama is generally rural theatre based on traditions and local history. This form of drama is common throughout the world. It is performed outdoors in open spaces while theatre performances are staged in an auditorium. Folk plays use a lot of song and movement though a dramatic plot can be staged through dialogue and action alone. Some of the major folk theatres of India are Pandwani, Yakshagana, Ankianat, Jatra. Jatra is a popular form of entertainment in Bengal and has varied themes. From musical theatre it has transformed into melodramatic theatre with prose dialogues. Tamasha is an interesting and entertaining form of folk drama

© NCERT not to be republished

of Maharashtra. Traditionally it is an open-air performance. Nautanki, Macha, Bhavani etc. are folk dramas of different parts of the country. The only surviving Sanskrit drama theatre is Kudiyattam. It is a form of theatre traditionally performed in Kerala.

The first ever Kudiyattam performance outside Kerala, in Chennai, 1962

Elements of drama such as mime and dance, costume and decor long preceded the introduction of words and the literary sophistication now associated with a play. These basic elements were not suppressed by words; rather they were merely enhanced by them. So, in any form of drama, action, either through physical movement or through dialogue, is at the core. The main components of drama are plot, conflict, characterisation and climax. Action supplements dialogue while settings and costumes lend authenticity to the characters portrayed on stage.

Despite the immense diversity of drama as a cultural activity, all plays have certain elements in common. Drama can never become a private statement — in the way a novel or a poem may be — without ceasing to be meaningful theatre.

II. Literary Writing

As you know there are different forms of literary writing. These forms have evolved over a period of time due to social and technological developments. Though existing forms of literature have certain distinctive features, within each form there is scope for innovation and experimentation. In this section we will introduce you to two forms of literary writing — drama and autobiographical writing.

> ***The drama embraces and applies all the beauties and decorations of poetry. The sister arts attend and adorn it. Painting, architecture, and music are her handmaids. The costliest lights of a people's intellect burn at her show. All ages welcome her.***
>
> **– Robert Aris Willmott**

Writing Drama

For a creative writer the most important thing is the idea. It can be expressed in any form. While creativity is not limited by literary classifications, every writer chooses a form that she/he finds most suitable for the idea or story that she/he is trying to convey. This is an evolutionary process as literary forms are derived from each other.

© NCERT not to be republished

Writers experiment with various forms — as a response to both their individual preferences as well as the demand of the times. Here, drama as a genre is distinct from other forms of expression because it serves twin purposes — the written as well as the performative.

Dramatic situations abound in the environment around us. A mood, a memory, a situation or a feeling can form the basis of a play. One needs to develop an eye for situations and a ear for dialogue. Often, characters and storylines are derived from the lives of the people we interact with everyday. Incorporating observed mannerisms and actions can lend richness and authenticity to the play. While writing drama one explores the mechanism of dramatic story-telling, and dramatic works may combine literary aspects of both prose and poetry.

> ***Theatre of the Absurd*** *— a critical term coined by Martin Eslin to describe a wide range of plays that depict the anxiety, isolation and frustration of modern man. The human condition is presented as absurd in these plays and the meaninglessness of human existence is brought out through disjointed, repetitious and inane dialogues. The plots also lack realistic or logical development. Samuel Beckett's* Waiting for Godot *(1953) is a classic of this genre.*

Drama is a play written for the theatre, television or radio. Dialogue, that is conversations among the actors, is thus the defining feature of drama. Unlike a poem, short story or autobiography, a play is written primarily for performance. When you write a play you use three elements — actors, stage, and audience — to convey your story. While in earlier times, drama had to conform to three unities — unity of Place, Time and Action — modern writers have experimented with the form as in the 'theatre of the absurd'. However, as a thumb rule, the flow of the story should not be impeded. It should ideally proceed in a sequential manner — though not necessarily in a chronological manner. Sometimes the past is brought as a flashback while narrating the present, or the future is anticipated, predicted or imagined. But the story unfolds right at the moment you are reading or watching a performance.

Writing a play is often the reshaping of the familiar/ known into something original and unique. An event, a situation or a relationship can be developed into a drama. For example, Shakespeare's *King Lear* is based on relationships. Cordelia clearly loves her father, and yet realises that her honesty will not please him. Her nature is too good to allow even the slightest deviation from her principles.

Act 1

CORDELIA : [Aside] Then poor Cordelia!
And yet not so; since, I am sure, my love's
More richer than my tongue.
KING LEAR : To thee and thine hereditary ever
Remain this ample third of our fair kingdom;
No less in space, validity, and pleasure,
Than that conferr'd on Goneril. Now, our joy,

© NCERT not to be republished

Although the last, not least; to whose young love
The vines of France and milk of Burgundy
Strive to be interess'd; what can you say to draw
A third more opulent than your sisters? Speak.
CORDELIA : Nothing, my lord.
KING LEAR : Nothing!
CORDELIA : Nothing.
KING LEAR : Nothing will come of nothing: speak again.
CORDELIA : Unhappy that I am, I cannot heave
My heart into my mouth: I love your majesty
According to my bond; nor more nor less.
KING LEAR : How, how, Cordelia! mend your speech a little,
Lest it may mar your fortunes.
CORDELIA : Good my lord,
You have begot me, bred me, loved me: I
Return those duties back as are right fit,
Obey you, love you, and most honour you.
Why have my sisters husbands, if they say
They love you all? Haply, when I shall wed,
That lord whose hand must take my plight shall carry
Half my love with him, half my care and duty:
Sure, I shall never marry like my sisters,
To love my father all.

A performance-still of an adapted version of King Lear, a play that has been adapted in many Indian languages

A historical event can also be developed into a drama for contemporary reading or presentation. An argument, a conflict or a misunderstanding can be the central theme of a play. A discovery, a choice or a dilemma also have great dramatic potential. Other modes of communication within a play include non-verbal modes such as gestures, body language etc. *A Heap of Broken Images* by Girish Karnad revolves around the electronic age and images that fling themselves at us. The play is set in a TV studio.

IMAGE: Where are you going?
(Startled, Manjula stops and looks around. Touches her earpiece to check if the sound came from there and moves on.)
You can't go yet. Manjula!
(Manjula looks around baffled and sees that her image continues on the screen. She does a double take. From now on, throughout the play, Manjula and her image react to each other exactly as though they were both live characters.)
MANJULA: Oh God! Am I still on?
(Confused, she rushes back to the chair and stops.)
IMAGE: You are not. The camera is off.
MANJULA: Is it? Then... how?
IMAGE: You are standing up. If the camera were on,
I would be standing up too. I'm not.
MANJULA: Is this some kind of a trick? .
(Into her lapel mike)
Hello! Hello! Can you hear me? How come I'm still on the screen? Raza, hello...
(Taps her mike. No response)

The playwright giving directions – A Heap of Broken Images

© NCERT not to be republished

Is there a technical hitch?
IMAGE: No hitch.
MANJULA (to the Image): But how... Who are you... How... Has the tape got stuck?

See गतिविधि/Activity 8 on Page 47

The impact of drama can be far more powerful than that of cinema or TV. Often drama is seen to present a slice of life on stage and its appeal is simultaneously strong and spontaneous. Drama can be a form of self expression as well as a tool for social change, for example, street plays or *nukkad nataks*.

For writers of drama there is a wide range of choice — of approach and form. In creating a dramatic script, however, you must be able to demonstrate your understanding of the nature and potential of the genre. In particular, you should be able to create characters who are credible, interesting and capable of generating in the reader an intellectual and/or emotional response.

While writing a drama one must develop and communicate a recognisable theme. The aim should be to produce a particular atmosphere, mood or effect. By ensuring that stage directions, technical effects and other production notes are directly linked to the action, a drama can be made convincing for the reader. In any form of drama, action, either through physical movements or through dialogue, is at the core.

Generally, when we speak of drama we refer to a full-length play that has either three acts or five acts. But a one-act play is a short play that takes place in one act or scene, unlike the longer plays that take place over a number of scenes in more than one act. This means that a one-act play uses minimal scenes, a minimum number of characters, with the plot limited to a short span of time.

A one-act play generally restricts itself to a single plot comprising either one scene or more. The dramatist, or playwright, establishes a setting in which, and a situation out of which, the drama arises. The unity of a one-act play is ensured through a tight structure wherein the action is ideally limited to a particular time and place and the storyline usually does not extend beyond a single day's events.

Unity of action is very important in a one-act play and there is no room for sub-plots and comic interludes. There is hardly any costume change. Dialogues are precise and these plays are by and large realistic. Hence, the characters should be such that the audience identifies with them. Characterisation in a one-act play emerges from a single situation. The event that leads to conflict, crisis and resolution projects the characters of the persons involved. Since the play is a short play, there is no time or space to introduce the characters elaborately and the play gains swift

© NCERT not to be republished

momentum through a 'What-Happens-Next' technique as it races through from curtain rise to curtain fall.

Characters are crucial to any form of drama writing. While writing a play you must make a list of characters that you require for the play. Their names, ages, appearance etc. should be clear in your mind. You need to be able to visualise them. You may begin with small details such as the name of the character, her/his age, the colour of her/his hair, eyes, voice etc., the kind of clothes she/he wears and their mannerism i.e., how she/he behaves instinctively — nervous or relaxed, aggressive or polite etc.

Your characters will interact with each other through the dialogue you write for them; dialogues are the lifeline of a play. One may or may not use dialogues in other literary genres, however, they are integral to any form of drama. Often, plays are remembered for their powerful dialogues. Who can forget the following famous lines from Shakespeare's *Hamlet!*

To be, or not to be: that is the question:
Whether 'tis nobler in the mind to suffer
The slings and arrows of outrageous fortune,
Or to take arms against a sea of troubles,
And by opposing end them?

A good writer uses dialogue to emphasise characterisation as dialogues, when written well, can bring a character alive. Dialogues also convey subtexts or an underlying theme or implied relationship between characters. They should sound natural and the reader or viewer should feel as if they were actually spoken by the characters. If you listen to people speaking you will realise that they speak in different ways — some use longer sentences than others; some use slang and some have a favourite phrase or word that they use again and again. Using distinctive speech patterns for characters

गतिविधि 11 ◆ Activity 11

कोई भी समसामयिक सामाजिक मुद्दे जैसे पर्यावरण के प्रति जागरूकता, बालिका शिक्षा, विशेष आवश्यकता समूह के बच्चे या किसी अन्य समस्या/मुद्दे को ध्यान में रखते हुए एक छोटा सा नाटक लिखिए। (मंच संचालन के निर्देश भी दें)

Choose any theme of social relevance e.g. environmental awareness, girls' education, children with special needs or any other issue, and write a short play to spread awareness. (Give stage directions also).

© NCERT not to be republished

The interior of the Auditorium Building in Chicago, built in 1887. The arch around the stage is a proscenium.

is a good device for dialogue writing. Non-verbal behaviour, i.e. their actions, are put in brackets as stage directions.

Although, when a play is performed, it is the director of the play and his/her team that decide the cast and their costumes, the play script should have enough clues to suggest the kind of actor required for the role. In a play description is limited to stage directions.

In a radio-play the place where the action is taking place has to be conveyed through the dialogue, but for television and theatre, various kinds of sets and stages may be used.

Today radio, an audio medium, has largely been overtaken by television and cinema as the most popular forms of media entertainment. But drama precedes radio, television and cinema. In cinema the presentation is larger than life. In contrast, on the small screen (television), the characters seem smaller. What happens in drama? There is live presentation on the stage and the characters come alive as we recognise them as one of us.

The most well-known kind of stage for theatre these days is the proscenium (part of the stage in front of the curtain). There are various other kinds of stages as well like thrust (a platform stage or an open stage), revolving stage etc. Plays can also be performed on the street, in a café or in a community hall. The story and subject matter and the kind of stage are intimately related and different directors may use different stages for the same play script. However, when a playwright writes, she/he has to clearly describe the time and place (setting) in the play. This is also a part of stage directions.

Drama has another meaning — excitement. You can get an audience for your play only if you write a script that is exciting or dramatic. Thus the most important factor in the script is action. The action need not only be non-verbal i.e. you don't always need actors fighting or dancing on stage; it can also be verbal. Enough excitement can be generated on stage through words alone. What you need is a good story or a well-defined plot. The audience should get interested enough to find out what happens next. A person talking about general matters on stage is not likely to hold the interest of the audience. What are interesting are dynamic situations or dramatic confrontations between people. Your story must have an element of clash of interests or differences of opinion that are resolved successfully or are left open-ended.

© NCERT not to be republished

> ***Drama is the book of people.***
>
> **– ROBERT ARIS WILLMOTT**

Your story or plot should follow these stages.

- *Initial situation* — the beginning. It is the first incident that makes the story move.
- *Conflict or Problem* — a goal which the main character of the story has to achieve.
- *Complication* — obstacles which the main character has to overcome.
- *Climax* — highest point of interest of the story.
- *Suspense* — point of tension. It arouses the interest of the readers.
- *Denouement or Resolution* — what happens to the character after overcoming all obstacles/failing to achieve the desired result and reaching/not reaching the goal.

Autobiographical Writing

> ***Every man's memory is his private literature.***
>
> **– ALDOUS HUXLEY**

Autobiographical writing is yet another form of creative articulation. It is indeed a delicate art that unites one's biographical trajectory with that of history: how one evolves, grows, matures; and how currents of history and larger social forces shape one's being. While we read a good autobiography, we learn not just about a discrete individual; we also learn about history, society and politics. Nehru's autobiography, to take a simple illustration, gave us a great insight into the larger social forces in the early twentieth century — the international politics, the freedom struggle, and the leadership of Mahatma Gandhi. Writing an autobiography is, therefore, not an exercise in self-advertisement. It leads to humility — a profound realisation that one is not alone but part of a larger reality. It also requires courage and honesty; a willingness to enter into one's deep emotions, confess one's faults, agonies, aspirations. See, for instance, Mahatma Gandhi's autobiography. How candid he was in narrating his inner world — his follies, his anxieties, his aspirations, and above all, his urge to 'experiment' with life. Autobiographical writing is, therefore, not just descriptive; it is reflective and endowed with memory and sensitivity.

© NCERT not to be republished

In a way, with a good autobiography, history loses its anonymity; instead, it becomes a narrative, an intimate story that fascinates us.

Read the following extracts. Can you recollect something from your childhood that has left a lasting impression on you?

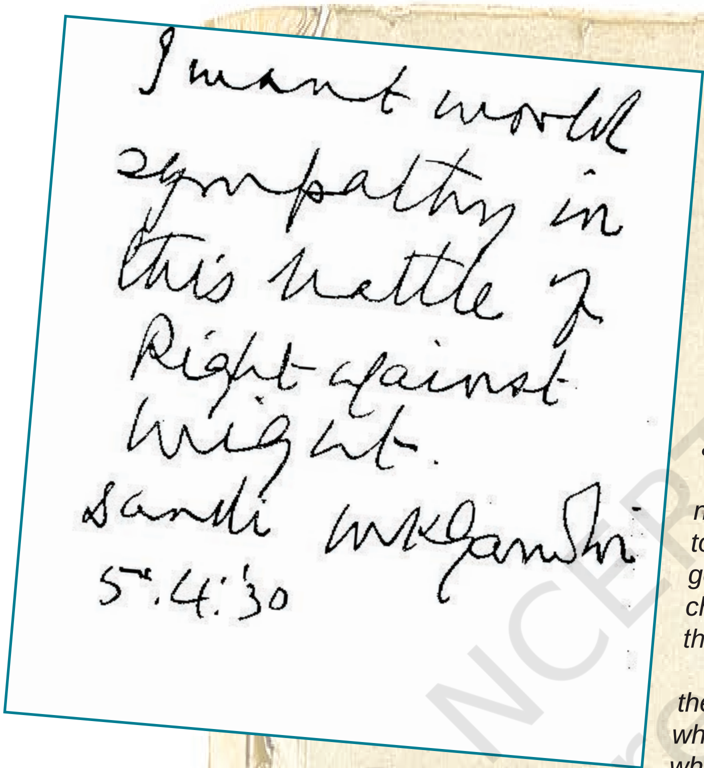
I want world sympathy in this battle of Right against Might.
Dandi MKGandhi
5.4.'30

A word about vocational training. It was my intention to teach every one of the youngsters some useful manual vocation. For this purpose Mr Kallenbach went to a Trappist monastery and returned having learnt shoe-making. I learnt it from him and taught the art to such as were ready to take it up. Mr Kallenbach had some experience of carpentry, and there was another inmate who knew it; so we had a small class in carpentry. Cooking almost all the youngsters knew.

All this was new to them. They had never even dreamt that they would have to learn these things some day. For, generally, the only training that Indian children received in South Africa was in the three R's.

On Tolstoy Farm we made it a rule that the youngsters should not be asked to do what the teachers did not do and, therefore, when they were asked to do any work, there was always a teacher cooperating and actually working with them.

– an extract from *The Story of My Experiments with Truth*
by M.K. Gandhi

As a child I spent my holidays in my grandfather's house in Calcutta, and it was there that I began to read. My grandfather's house was a chaotic and noisy place, populated by a large number of uncles, aunts, cousins and dependants, some of them bizarre, some merely eccentric, but almost all excitable in the extreme. Yet I learned much more about reading in this house than I ever did in school.

The walls of my grandfather's house were lined with rows of books, neatly stacked in glass-fronted bookcases. The bookcases were prominently displayed in a large hall that served, among innumerable other functions, also those of playground, sitting room, and hallway.

– an extract from *The Imam and the Indian*
by Amitav Ghosh

© NCERT not to be republished

The first day of monsoon mist. And it's strange how all the birds fall silent as the mist comes climbing up the hill. Perhaps that's what makes the mist so melancholy; not only does it conceal the hills, it blankets them in silence too. Only an hour ago the trees were ringing with birdsong. And now the forest is deathly still, as though it were midnight.
Through the mist Bijju is calling to his sister. I can hear him running about on the hillside but I cannot see him.

– an extract from *Book of Nature*
by Ruskin Bond

Now that you have read the extracts you must have noticed that the common thread which runs through these types of writings is the presence of the writer. If one reads just the extracts it is difficult to find out which form of autobiographical writing it represents. The writer represents herself/himself against the backdrop of memories, incidents and locales. Autobiographies, diaries, letters, journals, memoirs and travelogues are all ways of conveying to the reader the lived experiences of the writer. Although differing in some ways, these forms are alike in having an 'I' who recounts events and impressions in a specific setting i.e. place and time. Because they speak in such personal tones, these records and narratives are rich in human interest. Social and intellectual historians find them especially valuable sources, and they are increasingly studied by literary historians and critics as well.

Autobiographical writings revolve around the personal life of an individual. Everyone can write about their lives and things connected with them. When these descriptions touch the lives of others they become timeless pieces of reflection not only about the person concerned but also about the place, the country and the universe at large.

Autobiographical writing is an excellent way to work on your descriptive skills. When

गतिविधि 12 ◆ Activity 12

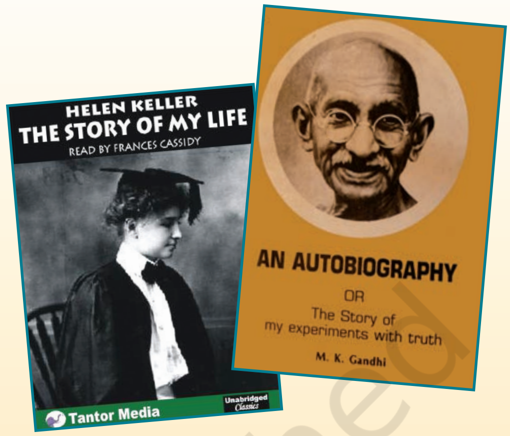

इस इकाई में आपने कई आत्मकथात्मक अंश पढ़े। अपने यादगार क्षणों को आत्मकथात्मक रूप दीजिए।

You have read examples of autobiographical writings in this unit. Recollect some memorable moments of your life and record them as an autobiography.

© NCERT not to be republished

you describe items or memories from your past, you are able to provide details that are often lacking in more purely imaginative exercises. With autobiographical writing you learn how to describe what 'was' rather than what 'isn't'.

Mark Twain in his *Autobiography* (1906) has written, "An autobiography that leaves out the little things and enumerates only the big ones is no proper picture of the man's life at all; his life consists of his feelings and his interests, with here and there an incident apparently big or little to hang the feelings on."

A.P.J. Abdul Kalam in his autobiography, *Wings of Fire,* has narrated the stroy of his childhood days in a simple and lucid manner. Here is an extract.

> *The Second World War broke out in 1939, when I was eight years old. For reasons I have never been able to understand, a sudden demand for tamarind seeds erupted in the market. I used to collect the seeds and sell them to a provision shop on Mosque Street. A day's collection would fetch me the princely sum of one anna. My brother-in-law Jallaluddin would tell me stories about the War which I would later attempt to trace in the headlines in* Dinamani*. Our area, being isolated, was completely unaffected by the War. But soon India was forced to join the Allied Forces and something like a state of emergency was declared. The first casualty came in the form of the suspension of the train halt at Rameswaram station. The newspapers now had to be bundled and thrown out from the moving train on the Rameswaram Road between Rameswaram and Dhanuskodi. That forced my cousin Samsuddin, who distributed newspapers in Rameswaram, to look for a helping hand to catch the bundles and, as if naturally, I filled the slot. Samsuddin helped me earn my first wages. Half a century later, I can still feel the surge of pride in earning my own money for the first time.*

Some other well known autobiographies are Charlie Chaplin's *My Autobiography* wherein he talks about his struggles and also his career on the silver screen that brought laughter to millions of people. Helen Keller's *The Story of My Life* is an account of how she triumphed over blindness and deafness. Dhyan Chand's *Goal* is an inspiring story of how a young man became the nation's hockey wizard. Booker T. Washington's *Up From Slavery* talks about his journey from slavery to freedom. Bachendri Pal's *Everest — My Journey to the Top* is an inspirational tale about the first Indian woman to scale the Everest. Salim Ali's *The Fall of a Sparrow* describes how childhood curiosity about nature and a spirit of adventure led to an unusual career choice for the Bird Man of India. Bama's *Karukku* is the story of a Tamil Dalit woman who overcomes impossible odds to carve an identity for herself.

Another form of autobiographical writing is **Diary Writing**. It is possibly the finest moment of contemplation. Diary writing unites silence and solitude. One looks at onself, listens to the inner voice, and articulates everyday happenings, deeper experiences, intimate feelings which sometimes do reveal certain historical and biographical facts. In a way, it is a therapy; it

© NCERT not to be republished

See गतिविधि/Activity 9 on Page 51

is like managing space for oneself, nurturing and protecting one's authentic self and preserving the role of a minute observer of everyday life. Diary writing, needless to add, is immensely creative because it requires sensitivity, honesty, and the ability to observe, document and record.

The young Jewish girl, Anne Frank, created such an impact by recording her experiences during the Second World War in her diary that her words were translated to the stage and the screen. The diary that was originally written in Dutch was later translated into many languages. Here is the first entry of Anne Frank's Diary.

12 June 1942

Writing in a diary is a really strange experience for someone like me. Not only because I've never written anything before, but also because it seems to me that later on neither I nor anyone else will be interested in the musings of a thirteen-year-old schoolgirl. Oh well, it doesn't matter. I feel like writing, and I have an even greater need to get all kinds of things off my chest.

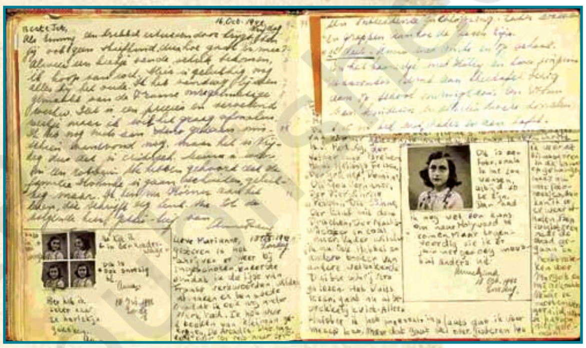

Pages from Anne Frank's diary

'Paper has more patience than people.' I thought of this saying on one of those days when I was feeling a little depressed and was sitting at home with my chin in my hands, bored and listless, wondering whether to stay in or go out. I finally stayed where I was, brooding: Yes, paper does have more patience, and since I'm not planning to let anyone else read this stiff-backed notebook grandly referred to as a 'diary', unless I should ever find a real friend, it probably won't make a bit of difference.

Now I'm back to the point that prompted me to keep a diary in the first place: I don't have a friend...

To enhance the image of this long-awaited friend in my imagination, I don't want to jot down the facts in this diary the way most people would do, but I want the diary to be my friend, and I'm going to call this friend 'Kitty'...

yours,
Anne

Anne continued to write till 1 August 1944, which was her final entry.

Diary writing is a daily record of personal experiences and observations usually written as an aid to memory or reflection and without intention of being published during the author's lifetime. While writing a diary, mentioning the date and place are important because that makes it a source of reference for oneself and posterity. A diary written over a period of time is nothing short of an autobiography as we get to know a lot about the writer.

© NCERT not to be republished

Diaries of literary persons show their growth as great writers and thinkers, for example Virginia Woolf, Louisa May Alcott, Franz Kafka, Katherine Mansfield, Iris Murdoch, Sylvia Plath, George Bernard Shaw, Alice Walker.

Samuel Pepys' diary is one of the most famous diaries in history. A personal record of his life, it also provided historians with great insights into how people lived in London during the 1600s. His diary contained details of events like the Great Plague of London (1665) and the Great London Fire (1666). All these accounts helped historians reconstruct the life and times of the city.

Letter Writing is also very personal. It is a written communication between two persons. Letter writing is an art, which is not only about penning words on paper but also expressiveness, spontaneity and creativity. Jawahralal Nehru's letters to his daughter Indira give an insight into history and the relationship between a father and a daughter.

The historian, Arnold Toynbee, wrote a letter to Bertrand Russell on his ninety-fifth birthday. Here are extracts from the letter in which Toynbee expresses his gratitide to the famous philosopher, writer and mathematician for also being an engaging peace activist.

At 273 Santa Teresa
Stanford, Claif. 94305
United States
9 May, 1967

Dear Lord Russell,

Your ninety-fifth birthday gives me, like countless other friends of yours who will also be writing to you at this moment, a welcome opportunity of expressing some of the feelings that I have had for you all the time . . . It would have been possible for you to continue to devote yourself exclusively to creative intellectual work, in which you had already made your name by achievements of the highest distinction – work which, as we know, gives you intense intellectual pleasure, and which at the same time benefits the human race by increasing our knowledge. . .But you care too much for your fellow human beings to be content with your intellectual career alone, a splendid one though it is . . . I am grateful to you, most of all, for the encouragement and the hope that you have been giving for so long, and are still giving as vigorously and as fearlessly as ever, to your younger contemporaries in at least three successive generations. As long as there are people who care, as you do, for mankind, and who put their concern into action, the rest of us can find, from the example that you have set us, courage and confidence to work, in your spirit, for trying to give mankind the future that is its birthright, and for trying to help it to save itself from self-destruction. . .This is why I feel constant gratitude to you and affection for you, and why 18 May, 1967, is a day of happiness and hope for me, among your many friends.

Yours ever
Arnold Toynbee

© NCERT not to be republished

Throughout history, letters have served both personal and professional ends for communicating over distance, and their importance as a communicative genre should not be ignored. While letters are literary, they are in everyday life mostly social — they have helped people develop and maintain relationships, they have emerged as central to communication in many types of cultures, and have been used to educate both children and adults.

The Flight of the Written Word

In Abu'l Fazl's words :

> *The written word may embody the wisdom of bygone ages and may become a means to intellectual progress. The spoken word goes to the heart of those who are present to hear it. The written word gives wisdom to those who are near and far. If it was not for the written word, the spoken word would soon die, and no keepsake would be left us from those who are passed away. Superficial observers see in the letter a dark figure, but the deep-sighted see in it a lamp of wisdom* (charagh-i-shinasai)*. The written word looks black, notwithstanding the thousand rays within it, or it is a light with a mole on it that wards off the evil eye. A letter* (khat) *is the portrait of wisdom; a rough sketch from the realm of ideas; a black cloud pregnant with knowledge; speaking though dumb; stationary yet travelling; stretched on the sheet, and yet soaring upwards.*

Journals are somewhat formal recordings of one's experience. These documents are occasionally printed because they contain information and commentary of use or interest to a wider readership. The journals, diaries and letters of earlier generations are now becoming increasingly available in modern editions and reprints.

Memoirs and **Reminiscences** are autobiographical writings that usually emphasise what is remembered rather than who is remembering. The author, instead of recounting his life, deals with those experiences of his life, people and events that she/he considers most significant. Memoirs are usually about part of a life rather than the chronological telling of a life from childhood to adulthood/old age. They focus more on external events rather than on inner development as is done in autobiographical writing. They are characteristically anecdotal and episodic, with the focus on describing interesting people and places. The following is an excerpt from the memoir, *Living to Tell the Tale* by Gabriel Garcia Marquez, who won the Nobel Prize for literature in 1982. "When my grandfather gave me the dictionary, it roused so much curiosity in me about words that I read it as if it were a novel, in alphabetical order, with little understanding.

© NCERT not to be republished

That was my first contact with what would be the fundamental book in my destiny as a writer."

Satyajit Ray's memoir, *My Years with Apu,* offers many insights into the production of his first three films.

Rabindranath Tagore's memoir, *My Boyhood Days*, was written when he was nearly eighty. In it he describes how he was a lonely boy and his sense of wonder and delight in seemingly commonplace experiences of his boyhood which helped him become the great poet he was.

Firdaus Kanga's *Heaven on Wheels* is a travelogue in which he reminiscences about his visit to Cambridge. There he met the renowned astrophysicist Stephen Hawking. The following is an extract from his book.

When the tour was done, I rushed to a phone booth and, almost tearing the cord so it could reach me outside, phoned Stephen Hawking's house. There was his assistant on the line and I told him I had come in a wheelchair from India (perhaps he thought I had propelled myself all the way) to write about my travels in Britain. I had to see Professor Hawking — even ten minutes would do. "Half an hour," he said. "From three-thirty to four."

And suddenly I felt weak all over. Growing up disabled you get fed up with people asking you to be brave, as if you have a courage account on which you are too lazy to draw a cheque. The only thing that makes you stronger is seeing somebody like you, achieving something huge. Then you know how much is possible and you reach out further than you ever thought you could.

Travelogues can be in the form of a film, videotape or a piece of writing about travel, especially to interesting or remote places, or about somebody's travels in particular.

Travelogues are a record of interesting anecdotes and are written to entertain and inform. They can also be written to document a chronological narrative of a trip. As a piece of writing, a travelogue is less formal in its structure. While writing a travelogue you can use headings to organise your thoughts. It is a good idea to list the subjects you want to cover and then write descriptive or reflective paragraphs about each topic. Though you can use words and ideas to create drama, action and excitement about your travels, the writing should reflect the culture and life of the people of that place.

A vivid description of a place makes it come alive, like the following description of Kathmandu, an extract from *Heaven Lake* by Vikram Seth.

Kathmandu is vivid, mercenary, religious, with small shrines to flower-adorned deities along the narrowest and busiest streets; with fruit sellers, flute sellers, hawkers of postcards; shops selling Western cosmetics, film rolls and chocolate; or copper utensils and Nepalese antiques. Film songs blare out from the radios, car horns sound, bicycle bells ring, stray cows low questioningly at motorcycles, vendors shout out their wares. I indulge

© NCERT not to be republished

myself mindlessly: buy a bar of marzipan, a corn-on-the-cob roasted in a charcoal brazier on the pavement (rubbed with salt, chilli powder and lemon); a couple of love story comics, and even a Reader's Digest. *All this I wash down with Coca Cola and a nauseating orange drink, and feel much the better for it.*

I consider what route I should take back home. If I were propelled by enthusiasm for travel per se, I would go by bus and train to Patna, then sail up the Ganges past Benares to Allahabad, then up the Jumna past Agra to Delhi. But I am too exhausted and homesick; today is the last day of August. Go home. I tell myself: move directly towards home. I enter a Nepal Airlines office and buy a ticket for tomorrow's flight.

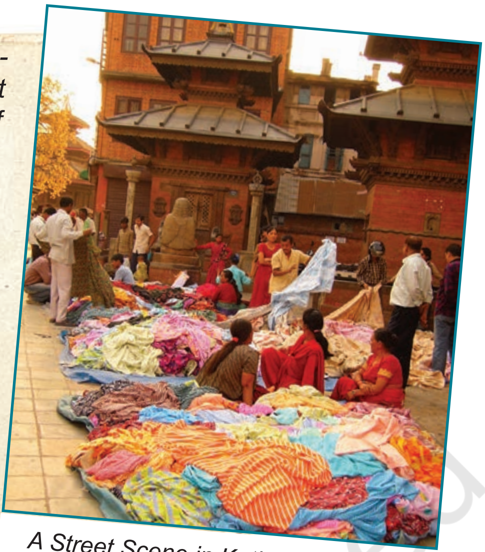

A Street Scene in Kathmandu

The most important aspect of a travelogue is that you should try to capture all the senses when you write about a place. One should not just give a physical description, but try to convey the significant sounds and smells as well as the physical feel of the place. The same is true of sketching the character of someone you meet, but the most important is the dialogue — a well chosen snatch of conversation can bring a person to life in a single span.

Creative writing requires the writer to think critically — to reshape what is known into something that is new, refreshing and meaningful. So, observe and internalise the world around you and let it become part of your memory. Capture the memorable moments in words and make them eternal. You may express these in any form of writing.

- Autobiographies view events in retrospect and highlight the self-knowledge and growth of the writer over a period of time.
- Diary writing is a daily record of thoughts, events and experiences. Mentioning the date and place is its inherent feature.
- Journal writing is a formal record of one's views on different issues/ happenings over a period of time.
- Letter writing is a personal form of communication between two persons. Letters, however personal, are structured by a beginning, middle and end.
- Memoirs and reminiscences are records of meaningful and relevant moments of one's past with a focus on the event and not the author.
- Travelogues are descriptive accounts of a journey or travel to a place and deal with real-life incidents.

If the sight of the blue sky fills you with joy, if the simple forms of nature have a message that you understand, express it in words in any form. Your memory and imagination may just give a new dimension to your writing.

© NCERT not to be republished

गतिविधि 13 — Activity 13

अपनी कल्पना के आधार पर इनमें से किसी एक समाचार को संवाद में बदलिए।

Use your imagination to write dialogues based on any one of the following news stories.

सहवाग ने कहा– कैच छोड़ना महँगा पड़ा, जयपुर, 12 मई 2008 (भाषा)। दिल्ली डेयर डेविल्स के कप्तान वीरेंद्र सहवाग ने इंडियन प्रीमियर लीग में राजस्थान रायल्स के हाथों हार का जिम्मा अपने सिर पर लेते हुए कहा कि यदि उन्होंने मैन ऑफ द मैच शेन वाटसन को शुरू में ही जीवनदान नहीं दिया होता तो मैच का परिणाम उनके पक्ष में रहता। वाटसन ने 40 गेंदों पर 74 रन की पारी खेली जिससे रायल्स तीन विकेट से जीत दर्ज करने में सफल रहा। लेकिन यह आस्ट्रेलियाई आलराउंडर जब 26 रन पर था, तब यो महेश की गेंद पर सहवाग ने उनका आसान कैच छोड़ दिया था।

सहवाग ने मैच के बाद कहा – यह (156 रन) इस विकेट पर अच्छा स्कोर था क्योंकि गेंद बल्ले पर नहीं आ रही थी, लेकिन आखिर में हमें दो कैच छोड़ने बहुत महँगे पड़े। विशेषकर मैंने तब वाटसन का कैच छोड़ा जबकि वे 20 या 30 रन के आसपास थे और हमें इसका खामियाज़ा भुगतना पड़ा।

(जनसत्ता से साभार)

The Tale of a Broken Pot

IRAVATHAM MAHADEVAN AND S. RAJAGOPAL

Today I am a broken pot stored away in a museum. But, about eighteen hundred years ago, I was a shining new Kalayam. My proud owner was a toddy-tapper named Naakan. He lived in a small hamlet at the edge of the forest (near present-day Andipatti in Theni District of Tamil Nadu).

Naakan was too poor to own land; but he earned his living by taking on lease some coconut and palmyra trees, tapping and selling the toddy...

Poor he might have been, but Naakan was literate. In order to identify his Kalayam and its contents, he scratched this message on it with his sharp iron tool:

naakan uRal : Naakan's (pot with) toddy-sap

The Tamil word 'ooral' (from 'ooRu' or 'to ooze') meaning 'freshly tapped toddy' is spelt here with the short vowel 'u' probably due to oversight or reflecting the colloquial usage...

Archaeologists who dug me out of the earth near Andipatti a couple of years ago, have determined from examining the fabric of my body, that I was made in about the third century A.D...

And that is not all. The two-word inscription carries an important message, namely, how widespread literacy must have been in the ancient Tamil country, if a poor toddy-tapper, living in a remote hamlet far away from urban and commercial centres, could write down his name and what he was doing with the pottery he owned. That is the reason why I am preserved in the museum and not discarded like other broken pottery!

Source: The Hindu, *13 May 2008*

© NCERT not to be republished

संवाद / Exercises

1. *स्वयं को सब्ज़ीवाले, माली या चौकीदार के रूप में रखकर देखिए। किसी एक के रूप में अपने को रखकर आत्मकथा लिखिए।*
   Imagine yourself as a vegetable vendor, a gardener, or a watchman. Write an autobiographical note as any one of them.

2. *अपनी कल्पना से किसी पक्षी, कागज़, या एक रुपये के सिक्के की आत्मकथा लिखिए।*
   Use your imagination and write an autobiography of a bird, a paper, or a one rupee coin.

3. *'पालतू पक्षी का उड़ती चिड़िया के नाम पत्र' – अपनी कल्पना से लिखिए।*
   'A letter from a pet bird to a bird outside': use your imagination and write.

4. *अपने बचपन की किसी फ़ोटो / खिलौने / पुस्तक / पोशाक को देखते हुए आप अपने बीते हुए दिनों को किस रूप में याद करते हैं? लिखिए।*
   Look at any photograph / toy / book / dress of your childhood. Now trace the memory of your childhood and describe it.

5. *वर्तमान समय में होने वाली हिंसक घटनाएँ गांधी जी से कुछ कहने को विवश करती हैं। इसे ध्यान में रखते हुए गांधी जी को एक पत्र लिखिए।*
   The violence all around you compels you to share your feelings with Gandhiji. Keeping this in view write a letter to Gandhiji.

6. *'सृजनात्मक लेखन तथा अनुवाद' की कक्षा में पहले दिन के अपने अनुभवों को लिखिए।*
   Narrate your experiences of the first day in the Creative Writing and Translation class.

7. *सृजनात्मकता हमारे चारों तरफ़ बिखरी हुई है, लेकिन हम इसे अक्सर महसूस नहीं कर पाते। क्या आपने कभी इस पर विचार किया? कक्षा में चर्चा कीजिए।*
   There is creativity all around us but most of the time we don't notice it. Have you ever reflected on this? Discuss in class.

संवाद / Exercises

© NCERT not to be republished

8. अपने एक दिन के अनुभव डायरी में लिखें –
   - स्कूल में
   - परीक्षा से पहले
   - प्रिय मित्र से अनबन

Make a diary entry of your experience of a day
- *in school.*
- *just before the examination.*
- *when you differed from your friend.*

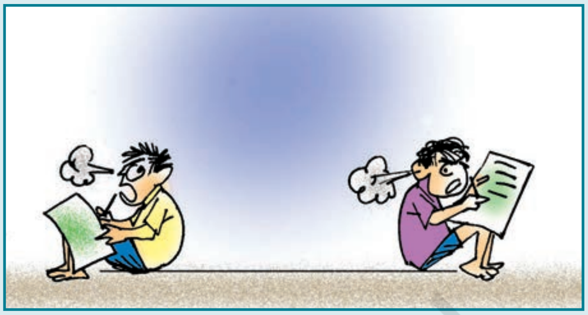

9. कल्पना कीजिए कि किसी एक बैंक लॉकर / दादी या नानी के बटुए / कैशियर के डिब्बे / रिक्शा चालक की जेब में विभिन्न प्रकार के रुपये और सिक्के बोल सकते, तो उनके बीच क्या संवाद होता? लिखिए।

Imagine that the currency notes and coins of different denominations in a bank locker/grandma's purse/cashier's box/a rickshaw puller's pocket could speak. What would they speak about themselves? Write in the form of a dialogue.

Long ago the Japanese novelist Shiga Naoya presented an essay written by his grandchild as one of the most remarkable prose-pieces of his time. It was entitled 'My Dog', and ran as follows:

"My dog resembles a bear; he also resembles a badger; he also resembles a fox... "

However, the essay closed with, "But since he's a dog, he most resembles a dog."

— *Kurosava* in Something Like an Autobiography

© NCERT not to be republished

3

मीडिया
Media

11132CH03

© NCERT not to be republished

I. मीडिया लेखन का संक्षिप्त परिचय

II. मीडिया लेखन

- समाचार रिपोर्ट
- साक्षात्कार
- समीक्षा

I. Media Writing — an Introduction

II. Media Writing

- News Report
- Interview
- Review

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

मीडिया से रू-ब-रू

मीडिया लेखन के विभिन्न रूपों से एक अनौपचारिक परिचय

समूह कार्य

1. *मीडिया को जानें*
   - *सभी विद्यार्थी एक गोल चक्कर में खड़े होंगे।*
   - *अपने दाएँ-बाएँ के विद्यार्थी से बातचीत करेंगे। एक-दूसरे के बारे में दो नयी बातें जानेंगे।*
   - *सब के साथ अपनी जानकारी बाँटेंगे।*

2. *चर्चा के बिंदु*
   - *आपने एक-दूसरे के बारे में कैसे जाना?*
   - *खबर या सूचना दूसरों तक कैसे पहुँचेगी?*
   - *मिलकर चर्चा करेंगे कि विद्यालय/अपने आस-पास की कोई खबर सब तक कैसे पहुँचाएँगे?*
   - *नगर, राज्य, देश, विदेश की जानकारी कैसे पहुँचेगी?*
   - *किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति, घटना, नयी पुस्तक / पत्र / पत्रिका या फ़िल्म आदि से ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को कैसे परिचित कराएँगें।*

3. *अपना अखबार बनाएँ*
   - *एक सप्ताह के समाचार पत्रों में से कुछ समाचार, कुछ . फ़ीचर, कुछ साक्षात्कार, कुछ समीक्षा के उदाहरण ढूँढ़कर अपना अखबार बनाएँ।*

कलम रुकती नहीं ...

सुंदरतम सागर है वह
जिसे देखा नहीं अभी हमने
सुंदरतम बच्चा
बड़ा हुआ नहीं अभी तक
सुंदरतम दिन अपने
वे हैं जिन्हें जिया नहीं हमने अभी
और वे बेपनाह उम्दा बातें, जो
सुनाना चाहता हूँ तुम्हें मैं
अभी कही जानी हैं

– नाज़िम हिकमत

(अपने कठोरतम समय में उपर्युक्त आशावादी पंक्तियाँ लिखने वाले नाज़िम हिकमत (1901-1963) का जन्म तुर्की के सेलोनिका शहर में हुआ। अपनी माँ की राष्ट्रवादी भावनाओं से प्रेरित होकर वे तुर्की के स्वतंत्रता-संग्राम से जुड़े। तत्कालीन सत्ता के पीछे पड़ने पर अन्य कई बुद्धिजीवियों की तरह ही वे भी अनातोलिया पहुँचे। वहाँ वे किसानों और मज़दूरों के संपर्क में आए। इन आत्मीय संबंधों ने उनकी कविताओं के विद्रोही तेवर को रोका नहीं बल्कि धार दी।)

© NCERT not to be republished

खबर लिखना बहुत ही रचनात्मक काम हो सकता है। उतना ही रचनात्मक, जितना कविता लिखना; दोनों का उद्देश्य मनुष्य को और समाज को ताकत पहुँचाना है। खबर में लेखक तथ्यों को बदल नहीं सकता, पर दो या दो से अधिक तथ्यों के मेल से असलियत खोल सकता है।

— रघुवीर सहाय

I. मीडिया लेखन का संक्षिप्त परिचय

© NCERT not to be republished

अभिजीत की तरह अखबार या अन्य समाचार माध्यमों के ज़रिये अपने आस-पास की समस्याओं और सार्वजनिक मसलों को उठाने वालों की कमी नहीं है। अखबार या किसी अन्य समाचार माध्यम जैसे टी.वी. चैनल आदि पर जन-समस्याओं और सार्वजनिक मसलों के उठने पर सरकार, प्रशासन और नीति-निर्माताओं का ध्यान उस ओर जाता है। दरअसल, समाचार माध्यमों का एक प्रमुख काम लोगों की समस्याओं को उठाना और सरकार / प्रशासन का ध्यान उस ओर खींचना है। इसके साथ ही वे लोगों को सूचनाएँ और समाचार देने, उन्हें जागरूक बनाने और उनका मनोरंजन करने का कार्य करते हैं। एक लोकतांत्रिक समाज में समाचार माध्यम लोगों को सार्वजनिक महत्त्व के मुद्दों और प्रश्नों से अवगत कराने के अलावा उस पर विभिन्न विचारों और विश्लेषणों की प्रस्तुति के ज़रिये अपनी राय बनाने में मदद करते हैं।

यही कारण है कि समाचार मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। एक स्वतंत्र, निष्पक्ष और मुक्त समाचार मीडिया के बिना गतिशील और स्वस्थ लोकतंत्र की कल्पना नहीं की जा सकती है। समाचार मीडिया के ज़रिये नागरिकों को सरकार और अपने जन-प्रतिनिधियों के कामकाज के बारे में जानकारी और उनके प्रदर्शन का आकलन करने का अवसर मिलता है। इस जानकारी और आकलन के आधार पर ही नागरिक अपने जन-प्रतिनिधियों और सरकार का चुनाव करते हैं। इस तरह समाचार मीडिया अभिजीत और उसके जैसे लाखों-करोड़ों लोगों को नागरिक बनने और नागरिक की भूमिका निभाने में सक्रिय मदद करता है। एक अर्थ में मीडिया न सिर्फ़ लोगों को एक-दूसरे से जुड़ने और अपने सरोकारों को साझा करने में मदद करता है बल्कि वह हमारे लिए दुनिया की खिड़की भी खोलता है।

स्पष्ट है कि मीडिया के लिए लेखन का मुख्य उद्देश्य लोगों तक जानकारियाँ और सूचनाएँ पहुँचाना, उन्हें जागरूक और शिक्षित करना और उनका मनोरंजन करना है। यह निश्चय ही एक सर्जनात्मक कार्य है **लेकिन साहित्यिक**

गतिविधि 14 **Activity 14**

किन्हीं तीन अखबारों के पहले पृष्ठ और संपादकीय पढ़ें।
- *तीनों अखबारों में दिए समाचारों की प्राथमिकता और महत्त्व पर कक्षा में चर्चा करें।*
- *तीनों अखबारों में से खबरों को काटकर चिपकाते हुए अपना नया अखबार तैयार करें।*

Read the first page and the editorial page of any three newspapers.
- *Which news items have been given prominence in all the three? Discuss in class.*
- *Make your own newspaper with cuttings from the three newspapers.*

© NCERT not to be republished

लेखन की सृजनात्मकता से अलग यह एक ऐसी सृजनात्मकता है जिसमें कल्पनाशीलता के बजाय यथार्थ और तथ्यों की सीधी और सच्ची प्रस्तुति पर अधिक ज़ोर दिया जाता है। इसके अलावा मीडिया लेखन के भी कई रूप हैं। उनकी संरचना, शैली, भाषा और प्रस्तुति में भी अंतर होता है। ऐसे लेखन के कई रूप साहित्यिक सृजनात्मकता के बिलकुल नज़दीक बैठते हैं जबकि कई अन्य रूपों में सृजनात्मकता भिन्न प्रकार की होती है।

मीडिया के लिए लेखन की शुरुआत करने से पहले मीडिया लेखन के विभिन्न रूपों (जैसे संपादक के नाम पत्र), उनकी विशेषताओं, उनकी ज़रूरतों और शर्तों तथा अपेक्षाओं से परिचित होना ज़रूरी है। इसके लिए सबसे पहले मीडिया के विभिन्न रूपों को समझना ज़रूरी है क्योंकि हर मीडिया की अलग माँग और विशेषता होती है। मीडिया कई प्रकार का होता है। उसके प्रमुख प्रकार हैं –

- **प्रिंट मीडिया** – इसमें समाचारपत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें शामिल हैं। इसे पढ़ने के लिए अक्षर और भाषा का ज्ञान ज़रूरी है। जनसंचार के माध्यमों में यह सबसे पुराना माध्यम है। प्रकाशित शब्दों की अपनी विशेष साख होती है। प्रिंट माध्यमों के लिए लेखन में गहराई, विश्लेषण क्षमता के साथ बेहतर भाषा और शैली ज़रूरी है।

- **दृश्य-श्रव्य माध्यम** – इसमें रेडियो, टेलीविज़न, सिनेमा, टेप रिकार्डर / म्यूज़िक प्लेयर आदि आते हैं। इनके दर्शकों / श्रोताओं के लिए पढ़ा-लिखा होना या साक्षर होना ज़रूरी नहीं है। इनमें ध्वनि और दृश्यों को प्रमुखता दी जाती है। इन माध्यमों की लोकप्रियता और प्रभाव बहुत अधिक है। इनके लिए लेखन करते हुए माध्यम विशेष की प्रकृति का ध्यान रखना ज़रूरी है।

© NCERT not to be republished

- **नए माध्यम** (न्यू मीडिया) – नए माध्यमों में इंटरनेट और मोबाइल आदि प्रमुख हैं। इनकी लोकप्रियता बहुत तेज़ी से बढ़ रही है। इनकी खूबी यह है कि ये जनसंचार माध्यम होते हुए भी अपने ऑडियंस के बीच अंतरक्रिया (इंटरएक्टीविटी) का अवसर उपलब्ध कराते हैं। इन माध्यमों के लिए लेखन करते हुए इस तथ्य को हमेशा ध्यान में रखना पड़ता है।

मीडिया के इन सभी प्रकारों के बीच के फ़र्क और उनकी ताकत और सीमाओं को समझकर ही मीडिया लेखन किया जा सकता है। लेकिन यह समझदारी ही पर्याप्त नहीं है। मीडिया के विभिन्न रूपों के बीच एक और अंतर उनके विषय-वस्तु (कंटेंट) के आधार पर भी किया जाता है। इस अंतर का प्रमुख आधार समाचार है। इस आधार पर मीडिया को दो हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है।

- **समाचार मीडिया** – समाचार मीडिया का दायरा समाचार और विचार के प्रकाशन और प्रसारण तक सीमित होता है। समाचार मीडिया में देश-दुनिया में घटने वाली घटनाओं, समस्याओं और विचारों की तथ्यपूर्ण रिपोर्ट के साथ उनका तार्किक विश्लेषण, उन पर विचारपरक आलेखों और टिप्पणियों का प्रकाशन और प्रसारण होता है। समाचार मीडिया के लिए किए जाने वाले लेखन को ही पत्रकारिता कहा जाता है। इसी तरह समाचार मीडिया में काम करने वाले पत्रकार कहे जाते हैं। समाचार मीडिया में तथ्यों के वस्तुनिष्ठ, निष्पक्ष और सही (एक्यूरेट) प्रस्तुति पर ज़ोर दिया जाता है। तथ्यों और विचारों के बीच एक स्पष्ट विभाजन रेखा रखी जाती है और दोनों के घालमेल से परहेज किया जाता है। इसमें कल्पनाशीलता की गुंजाइश नहीं होती है बल्कि यहाँ स्पष्ट अभिव्यक्ति ही सृजनात्मकता होगी।

- **गैर समाचार मीडिया** – गैर समाचार मीडिया के तहत बाकी सभी मीडिया आता है जिसमें समसामयिक विषयों और समाचारों से इतर मनोरंजन और सामान्य तथा विशेष रुचि के विषयों पर सामग्री का प्रकाशन और प्रसारण किया जाता है। गैर समाचार मीडिया में मनोरंजन को प्रमुखता दी जाती है। इस मीडिया में सृजनात्मक साहित्य से लेकर हल्की-फुल्की कथा-कहानियों, विवरणात्मक फ़ीचरों, गीत-संगीत और मनोरंजन कार्यक्रमों तक सभी कुछ के लिए जगह होती है। इसमें कल्पनाशीलता और प्रयोग पर ज़ोर दिया जाता है। इस मीडिया के लिए लेखन में सृजनात्मकता का होना बहुत ज़रूरी है। अगर आप में कहानी, गीत या कविता, नाटक आदि लिखने की रुचि और प्रतिभा है तो गैर समाचार मीडिया आपके लिए उपयुक्त जगह है, जहाँ आप अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

लेकिन हम यहाँ स्वयं को समाचार मीडिया के लिए लेखन और अनुवाद तक सीमित रखेंगे क्योंकि गैर समाचार माध्यमों के लिए लेखन के वास्ते जिस सृजनात्मक लेखन की आवश्यकता होती है, उसकी विस्तृत चर्चा अन्य अध्यायों में की गई है। समाचार मीडिया के लिए लेखन के कई रूप हैं। इनमें सबसे प्रमुख समाचार लेखन है। इसके अलावा फ़ीचर, साक्षात्कार, लेख / टिप्पणी, समीक्षा, संपादक के नाम पत्र, स्तंभ लेखन आदि को भी समाचार माध्यमों में काफ़ी जगह मिलती है। समाचार माध्यमों के लिए लेखन को **पत्रकारीय लेखन** भी कहते हैं जिसकी अपनी कुछ खास विशेषताएँ हैं। लेकिन इसकी विशेषताओं की चर्चा करने से पहले पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूपों के बीच के अंतर को समझना ज़रूरी है। पत्रकारीय लेखन को मुख्यत: तीन हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है –

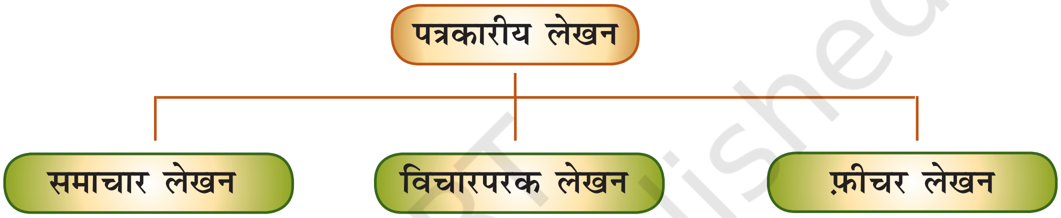

1. **समाचार लेखन** – समाचार ताज़ा घटनाओं, समस्याओं, मुद्दों और उन पर लोगों या महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के विचारों/प्रतिक्रियाओं की तथ्यपूर्ण रिपोर्ट है। इसका एक निश्चित ढाँचा और शैली होती है। इसमें किसी घटना, समस्या, मुद्दे या महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के कथन या बयान को बिना किसी जोड़-तोड़ या उलटफेर के तथ्यपूर्ण, वस्तुनिष्ठ और निष्पक्ष तरीके से ज्यों का त्यों पेश करने की कोशिश की जाती है। आमतौर पर समाचारपत्रों में समाचार के पृष्ठों पर प्रकाशित होने वाले राजनीतिक, आर्थिक, खेल, स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचारों का लेखन करते हुए इन बातों का ध्यान रखा जाता है। समाचारपत्रों में समाचार लेखन का जिम्मा उन पत्रकारों पर होता है जिन्हें संवाददाता (रिपोर्टर / करसपोंडेंट) कहा जाता है। इनमें कुछ संवाददाता उस समाचारपत्र के पूर्णकालिक वेतनभोगी कर्मचारी होते हैं जबकि कुछ अंशकालिक संवाददाता होते हैं जिन्हें स्ट्रिंगर भी कहा जाता है। वे निश्चित मानदेय पर समाचारपत्र या चैनल से जुड़े होते हैं। चूँकि समाचार लेखन में तात्कालिकता (समय-सीमा) और तथ्यों की शुद्धता (एक्यूरेसी) पर बहुत ज़ोर दिया जाता है, इसलिए समाचारपत्र / समाचार चैनल आमतौर पर अपने संवाददाताओं के अलावा किसी स्वतंत्र पत्रकार या लेखक (फ्रीलांसर) से समाचार नहीं लेते हैं।

देखें गतिविधि/Activity 19 पृष्ठ 134

2. **विचारपरक लेखन** – समाचारपत्रों में संपादकीय या संपादकीय के सामने के पृष्ठ (ऑप एड) पर विभिन्न समसामयिक घटनाओं, समस्याओं, मुद्दों और वक्तव्यों पर विचारपरक लेखों, टिप्पणियों और स्तंभ लेखों का प्रकाशन किया जाता है। इसके

not to be republished © NCERT

तहत अखबार / पत्रिका संपादकीय का प्रकाशन करते हैं जो किसी घटना, समस्या, मुद्दे या विषय पर उस अखबार की अपनी राय होती है। इसे उस अखबार के संपादक और उनके सहयोगियों की टीम लिखती है। लेकिन किसी का नाम नहीं दिया जाता है। इसके अलावा विभिन्न विषयों / मुद्दों पर अखबार से जुड़े वरिष्ठ पत्रकारों के साथ-साथ स्वतंत्र लेखकों, टिप्पणीकारों, विशेषज्ञों और स्तंभकारों के लेख प्रकाशित किए जाते हैं। ज़ाहिर है कि इन लेखों, टिप्पणियों और स्तंभों में उनके लेखकों के अपने विचार होते हैं जो उनके नाम से छपते हैं। इसके अलावा संपादकीय पृष्ठ पर ही पाठकों के 'संपादक के नाम पत्रों' का प्रकाशन भी किया जाता है।

3. **फ़ीचर लेखन** – फ़ीचर एक ऐसी पत्रकारीय रचना है जिसमें उसके लेखक को समाचारों के विपरीत आत्मनिष्ठ (सब्जेक्टिव) लेखन यानी अपनी राय और अपने अवलोकन को प्रकट करने की छूट होती है। फ़ीचर का मुख्य उद्देश्य अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं का मनोरंजन होता है। इसे समाचार लेखन की शैली में नहीं लिखा जाता और इसमें सृजनात्मकता की पर्याप्त गुंजाइश होती है। यह मूलतः रूपात्मक लेखन है जिसमें संबंधित विषय के अनछुए, मानवीय और विवरणात्मक पहलू को चित्रात्मक लेखन के ज़रिये पेश करने की कोशिश की जाती है। फ़ीचर भी कई प्रकार के होते हैं। समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में फ़ीचर के लिए अलग पृष्ठ या पूरा परिशिष्ट होता है। इसके अलावा आजकल कुछ हल्के-फुल्के विषयों या ताज़ा घटनाओं / समस्याओं / मुद्दों के मानवीय पहलू को केंद्रित कर समाचार फ़ीचर लेखन का चलन भी बढ़ा है।

हम स्वतन्त्र हैं !

असमय संघर्ष

15 अगस्त 1947 के हिंदुस्तान का संपादकीय

मरदाने साज की साधिका

सरोद को पुरुषों का साज माना जाता रहा है। लेकिन शरण रा[नी] ने यह लीक तोड़ी और इस वाद्य में अपनी महारत दिखाई। अपनी साधना और हुनर से वे सरोद का पर्याय बन गई थीं। मरदाने साज की यह बेमिसाल साधिका अब हमारे बीच नहीं है। उन्हें याद कर रही हैं पद्मा सचदेव।

जनसत्ता, 20 अप्रैल 2008 में प्रकाशित एक फ़ीचर

गतिविधि 15 ◆ Activity 15

किसी एक दिन शाम को टी.वी. और रेडियो पर समाचार सुनिए और अगले दिन समाचारपत्र पढ़िए। इन तीनों में कौन से समाचार ऐसे थे जो सभी में थे? तीनों में समाचारों की भाषा, शैली, प्रस्तुति और चयन में क्या फ़र्क नज़र आया? तीनों माध्यमों की खूबियों और कमियों को लिखिए।

Listen to and view the news on radio and T.V. one evening. Next day read the same news in the newspaper. Which news items were common in all the three? What difference did you notice in their language, style, presentation and selection? Write the strengths and weaknesses of all the three mediums.

II. मीडिया लेखन

मीडिया लेखन की सृजनात्मकता कई मायनों में साहित्यिक सृजनात्मकता से भिन्न होती है। मीडिया लेखन एक निश्चित अनुशासन के तहत पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं को सूचना देने, उन्हें जागरूक बनाने और उनका मनोरंजन करने के उद्देश्य से किया जाता है। एक अर्थ में यह पाठकों की ज़रूरत, उनकी अपेक्षा और रुचियों को ध्यान में रखकर किया जाने वाला लेखन है। इसमें लेखक और पत्रकार को न सिर्फ़ समय-सीमा का ध्यान रखना पड़ता है बल्कि लेखन की शैली और भाषा के प्रयोग में एक निश्चित सीमा के भीतर रहकर काम करना पड़ता है।

मीडिया लेखन की कुछ प्रमुख विशेषताएँ या ध्यान में रखने योग्य बातें निम्नलिखित हैं –

- **सरल और आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग** – समाचार मीडिया के पाठकों/दर्शकों/श्रोताओं में निरक्षर और कम पढ़े-लिखे से लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों तक सभी शामिल होते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए ऐसी सरल और आम बोलचाल की भाषा के इस्तेमाल पर ज़ोर दिया जाता है जिसे सभी आसानी से समझ सकें। मीडिया लेखन की शैली छोटे और सरल वाक्यों के साथ सीधे और स्पष्ट शब्दों में सूचना और विचार प्रस्तुत करने की होती है। यहाँ क्लिष्ट, पारिभाषिक और तकनीकी शब्दों, सामासिक पदों से बचना चाहिए।

- **माध्यम की प्रकृति के अनुसार लेखन** – मीडिया के लिए लेखन करते हुए माध्यम विशेष जैसे अखबार/पत्रिका, टी.वी. चैनल, रेडियो या इंटरनेट की प्रकृति का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है। प्रिंट माध्यमों के लिए लेखन टी.वी. या रेडियो के लिए लेखन से अलग होता है। इसी तरह इंटरनेट के लिए लेखन इन सबसे अलग होता है। हर माध्यम

© NCERT not to be republished

की अपनी शक्ति और सीमा है। सभी की माँग अलग है और उनके लिए लेखन करते हुए उसका ध्यान रखना ज़रूरी है। प्रिंट माध्यमों में अखबार का प्रकाशन 24 घंटे में और पत्रिकाओं का प्रकाशन एक सप्ताह से लेकर एक महीने के अंतराल पर होता है। इस कारण अखबार या पत्रिका के पत्रकार के पास किसी टी.वी. / रेडियो / इंटरनेट साइट की तुलना में काफ़ी समय होता है क्योंकि टी.वी. या रेडियो पर हर आधे या एक घंटे में समाचारों का प्रसारण होता है जबकि इंटरनेट पर हर समय खबरें अपडेट होती रहती हैं।

इसलिए प्रिंट माध्यमों के लिए लेखन अपेक्षाकृत पर्याप्त शोध के बाद अधिक विस्तार और गहरे विश्लेषण के साथ किया जाता है। लेकिन टी.वी. और रेडियो के लिए लेखन में अधिक विस्तार और गहरे विश्लेषण के लिए ज़्यादा गुंजाइश नहीं होती है। टी.वी. के लिए लेखन करते हुए दृश्यों का अधिक ध्यान रखना पड़ता है। इसमें दृश्यों के अनुसार और उनसे जुड़े तथ्यों और सूचनाओं को रखते हुए लेखन करना पड़ता है जबकि रेडियो के लिए लेखन बातचीत की शैली में शब्दों के ज़रिये चित्र खींचते हुए करना चाहिए।

- **पत्रकारिता के सिद्धांतों का पालन ज़रूरी** – समाचार मीडिया के लिए लेखन करते हुए पत्रकारिता के उन सिद्धांतों का पालन अवश्य किया जाना चाहिए जो मीडिया और उनके ऑडियंस के बीच विश्वास बनाए रखने के लिए ज़रूरी हैं। पत्रकारिता के इन सिद्धांतों में से सबसे प्रमुख है तथ्यों की शुद्धता (एक्यूरेसी) की गारंटी के लिए उनकी भलीभाँति छानबीन और कई स्रोतों से जाँच-पड़ताल और पुष्टि करना। तथ्यों के साथ तोड़-मरोड़ नहीं की जानी चाहिए। इसी तरह तथ्यों को वस्तुनिष्ठ तरीके से यानी बिना किसी पूर्वाग्रह, झुकाव, निजी सोच या विचारों से प्रभावित हुए प्रस्तुत करना चाहिए। इसके साथ ही मीडिया के लिए लेखन में निष्पक्षता का होना भी बहुत ज़रूरी है। किसी घटना, समस्या, मुद्दे या विषय के सभी पक्षों को उनके महत्त्व के अनुसार जगह देनी चाहिए। किसी विवादास्पद तथ्य या स्वयं न देखी घटना के संबंधित स्रोत को उद्धृत करते हुए लिखना चाहिए।

मीडिया लेखन के प्रमुख रूप

मीडिया लेखन के विभिन्न रूपों की हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं। इस खंड में उसके कुछ प्रमुख रूपों की विस्तार से चर्चा करेंगे। हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि मीडिया लेखन के इन प्रमुख रूपों के लिए लिखने से पहले कैसी तैयारी की जानी चाहिए और लेखन के दौरान किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए?

© NCERT not to be republished

समाचार रिपोर्ट

मीडिया लेखन का एक प्रमुख और महत्त्वपूर्ण रूप समाचार लेखन है। कहने की ज़रूरत नहीं है कि समाचार मीडिया का सबसे प्रमुख कार्य समाचार देना है। इन समाचारों के ज़रिये ही हम देश–दुनिया, अपने समाज और आस–पास के घटनाक्रमों और परिवर्तनों से अवगत हो पाते हैं। इससे हमें न सिर्फ़ अपना जीवन जीने में मदद मिलती है बल्कि हम अपनी सामाजिक भूमिका और नागरिक जीवन में भागीदारी भी बेहतर तरीके से निभा पाते हैं। सच यह है कि समाचार मीडिया और समाचारों के बिना आधुनिक समाज और नागरिक जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। यही कारण है कि आज दुनियाभर में समाचार मीडिया का तेज़ी से विस्तार हो रहा है। समाचारों को जल्दी से जल्दी (कई बार कुछ मिनटों और सेकेंडों में) पहुँचाने के लिए नए–नए समाचार माध्यम और तकनीक सामने आ रही हैं।

लेकिन क्या आपने कभी गौर किया है कि हर घटना समाचार माध्यमों में समाचार नहीं बन पाती है? इसी तरह से कुछ समाचार अन्य समाचारों की तुलना में ज़्यादा महत्त्वपूर्ण क्यों होते हैं? ऐसा क्यों होता है कि समाचार माध्यमों में समाचारों के चयन और उन्हें महत्त्व देने के मामले में काफ़ी विभिन्नता दिखाई पड़ती है? आखिर हर समाचारपत्र दूसरे समाचारपत्र से, हर टी.वी. चैनल दूसरे टी.वी. चैनल से और रेडियो स्टेशन–वेबसाइट, दूसरे रेडियो स्टेशन और वेबसाइट से अलग क्यों दिखता है? क्या समाचारों के चयन और प्रस्तुति का कोई निश्चित आधार या पैमाना नहीं है? आखिर कुछ घटनाएँ, समस्याएँ या विचार समाचार क्यों बन जाते हैं जबकि कुछ अन्य घटनाएँ, समस्याएँ और विचार समाचार क्यों नहीं बन पाते?

निश्चय ही, समाचार माध्यमों में समाचारों के चयन के कुछ निश्चित आधार और पैमाने होते हैं जिन पर खरा उतरकर ही कोई घटना, समस्या या विचार समाचार बन पाता है। इस आधार या पैमाने को समाचार मूल्य (News Value) कहा जाता है। समाचार माध्यमों में काम करने वाले संवाददाता और पत्रकार किसी घटना, समस्या और विचार में इसी समाचार मूल्य की खोज करते हैं और जिस घटना, समस्या या विचार में अन्य घटनाओं, समस्याओं और विचारों की तुलना में अधिक समाचार मूल्य होता है, उसके समाचार के रूप में चुने जाने की संभावना बढ़ जाती है।

किसी घटना, समस्या या विचार में निहित समाचार मूल्य का निर्धारण कई कारकों द्वारा होता है। इनमें से कुछ प्रमुख कारकों की संक्षेप में चर्चा ज़रूरी है ताकि समाचार मूल्य के बारे में बेहतर समझदारी बनाई जा सके।

- **नवीनता/परिवर्तन** – किसी घटना, समस्या या विचार के समाचार बनने के लिए ज़रूरी है कि वह नया या ताज़ा हो। कहा भी जाता है कि समाचार वह है, जो नया और ताज़ा है। किसी समाचारपत्र के लिए पिछले चौबीस घंटों में घटी घटनाएँ समाचार हैं तो चौबीस घंटे के टी.वी. समाचार चैनल, रेडियो स्टेशन या समाचार

© NCERT not to be republished

देखें गतिविधि/Activity 20 पृष्ठ 138

वेबसाइट के लिए पिछले घंटों में घटी घटनाएँ समाचार हैं। नया और ताज़ा का आशय यह भी है कि राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति में होने वाले बदलाव या परिवर्तन भी समाचार बन सकते हैं। हालाँकि इन क्षेत्रों में होने वाले बदलाव की गति धीमी होती है। इसी तरह, किसी पुरानी घटना, समस्या या मुद्दे के बारे में अगर कोई नयी जानकारी या तथ्य सामने आता है तो वह भी समाचार है। उदाहरण के लिए, आज अगर द्वितीय विश्वयुद्ध या ऐसी ही किसी महत्त्वपूर्ण घटना, गांधी जी या उन जैसे ही किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व और रंगभेद या उस जैसी किसी महत्त्वपूर्ण समस्या या मुद्दे के बारे में शोध या गोपनीय दस्तावेज़ों के सामने आने से कोई नयी जानकारी मिलती है, तो वह समाचार है।

- **प्रभाव** – किसी घटना, समस्या या विचार के समाचार बनने के लिए उसका नया या ताज़ा होना ही पर्याप्त नहीं है। समाचार बनने के लिए ज़रूरी है कि उसका प्रभाव अधिक से अधिक लोगों पर पड़ रहा हो। जिस घटना, समस्या या विचार का प्रभाव जितने बड़े जनसमूह पर पड़ता है, वह उतनी ही बड़ी खबर बनती है। जैसे एक प्राइवेट स्कूल अपनी फ़ीस 10 प्रतिशत बढ़ाने की घोषणा करता है, वहीं राज्य सरकार अपने स्कूलों में फ़ीस 5 प्रतिशत बढ़ाने का फ़ैसला करती है। इन दोनों समाचारों में राज्य सरकार का फ़ैसला ज़्यादा महत्त्वपूर्ण और बड़ा समाचार है क्योंकि एक प्राइवेट स्कूल की तुलना में राज्य सरकार के निर्णय का असर बड़े जनसमुदाय पर पड़ेगा।

- **निकटता** – किसी घटना, समस्या या विचार के समाचार बनने के लिए एक और महत्त्वपूर्ण कारक उसका लक्षित पाठक या दर्शक/श्रोता समुदाय से निकट होना है। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि लोगों की अधिक दिलचस्पी अपने आसपास की घटनाओं या समस्याओं के बारे में जानने की होती है। लोग जहाँ रहते हैं, उस शहर, कस्बे या गाँव के बाद उनकी दिलचस्पी अन्य करीबी शहरों, कस्बों या गाँवों के बारे में जानने की होती है। यही कारण है कि समाचार माध्यम अपने लक्षित पाठक/श्रोता/दर्शक समूह को ध्यान में रखकर उन घटनाओं/समस्याओं/विचारों को समाचार के रूप में महत्त्व देते हैं जो भौगोलिक रूप से उनके निकट हों। समाचारपत्रों में स्थानीय समाचारों को प्रमुखता देने के पीछे यही वजह होती है। लेकिन निकटता केवल भौगोलिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक भी होती है। स्वाभाविक तौर पर पाठकों / श्रोताओं / दर्शकों की दिलचस्पी उन भारतीयों के बारे में भी जानने की होती है जो विदेशों में बसे हैं। इसीलिए अमेरिका, ब्रिटेन, मध्यपूर्व के देशों की वे खबरें भारतीय समाचार माध्यमों में प्रमुखता से स्थान हासिल करती हैं जिनका संबंध भारतीयों या भारतीयों पर पड़ने वाले प्रभाव से होता है। भारतीय अमेरिकी बॉबी

© NCERT not to be republished

जिंदल का अमेरिकी राज्य लुइसियाना का गवर्नर बनना भारतीय समाचार माध्यमों के लिए बड़ी खबर बना था जबकि अन्य अमेरिकी राज्यों के गवर्नर का चुनाव खबर नहीं बन पाया।

नवीनता + प्रभाव + निकटता = समाचार

हालाँकि किसी घटना, समस्या या विचार के समाचार बनने में कई और कारक सक्रिय भूमिका निभाते हैं लेकिन अधिकांश समाचार इन तीन प्रमुख कारकों – नवीनता, प्रभाव और निकटता– के जोड़ और आपसी अंतर्क्रिया से ही बनते हैं। कोई घटना, समस्या या विचार समाचार बनने लायक है या नहीं, यह जानने के लिए उसे इन तीन कसौटियों पर कसकर देखना चाहिए –

(i) वह घटना, समस्या या विचार कितना नया या ताज़ा है? उसके कारण यथास्थिति में कितना बदलाव या परिवर्तन हुआ है?

(ii) उसका कितने बड़े जनसमुदाय पर और कितना अधिक प्रभाव पड़ा है या पड़ेगा?

(iii) यह हमारे पाठक / दर्शक / श्रोता वर्ग के कितने निकट है?

अगर तीनों प्रश्नों का उत्तर सकारात्मक है यानी वह घटना, समस्या या विचार न सिर्फ़ ताज़ा है बल्कि उसका प्रभाव एक बड़े समुदाय पर पड़ रहा है और वह हमारे लक्षित पाठक / श्रोता / दर्शक समूह के भी नज़दीक है तो उसका समाचार के रूप में चुना जाना तय है। इसी तरह अगर कोई घटना ताज़ा है लेकिन उसका प्रभाव बहुत कम लोगों पर पड़ रहा है और वह लक्षित पाठक वर्ग से भी दूर की है तो उसके समाचार के रूप में चयन की संभावना कम हो जाती है।

शिलांग के एक गाँव के बच्चे स्कूल जाते हुए

गतिविधि 16 — Activity 16

अपने स्कूल या मुहल्ले की उन घटनाओं या समस्याओं की सूची बनाइए जो समाचार बन सकते हों। इनमें से किस घटना या समस्या में नवीनता / परिवर्तन, प्रभाव और निकटता का तत्त्व सर्वाधिक है? वे कौन सी दो घटनाएँ या समस्याएँ हैं जो समाचार बनने के सर्वाधिक उपयुक्त हैं और क्यों? अपने पोर्टफ़ोलियो के लिए लिखिए।

Make a list of events / issues related to your locality / school which have news value. Which of these has most of the following features — newness, impact, proximity, change? Which two from your list can be made into a news report, and why? Write for your portfolio.

© NCERT not to be republished

स्पष्ट है कि समाचार बनने के लिए किसी घटना, समस्या या विचार में इन तीनों तत्त्वों का होना आवश्यक है। समाचार माध्यम समाचारों के चयन और उन्हें प्राथमिकता देते हुए इन्हीं तीन कारकों का ध्यान रखते हैं। इसी आधार पर प्रमुख समाचारों या सुर्खियों (Headlines) का चयन होता है। सैकड़ों समाचारों के बीच वही समाचार प्रथम पृष्ठ पर पहली बड़ी खबर के रूप में जगह हासिल कर पाता है जिसमें ये तीनों कारक अन्य समाचारों की तुलना में सबसे अधिक होते हैं।

इसके अलावा भी अन्य कारक हैं जो किसी घटना, समस्या या विचार को समाचार बना सकते हैं –

- **असामान्यता *(Unusualness)*** – कुछ असामान्य या विचित्र घटनाएँ, समस्याएँ और विचार भी समाचार बन जाते हैं। कहा भी जाता है कि कुत्ता आदमी को काटे तो यह समाचार नहीं है लेकिन अगर आदमी कुत्ते को काट ले तो यह समाचार है क्योंकि यह असामान्य घटना है। ऐसा अक्सर नहीं होता है। यही कारण है कि जब जुडवाँ सिर वाले बच्चे पैदा होते हैं या एक साथ चार या पाँच बच्चे पैदा होते हैं तो वह समाचार बन जाता है।

- **जाने-माने लोग या हस्तियाँ *(Important people / Celebrities)*** – महत्त्वपूर्ण लोगों और जानी-मानी हस्तियों के बारे में जानने की इच्छा सभी में होती है। इसलिए महत्त्वपूर्ण पदों पर बैठे व्यक्तियों और विभिन्न क्षेत्रों में अपने उल्लेखनीय प्रदर्शन से कामयाबी हासिल करने वाले खिलाड़ियों, सिने कलाकारों, लेखकों, उद्योगपतियों आदि की सार्वजनिक गतिविधियों, उनसे जुड़ी घटनाओं या वक्तव्यों और सफलताओं-असफलताओं पर आधारित समाचार भी समाचार माध्यमों में स्थान हासिल करते हैं।

- **टकराव / संघर्ष / हिंसा** – वे घटनाएँ, समस्याएँ और विचार भी समाचार बन सकते हैं जिनसे टकराव, संघर्ष और हिंसा जुड़ी हो या उसकी आशंका जुड़ी हो। टकराव और संघर्ष लोगों में भी हो सकता है, समुदायों और सम्प्रदायों के स्तर पर भी हो सकता है और राष्ट्रों के बीच भी हो सकता है। इसी तरह हिंसा किसी भी रूप में सामने आ सकती है। वह व्यक्तिगत, सामूहिक, साम्प्रदायिक और युद्ध के रूप में प्रकट हो सकती है। ये समाचार इसलिए है क्योंकि इनकी जानकारी से पाठक / दर्शक / श्रोता न सिर्फ़ सचेत और सतर्क हो सकता है बल्कि वह अपने बचाव के उपाय भी कर सकता है।

© NCERT not to be republished

समाचार लेखन की प्रक्रिया

यह जान लेने के बाद कि समाचार क्या है, अगला सवाल यह उठता है कि समाचार लिखा कैसे जाए? यहाँ यह जानना बहुत ज़रूरी है कि समाचार लेखन की एक खास शैली है। समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय और प्रचलित शैली उल्टा पिरामिड शैली है। उल्टा पिरामिड शैली में समाचारों को लिखते हुए यह ध्यान रखा जाता है कि सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य सबसे पहले आए और उसके बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में अन्य तथ्य/सूचनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। स्पष्ट है कि इस शैली में किसी घटना/समस्या/विचार का ब्यौरा कालानुक्रम के अनुसार लिखने के बजाय सबसे नवीनतम और सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना से लिखना शुरू किया जाता है।

इसे उल्टा पिरामिड शैली इसलिए कहा जाता है कि यह शैली पारंपरिक कहानी लेखन की शैली के ठीक उलट है। कहानी लेखन में घटनाओं को कालानुक्रम में लिखा जाता है यानी एक राजा था। उसका एक बेटा था। फिर कहानी में नायिका आती है जो पड़ोसी देश की राजकुमारी है। राजकुमार और राजकुमारी में प्रेम हो जाता है। लेकिन एक अन्य पड़ोसी देश का राजा राजकुमारी से विवाह करने की इच्छा रखता है और वह राजकुमारी के देश पर आक्रमण कर देता है। लेकिन राजकुमारी की रक्षा के लिए उसका प्रेमी राजकुमार भी सेना लेकर बचाव में सामने आ जाता है। फिर दोनों में युद्ध होता है और प्रेमी राजकुमार विजयी होता है। इसके बाद राजकुमार और राजकुमारी का विवाह होता है और उसके पिता उसे सिंहासन सौंप देते हैं। फिर दोनों सुखपूर्वक राज करने लगते हैं। यह कहानी एक पिरामिड की तरह है जिसमें कहानी का धीरे-धीरे विकास होता है और आखिर में क्लाइमेक्स आता है।

लेकिन समाचार लेखन में इस पिरामिड को उलट दिया जाता है और कहानी सीधे क्लाइमेक्स या नतीजे से शुरू होती है। इसके बाद घटते हुए महत्त्व के अनुसार कहानी के अन्य तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है। सबसे कम महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचनाएँ उल्टे पिरामिड के सबसे निचले हिस्से में होती हैं।

© NCERT not to be republished

उल्टा पिरामिड शैली क्यों?

- यह शैली पाठकों/श्रोताओं/दर्शकों की उत्सुकता और उनके जानने की इच्छा के अनुकूल है। कोई भी व्यक्ति किसी घटना/समस्या/विचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य/सूचना को सबसे पहले जानना चाहता है।

- इस शैली की दूसरी खूबी यह है कि अगर पाठकों के पास समय का अभाव है और वे जल्दी में समाचार जानना चाहते हैं तो समाचार के शुरुआती पैराग्राफ को पढ़कर वे जान सकते हैं कि पूरा मामला क्या है?

- इस शैली की तीसरी खूबी यह है कि यह समाचार माध्यमों के संपादकों को उपलब्ध स्थान और समय के अनुसार समाचार के संपादन की सुविधा प्रदान करता है।

उल्टा पिरामिड का ढाँचा

उल्टा पिरामिड शैली में समाचार लेखन का एक खास ढाँचा होता है। इसमें समाचार को तीन हिस्सों में विभाजित किया जाता है –

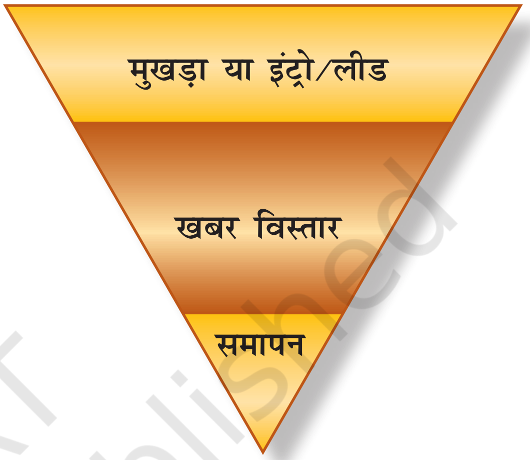

(क) मुखड़ा या इंट्रो/लीड *(Intro/Lead)*
(ख) खबर विस्तार *(Body)*
(ग) समापन *(End)*

इस विभाजन से स्पष्ट है कि समाचार के प्रारंभिक हिस्से को मुखड़ा (Intro), मध्य हिस्से को समाचार विस्तार (Body) और आखिरी हिस्से को समापन (End) कहते हैं। मुखड़ा समाचार का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है क्योंकि इसमें समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्यों और सूचनाओं को लिखा जाता है। मुखड़े से ही समाचार का मिज़ाज और उसके प्रवाह की दिशा तय होती है। अगर मुखड़ा आकर्षक, दिलचस्प और उत्सुकता पैदा करने वाला होगा तो पाठक उस पूरे समाचार को पढ़ना चाहेगा।

एक आदर्श मुखड़ा कैसा होना चाहिए, इसे लेकर कोई एक राय नहीं है और न ही इसका कोई फार्मूला है। आमतौर पर यह माना जाता है कि एक आदर्श मुखड़े में समाचार की सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना / जानकारी आ जानी चाहिए और उसे 35 से 50 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। मुखड़ा समाचार का पहला पैराग्राफ होता है और कभी-कभी किसी बड़ी खबर में मुखड़ा दो पैराग्राफ का भी होता है। लेकिन मुखड़े के पहले पैराग्राफ में दो या तीन से अधिक वाक्य नहीं होने चाहिए।

उदाहरण के लिए एक समाचार के इस मुखड़े को देखिए –

नयी दिल्ली, 10 मार्च (वार्ता)। देशभर में आज से केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) की दसवीं और बारहवीं की बोर्ड परीक्षाएँ शुरू हो गईं। राजधानी के विभिन्न स्कूलों में दो लाख से अधिक छात्र-छात्राओं ने परीक्षा दी। सी.बी.एस.ई. के अध्यक्ष ने परीक्षा शांति से संपन्न होने पर संतोष जाहिर किया है।

© NCERT not to be republished

मुखड़े के बाद समाचार की बॉडी में मुखड़े में कही गई बातों को विस्तार से और उसके अन्य पहलुओं/ तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है। समाचार की बॉडी को भी ऐसे लिखा जाना चाहिए जिससे उस समाचार के सभी महत्त्वपूर्ण पहलू / तथ्य अपने महत्त्व के क्रम में और स्पष्ट रूप में सामने आ जाएँ। समाचार के मुखड़े और उसकी बॉडी के बीच तारतम्यता होनी चाहिए। बॉडी में उस घटना /समस्या/विचार की पृष्ठभूमि भी दी जानी चाहिए जिससे उसका अर्थ स्पष्ट हो सके। जैसे किसी सड़क दुर्घटना का समाचार लिखते हुए उसकी यह पृष्ठभूमि बॉडी में दी जाए तो उसे बिलकुल नया अर्थ मिल जाएगा कि उस चौक पर रेड लाइट खराब होने के कारण पिछले दो महीनों में यह पाँचवीं दुर्घटना है।

उल्टा पिरामिड शैली में समाचार का समापन कहीं भी किया जा सकता है। समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू या तथ्य को मुखड़े में प्रस्तुत करने के बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में तथ्यों / सूचनाओं को देते हुए उसे तार्किक रूप से कहीं भी समाप्त किया जा सकता है। समापन के लिए अलग से घोषणा करने की ज़रूरत नहीं होती। दरअसल, समाचार लिखते हुए छह प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश की जाती है – क्या हुआ है? किसके साथ हुआ है या कौन शामिल है? कब हुआ? कहाँ हुआ है? कैसे हुआ है और क्यों हुआ है? इसे छह ककार–क्या, कौन, कब, कहाँ, कैसे और क्यों – भी कहा जाता है। छह ककारों के उत्तर से ही कोई समाचार पूर्ण होता है।

आई.जी.आई. हवाई अड्डे पर अगले महीने से कम दिखेगी भीड़-भाड़

क्या – हवाई अड्डे पर भीड़ कम होने की उम्मीद
कब – अगले महीने के अंत तक यानी जून 2008 तक
कहाँ – दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट की बैठक में
कौन – मोंटेक सिंह आहलुवालिया

नयी दिल्ली, 12 मई (भाषा)। आई.जी.आई. हवाई अड्डे पर भीड़-भाड़ अगले महीने से कम होने की उम्मीद है। देश के इस प्रमुख हवाई अड्डे पर नया बुनियादी ढाँचा, टर्मिनल और नयी पार्किंग अगले महीने के अंत तक शुरू हो जाएगी। दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (डायल) ने एक बैठक में यह जानकारी दी। यह बैठक योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह आहलुवालिया ने बुलाई थी।

क्यों – 1.2 करोड़ यात्रियों की क्षमता में 2.4 करोड़ की भीड़
कैसे – तीसरे रनवे की शुरुआत जल्द करके

एक घंटे की बैठक में डायल के अधिकारियों ने किए जा रहे काम के बारे में जानकारी दी। आहलुवालिया ने कहा कि सरकार को आव्रजन की सुरक्षा की स्टाफिंग के दो मुद्दों पर देखना है और हम सरकार को रिपोर्ट देंगे। उन्होंने कहा– जून के अंत तक महत्त्वपूर्ण सुधार होना चाहिए और अगले छह माह में और कदम उठाए जाएँगे। इसलिए इस साल सर्दियों से पहले भीड़-भड़ाके की समस्या के हल होने की उम्मीद है।

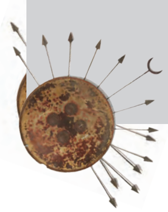

© NCERT not to be republished

उद्धरण / स्रोत – डायल के प्रबंध निदेशक किरण कुमार

डायल के प्रबंध निदेशक किरण कुमार ने कहा – हमें सुरक्षा और आव्रजन के लिए लोग चाहिए क्योंकि हम 2.4 करोड़ यात्रियों (सालाना) को देख रहे हैं जबकि क्षमता 1.2 करोड़ की है। उन्होंने बताया कि डायल अनेक सुधार कर रही है जिनमें तीसरे रनवे को अगस्त माह तक शुरू करना शामिल है जबकि इसके लिए तय समयावधि अगले साल फरवरी की थी। कुमार ने कहा – हम हज टर्मिनल का भी अक्तूबर तक उन्नयन कर रहे हैं जिसके तुरंत बाद हज परिचालन शुरू हो जाएगा।

–जनसत्ता से साभार

इन छह ककारों में पहले चार यानी क्या, कौन, कब और कहाँ का संबंध तथ्यों से है जबकि अन्य दो ककारों का संबंध व्याख्या / विश्लेषण से है। कोई भी समाचार लिखते हुए मुखड़े में पहले चार ककारों – क्या, कौन, कब और कहाँ – का उत्तर दिया जाता है जबकि बॉडी में अन्य दो ककारों – कैसे और क्यों – पर ज़ोर दिया जाता है।

संपादकीय मूल्य और पत्रकारीय आचार संहिता

हर पेशे की तरह पत्रकारिता के भी कुछ मूल्य और उसकी आचार संहिता है। हर पत्रकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इन संपादकीय मूल्यों और आचार संहिता का पालन करेगा। चूँकि पत्रकारिता का सीधा संबंध समाज से है और वह समाचारों / विचारों के प्रकाशन / प्रसारण के ज़रिये जनमत को प्रभावित करती है, इसलिए उस पर ज़िम्मेदारी और जवाबदेही भी काफ़ी होती है। इस सामाजिक ज़िम्मेदारी को पूरा करने के लिए समाचार माध्यमों ने कुछ संपादकीय मूल्य और आचार संहिता विकसित की है। इनका पालन करके ही वे लोगों का विश्वास जीत सकते हैं और उनकी साख बढ़ सकती है। समाचार माध्यमों का अस्तित्व उनकी विश्वसनीयता और साख पर टिका होता है।

समाचार माध्यमों की विश्वसनीयता का सीधा संबंध उनकी निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता (Objectivity), तथ्यों की शुद्धता, संतुलन और स्रोत को उद्धृत (Source/Attribution) करने जैसे संपादकीय मूल्यों से है। एक पत्रकार से यह अपेक्षा की जाती है कि किसी समाचार को लिखते हुए वह बिना किसी पूर्वाग्रह या पक्षपात के तथ्यों को पूरी सच्चाई और ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करेगा। वह तथ्यों की शुद्धता (Accuracy) के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं करेगा। वह समाचार में उल्लिखित सभी पक्षों के प्रति न सिर्फ़ समान और न्यायपूर्ण दृष्टि (Fairness) रखेगा बल्कि उन्हें उनके महत्त्व के अनुसार अपना पक्ष रखने की इज़ाज़त देकर संतुलन (Balance) का भी ध्यान रखेगा। इसके अलावा पत्रकारों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे समाचार में उल्लिखित तथ्यों खासकर विवादास्पद तथ्यों / सूचनाओं के स्रोत के बारे में जानकारी अवश्य दें।

© NCERT not to be republished

इसके साथ ही समाचार माध्यमों और उनमें काम करने वाले पत्रकारों को अपने कामकाज में पूरी ईमानदारी और पारदर्शिता बरतनी चाहिए। उन्हें किसी भी व्यक्ति, संगठन या संस्था, कंपनी या विभाग से कोई अनुचित लाभ, मदद या धन नहीं लेना चाहिए। समाचार माध्यमों को समाचार या रिपोर्ट प्रकाशित / प्रसारित करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वे समाज में साम्प्रदायिक, जातिगत, स्थानिक और क्षेत्रीय विद्वेष न फैलाएँ और न ही ऐसी घटनाओं की सनसनीखेज, भड़काऊ और एकपक्षीय रिपोर्टिंग करें। उन्हें किसी समाचार या जानकारी के प्रकाशन / प्रसारण से पहले उसे कम से कम दो स्रोतों से ज़रूर पुष्ट कर लेना चाहिए। अफवाहों और सुनी-सुनाई बातों को समाचार नहीं बनाना चाहिए। किसी भी व्यक्ति, संगठन, संस्था या कंपनी के खिलाफ़ रिपोर्ट लिखने से पहले उससे उसका पक्ष ज़रूर लेना चाहिए। पत्रकारों को प्रेस से संबंधित विभिन्न कानूनों जैसे मानहानि, न्यायालय की अवमानना, संसदीय विशेषाधिकारों, सरकारी गोपनीयता कानून और कॉपीराइट कानूनों का ध्यान रखना चाहिए।

यहाँ यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि पत्रकारीय आचार संहिता (Code of Conduct) वास्तव में समाचार माध्यमों की ओर से खुद को नियंत्रित (Self-regulation) करने का प्रयास है। समाचार माध्यम खुद ही इसे विकसित करते हैं और उसका पालन करते हैं। समाचार माध्यमों के अलावा पत्रकारों की प्रोफेशनल संस्थाएँ, प्रेस परिषद् जैसे स्वायत्त संगठन और संस्थाओं ने भी आचार संहिताएँ तैयार की हैं। इन आचार संहिताओं में अधिकांश बातें समान होती हैं। लेकिन समाचार माध्यमों पर इनका पालन करने की कोई कानूनी बाध्यता नहीं होती है। इसके बावजूद समाचार माध्यमों और उनके पत्रकारों से उनका पालन करने की अपेक्षा की जाती है। आचार संहिता का पालन करके ही समाचार माध्यम और उनके पत्रकार लोगों का विश्वास हासिल कर सकते हैं।

1. 15 अगस्त 1947 का हिंदुस्तान, 2. 1780 में प्रकाशित होने वाला भारत का पहला अखबार बंगाल गजट, 3. कोलकाता से प्रकाशित बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संपादित जुलाई 1947 का विशाल भारत

साक्षात्कार

साक्षात्कार (Interview) को 'समाचार की फैक्टरी का कच्चा माल' माना जाता है। यहाँ हम नौकरी या दाखिले के लिए होने वाले साक्षात्कार की नहीं बल्कि पत्रकारीय साक्षात्कार की बात कर रहे हैं। एक पत्रकार समाचार से जुड़े तथ्यों को जुटाने की प्रक्रिया में प्रत्यक्षदर्शियों से लेकर अधिकारियों तक विभिन्न लोगों से साक्षात्कार करता है। इन साक्षात्कारों से प्राप्त तथ्यों के आधार पर ही वह समाचार लिखता है। इसीलिए साक्षात्कार को 'समाचार की फैक्टरी का कच्चा माल' कहा जाता है।

पत्रकार किसी व्यक्ति से सीधे या टेलीफ़ोन पर तथ्य, विचार या उसकी भावनाएँ जानने के लिए प्रश्न पूछता है। यह आम बातचीत या मुलाकात से इस मायने में अलग है कि इसका एक निश्चित उद्देश्य (Clear Purpose) और ढाँचा (Structure) होता है। पत्रकारीय साक्षात्कार एक तरह की कला है और निरंतर अभ्यास और अनुभव से ही इसमें दक्षता हासिल की जा सकती है। एक सफल साक्षात्कार के लिए न सिर्फ़ काफ़ी तैयारी करनी पड़ती है बल्कि उसके लिए पर्याप्त ज्ञान, कूटनीति, संवेदनशीलता, धैर्य और अकसर साहस की भी ज़रूरत पड़ती है।

साक्षात्कार के प्रकार

साक्षात्कार के कई प्रकार हैं। इनमें से साक्षात्कार के कुछ प्रमुख प्रकारों के बारे में जानना ज़रूरी है। इससे साक्षात्कारकर्ता को न सिर्फ़ तैयारी करने में सहूलियत होती है बल्कि वह साक्षात्कार की प्रकृति के अनुसार प्रश्न पूछता है। साक्षात्कार के कुछ प्रमुख प्रकार इस तरह हैं –

(i) **सूचनात्मक साक्षात्कार *(Informational Interview)***

सूचनात्मक साक्षात्कार का उद्देश्य तथ्यों की जानकारी लेना या पुष्टि करना होता है। यह साक्षात्कार का सबसे प्रारंभिक और बुनियादी रूप है। इसमें संबंधित व्यक्ति से

© NCERT not to be republished

बहुत बुनियादी किस्म के प्रश्न पूछे जाते हैं जिससे किसी घटना/समस्या के बारे में बुनियादी तथ्यों की जानकारी मिल सके। इस तरह के साक्षात्कार में आमतौर पर छह ककारों – क्या, कौन, कब, कहाँ, कैसे और क्यों – से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं। इस तरह का साक्षात्कार सामान्य तौर पर भुक्तभोगी, प्रत्यक्षदर्शी, पुलिस अधिकारी, अग्निशमन अधिकारी, जनसंपर्क अधिकारी, चिकित्सा अधिकारी और प्रशासनिक अधिकारी आदि से लिया जाता है। सूचनात्मक साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल समाचार के कच्चे माल की तरह किया जाता है।

(ii)* विचारपरक साक्षात्कार *(Opinion Interview)

विचारपरक साक्षात्कार का उद्देश्य साक्षात्कारदाता (Interviewee) के विचार जानना होता है। इसके ज़रिये पत्रकार यह जानना चाहता है कि वे किसी खास मुद्दे / विषय पर क्या सोचते हैं? इस तरह के साक्षात्कार से प्राप्त विचारों को समाचार में साक्षात्कारदाता के नाम के साथ उद्धृत करते हैं। विचारपरक साक्षात्कार उस मामले, घटना या समस्या से जुड़े किसी व्यक्ति, राजनेता, विशेषज्ञ और आम आदमी से भी किया जा सकता है। इस साक्षात्कार में आमतौर पर सवाल कुछ इस तरह पूछे जाते हैं – इस घटना / फ़ैसले / मुद्दे पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है? इसे आप कैसे देखते हैं? आप इससे सहमत या असहमत क्यों हैं? आपकी राय में इसका विकल्प क्या है? आप क्या करने जा रहे हैं?

नीचे पर्यावरणविद् माइक पांडेय का साक्षात्कार दिया जा रहा है। प्रश्नों पर ध्यान दीजिए और सोचिए कि आप प्रश्नकर्त्ता होते तो आपके सवाल क्या होते?

गतिविधि 17 ◆ Activity 17

अगर आपको चर्चित खिलाड़ी/ संगीतज्ञ / लेखक का साक्षात्कार लेने का अवसर मिले तो आप उस साक्षात्कार के लिए जानकारियाँ जुटाने की योजना बनाइए। आप पुस्तकालय और इंटरनेट से उनके बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए और साथ ही अपने मित्रों से उनकी उपलब्धियों, खूबियों और कमियों के बारे में पूछिए। इन सभी तथ्यों और जानकारियों के आधार पर पूछे जाने वाले कुछ प्रश्न तैयार कीजिए।

If you are given a chance to interview a well-known sportsperson / musician / writer, make a plan of how you will collect information related to the interviewee. You may use the local library / Internet. Talk to your friends also about the accomplishments, strengths and weaknesses of the said celebrity. Based on all the information collected, write some questions for the interview.

© NCERT not to be republished

जंगल मेरा ग्लैमर

आपने पर्यावरण और प्रकृति का साथ ही क्यों चुना? इन्हें लेकर आपकी क्या चिंताएँ हैं?

बचपन से ही मैं कुदरत का दीवाना रहा हूँ। बाद में लगा कि कोई अदृश्य शक्ति मुझे यह राह चुनने को प्रेरित कर रही है। अब लगता है इसी काम के लिए बना हूँ। जहाँ तक चिंताओं की बात है, प्रकृति का अंधाधुंध दोहन, जंगलों को उजाड़ा जाना और पर्यावरण के प्रति इंसानी लापरवाही मुझे चिंतित करती है। आदमी की करतूतों से बीते बीस सालों में प्रकृति को भयंकर नुकसान हुआ है। इससे धरती का संतुलन गड़बड़ा गया है। यह हमारे अस्तित्व के लिए भी खतरनाक है और इसकी चिंता पूरी मानवता को करनी चाहिए।

हमारे अस्तित्व के लिए कैसा खतरा?

पर्यावरण और प्रकृति की हालत खराब होने से ही धरती का पारा चढ़ रहा है। हवा में प्रदूषण के कारण नयी-नयी बीमारियाँ फैल रही हैं। बच्चों को दमा हो रहा है। बाढ़ से लेकर सूखे जैसी समस्या प्राकृतिक संतुलन बिगड़ने के कारण ही हैं। मनुष्य अकेला ऐसा जीव है जो दिमाग का इस्तेमाल पर्यावरण बचाने के लिए कर सकता है। आदमी को हरियाली या प्राकृतिक संसाधनों के साथ जानवरों के अस्तित्व के बारे में सोचना चाहिए।

पशु-पक्षी और वनस्पतियों का लगातार घटना किस खतरे का संकेत है? इसके लिए कसूरवार कौन है?

आदमी के लाभ और स्वार्थ के कारण पशु-पक्षियों और वनस्पतियों की तीन सौ प्रजातियाँ रोज़ाना धरती से लुप्त हो रही हैं। यह बेहद गंभीर समस्या है। इसकी कीमत हमें आज नहीं तो कल चुकानी पड़ेगी। दुनिया में नब्बे फीसदी वनस्पतियाँ ऐसी हैं, जिन पर शोध नहीं हुआ है। ये आदमी के लिए कितनी उपयोगी हैं, इस बाबत जानकारी जुटानी चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि ये इंसान के हाथ से निकल जाएँ। कीटनाशकों के अंधाधुंध इस्तेमाल से कई जीवों के लिए

© NCERT not to be republished

खतरा पैदा हो गया है। गिद्ध का गुम होना सबसे ज़्यादा चिंता की बात है। पर्यावरण-संतुलन के लिए प्रकृति ने गिद्ध को तैनात कर रखा था। यह मरे पशुओं को खाकर वातावरण को गंदगी से निजात दिलाता था। आज गाँवों में मरे पशु सड़ते रहते हैं और गंदगी के कारण बीमारियाँ फैल रही हैं।

आज कृत्रिम तरीके से विलुप्तप्राय जीवों या जानवरों की संख्या बढ़ाने पर काम चल रहा है। क्या इससे पर्यावरण संतुलन वापस हो सकेगा?

इस प्रयास से पर्यावरण-संतुलन संभव नहीं है। मसलन, हम एक चीते की क्लोनिंग कर सकते हैं। लेकिन 75 किलोमीटर लंबा जंगल भी तो चाहिए, जहाँ वह सरपट दौड़ सके। एक बात यह भी है कि हम विज्ञान प्रयोगशाला में क्या-क्या क्लोन करेंगे। चीते का प्रिय भोजन है हिरण। क्या हम हिरण का क्लोन तैयार करेंगे? हिरण खाता है घास को और घास बनती है कीट-पतंगों के परागण से। यानी क्या-क्या तैयार करेंगे हम?

पहले हम झील में घर बनाते हैं। फिर वाटर हार्वेस्टिंग की बात करते हैं। इसी तरह पहले हम जानवरों को मारते हैं, फिर उनकी क्लोनिंग की बात करते हैं। मनुष्य अभी उस अबोध बच्चे की तरह व्यवहार कर रहा है जो अनजाने में अपने घर का ही सामान तोड़ता रहता है। कहने का मतलब है कि इंसान को पृथ्वी के दूसरे प्राणियों के साथ जीने की आदत बनानी होगी। अन्य जीव-जंतुओं की रखवाली का बीड़ा उठाना होगा।

अब समुद्र तटों की बदहाली की भी चर्चा होने लगी है। पर्यावरण पर इसका असर किस तरह पड़ेगा?

समुद्र से हमारी आस्थाएँ भी जुड़ी हैं। समुद्र को पृथ्वी के जीवन की कोख कहा गया है। इसे क्षति पहुँचने से पृथ्वी का विनाश हो सकता है। लोगों को यह जानकारी देनी चाहिए कि समुद्र सभी धरतीवासियों के जीवन से जुड़ा है। यह सिर्फ़ मछलियों या समुद्री जीवों का घर नहीं है। यह कोई कूड़ेदान नहीं है जिसमें रोज़ाना करोड़ों लीटर रसायन, गंदगी और मल-मूत्र उड़ेला जा रहा है। लोगों को मालूम होना चाहिए कि समुद्र सौ अरब मीट्रिक टन कार्बन अपने में समाहित कर लेता है और हमें ऑक्सीजन देता है। पृथ्वी को बचाए रखने के लिए समुद्र को बचाना ही होगा।

पर्यावरण के लिहाज़ से अपने देश की स्थिति कैसी है?

भारत की हालत संतोषजनक नहीं है। जंगलों को बेतहाशा काटा जा रहा है। साथ ही नदी-प्रदूषण बढ़ रहा है। आबो-हवा ठीक रखने के लिए उठाए गए सरकारी कदम अभी नाकाफ़ी हैं।

आपने किस देश को सबसे प्रदूषित पाया?

बांग्लादेश, फिलीपींस में पर्यावरण की हालत बेहद खराब है। लेकिन पानी के मामले में अपने देश की स्थिति खराब है। नदियों का मैला होना चिंता का विषय है। भारत को डेन्यूब नदी के उदाहरण से सीखना होगा। यह नदी ऑस्ट्रिया, स्वीट्ज़रलैंड, जर्मनी और फ्रांस से होकर बहती है। दस साल पहले यह दुनिया की सबसे गंदी नदी थी। लेकिन साझा प्रयास से यह नदी सबसे साफ़ हो गई है। गंगा-यमुना को भी इसी तरह साफ़ किया जा सकता है।

बॉलीवुड के ग्लैमर और जंगल की दुनिया में कितना फ़र्क देखते हैं?

बॉलीवुड भी एक जंगल जैसा है और वहाँ का ग्लैमर सिर्फ़ ऊपरी सतह पर है। वह दिखावे की दुनिया है। वहाँ सब सपने देखते हैं और सपने के सौदागर हैं। लेकिन मैं विद्यार्थी हूँ, यथार्थ और बेहतर सिनेमा का। मेरे जंगल में हकीकत का ग्लैमर है और यहाँ कोई स्वार्थ नहीं है।

(माइक पांडेय से कुमार विजय की इस बातचीत में आप देख सकते हैं कि लक्ष्य है जनता को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना, जनसत्ता से साभार)

© NCERT not to be republished

(iii) भावनात्मक साक्षात्कार *(Emotional Interview)*

भावनात्मक साक्षात्कार का उद्देश्य लोगों की भावनाएँ जानना है। भावनात्मक साक्षात्कार का विचारपरक साक्षात्कार से घनिष्ठ संबंध है। पाठक रूखे तर्कों और तथ्यों के बजाय आक्रोश, दुख या खुशी की जुबान से कहीं ज़्यादा नज़दीकी महसूस करते हैं। आमतौर पर यह देखा गया है कि लोग अपनी भावनाओं को पाठकों/ दर्शकों / श्रोताओं से बाँटने के लिए सहजता से तैयार हो जाते हैं। ऐसे साक्षात्कार के दौरान साक्षात्कारकर्ता को बार-बार टोका-टाकी करने से बचना चाहिए। उसे खुद को पृष्ठभूमि में रखना चाहिए और इशारों से साक्षात्कारदाता को अपनी भावनाएँ ज़ाहिर करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। ऐसे साक्षात्कार के दौरान साक्षात्कारकर्ता को न सिर्फ़ मौके की नज़ाकत का ध्यान रखना चाहिए बल्कि पूरी संवेदनशीलता के साथ प्रश्न पूछने चाहिए। 'आप कैसा महसूस कर रहे हैं' जैसे सवाल पूछने के बजाय तथ्यपरक प्रश्न पूछने चाहिए। रघुवीर सहाय ने अपनी एक कविता में इस सवाल को उठाया है –

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?
....
सोचिए
बताइए
आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है।

–कैमरे में बंद अपाहिज, रघुवीर सहाय

© NCERT not to be republished

(iv) विश्लेषणपरक साक्षात्कार *(Analytical Interview)*

जब किसी मुद्दे या विषय को लेकर परस्पर विरोधी विचार और व्याख्याएँ हों तो उस विषय / मुद्दे के किसी जानकार या विशेषज्ञ से साक्षात्कार के ज़रिये (विश्लेषण / व्याख्या) प्रस्तुत करके उसका अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है या उस मुद्दे / विषय का समाहार (Overview) पेश किया जा सकता है। ऐसे साक्षात्कार का उद्देश्य विभिन्न विचारों का सार संक्षेपण और व्याख्या करना और उन्हें अधिक व्यापक, ऐतिहासिक और राजनीतिक संदर्भों में प्रस्तुत करना है। विश्लेषणपरक साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारदाता का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए। इसके साथ ही साक्षात्कारकर्ता को उस विषय / मुद्दे की अच्छी जानकारी होनी चाहिए, तभी वह उपयुक्त प्रश्न पूछ पाएगा। इस साक्षात्कार में साक्षात्कारदाता विशेषज्ञ को अपनी बात रखने का पूरा मौका देना चाहिए।

देखें गतिविधि/Activity 21 पृष्ठ 151

प्रश्नों के बारे में

प्रश्न कई तरह के होते हैं। एक अच्छे और सफल साक्षात्कार में हर तरह के प्रश्न होने चाहिए।

तथ्यात्मक प्रश्न *– वे प्रश्न जिनसे किसी तथ्य की जानकारी या पुष्टि की जाती है। इन प्रश्नों में क्या, कब, कहाँ और कौन शामिल होते हैं। इनके आधार पर बंद प्रश्न (Close-ended Question) भी पूछे जाते हैं जिनका उत्तर 'हाँ या ना' में या कुछ शब्दों / वाक्यों में सीमित होता है।*

व्याख्यात्मक प्रश्न *– वे प्रश्न जिनसे किसी घटना, समस्या या मुद्दे को स्पष्ट करने या उसकी व्याख्या करने में मदद मिलती है। इन प्रश्नों में कैसे और क्यों शामिल होते हैं। इनके आधार पर तैयार प्रश्नों को खुले प्रश्न (Open-ended Question) भी कहा जाता है। इनका उद्देश्य साक्षात्कारदाता को अपनी बात कहने या विचार प्रकट करने का अवसर देना होता है।*

फॉलोअप प्रश्न *– वे प्रश्न जो किसी प्रश्न के उत्तर से पैदा हो जाते हैं। इनकी पहले से तैयारी नहीं की जा सकती है लेकिन साक्षात्कार के दौरान सतर्क और सचेत रहने पर आप ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं। इससे साक्षात्कार में स्वाभाविकता आती है और उसका प्रवाह सहज हो जाता है।*

निश्चित प्रश्न *– हर साक्षात्कार में कुछ आम प्रश्न होते हैं और कुछ खास प्रश्न। आम प्रश्न लगभग सभी साक्षात्कारों में होते हैं लेकिन निश्चित या खास प्रश्न वे हैं जो साक्षात्कारदाता विशेष को ध्यान में रखकर तैयार किए जाते हैं। वे प्रश्न साक्षात्कार को खास बना देते हैं। इन प्रश्नों को तैयार करने में शोध की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।*

(v) **व्यक्तिपरक साक्षात्कार** ***(Profile Interview)***

इस साक्षात्कार का उद्देश्य साक्षात्कारदाता के निजी जीवन, उसके कामकाज, उसकी उपलब्धियों और पसंद–नापसंद आदि को सामने लाना होता है। यह एक अलग तरह का साक्षात्कार है जिसमें पूरा फोकस साक्षात्कारदाता पर होता है। आमतौर पर यह साक्षात्कार किसी भी क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ किया जाता है। लेकिन आम आदमी जैसे सब्जीवाला, पोस्टमैन, लोक कलाकार आदि के साथ भी साक्षात्कार हो सकता है। इस साक्षात्कार के लिए पर्याप्त तैयारी और शोध ज़रूरी है अन्यथा बातचीत नीरस और अधूरी हो जाएगी। इस साक्षात्कार की सफलता बहुत हद तक आपकी तैयारी, शोध और प्रश्नों के साथ साक्षात्कारदाता के साथ आपके सहज संबंध पर निर्भर करती है। आपका प्रश्न जितना दिलचस्प होगा, अलग होगा, आपको उतना ही दिलचस्प उत्तर मिलेगा। साक्षात्कार के दौरान उत्तरों को ध्यान से सुनिए क्योंकि हमेशा ऐसी संभावना रहती है कि साक्षात्कारदाता कोई ऐसी बात कह देगा जिसे पकड़कर आप आगे बढ़ सकेंगे।

© NCERT not to be republished

भावनात्मक साक्षात्कार का एक उदाहरण

इंडिया गेट की बात है, हिंदुस्तान की बात है

नीना : खान साहेब कैसे हैं?

खान साहेब : (लंबी साँस, थोड़ी सी आँख खोली, फिर पूछा) कौन?

नीना : मैं नीना झा दिल्ली से आई हूँ। आप क्यों बीमार हो गए? कैसे चलेंगे दिल्ली?

खान साहेब : थोड़ा कमज़ोर हो गया हूँ। (लंबी साँस, फिर बोले) ठीक हो जाऊँगा। थोड़ा जूस पीता हूँ फिर तुम्हारे साथ चलूँगा।

नीना : आपने तैयारी कर ली है?

खान साहेब : अरे! क्या बोलती हो। मैंने बड़ी मेहनत की है। मेहताब, नैयर, ज़ामिन, काज़िम, नाज़िम सभी रियाज़ कर रहे हैं। सबों को कह दिया है ठीक से रियाज़ कर लेना। इंडिया गेट की बात है। हिंदुस्तान की बात है। पहली बार दरभंगा की बहू मुझे इंडिया गेट पर ले जाने आई है।

नीना : आपने खाना क्यों छोड़ दिया? कितने कमज़ोर हो गए?

खान साहेब : खाने का मन नहीं करता। तुम तो घर पर सभी बच्चों को बोलकर गई थीं। सभी बहुत खयाल करते थे। तुम दोनों से सभी डरते हैं। इज़्ज़त भी बहुत करते हैं। आखिर तुम्हीं ने हमारे सपने को पूरा करने का कदम उठाया।

नीना : नहीं खान साहेब, हम तो सिर्फ़ एक ज़रिया हैं?

खान साहेब : नहीं बेटा, (आँख बंद कर ली कुछ देर बाद फिर आँखें खोलीं और मेहताब से बोले) इन्हें जानते हो न?

नीना : इंडिया गेट के अलावा आपकी क्या ख्वाहिश है?

खान साहेब : कुछ नहीं, यह सपना तुम पूरा कर रही हो।

नीना : बीमारी में रियाज़ तो छोड़ दिया होगा?

खान साहेब : नहीं, नहीं, थोड़ा-थोड़ा करता हूँ।

नीना : आपकी बेगम कहाँ है? (शहनाई को बेगम कहते हैं)

खान साहेब : बेगम घर पर हैं। मैं यहाँ आ गया वे घर पर अकेली हैं।

नीना : उन्हें ले आऊँ?

खान साहेब : नहीं, नहीं, उन्हें आराम करने दो।

नीना : आपको पता है लता जी, उषा जी सभी ने आपके लिए संदेश दिया है, आप ठीक हो जाएँ।

खान साहेब : अरे लता, वह बहुत अच्छी है। मिलने को दिल करता है।

नीना : सभी आएँगे।

खान साहेब : ज़रूर आएँगे। (और रोने लगे। उनके गाल

© NCERT not to be republished

पर आँसू गिरने लगे) खाने में दिक्कत होने की वजह से डॉक्टर उन्हें पाइप से खाना खिला रहे थे। फिर नाक पर लगी पट्टी को हटाने की कोशिश करते हुए बेटे मेहताब से बोले : ज़रा पैर दबाओ। ताकत नहीं लगाना।

नीना : आप विश्वनाथ मंदिर जाएँगे।

खान साहेब : ज़रा ठीक होने दो। मंदिर की दीवार ज़रूर छूकर आऊँगा। (आँख बंद कर ली) जब हमने विदा माँगी, तो पहले आँख बंद रखी फिर बोले : मैं ठीक होता हूँ फिर तुम्हारे साथ चलूँगा। तुम मेरे बगल में बैठना...

(उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की नीना झा से की गई यह बातचीत आखिरी बातचीत है, हिंदुस्तान से साभार)

साक्षात्कार की तैयारी और शोध

साक्षात्कार की सफलता आपकी तैयारी और शोध पर निर्भर करती है। साक्षात्कारदाता से संपर्क करने से पहले आपको उस विषय पर पर्याप्त जानकारी इकट्ठा कर लेनी चाहिए। उनसे जुड़े तथ्यों और जानकारियों को इकट्ठा करने के लिए आप उनके परिवार के सदस्यों, मित्रों, सहकर्मियों और उनके कार्यों से परिचित लोगों से मिलकर बातचीत कर सकते हैं। आप उन लिखित दस्तावेज़ों–लेखों, पुराने साक्षात्कारों, पुस्तकों और पत्रों को भी खंगाल सकते हैं जिनसे साक्षात्कारदाता के कार्यों और उनके बारे में दूसरे लोगों के विचारों का पता चल सकता है। तथ्यों और जानकारियों को जुटाने के इस क्रम में आप अपने पुस्तकालय के अलावा इंटरनेट का भी सहारा ले सकते हैं। पुस्तकालय और इंटरनेट सूचनाओं के बहुत महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं और साक्षात्कार की तैयारी के दौरान उनका इस्तेमाल ज़रूर करना चाहिए।

साक्षात्कार के बारे में जानकारियाँ जुटाने के क्रम में विभिन्न जानकारियों और तथ्यों को एक–दूसरे से मिलाकर जाँचते रहना चाहिए। साक्षात्कार के लिए निकलने से पहले विभिन्न तथ्यों और जानकारियों की जाँच–परख और पुष्टि कर लेने से गलतियों की संभावना कम हो जाती है। दूसरी ओर, अगर साक्षात्कारदाता कोई मशहूर और चर्चित व्यक्ति न होकर सामान्य व्यक्ति है तो भी हमें साक्षात्कार से पहले उनके बारे में जानकारियाँ ज़रूर इकट्ठी करनी चाहिए। इसमें परिवार के सदस्य, उनके अंतरंग मित्र और सहकर्मी आपकी काफ़ी मदद कर सकते हैं।

प्रश्न कैसे तैयार करें?

साक्षात्कार की तैयारी करते हुए किसी भी साक्षात्कारकर्ता के लिए सबसे बड़ी चुनौती उन प्रश्नों की सूची तैयार करना है, जो साक्षात्कारदाता से पूछे जाएँगे। हालाँकि शुरुआत में किसी भी नए साक्षात्कारकर्ता के लिए प्रश्न तैयार करने में थोड़ी कठिनाई होती है लेकिन अनुभव के साथ यह कठिनाई दूर होती चली जाती है। इसके साथ ही अगर आपने साक्षात्कारदाता के

© NCERT not to be republished

बारे में पर्याप्त शोध किया है, जानकारियाँ और तथ्य इकट्ठे किए हैं तो प्रश्नों की सूची तैयार करना बहुत आसान हो जाता है। प्रश्नों की सूची तैयार करते हुए कुछ बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है –

- साक्षात्कार का उद्देश्य क्या है? यानी आप इस साक्षात्कार से क्या निकालना चाहते हैं? इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ते ही आपको वे प्रश्न तैयार करने में कोई कठिनाई नहीं होगी, जो साक्षात्कारदाता से पूछे जाने चाहिए।

- कल्पना कीजिए कि अगर आप साक्षात्कारकर्ता न होकर उस साक्षात्कार के पाठक, दर्शक या श्रोता होते तो आप साक्षात्कारदाता से क्या जानना चाहते? याद रखिए कि हर साक्षात्कार के निश्चित पाठक हैं (जैसे अपने स्कूल की पत्रिका के लिए लिए जाने वाले साक्षात्कार के पाठक स्कूल के छात्र, शिक्षक और कर्मचारी हैं)। हर साक्षात्कारकर्ता अपने पाठकों का प्रतिनिधि होता है और उसे साक्षात्कारदाता से वही प्रश्न पूछने चाहिए जो अवसर मिलने पर पाठक पूछना चाहते।

- प्रश्न तैयार करते हुए यह ध्यान रखना भी ज़रूरी है कि साक्षात्कार के लिए कुल कितना समय मिला है और उस समय में कितने प्रश्न पूछे जा सकते हैं? प्रश्नों में विविधता होनी चाहिए लेकिन उनके बीच सहज संबंध और बहाव भी ज़रूरी है। ऐसा न हो कि एक प्रश्न किसी एक मुद्दे पर और अगला प्रश्न बिलकुल दूसरे विषय पर। इससे साक्षात्कार में स्वाभाविकता खत्म हो जाती है।

- साक्षात्कार के लिए प्रश्न तैयार करते हुए कुछ पुराने साक्षात्कार ज़रूर पढ़ने चाहिए। इससे न सिर्फ़ प्रश्नों के पूछे या तैयार किए जाने का एक प्रारूप मिल जाता है बल्कि आपको यह भी पता चल जाता है कि ऐसा कौन सा प्रश्न है जो बार–बार पूछा गया है और जो बिलकुल नहीं पूछा गया है। क्या जो प्रश्न अब तक नहीं पूछा गया है, उसके पूछने का समय नहीं आ गया है?

- प्रश्नों को संक्षिप्त, सरल और मुद्दे / विषय पर केंद्रित रखना चाहिए। प्रश्नों में अपना ज्ञान झाड़ने के बजाय साक्षात्कारदाता को अपनी बात कहने का अवसर मिले, इसका ध्यान रखना चाहिए।

© NCERT not to be republished

- एक समय में एक ही प्रश्न पूछना चाहिए। एक साथ दो या तीन प्रश्न पूछने से बचना चाहिए। इससे साक्षात्कारदाता के साथ-साथ पाठक भी भ्रम में पड़ जाता है।
- प्रश्नों की सूची तैयार करते हुए प्रारंभिक प्रश्न ऐसे होने चाहिए जो साक्षात्कार को सामान्य बनाए। कठिन प्रश्नों को अंत के लिए रखना चाहिए। प्रश्नों के बीच तारतम्यता होनी चाहिए।

दोहराने की ज़रूरत नहीं है कि आपके साक्षात्कार की सफलता आपके प्रश्नों पर टिकी है। प्रश्न तैयार करते हुए उन पर खूब सोचना और विचारना चाहिए।

साक्षात्कार के दौरान क्या करें?

साक्षात्कार के दौरान भी कई सावधानियाँ रखना ज़रूरी है। इनका ध्यान रखकर साक्षात्कार की प्रक्रिया को सरल, सहज और सफल बनाया जा सकता है।

- संभव हो तो साक्षात्कार को टेप रिकार्डर पर ज़रूर रिकार्ड करें। इससे साक्षात्कारदाता की कही गई बातों को तथ्यपूर्ण तरीके से पेश करने में आसानी होती है। आपके पास बातचीत का रिकार्ड भी रहता है। अगर टेप रिकार्डर न हो तो साक्षात्कार के दौरान नोट्स लेते रहना चाहिए।
- साक्षात्कारदाता से मिलने पर उनका अभिवादन करें और उन्हें साक्षात्कार के उद्देश्य के बारे में बताएँ। बातचीत की शुरुआत कुछ हल्के-फुल्के प्रश्नों से करें ताकि साक्षात्कारदाता सहज महसूस कर सकें। साक्षात्कार के अंत में उन्हें समय देने के लिए धन्यवाद ज़रूर दें। आपके पास कैमरा हो तो उनका फोटो लीजिए अन्यथा फोटो माँगिए।
- साक्षात्कार की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि आप साक्षात्कारदाता की बातों को कितने ध्यान से सुनते हैं। आप ध्यान से सुनेंगे तो साक्षात्कारदाता भी उत्साहित होगा और आप भी उनके उत्तरों में से उपयुक्त प्रश्न पूछ पाएँगे। साक्षात्कार के बीच में बार-बार टोका-टाकी से बचना चाहिए। इससे साक्षात्कारदाता हतोत्साहित होता है।
- साक्षात्कार के दौरान साक्षात्कारदाता के प्रति आपका व्यवहार आदरपूर्ण और बगैर किसी पूर्वाग्रह के सद्भावपूर्ण होना चाहिए। प्रश्न पूछते हुए उत्तेजित न हों और न ही ऊँची आवाज़ में प्रश्न पूछें। साक्षात्कार के दौरान सहजता और स्वाभाविकता बहुत ज़रूरी है। प्रश्न पूरे विश्वास से पूछें।

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

साक्षात्कार के बाद

साक्षात्कार के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य नोट्स या टेप के आधार पर उसे लिखना या प्रस्तुत करना होता है। अगर आपने नोट्स सावधानी से लिए हैं तो उसे लिखने में मुश्किल नहीं होगी। साक्षात्कार के बाद उसे जितनी जल्दी हो सके लिख लिया जाए, उस समय सभी बातें याद होती हैं, इसलिए उसे लिखने में कोई कठिनाई नहीं होती है।

साक्षात्कार को लिखने के बाद उसे दो बार पढ़िए। उसमें भाषा, शैली और व्याकरण संबंधी गलतियों को ठीक कीजिए। यह भी देखिए कि क्या साक्षात्कारदाता ने अपने उत्तरों में किसी बात को दोहराया है या कोई तथ्य कई बार आया है या कोई बात अस्पष्ट है? यहाँ स्पष्ट रूप से संपादन की आवश्यकता होती है। दोहराव और अस्पष्टता को हटा देना बेहतर है।

- साक्षात्कार का लेखन मुख्यत: दो प्रकार से किया जा सकता है। सबसे लोकप्रिय तरीका यह है कि साक्षात्कार की शुरुआत में साक्षात्कारदाता की शख्सियत का संक्षेप में परिचय देते हुए पाठक को बताएँ कि साक्षात्कार की वजह क्या है? जैसे उनकी कोई ताज़ा उपलब्धि। इसके बाद बताएँ कि यह साक्षात्कार कहाँ और किसने लिया? फिर पूरा साक्षात्कार 'प्रश्न और उत्तर' शैली में लिखें।

- दूसरा तरीका साक्षात्कार को फ़ीचर शैली में लिखने का है। इसमें प्रश्न और उत्तर के बजाय साक्षात्कार को बातचीत की शैली में पूरी आत्मीयता के साथ लिखा जाता है। इसमें उत्तरों के साथ उनके मनोभावों और शारीरिक भाषा (Body Language) का भी उल्लेख होता है। इसमें प्रश्न और उत्तर अलग-अलग होने के बजाय एक-दूसरे में घुले-मिले होते हैं। ज़रूरी न हो तो प्रश्नों का उल्लेख नहीं होता है।

- साक्षात्कार आप चाहे जिस शैली में लिखें लेकिन यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि वह चुस्त लेकिन सहज रूप से प्रवाहित हो। पाठक को पढ़ते हुए कठिनाई न हो। एक सफल साक्षात्कार में सूचना, विचार, शिक्षा और मनोरंजन का उचित मिश्रण बहुत ज़रूरी है।

© NCERT not to be republished

समीक्षा

समीक्षा से हमारा आशय किसी पुस्तक, फ़िल्म, संगीत-नृत्य कार्यक्रम, पेंटिंग प्रदर्शनी और नाट्य मंचन के बारे में पाठकों, श्रोताओं या दर्शकों को यह बताने से है कि उसकी क्या खूबियाँ हैं, उसमें नया और महत्त्वपूर्ण क्या है और उसे क्यों पढ़ा, देखा या सुना जाना चाहिए? लेकिन इसके साथ ही समीक्षा में उन कमियों और चूकों का उल्लेख भी किया जाता है जो समीक्षक की राय में किसी रचना या कृति को कमज़ोर कर देती है। एक अच्छी, संतुलित और प्रभावशाली समीक्षा वह है जो पाठक को न सिर्फ़ उस रचना के उल्लेखनीय पहलुओं से परिचित करा दे बल्कि उसमें रचना को पढ़ने, देखने या सुनने की समझ पैदा कर दे। इस मायने में समीक्षक उस जौहरी की तरह है जो पुस्तकों, फ़िल्मों, नाटकों, पेंटिंग प्रदर्शनियों आदि की भीड़ में से पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं के लिए हीरा खोज निकालता है और उसे चुनने में उनकी मदद करता है।

समाचार माध्यमों विशेषकर समाचारपत्र और पत्रिकाओं में समीक्षा को काफ़ी महत्त्व दिया जाता है। विशेषकर अधिकांश समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में फ़िल्मों और पुस्तकों की समीक्षा के साप्ताहिक स्तंभ प्रकाशित होते हैं। कुछ समाचारपत्रों में रविवारीय परिशिष्टों में या कुछ में शुक्रवार को पुस्तकों, फ़िल्मों, नाटकों के अलावा नृत्य-संगीत कार्यक्रमों या कैसेट्स / सीडी, पेंटिंग प्रदर्शनी आदि की नियमित समीक्षा प्रकाशित होती है।

उदाहरण के लिए पुस्तक समीक्षा को पढ़िए –

हिंदुस्तानी कलम पाकिस्तानी दास्तान

आँखों देखा पाकिस्तान

लेखक / कमलेश्वर

कीमत / 175 रु.

साहित्य और पत्रकारिता दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से अपनी उपस्थिति दर्ज कराते कमलेश्वर के लिए 'कितने पाकिस्तान' ने जहाँ साहित्य के क्षेत्र में नए मुकाम हासिल किए हैं वहीं हाल ही में प्रकाशित 'आँखों देखा पाकिस्तान' किताब उनके साहित्य व पत्रकारिता में समान रूप से जुड़ाव को रेखांकित करती है।

'आँखों देखा पाकिस्तान' में कुल तीस लेख हैं, जिनमें न केवल पाकिस्तानी समाज और कल्चर में पिछले 4-5 दशकों में आए परिवर्तनों को देखा जा सकता है बल्कि भारत संबंधी उनके विचारों के साथ-साथ आज के पाकिस्तान के कुछ चौंकाने वाले सूत्र भी यहाँ मिल जाएँगे। अपने पहले लेख 'वाघा बार्डर के उस पार' में एक ओर कहीं लेखन की भावुकता झलकती है तो कहीं-कहीं वह ऐसे प्रश्नों से भी जूझता है जिनसे बचने के लिए कुछ सत्ताखोर और अतीतजीवी लोगों ने अपने आँख-कान बंद कर रखे हैं। ऐसा ही एक प्रश्न लेखक के मन में उठता है जब वह वाघा बार्डर में भारत व पाकिस्तान के मज़दूरों को देखता

© NCERT not to be republished

है–'कहाँ है बँटवारे की वह रैडक्लिफ लाइन जो हम दोनों को अलग करती है? मज़दूरों के दिलों पर तो कोई लाइन नहीं है। वे चाहे इधर हों या उधर हों, वे अपनी गरीबी और बड़े-बूढ़ों को पहचानते हैं'। लेखक चेताता है कि फ़ौजें ज़मीन जीत सकती हैं या राजनीतिक हार-जीत को तय कर सकती हैं लेकिन वह न तो बुल्लेशाह, वारिसशाह, नानक की स्मृतियों को जीत सकती हैं और न ही तुलसीदास, कबीर, रसखान, अमीर खुसरो और गालिब को।

'जिये पाकिस्तान' में लेखक ने साठ-सत्तर के दशक की पाकिस्तानी सोच को समझने का प्रयास किया है जिसमें कोई समाज अपनी पहचान बनाने की जल्दी में ऐसे रास्ते की ओर बढ़ जाता है जहाँ मात्र धर्म या जाति से उसकी पहचान हो पाती है। अपने इतिहास और स्मृति से आज़ाद होने की इस छटपटाहट ने पाकिस्तान को उस दौर का मज़हबी पैरोकार बना दिया था। इसमें आम पाकिस्तानी नागरिकों के हित गायब हो चुके थे।

'आँखों देखा पाकिस्तान' का सबसे महत्त्वपूर्ण लेख 'भारत और पाकिस्तान : स्मृति और संस्कृति की परंपरा' में लेखक ने 'स्मृति' के आधार पर 'संस्कृति' के निर्माण और धार्मिक दिखावेपन को अलग-अलग नज़रिए से देखा है। वास्तव में स्मृति की परंपरा व्यक्ति की सामाजिक व व्यक्तिगत चेतना का निर्माण करती है। लेखक हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बीच उसी स्मृति की परंपरा को रखकर देखने का प्रयास करता है जिसे भारत-विभाजन की त्रासदी ने न केवल दोनों के साझे इतिहास को चोट पहुँचाई थी बल्कि 14 अगस्त 1947 से पहले की स्मृतियों को धुँधला भी कर दिया था। यह एक ऐसी सचाई है जिस पर 'स्मृति' का मरहम जल्दी असर नहीं कर सका। अब स्थितियाँ बदली हैं और साझी स्मृति और इतिहास को पहचानने की दोबारा कोशिश की जा रही है।

'खुली खिड़की : पाकिस्तान' में चार लेख हैं जो स्मृति की परंपरा के सहारे एक-दूसरे के मन में झाँकने की कोशिश करते हैं।

'कुछ सांस्कृतिक सवाल' में कुल पाँच लेख हैं जिनमें सांप्रदायिक ताकतों के खिलाफ़ खड़ी होती 'पागलों की जमातों' का ज़िक्र है। 'पाकिस्तानी कैदियों का मसला' के पाँच लेख राजनीति से ज़्यादा मानव अधिकारों पर प्रश्न उठाते हैं। कुल मिलाकर पाकिस्तान के बारे में जानने के लिए इस किताब में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है।

–समीक्षक : श्रवण कुमार, हिंदुस्तान से साभार

फ़िल्मों की समीक्षाएँ तो लगभग सभी अखबारों और पत्रिकाओं में छपती रहती हैं। इनसे हर सप्ताह रिलीज़ होने वाली नयी फ़िल्मों के बारे में न सिर्फ़ समग्र जानकारी मिलती है बल्कि यह पता चलता है कि उसमें अलग और खास क्या है। उसे देखा जाना चाहिए या नहीं? उदाहरण के लिए इस समीक्षा को पढ़िए –

© NCERT not to be republished

बचपन की पाठशाला का सबक

'तारे ज़मीन पर' को नए सार्थक सिनेमा में लीक से हटकर दिल से लिखी गई एक इबारत कहा जाए, तो गलत न होगा। फ़िल्म हर घर के एक अनछुए, मासूम मसले को छूते हुए कई हल निकालती है और भटके हुए माता-पिता को सार्थक संदेश दे देती है। बज़ाहिर, उसका पहला मकसद रूठे हुए बचपन की मुस्कान लौटाना है।

बचपन की पाठशाला के दुरूह पाठ को सरल बनाने की यह कवायद आमिर और उनकी टीम की जुगलबंदी से ही संभव हो पाई है। कुंठित और तनावग्रस्त प्रतिभाओं के मन पर जमी धूल हटाकर उनकी चमक और सहज गुणों की खोज ही मानो इस फ़िल्म का ध्येय रहा है। बाल-सिनेमा की रूढ़ियों और साँचों को भी तोड़ती यह फ़िल्म हर कसौटी पर खरी साबित हो रही है।

इसकी केंद्रीय शक्ति दो प्रमुख पात्र हैं निकुंभ सर और उनका विशेष छात्र ईशान। यह जोड़ी कुछ-कुछ 'टू सर विद लव' फ़िल्म के सिडनी पोटर के क्रिया-कलापों की भी याद दिलाती है। लेकिन आमिर खान और दर्शील सफारी की यह जुगलबंदी भारतीय सिनेमा के इतिहास में कुछ नए सफे भी जोड़ती है। दरअसल, यह प्रयोग 'विशेष छात्रों' के 'टूलिप स्कूल' में छह साल पहले शुरू होता है। पटकथाकार अमोल गुप्ते और उनकी पत्नी दीपा भाटिया की मेहनत छह साल के अंतराल में इसे परदे पर उतारने के काबिल बनाती है। आमिर, उनकी सूझ-बूझ, सधा हुआ निर्देशन, सर्वश्रेष्ठ पटकथा, सहज अभिनय-शैली और बाकी टीम की मेहनत फ़लक छूने का अवसर इस फ़िल्म को दे ही देते हैं।

अपने तजुर्बे और बदलते परिवेश की गहरी समझ के दम पर आमिर बाल सिनेमा की परिपाटी तोड़कर यथार्थपूर्ण शैली का नया सिनेमा रचते हैं जो प्रतिस्पर्धा से बौराए बड़ों की दुनिया के अहम् और उपेक्षा के शिकार बच्चों पर मंडराते खतरे से आगाह करता है। नयी चाल का यह सिनेमा स्कूली छात्रों की नाजुक ज़िंदगी की कशमकश को उपेक्षित माहौल में आठ साल के ईशान अवस्थी के माध्यम से उजागर करता है। दर्शील सफारी ने यह नाजुक और कठिन भूमिका बड़ी तन्मयता से निभाई है।

साथ ही इस फ़िल्म ने पिछली बाल फ़िल्मों की सजावट, करुणा, चंचलता और उपेक्षा के नाटकीय प्रदर्शन और भंगिमाओं के आवरण को भी पूरी तरह हटाकर जटिलताओं की आंतरिकता में झाँकने की हिम्मत की है।

दरअसल जागृति, दोस्ती, एक फूल दो माली, नन्हा

© NCERT not to be republished

फरिश्ता, छोटा चेतन, मासूम या परिचय जैसी फ़िल्में इस नए परिदृश्य में नयी धारा के सिनेमा की दहलीज़ से काफ़ी पीछे छूट गई हैं। 'मिस्टर इंडिया' या 'आखिरी खत' में बाल कलाकारों की मुस्कान निर्मल उदासी की तरह वह भी स्मृति-बिंबों में अंकित भर है। दूसरे इन फ़िल्मों के मास्टर जी और माता-पिता शिक्षा जगत के नए दबावों और प्रतिस्पर्धा के प्रभावों से मुक्त रहे। स्कूल में अध्यापकों की तानाशाही और घर में पिता की उपेक्षा झेल रहे विशेष छात्र (ईशान) के आंतरिक जगत में एक संवेदनशील शिक्षक के 'ट्रीटमेंट' द्वारा लाए जा रहे परिवर्तन एक द्वंद्वात्मक स्थिति से इस फ़िल्म को गुज़ारते हैं जो इसे बाकी (पिछले) सिनेमा से अलग करती है। डिस्लेक्सिया नामक मर्ज के कारण आँकड़ों और अक्षरों को सही न समझ सकने वाला ईशान विशेष होते हुए भी उपेक्षा भोग रहा है।

उसका विस्मय और सम्मोहन मुद्राएँ कुछ देर की हैं। उसका आत्म-संघर्ष, विषाद और प्रतिस्पर्धा के संकट से जूझने या बचने के तौर-तरीके ही 'तारे ज़मीन पर' की केंद्रीय भूमि है जिसे एक नए मिज़ाज की पटकथा, मार्मिक संवाद-शैली और कलात्मक सधे हुए निर्देशन तथा चुस्त संपादन ने सचमुच नायाब सिने-कृति में बदल दिया है। आमिर की सूझ-बूझ और निराले व्यक्तित्व के साथ इस फ़िल्म की पृष्ठभूमि में असली मेहनत इसके क्रिएटिव डायरेक्टर अमोल गुप्ते की है जिन्होंने निर्देशन का जिम्मा खुद तेज़-तर्रार आमिर को सौंपकर सही निर्णय किया। फ़िल्म का मूल आधार, रिसर्च और संपादन अमोल की पत्नी दीपा भाटिया का रहा है। ये प्रतिभाएँ अपने साझे प्रयास से ईशान के मटमैले पक्ष की धूल हटाकर उसकी प्रतिभा की मौलिक चमक से सिनेमा के परदे को जगमगाते हैं।

आमिर ने जटिलताओं में गुँथी इस थीम के बीज-गुणों को अपनी नयी निर्देशन दृष्टि से खूब परखा है। अपनी प्रसिद्धि के व्यावसायिक प्रतिमान गढ़ने के बावजूद लगान, मंगल पांडे या रंग दे बसंती के सम्मोहन तथा कॉस्ट्यूम ड्रामा वाले सिनेमा की लक्ष्मण रेखा को भी उन्होंने लांघा है। एक संवेदनशील सहयोगी शिक्षक रामशंकर निकुंभ की कड़ी भूमिका भी उन्होंने निभाई है जो आज की पढ़ाई-लिखाई के निषेध और तौर-तरीके के आघात-प्रतिघातों से बचाने के (पूरे शिक्षा-जगत के पाठ्यक्रम की खामियों और दबावों को समझाते हुए) संकेत दे रहा है। शायद ए.सी.पी. राठौर (सरफरोश) के बाद किसी मौलिक पात्र को जीवंतता से जीने की उमंग-भरी यह उनकी दूसरी भूमिका है।

वैसे यह कोई 'बाल फ़िल्म' नहीं है। शोले, साउंड ऑफ म्यूजिक या स्पाई किड्स जैसी फ़िल्मों की जादुई सफलता से भिन्न स्तर पर यह अपनी अपार सफलता के झंडे गाड़ रही है। इसने समस्या को फ़िल्मी न बनाकर उसके मौलिक कारणों की पहली बार सही दिशा में

© NCERT not to be republished

चीर-फाड़ की है। आमिर का बच्चों से मुठभेड़ का यह पहला अनुभव नहीं है। किशोर वय से भी नाजुक उम्र के बच्चों की तिकड़ी के साथ दर्शक उन्हें 'हम हैं राही प्यार के' में देख चुके हैं। लेकिन 'तारे ज़मीन पर' इन फ़िल्मों के 'हँसोड़पन' और 'मासूमियत' वाले फ़ार्मूले से अलग स्तर पर मानसिक-उद्वेलन और उसके समाधान की दिशाएँ तलाश करती है। साथ ही, परदे पर सिनेमाई थ्री-डी तकनीकों, चित्रों के लिए जगह बनाते हुए केंद्रीय पात्र और वयस्क शिक्षित समाज की टकराहट के सार्थक नतीजों को भी रचती है। निकुंभ सर और ईशान अवस्थी की संगत से ही यह संभव हुआ है।

इस फ़िल्म के सभी पक्षों की कारीगरी ने इसे फ़िल्म वार्ड की सूची में भी शिखर पर ला खड़ा किया। बहुआयामी कलाओं के शिखर छूने वाली इस फ़िल्म के निर्देशन, अभिनय, पटकथा, स्क्रीन प्ले, गीत-संगीत और संवादों में एक गजब की लयकारी है। इस लयकारी के जादुई मिलन में आमिर, अमोल गुप्ते, दीपा भाटिया ही नहीं, प्रसून जोशी (गीत), शंकर महादेवन (गायिकी), शंकर-एहसान-लॉय (संगीत) के अलावा मुंबई के जाने-माने चित्रकार समीर मंडल का सत्संग भी कारगर साबित हुआ है। समीर ने पंचगनी में आमिर के घर में इस फ़िल्म के नायक (ईशान) की कल्पनाओं को साकार करते तीन खास चित्र बनाए।

आमिर, दर्शील सफारी, प्रसून जोशी, शंकर-एहसान-लॉय इस फ़िल्म की शहतीर साबित हुए हैं। मुन्ना भाई, रंग दे बसंती की तरह ही नयी पीढ़ी के युवतम वर्ग की चेतना को यह फ़िल्म निरंतर आंदोलित करती है। रंगों की दुनिया से यह फ़िल्म कोमल ज़िंदगी के रूठ गए सपनों को फिर से सजाती है।

घर-आँगन और पाठशाला (बोर्डिंग स्कूल) के दायरों से जुड़े तमाम तनावग्रस्त चेहरों की हँसी उन्हें लौटाना ही इसका एकमात्र उद्देश्य है। यह रुग्ण कर दिए गए मटमैले हो गए, बाल-मन के आँगन को उम्मीद की नयी किरणों से बुहारती है। इस फ़िल्म का मिशन और प्रेरणा अब नए समाज के परिवारों और पाठ्यक्रम को दुरूह बना चुके बड़े स्कूलों की देहरी को छूने लगे हैं।

इसकी ताज़ा मिसाल दिल्ली सरकार के शिक्षा महकमे की पहल से सामने आई है। शिक्षा विभाग की राज्य सचिव

रीना रे ने अपने सभी वरिष्ठ अधिकारियों का एक कारवाँ यह फ़िल्म देखने के लिए थियेटरों की ओर रवाना किया। प्रधानाचार्यों की एक बैठक भी बुलाई और पाठ्यक्रम को सरल बनाने के इसके नुस्खों से लाभ उठाने की आजमाइश शुरू की। यह अमल बचपन की पाठशाला से ही शुरू होगा तो भविष्य में एक नया पाठ भी साबित होगा।

ईशान की मानसिक गुत्थियों को सुलझाती यह फ़िल्म यही सिद्ध करती है कि हर बालक विशेष होता है। उसके विशेष गुण जैसे पेंटिंग और रंग ईशान का स्वप्निल जगत है जिसमें वह अपने सोच का संसार

© NCERT not to be republished

गुपचुप रचता रहता है। यहाँ तक कि बोर्डिंग स्कूल जाने की यातना का पूर्वाभास तक निकुंभ सर को उसकी एक चित्रात्मक कॉपी में खोजने पर मिलता है जहाँ माता-पिता से दूर होते जाने के रेखांकित 'फ़ुटेज' सरकते पन्नों के अंत में व्यक्त हो ही जाते हैं। उसके ड्राइंग शिक्षक निकुंभ इस स्थिति से परिवार को अवगत कराते हैं।

मायावी बाल चरित्रों वाली फ़िल्मों के लिए भी यह फ़िल्म एक नया पाठ तैयार करती है जिनमें मासूमियत और हुड़दंग या जन्मदिन की पार्टियों में रूठा हुआ बचपन चाकलेटी हीरो की नकल करता आया है। वहाँ किसी बच्चे की समझ, निर्मल हँसी, करुणामय स्थितियों में झलकते आत्मबोध की खोज होती ही नहीं। इसी कारण मन की सुंदरता को पकड़ पाना भी उनके बस का नहीं होता। ईशान अवस्थी की भूमिका इन मायावी बाल चरित्रों से अलग है जो उसकी आत्मा की निथरी छवियाँ प्रस्तुत करती है।

—समीक्षक : प्रताप सिंह, जनसत्ता से साभार

यह समीक्षा केवल फ़िल्म से परिचय नहीं कराती बल्कि आमंत्रित करती है फ़िल्मों की दुनिया में एक ऐसी सकारात्मक पहल की, जो बच्चों को नयी दृष्टि से देखने में मददगार हो। इस तरह की समीक्षा लिखने के लिए पर्याप्त तैयारी की ज़रूरत होती है। आइए जानते हैं –

समीक्षा लेखन की तैयारी

हालाँकि एक तरह का समीक्षक हम सब में होता है लेकिन एक अच्छा समीक्षक बनने के लिए उस क्षेत्र विशेष जैसे फ़िल्म, नाटक, नृत्य, संगीत या पेंटिंग आदि की गहरी समझ का होना बहुत ज़रूरी है। जैसे अगर आप एक अच्छा फ़िल्म समीक्षक बनना चाहते / चाहती हैं तो आपको भारतीय सिनेमा के साथ विश्व सिनेमा का इतिहास, उसकी प्रमुख प्रवृत्तियों, उसके प्रमुख निर्देशकों, अभिनेताओं, खलनायकों, हास्य कलाकारों, संगी निर्देशकों, पटकथा और संवाद लेखकों, नृत्य निर्देशकों और कला निर्देशकों के बारे में जितना अधिक संभव हो, जानकारी होनी चाहिए। उसे फ़िल्म कला और उसके विभिन्न पहलुओं की गहरी जानकारी होनी चाहिए। बिना फ़िल्म निर्माण की प्रक्रिया और उसके व्याकरण को समझे आप एक अच्छे फ़िल्म समीक्षक नहीं बन सकते। लेकिन जैसा कि मशहूर फ्रेंच फ़िल्मकार फांसुआ तुफो ने अपनी किताब 'द फ़िल्म्स इन माई लाइफ' में ठीक ही लिखा है कि, ''कोई भी फ़िल्म समीक्षक बन सकता है।'' अगर आप थोड़ी तैयारी करें और आप में फ़िल्मों से गहरा लगाव हो तो आप एक अच्छे समीक्षक बन सकते हैं। याद रहे कि एक बेहतर फ़िल्म समीक्षक एक दिन में नहीं बनता, उसके लिए अनुभव, परिश्रम और लगन ज़रूरी है।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह बात हर तरह की समीक्षा और समीक्षक के लिए लागू होती है। अगर आप खूब किताबें नहीं पढ़ते या जिन विषयों की पुस्तकों की समीक्षा लिखना चाहते हैं, उस विषय के बारे में गहरी जानकारी नहीं है तो आपकी समीक्षा में वह गहराई नहीं आ पाएगी।

© NCERT not to be republished

तैयारी की शुरुआत

पुस्तक कैसे पढ़ें या फ़िल्म कैसे देखें? किसी भी पुस्तक या फ़िल्म की समीक्षा की शुरुआत उसे ध्यान से पढ़ने या देखने से होती है। पढ़ना और देखना भी एक कला या साधना है। पुस्तक या फ़िल्म में डूबकर उसका रस लेना और उसकी बारीकियों को समझना ज़रूरी है। पुस्तक को पढ़ने के दौरान कुछ खास बातों का ध्यान रखना आवश्यक है –

- इस पुस्तक को लिखने के पीछे लेखक का उद्देश्य क्या है? इसका अनुमान पुस्तक की भूमिका या प्राक्कथन को पढ़ने से मिल जाता है। इसमें पुस्तक के बारे में भी कुछ सामान्य जानकारियाँ होती हैं।
- पुस्तक में लेखक ने किन मुद्दों को उठाया है? उनके तर्क क्या हैं? पुस्तक के प्रमुख बिंदुओं को चिह्नित करें और पुस्तक पढ़ते हुए ही उन्हें रेखांकित करें अथवा नोट्स लेते चलें।
- लेखक द्वारा प्रस्तुत तर्क, विश्लेषण, तथ्य, प्रमाण आदि कितने प्रभावशाली हैं? उनमें नया और अलग क्या है जो उसे अन्य पुस्तकों से भिन्न बनाता है? भाषा शैली और प्रस्तुति कैसी है?
- क्या आपको यह लगता है कि यह एक उपयोगी पुस्तक है जिसे पाठकों को भी पढ़ना चाहिए? इसमें वह क्या है जिसके लिए पाठकों को इसे पढ़ना चाहिए?

फ़िल्मों पर भी कमोबेश कुछ ऐसी ही बातें लागू होती हैं। जैसे इस फ़िल्म के ज़रिये निर्देशक क्या कहना चाहता है? इस फ़िल्म की थीम, कहानी और प्रस्तुति पिछली फ़िल्मों से किस तरह अलग है या उन्हीं की तरह है? फ़िल्म में नयापन है या नहीं? कलाकारों का अभिनय और निर्देशन कैसा है? क्या यह फ़िल्म दर्शकों को कोई संदेश देती है? क्या आपको लगता है कि अन्य दर्शकों को भी यह फ़िल्म देखनी चाहिए? उसकी खूबियों और कमियों पर फ़िल्म देखकर लौटते ही नोट्स लीजिए। अपने मित्रों से भी उनकी राय पूछिए।

गतिविधि 18 ◆ Activity 18

किन्हीं दो या तीन अखबारों में एक ही फ़िल्म की समीक्षा पढ़िए। इन समीक्षाओं में क्या समान है और क्या अलग? तुलना कीजिए।

Read the reviews of the same film in two–three newspapers. Compare the reviews and make a list of the similarities and dissimilarities between them.

© NCERT not to be republished

समीक्षा लेखन : कुछ सुझाव

- समीक्षा लिखने की शुरुआत करने से पहले अपने नोट्स देखिए और विचार कीजिए कि इस पुस्तक या फ़िल्म के बारे में सबसे महत्त्वपूर्ण बात क्या लगी? समीक्षा में उसी महत्त्वपूर्ण बात के इर्दगिर्द आपको अन्य तथ्य, जानकारियाँ और विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

- लिखते समय हमेशा अपने पाठक/दर्शक/श्रोता को याद रखिए। उनकी ज़रूरतों का ध्यान रखिए। उसे पूरी स्पष्टता से पुस्तक या फ़िल्म की खूबियों और कमियों के बारे में बताइए। लेकिन याद रखिए कि समीक्षक निर्णायक (जज) नहीं है और उसे फ़ैसला देने से बचना चाहिए।

- समीक्षा की शुरुआत में पुस्तक के बारे में या फ़िल्म से जुड़ी तथ्यपूर्ण जानकारियाँ अवश्य दें। जैसे पुस्तक का नाम, लेखक, प्रकाशक, प्रकाशक का पता, प्रकाशन वर्ष, पृष्ठ संख्या और मूल्य। इसी तरह फ़िल्म के बारे में प्रमुख जानकारियाँ – फ़िल्म का नाम, निर्देशक और निर्माता का नाम, प्रमुख कलाकारों के नाम, संगीत निर्देशक और पटकथा लेखक का नाम आदि शुरू में दे दी जाएँ तो पाठक के लिए समीक्षा पढ़ना आसान हो जाता है।

- समीक्षा के पहले पैराग्राफ में पुस्तक या फ़िल्म के बारे में कुछ ज़रूरी जानकारियाँ, उसकी पृष्ठभूमि आदि का उल्लेख करते हुए उसका परिचय देना चाहिए। यह बहुत हद तक समीक्षा की भूमिका या प्रस्तावना है। लेकिन उसके बाद अगले पैराग्राफ से पुस्तक या फ़िल्म के उन पहलुओं को उठाना शुरू करना चाहिए जिन्हें आप महत्त्वपूर्ण मानते हैं। आप उन्हें महत्त्वपूर्ण क्यों मानते हैं, यह स्पष्ट करना ज़रूरी है।

देखें गतिविधि/Activity 22 पृष्ठ 154

- पुस्तक में अगर कोई बहुत खास बात कही गई है तो उसे आप उद्धृत भी कर सकते हैं। उदाहरण बहुत ज़्यादा और लंबे नहीं होने चाहिए। इसी तरह फ़िल्म के किसी खास दृश्य या संवाद का उल्लेख किया जा सकता है।

- पुस्तक या फ़िल्म में जो कमियाँ या कमज़ोरियाँ दिखाई पड़ीं, उनका उल्लेख करना भी न भूलें। इससे समीक्षा पूर्ण होती है। लेकिन इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि आप पुस्तक या फ़िल्म में ज़बरदस्ती कमियाँ या गलतियाँ खोजें।

- समीक्षा में आप अपने विचार प्रकट कर सकते हैं। लेकिन एक समीक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसके लेखन में कोई पूर्वाग्रह या पक्षपात नहीं होना चाहिए। उसे अपनी बात पूरी निष्पक्षता से तर्कों सहित प्रस्तुत करनी चाहिए।

© NCERT not to be republished

- समीक्षक को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि उसे अखबार या पत्रिका के संपादक ने कितने शब्दों और समय-सीमा के भीतर लिखने के लिए कहा है। इसका पालन ज़रूरी है।

- समीक्षा लिखने के बाद उसे दो बार ज़रूर पढ़ें। दोहराव को हटा दें और जहाँ स्पष्टता न हो, उसे स्पष्ट करते हुए दोबारा लिखें। समीक्षा की प्रस्तुति में कसाव और प्रवाह का होना ज़रूरी है। कुछ ज़रूरी बात छूट गई हो तो जोड़ें और अनावश्यक बातों को हटा दें।

देखें गतिविधि/Activity 23 पृष्ठ 158

मीडिया लेखन में अनुवाद

मीडिया लेखन में अनुवाद का बहुत अधिक महत्त्व है। एक बहुभाषी विश्व और देश में सूचनाओं और समाचारों का आदान-प्रदान अनुवाद के ज़रिये ही संभव है। दुनिया भर से हमारे देश में पहुँचने वाले अधिकांश समाचार उन विदेशी समाचार एजेंसियों के ज़रिये आते हैं जो मूलतः अंग्रेज़ी में समाचारों का आदान-प्रदान करती हैं। यहाँ तक कि देश के अंदर भी राष्ट्रीय समाचार एजेंसियों—पी.टी.आई. (भाषा) और यू.एन.आई. (यूनीवार्ता) का अधिकांश कामकाज अंग्रेज़ी में होता है जिसे बाद में हिंदी सहित विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करके प्रकाशित या प्रसारित किया जाता है। यही नहीं, किसी शहर या राज्य में काम कर रहे रिपोर्टर के लिए सूचनाएँ जुटा पाना संभव नहीं है, अगर वह वहाँ की भाषा और जिस अखबार/चैनल के लिए काम कर रहा है उसकी भाषा अच्छी तरह से न जानता हो और अनुवाद में सहज न हो।

समाचार माध्यमों में काम करने के लिए अनुवाद में दक्षता एक आवश्यक योग्यता है। विशेषकर हिंदी और दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं के समाचारपत्रों/समाचार चैनलों में काम करने वाले पत्रकारों में अंग्रेज़ी से हिंदी या अन्य भाषाओं में अनुवाद करने में दक्षता का होना अनिवार्य है। समाचार माध्यमों के लिए अनुवाद की कई चुनौतियाँ हैं। यह अनुवाद सृजनात्मक होने के साथ-साथ तथ्यों और सूचनाओं की प्रस्तुति में किसी तोड़मरोड़ या छेड़छाड़ की इजाज़त नहीं देता है। इस तरह के अनुवाद में सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं को मिलने वाले समाचार को अनुवाद के बावजूद किस तरह से सरल, सहज और आसानी से समझ में आ सकने लायक बनाया जाए।

दस लाख संगीनें मेरे भीतर वह खौ़फ पैदा नहीं करतीं, जो तीन छोटे अखबार।

— नेपोलियन

© NCERT not to be republished

Good newspapermen have given good literature also.

Daniel Defoe, Joseph Addison
Richard Steele, Jonathan Swift
Rudyard Kipling, Charles Dickens
John Galsworthy, G.K. Chesterton
H.G. Wells, Walt Whitman
George Bernard Shaw
Mark Twain, Ernest Hemingway...

भारतेंदु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद
माखन लाल चतुर्वेदी, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
सुमित्रानंदन पंत, भवानीप्रसाद मिश्र, गिरिजाकुमार माथुर
कुँवर नारायण, रघुवीर सहाय, गजानन माधव मुक्तिबोध
शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती,
हरिशंकर परसाई, कमलेश्वर,
विद्यानिवास मिश्र, अज्ञेय...

यूनीसेफ़
बाल स्वराज
पेट पालने के लिए मांगनी पड़ती है भीख

खबरों की दुनिया में बच्चों को सयाना कौन मानेगा! पर छत्तीसगढ़ के कुछ जागरूक बच्चों ने दिखा दिया है कि बड़ों के इस क्षेत्र में वे किसी से पीछे नहीं हैं। ये नन्हे-मुन्ने अपने सीमित साधनों से अखबार निकाल रहे हैं और पीड़ित बचपन की आवाज़ बुलंद कर रहे हैं।

'सरस्वती' पत्रिका ने अपने प्रकाशन से लगभग अर्द्ध-शताब्दी तक हिंदी जगत का बौद्धिक अनुशासन बनाए रखा। भाषा परिष्कार आंदोलन द्वारा इसने परिनिष्ठित खड़ी बोली का भवन खड़ा किया। छिपी प्रतिभाओं की खोज, अनेक विधाओं को जन्म देने के साथ-साथ नए लेखकों को प्रोत्साहन भी दिया। यह सन् 1899 में इंडियन प्रेस, इलाहाबाद से प्रारंभ की गई। प्रारंभिक संपादक मंडल में बाबू राधाकृष्ण दास, बाबू कार्तिक प्रसाद, बाबू जगन्नाथ दास, पं. किशोरी लाल गोस्वामी एवं डॉ. श्याम सुंदरदास थे। 'सरस्वती' का प्रथम अंक जनवरी 1900 में प्रकाशित हुआ।

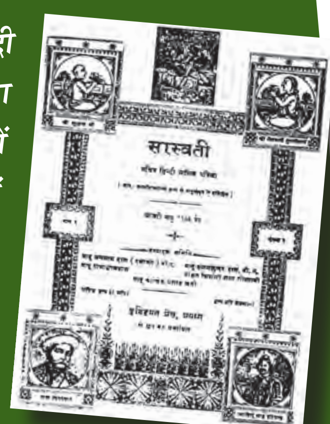

समाचार पत्रों में बड़ी शक्ति है, ठीक वैसी ही जैसी कि पानी के ज़बरदस्त प्रवाह में होती है। इसे खुला छोड़ देंगे तो गाँव के गाँव बहा देगा। उसी तरह निरंकुश कलम समाज के विनाश का कारण बन सकती है। लेकिन अंकुश भीतर का होना चाहिए, बाहर का अंकुश तो और भी ज़हरीला होगा।

—महात्मा गांधी

© NCERT not to be republished

Understanding Media

An introduction to different forms of media writing.

1. Group Activity

- *All the students should stand in a circle.*
- *Talk to the person standing on your left as well as your right. Find out two new things about each.*
- *Students should share their information with the rest of the group.*

2. Points to Ponder

- *How did you get to know about each other?*
- *How would news/information reach others?*
- *Discuss how news from their locality/ school can be shared with others.*
- *How do you think news from your city, state, country and foreign countries travels?*
- *How will information related to some important person, event, new books/ newsletters / magazines / films etc. reach other people?*

3. *Collect a few news items, features, interviews and reviews from one week's newspapers and make your own newspaper from them.*

And the pen writes on...

Ninety-five-year-old Homai Vyarawalla, India's first woman photojournalist, was born in Navsari, a mofussil town in Gujarat. She worked in Delhi from 1942 to 1970 and has taken photographs of people like Helen Keller, Gandhiji, Pandit Nehru, Mountbatten, Edmund Hillary and Tenzing Norgay. Her vast portfolio also has pictures of Mumbai in the 1930s.

Homai's father was an actor from the Urdu-Parsi theatre and according to her, "I normally accompanied my father to theatres… I was overjoyed to see colours, paints and brushes there and they soon became my toys. I believe it was my first step to what I wanted to do in my life… I was a patient listener to my father when he had sessions with the co-artists and actors. It gave wings to my imagination."

An Honours student from Bombay University, Homai also obtained a Diploma in Art from J. J. School of Art. Her first pictures were of a college picnic. Taken with a friend's camera, they were published on the front page of the **Bombay Chronicle*****. She recalls, "The newspaper gave me one rupee a picture in those days. That was a big thing. Photography was something completely new, not being done by any other woman."***

© NCERT not to be republished

The author expresses his own thoughts and experiences; the journalist expresses those of the community. Literature can be timeless; journalism must be timely.

– F. Fraser Bond

I. Media Writing — an Introduction

Edmund Burke described media as 'the story of the world for a day'. The objective of media is communication with mass audiences and to disseminate information for education, news and views, business, entertainment and societal awareness. Media has always acted as a guardian of democracy, and kept people informed about the latest happenings and trends. Today, the demands placed on media professionals are greater than ever before. They need to be conscious of their responsibility and should always remind themselves of the larger question: How will this affect the lives of my readers?

The media also informs us about people from different backgrounds/countries working together for the benefit of mankind. The following is an example of such a media coverage.

Jaipur Foot for Angola landmine victims

Sandeep Joshi

Luanda (Angola): After providing mobility to thousands of people in India and abroad, Jaipur Foot will soon come to the aid of Angolans who have lost their limbs during the 27-year civil war.

The south African nation, which saw a large number of its citizens falling victim to landmines laid across the country, approached India which, on humanitarian grounds, has agreed to set up and run an artificial limb factory and centre in this capital city free of cost for two years... Angola would also depute its staff at the factory and centre so that they could be given training.

The term 'Fourth Estate' is a traditional term used for the public press and dates as far back as the early nineteenth century when Edmund Burke called the media the fourth estate. In the middle ages, the estates of the realm referred to the three broad divisions of society as nobility, clergy and commoners.

Cleric, Knight, and Workman — an image from a medieval manuscript

Thomas Carlyle in his On Hero and Hero Worship *also wrote, "... in the Reporter's Gallery yonder, there sat a Fourth Estate more important far than they all." In modern times, the media is popularly known as the fourth pillar of democracy.*

...Jaipur Foot had revolutionised life for millions of landmine amputees, ...apart from being cost-effective, the artificial limb was light and made mobility easy. The users would be able to run, climb trees and ride bicycles.

Jaipur Foot was invented by Pramod Karan Sethi, an orthopaedic surgeon, who was a Fellow of Britain's Royal College of Surgeons, along with artisan Ram Chandra.

Source: *The Hindu*, 6 April 2008

Creative writers are free to write from the depths of their imagination, whereas media writing requires a pool of information which is checked again and again through a series of valid sources in the real world. Without authentic information, media writers have nothing to communicate. To build that bank of information, they read all types of materials like literary works as well as general reading materials such as magazines, newspapers etc. They observe people, events and situations with a keen eye and an open mind. They listen carefully to comments, statements, lectures, speeches etc. made by other people. A keen observation and good reading habits which are assets for creative writing are also essential for media writing.

When writing for the media, one has to be imaginative and creative in the use of vocabulary. Creativity in media writing seeks to blend good and simple language with aesthetically pleasing symbols and images that are familiar.

Writing for the media can be a pleasure in itself: finding the right word, using it appropriately with other words in a sentence, constructing a paragraph that conveys the right meaning give satisfaction. There is a sense of pride in a well written piece. To achieve this one needs some talent, a lot of determination and readiness to work hard.

Different forms of media require different kinds of writing and presentation skills. Before we familiarise ourselves with these skills, we need to know about the media and its broad divisions.

See गतिविधि/Activity 14 on Page 89

Types of Media

Today, sitting at home, you can get the latest news — which is known as 'breaking news'—on your TV set or the radio or the Internet. Extensive coverage of news and other information can also be obtained from newspapers. The Press — both print and electronic — have become indispensable today and advancement in technology has a vital role to play in it. Satellites stationed in space provide us with weather forecasts for our city as well as for the entire globe, and human interest stories such as the rescue of the little child who had fallen into a deep pit, the live telecast of sports events, election updates etc. reach us in no time and keep us informed. It has now become possible to transmit instant news and messages from different parts of the globe.

© NCERT not to be republished

The different types of media are discussed below.

1. **Print Media:** This includes books (of all types), newspapers, magazines, journals, catalogues, brochures, leaflets, handouts and other printed documents. Letters, which are meant to be circulated among a large number of people, can also be included in this category. For print media, strong and clear writing, analytical skills, choice of right words and the ability to select appropriate details are essential.
2. **Audio-Visual Media:** This includes radio, television, cinema, tape recorders, music systems etc. This medium is accessible to and is enjoyed by wide-ranging audiences even if they are not literate. Audio-visual medium can also be considered an electronic medium. Writing for this medium of communication requires a certain amount of specialised knowledge and this will be taken up in detail in Class XII.
3. **New Media:** This refers to a relatively new field that includes computer enhanced communication. It is fast becoming very popular with the masses. It is a form of media that includes some aspects of interactivity for its audience and is usually in digital form e.g. the Internet and the mobile phone etc. We shall study about new media in detail in Class XII.

You must have noticed that the news that appears in your newspaper and on TV is presented in different ways and styles. The difference lies in how they are written and their graphic treatment on the page and on the screen.

See गतिविधि/Activity 15 on Page 94

Print Media

Print media and written communication follow the progress of civilisation which, in turn, develops in response to changing cultural technologies. The transfer of complex information, ideas and concepts from one individual to another, or to a group, has undergone extreme evolution since prehistoric times.

© NCERT not to be republished

For centuries, civilisations have used print media to spread news and information to the masses. To begin with, humans painted descriptive pictures on cave walls. The narrative compositions on the walls were their own way of communication with the world. This was followed by the use of stone and clay tablets to express thoughts. With the passage of time, other means of writing surfaced. Invention of paper revolutionised the face of print as the written word became more accessible. The printing press, invented by Johann Gutenberg in 1447, ushered in the era of the modern newspaper. It enabled the free exchange of ideas and spread of languages. Gradually, newspaper content began to shift towards more local issues. Thereafter, the invention of the telegraph in 1844 transformed the print media. Now information could be transferred in no time, allowing for timely and relevant reporting. By the middle of the nineteenth century, newspapers were becoming the primary means of disseminating and receiving information.

Printing press (1811), Deutsches Museum, Munich, Germany

During the early nineteenth century Paul Julius Reuter used pigeons to deliver news first of all. Each day Reuter put on the Brussels mail-coach a cage containing a pair of pigeons, addressed to his friend. When the birds were delivered to him, the friend set them free after fastening to their legs silk bags containing the stock prices. The pigeons arrived home three hours before the mail coach, and immediately Reuter and his wife made many copies of the messages and delivered them to the businessmen who paid for the service.

Today the range of topics and kinds of writing within a newspaper are vast and varied. It caters to the needs of different kinds of readership and contexts. It includes news stories, features, reviews, analyses, editorials, letters to the editor, advertorials, commercial information etc. The two broad divisions can be news media and other information.

© NCERT not to be republished

News Media: The purpose of a newspaper is to inform, interpret, serve and entertain. Newspapers serve the community by keeping a critical eye on the government and public services, and keeping the reader informed. Newspapers, generally, carry both hard news as well as soft news. Soft news are human interest stories. These can be accounts of triumph over personal adversity, a profile of a person, changes in lifestyle or the day-to-day existence of any individual. On the other hand, some diary events such as council meetings, tribunals and community events comprise hard news. Hard news also includes news about crimes, emergencies and accidents. Timeliness and gravity are the primary characteristics of hard news.

News is about people and the human angle is often the best way to introduce a story. The following news item shows how creativity has no boundaries and helps bring people together. This is an example of soft news.

Colours of Kutch with an Australian Touch

MADHUR TANKHA

New Delhi: For the past 18 years, Australian artist Maggie Baxter has been working diligently with the indigenous craftspersons of Gujarat. She will now showcase her works at a week-long exhibition in Visual Arts Gallery, India Habitat Centre here beginning this Monday.

Maggie was introduced to traditional weaving, block printing and embroidery in Kutch by an Indian designer friend. Kutch specialises in traditional textile craft.

Stating that the textile works at the exhibition would be an amalgamation of the visual expansiveness of the Western Australian landscape and the apparent emptiness of Kutch, Maggie says, "There is no attempt to represent nature within the works, but rather the unrestricted horizon, the lack of perspective and emotions that those places draw out. The two places have much in common."

Source: *The Hindu*, 26 April 2008

Others: Apart from news, newspapers give us information on health, education, entertainment, science, fiction, and biographical columns. They also bring the seller and the buyer together through their advertising columns, both classified ads and displays. This leaves scope for creative expression in the form of feature writing, stories, poems, plays etc.

In this unit our focus is on writing for the news media. News media comprises various forms of writing out of which news writing is the most important. Apart from this, features, interviews, letters to the editor, sidebars, advertorials etc. find adequate place in its ambit. Writing for news media is also known as journalistic writing

not to be republished

which has its own specialised style. It can be classified under three broad divisions: news writing, editorial writing and feature writing. Therefore, writing for the media offers ample opportunities to write in the various forms that the mass-media requires.

1. **News Writing:** Writing a basic news story teaches you how to collect accurate and complete information and make sound judgements about the information, collate it in an appropriate form, and then write the content. In this form of writing a lead paragraph has the most important information that the writer has to tell the reader. Here is an example.

देश की तरक्की में दूरस्थ शिक्षा की अहम भूमिका

नयी दिल्ली, 16 फरवरी 2008 (जनसत्ता)। उप-राष्ट्रपति मोहम्मद हामिद अंसारी ने कहा है कि देश के सुनहरे भविष्य में दूर शिक्षा का अहम योगदान है। मुक्त और दूर शिक्षा की महत्ता पर जोर डालते हुए उन्होंने कहा कि युवाओं को बेहतर उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए दूर शिक्षा को सूचना व संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से लोगों तक पहुँचाना चाहिए ताकि ज़्यादातर लोग इसका फायदा उठा सकें। उन्होंने कहा इसमें चुनौती यह है कि किस तरह ज़्यादा-से-ज़्यादा लोगों को कम खर्च पर बेहतरीन शिक्षा मुहैया कराई जा सके।

Who gathers news for the media? The men and women who do so may be called reporters/journalists/editors/correspondents/special writers/rewrite-person or even public relations person.

News media presents news, views, reviews, and issues that happen at the local, the national and the international level. They also present critical analyses of issues, editorials and articles etc. News writing is different from editorial and opinion writing and there is a clear-cut distinction between facts and opinions. While reporting or collecting information for news, journalists make sure that they write a fair and balanced piece in order to avoid biases, prejudices, exaggeration or misrepresentation of any kind.

2. **Editorial Writing:** In most newspapers, the editorial and the op-ed page (op-ed page is given this name because it is placed opposite the editorial page) consist usually of the paper's own opinion on topical issues, events, incidents and statements expressed through opinion pieces, editorial columns and sidebars. These may be expressed verbally or graphically through cartoons.

© NCERT not to be republished

गतिविधि 19 ◆ Activity 19

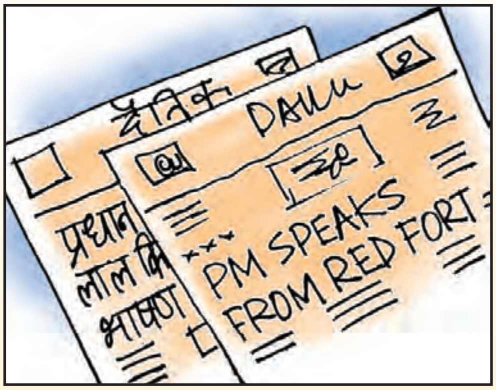

किसी हिंदी और अंग्रेज़ी के एक ही तिथि के एक ही विषय पर केंद्रित समाचारों का चुनाव करें। उनकी भाषा, शीर्षक प्रस्तुति, तथ्यों की तुलना करें और इस समाचार के आधार पर अपनी ओर से एक समाचार लिखिए और शीर्षक भी लिखिए।

Take Hindi and English newspapers of the same day and select news items on the same topic. Compare these news items in terms of their language, title, presentation and facts. On the basis of this analysis, write the same news in your own words and also give it a title.

The Editorial is a crisp paragraph of topical interest value which informs and leads public opinion. The heading often has real editorial value in itself and expresses opinion or sets the tone for the whole editorial. The average length of editorials is about 300 words. The writer condenses facts and arguments to a few short paragraphs. Any topic of human interest can become the subject matter for editorial comment which may be written in a humorous or serious tone. Opinion pieces are given on the op-ed page and these are usually written by guest or staff columnists. Most often they reinforce the ideas of the editorial writers.

The editorial page also consists of the opinions of others. These opinions are mostly of the paper's readers (the public). These 'Letters to the Editor' are an integral part of all the newspapers.

The following is an example of a letter to the editor.

Necessary dialogues

'A Fruitful Dialogue' by Ziya Us Salam (Literary Review, May 4) is a beautiful write-up on the increasing importance of translations in the field of Indian literature. Translations of regional literature into other Indian languages and finally into the global language serve a two-fold purpose. Firstly, translated regional writings open windows of understanding among people of different regions through their wide reach. They serve to inculcate a feeling of oneness despite regional disparities. Secondly, when translated into English, these works of regional writers project an authentic image of India internationally which otherwise seems to be a little exaggerated in English writings.

DR S.A. KHADER, Kurnool

Source: *The Hindu*, 11 May 2008

© NCERT not to be republished

Advertorials

Advertorials are a combination of editorial and feature writing. They are written with the purpose of advertising a product, a place or an event and highlight the positive points to attract the reader's attention. All the relevant information such as venue, dates, timings, prices, availability are given. Advertorials can also have pictures or illustrations of the product, place or event. An advertorial should clearly mention that it is an 'Advertisement Feature' or just 'Advertisement'. For example, a new school is opening shortly and the management wants to inform the public of this. An advertorial on the school can be taken out in a newspaper covering all its salient features.

3. **Feature Writing:** Feature writing can be a creative experience for reporters. Features can be written on profiles, personalities, lifestyles, travel, food, sports, automobiles and entertainment. They entertain readers as they are built around human interest. They can be plain fun to read or may nudge the reader to reflect on life. Before you start writing a feature you need to collect all the information related to the topic that you have chosen to write about.

   The characteristics of a feature in terms of its lead and style should be maintained throughout the article. Feature writing is not fiction writing and facts remain an integral part of any feature. They can be amusing, anecdotal or interrogatory. Features touch people's emotions and provide food for thought.

© NCERT not to be republished

II. Media Writing

Let us now move to the second part of this unit : Media Writing. In this section our focus will be on three different forms of media writing : News Report, Interview, Review.

News is a drama best understood in its setting.

News Report

News is often the truth about what is going on. It is the report of current ideas, events, and conflicts, which interest people. In modern democracies, news is a necessity. Men and women, individually and collectively, make vital decisions on the basis of what they know, and a lot that they know depends upon the news they read and hear.

Newsreporters perform a vital service to mankind. Their social role establishes them as members of one of the most important professions.

They not only present facts, but also explain their meaning. A newsreporter is, in fact, a fact finder — a finder of newsworthy facts. Her/his task is also that of a resourceful researcher. Lucidity, comprehensibility, and appeal are the three major characteristics of any news report and a newswriter has to be skilled in expository reporting.

News is the account of a current idea, event, or conflict which interests news consumers and benefits those who present it. Here is an example.

बच्चों को समाज का स्टेम सेल बनाने वाली शिक्षा मिले

लखनऊ, *18 जनवरी 2008 (सहारा न्यूज़ ब्यूरो)। प्रख्यात शिक्षाविद प्रो.फ़ेसर यशपाल ने आज समूची शिक्षा व्यवस्था को बदल डालने पर ज़ोर देते हुए कहा कि शिक्षक बच्चों को समाज का स्टेम सेल बनाने के लिए स्कूल में उन्हें पढ़ाने के तौर-तरीकों में बदलाव लाएँ। उन्होंने कहा विद्यार्थी और शिक्षक को जब तक पढ़ने-पढ़ाने की आज़ादी देकर समाज व शिक्षा की खाई नहीं पाटी जाती तब तक शिक्षा में क्रांतिकारी बदलाव की उम्मीद नहीं की जा सकती है।*

© NCERT not to be republished

Important Features of News Writing

The first and most important feature of news writing is accuracy. A news story can be creative and convincing, but if it has errors, it is of no use. Next is brevity. Each word in your news story should be chosen carefully and presented lucidly and with clarity. To become news there must be something factual, new and interesting. The news must be new and the facts presented should interest the readers. To be able to capture the interest of the readers is called having a news sense.

Why is a news report called a story? This is to emphasise that it is a construct, something developed on the basis of certain facts, to capture the interest of the readers. But remember, factual accuracy is vital for good news writing.

News Value

This concept is used in making judgements about which event is news and which event is not. To make that judgement, certain factors are taken into consideration that help determine the news story's news value. Time is one of them. An event is simply not news unless it has occurred fairly recently — the element of time is an inherent part of any news story. Another factor is that news sources should be authentic. These sources can be personal where the reporter is making a first person account of the incident, and has witnessed the incident or event herself or himself, or

based on recorded information. If all the requirements are met then the news story's news value is rated as very high. Thus, all efforts must be made to obtain accurate information; attention should be paid to each and every detail of the information. Also make sure that you understand the significance and the meaning of the information. Along with this, consistency of style is to be practised as it helps to make the writer more efficient.

The reporter's job is to find out the truth and convey it. She/he must learn to keep her or his own biases under check. The reporter is also encouraged to look for the other view points in a news story. It is the duty of the reporter to get in touch with the persons concerned to gather various perspectives.

See गतिविधि/Activity 16 on Page 98

News usually has the following elements.

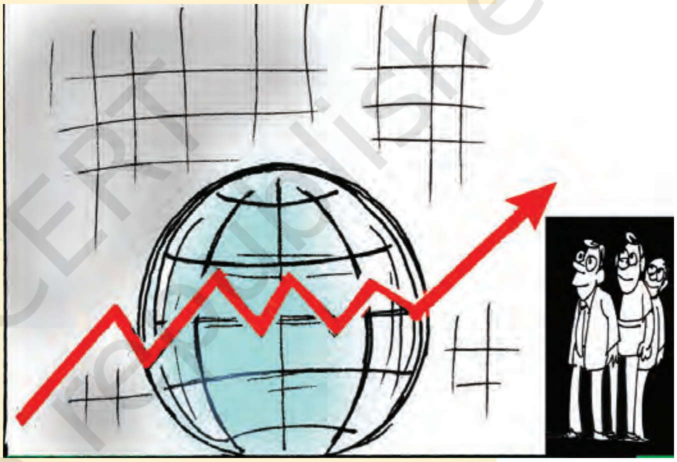

- **Impact**: Impact is essential to capture the attention of the readers. Any news is considered big or small according to the size of the current idea, event or conflict. The size of the news may be measured in terms of figures : for example — Thousands killed in Tsunami; Earthquake takes the lives of more than 500 people; Hundreds of people took part in a Marathon; or Sensex rises by 400 points in a single day. In all these examples impact is determined by numbers.
- **Proximity**: Proximity to the targeted readers plays a major role in maximising impact. That is why newspapers always keep in mind their target audience and its interests. The readers may find more interest in a minor event close at hand than in a more important one miles away. Hence local news usually comes first followed by national and international news. For example, power failure in any part of India will have greater news value than a similar power failure in Europe or any other country.
- **Timeliness**: The reader wants news to be new. 'New' is the most important factor of news. 'New' news reports on latest/current happenings/changes that take place as they are relevant to and affect the daily lives of people.
- **Prominence**: Any news related to prominent personalities e.g. president, prime minister, actors. becomes major news. The news that holds the interest of the reader becomes significant and important.
- **Novelty**: If an event is unusual, bizarre, or the first of its kind, it has more news value than if it is something that happens routinely.

© NCERT not to be republished

गतिविधि 20 | **Activity 20**

एक सप्ताह के समाचारपत्र से ऐसे समाचारों को काटकर अलग-अलग इकट्ठा कीजिए जो असमान्यता, चर्चित लोगों और टकराव/संघर्ष या हिंसा के कारण समाचार बन गए। इन समाचारों को ध्यान से पढ़िए और बताइए कि क्या इनमें नवीनता, प्रभाव और निकटता के तत्त्व हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए कि ये समाचार बनने चाहिए या नहीं?

Take one week's newspapers. Look for news related to unusual events, important people, and conflict/crime. Read these news reports carefully and explain if they adhere to newness, impact and proximity. Discuss in class if these news are worthy of being reported or not.

- **Conflict**: News about war, terrorism, conflicts and crime are widely covered.
- **Relevance**: The news story must have relevance and usefulness to its readers. For example, news about business, leisure, exhibitions etc. have a lot of human interest.

The Process of News Writing

Good writing is essential for media. Without it important news, intriguing stories, insights and analyses, statements and opinions cannot reach their potential audience.

The next important point is its presentation. After gathering information and collating it, you have to work out the order in which it has to be presented. You have to sift through the collected matter to separate the chaff from the grain. It is then that you decide what should come first and what should follow in order of priority. While writing a news report keep the following aspects in mind.

News Structure

The two most commonly quoted formulae for news writing are Rudyard Kipling's six questions also known as 'Five Ws and How', and 'the News Pyramid' also known as 'the Inverted Pyramid'.

The Six Questions

I keep six honest serving-men
(They taught me all I knew);
Their names are What and Why and When
And How and Where and Who.

– Rudyard Kipling

These six questions — who, what, how, where, when, why — are a useful checklist for news stories. In general, these six questions should be answered somewhere in the story — only sometimes there can be exceptions. For example, in the case of weekly newspapers talking about something that happened 'last

© NCERT not to be republished

week' becomes redundant; the same is the case with a daily newspaper talking about 'yesterday'. The questions who, what, where and when provide enough information to encourage further reading of the story. Out of these six questions — who and what are the most essential.

Try to locate the answers to Kipling's six questions in the following news report.

PSLV Puts 10 Satellites in Orbit
Very few countries have done it : ISRO chief

T.S. Subramanian

Sriharikota: India set a record here on Monday when its Polar Satellite Launch Vehicle (PLSV-C9) fired 10 satellites into orbit in a precisely timed sequence.

As each satellite winged out of the vehicle, it had to be re-oriented to prevent collision. The feat proved the versatility, reliability and flexibility of the PSLV. This was the 13th PSLV flight and the 12th successful one in a row.

A jubilant G. Madhavan Nair, Chairman, Indian Space Research Organisation (ISRO), told a press conference : "This is a memorable occasion for ISRO and India. We have set a record for launching 10 satellites into orbit [using a single vehicle]. Very few countries have done it. Russia launched 13 satellites at a time. We do not know the result. We have shown the world that we can do multiple launches in a precise manner. We are thrilled at the performance."

Source: *The Hindu*, 29 April 2008

© NCERT not to be republished

The News Pyramid

The purpose of the news pyramid, also known as the inverted pyramid, is to show that the news has been presented in descending order of importance. There are two important aspects to this: one is that the reader can stop reading halfway also without loosing the meaning of the full news, and secondly, sub-editors have the scope to cut stories from bottom-up if space is less — again without loosing something important.

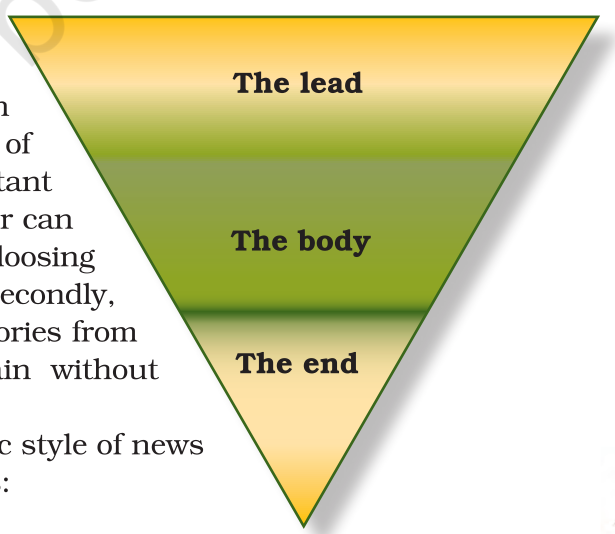

The inverted pyramid is a specific style of news writing. It is divided into three parts:

- the lead
- the body
- the end.

> ***Everyone knows the old saying : "If you can't get their attention in the first sentence (or the first eight seconds) they won't bother with the rest."***
>
> – Nicholas Bagnall

The **lead** or intro is a useful starting point for news writing and should be able to stand on its own. Usually it is one sentence which conveys the essence of the story so it should be clear, crisp and concise. It generally ranges between 20 and 30 words. It should be able to catch your readers' attention instantly so that they read the rest of the story. The best way of writing the intro is to put the human drama first. While writing an intro ask yourself whether your story is essentially who or what — is the focus on the person or on what they have done? This exercise will help you decide whether the person's name should go in the intro or not. As far as possible, an intro should be about one point not two. The lead in the following news is crisp. Look for the main point.

Women's Own: Ujjas Radio

Based in Bhuj; covers Saurashtra and Kutch

Hiral Dave

When Kutch Mahila Vikas Sangathan, an NGO working among Kutchi women since 1989, wanted to reach out to rural hamlets in the largest district of Gujarat, it chose radio as its medium.

Since 1998, programmes of Ujjas Radio have been broadcast from Rajkot Akashwani Kendra. The station has become the voice of Kutchis, especially women. Ujjas Radio, which now has its own recording studio, relays two programmes through Rajkot AIR every Monday and Thursday.

Its 53-episode inaugural programme, *Kunjal Panje Kutchji*, built around the role of women in panchayati raj institutions, ran for a year in 1998-1999. Kutch Lokjivani has three segments: folk music, history of the region, and *Pardafass*, an expose of various scandals in the region, especially after the January 2001 earthquake.

From field work, reporting to recording, it's all done by KMVS volunteers. A team of 10 reporters of Ujjas Radio prepares exclusive stories of rural Kutch, for rural Kutch.

"We've been publishing a monthly magazine called *Ujjas Patrika* since 1992. However, we realised radio would be more effective in reaching women in the villages," says Preety Soni, vice-coordinator of KMVS. "It's easily accessible and more popular in rural areas than print."

The next step is to explain, extend or retell the main point — this is essentially the **body** of the pyramid. Often, readers need more information and thus the news story should provide a detailed elaboration. It may extend

© NCERT not to be republished

Clarity, tightness, information — and the news point that is going to start people talking. These are the qualities to seek.

– Leslie Sellers

up to two to three paragraphs but the focus must remain consistent with the story. Quotes from the people and organisation, who are part of the news story, are an essential part of news story development. While quoting, use said/says to introduce the quote. The variation could be told/tell according to the context. Each paragraph in your news story should flow naturally from the one before it as appropriate transitions make the news readable. Make sure there is coherence of ideas and these are presented in a logical and chronological manner. Repeated use of the word 'then' is to be avoided. Using verbs such as claim, admit, state etc. is to be avoided unless their usage conveys the precise meaning.

The news story should **end** neatly. The news can be concluded in a nutshell in the concluding paragraph but it should have unity and relevance.

When you prepare news reports for your school newspaper (daily, weekly, fortnightly or monthly), you collect information from different locales within the school and present them in a readable form. Hence, collecting information is the first step for news reporting. You may get information about an event from two or more sources. This means that you have to collect and arrange all information in correct order.

The language for reporting news has to be simple and straightforward. Avoid complex sentences and difficult words. Call a spade a spade. Remember that simple language has its own elegance which comes from clarity of expression. If a sentence is long-winded, the reader loses the thread of continuity. Just as a camera provides images that are clear and unvarnished, the news report also must have photographic accuracy without any blurring of facts and data. The verbal camera of the news reporter provides for accuracy in reporting.

If you want to succeed as a writer, you must read a lot, think imaginatively, practise writing and always revise what you have written. The following steps can help you while collating information and reporting it.

- Make a plan before you start writing and revise your plan before you start your research.
- Write notes before you start writing and then develop the news/ feature/review.
- Always revise what you have written.
- Make sure that there are no errors of facts, names, spellings, grammar, or confusion caused by bad punctuation.
- Last of all, read your story from the reader's point of view and reflect on the following:

© NCERT not to be republished

– Is it making sense?
– Is it clear?
– Does it hit the target?

To develop a journalistic style you will need to learn how to use quotes, to handle reported speech, to choose the right word to convey the right message. You will also need to remember what your language teacher would have told you about precis or summary, in which a long passage is reduced to a prescribed length. When reporting is direct and objective, it gains in veracity and authenticity.

- *'After' is a useful way of linking two stages of a story.*
- *'As' is often used in intros to link two events that occur at the same time.*
- *Use the 'active voice' — instead of saying something happened, say who did what to whom. Use the action word.*

News reporting for a school magazine or newsletter should make for enjoyable reading. The language should be plain and simple but elegant and to the point. The news report should only be long enough to sustain the reader's interest and the reporter should work out the order of presentation.

Here is an example of news reporting on a news museum.

As it happened...

K.V.E. PRASAD

A news museum in Washington D.C. showcases the evolution of information media and the technologies and the courage that make news possible.

The sight is arresting. The facade of this seven-storey structure is a blend of glass and cement with an imposing 74-foot-high marble tablet etched with the First Amendment of the United States Constitution bestowing on its citizens freedom of religion, speech, press and liberty...

As one steps into the atrium, a vertical and horizontal expanse greets the visitors. And yet, the seemingly vacuous space almost at once integrates and absorbs everyone there. Welcome to Newseum, a unique interactive museum dedicated to the world of news...

For the tourists

"This (museum) is not for journalists but for the 20 million visitors (who come to Washington DC each year)... to see democracy in action... A free press is the cornerstone in a democracy," Chief Executive Officer Charles Overby said, summing up the spirit behind creating the Newseum. And the journey begins in right earnest. Just as in newspapers, where the front page showcases what the daily contains, a similar concept drives the designers who offer the visitors a glimpse of what they can expect. The 90-foot-high atrium enables visitors to see at a glance the exhibits from top to bottom. And for those keen to have a finger on the throbbing pulse, a giant, high-definition media screen features historical and current events.

Source: *The Hindu*, 27 April 2008

Note down the points that have made it good news reporting.

© NCERT not to be republished

News Reporting: a Glance at the Past

Svenska Stats-Tidning, eller Post- och Inrikes-Tidningar.

Stockholm, Tisdagen den 31 Mars 1835.

POST- OCH INRIKES TIDNINGAR

VIKTIGT MEDDELANDE

The Post och Inrikes Tidningar (PoIT) *or Post and Domestic Newspapers, a Swedish newspaper, began in 1645. Regarded as the world's oldest newspaper, it is now available only on the Internet.*

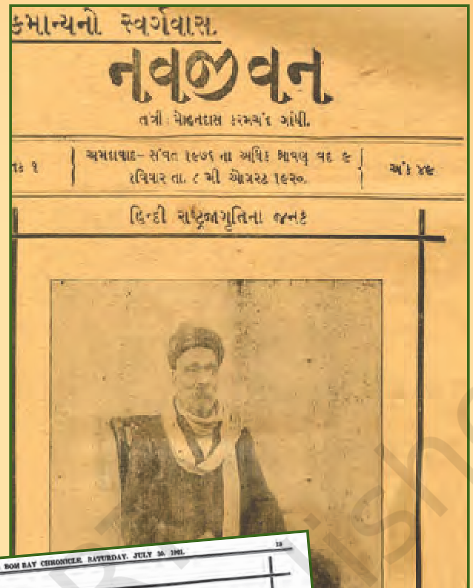
નવજીવન

Navjivan, *a weekly newspaper edited by Gandhiji was the Gujarati edition of the paper* Young India *which was also edited by him.*

Indian Opinion

PUBLISHED WEEKLY IN ENGLISH AND GUJARATI

A WEEK OF EXCITEMENT

Indian Opinion *was a bilingual weekly newspaper published in English and Gujarati by Gandhiji in South Africa during 1903 to 1915. It also had Hindi and Tamil sections for some time.*

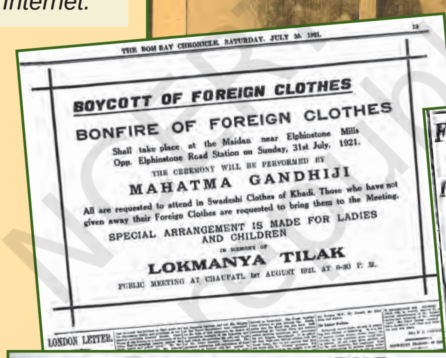
THE BOMBAY CHRONICLE, SATURDAY, JULY 30, 1921.

BOYCOTT OF FOREIGN CLOTHES

BONFIRE OF FOREIGN CLOTHES

Shall take place at the Maidan near Elphinstone Mills Opp. Elphinstone Road Station on Sunday, 31st July, 1921.

THE CEREMONY WILL BE PERFORMED BY

MAHATMA GANDHIJI

All are requested to attend in Swadeshi Clothes of Khadi. Those who have not given away their Foreign Clothes are requested to bring them to the Meeting.

SPECIAL ARRANGEMENT IS MADE FOR LADIES AND CHILDREN

IN MEMORY OF

LOKMANYA TILAK

PUBLIC MEETING AT CHAUPATI, 1st AUGUST 1921, AT 6-30 P. M.

The Bombay Chronicle

RELEASE OF MAHATMA & CONGRESS LEADERS ORDERED

OPPORTUNITY TO CONSIDER PREMIER'S STATEMENT

Ban Of Illegality On Working Committee Removed

The Bombay Chronicle *was an English newspaper started in 1910. It was a nationalist newspaper and chronicled the political events of pre-independent India.*

First Asian Games Declared Open In Colourful Setting

IMPOSING MARCH PAST BEST PART OF THE CEREMONY

From Our Staff Correspondent

NEW DELHI, March 4.

Coverage of the first Asian Games at Delhi on 4 March 1951 by The Times of India.

© NCERT not to be republished

Chronicles of a Nation

LARGEST NET SALES of any Daily Newspaper Printed in Northern, Southern, Central or Western India

The Times of India

NO. 195. VOL. CIX. BOMBAY: FRIDAY, AUGUST 15, 1947 PRICE TWO ANNAS

BIRTH OF INDIA'S FREEDOM

NATION WAKES TO NEW LIFE

Mr. Nehru Calls For Big Effort From People

"INCESSANT STRIVING TASK OF FUTURE"

Assembly Members Take Solemn Pledge

WILD SCENES OF JUBILATION IN DELHI

NEW CABINET OF INDIA

Fourteen Members

PANDIT NEHRU TO BE PREMIER

STATE VISIT TO KARACHI

LORD MOUNTBATTEN GREETS PAKISTAN

Mr. Jinnah Re-Affirms Firm Friendship With Britain

EARLDOM FOR LORD MOUNTBATTEN

MR. GANDHI TO FAST TODAY

Also League Leaders

Pakistan's First Cabinet

ELEVENTH-HOUR CHANGE

FRENZIED ENTHUSIASM IN BOMBAY

LARGEST NET SALES of any Daily Newspaper Printed in India and the East.

The Times of India

Published simultaneously in Bombay and Delhi

NO. 22. VOL. CXII. DELHI: THURSDAY, JANUARY 26, 1950 TWO ANNAS

THE NEW PRESIDENT AND HIS FAMILY

JANUARY 26 DAY OF SIGNIFICANCE

Pandit Nehru's Message To The Nation

HARD WORK APPEAL REITERATED

"FOUNDATIONS OF INDIAN REPUBLIC WELL LAID"

Delhi Torchlight Procession

The Hindustan Times

LARGEST CIRCULATION IN NORTHERN, NORTH-WESTERN AND CENTRAL INDIA

NEW DELHI FRIDAY, AUGUST 15, 1947

INDIA INDEPENDENT : BRITISH RULE ENDS

CONSTITUENT ASSEMBLY TAKES OVER

MOUNTBATTEN'S APPOINTMENT GOVERNOR-GENERAL

NEW STAR RISES IN THE EAST

LEADERS TELL NATION

THE HINDUSTAN TIMES

A Walk Through History

FRIDAY, AUGUST 15, 1997

MILESTONES
A kaleidoscopic view of post independent India's most memorable moments
PAGE 8

SQUANDERED LEGACY
Nani A. Palkhivala takes a look at the state of the nation fifty years after independence
PAGE 13

CHANGING PERCEPTIONS
The last five decades have been an age of transition for Indian cinema, writes Aruna Vasudev
PAGE 20

LIVING ON THE FRINGE
Mahasweta Devi ponders on the plight of the less privileged in our society
PAGE 21

Towards a New Synthesis

Checklist for News Reporting

- As a reporter of a news story you should remain detached; you are not part of the action you describe unless you are an eyewitness. Avoid the use of the word 'I'.
- Remember, there is no substitute for accuracy.
- Avoid redundant information. Make it crisp and to the point.
- Avoid repetitions. Always read and re-read your news story.
- Make sure that the flow is logical and coherent and it answers the five Ws and one H.

Whether it is a news release, a speech or a brochure, accuracy, brevity and clarity are essential. This is all the more important when the material has to be made available in more than one language. Jargon and flowery phrases do not impress the readers and attempts to translate these satisfactorily from one language to another most often end up giving the opposite impression of what is to be conveyed. Therefore, presentation in simple language is important.

Interview

Almost all news stories have an element of interview inherent in them. The interview has emerged as a journalistic art form through the years. The modern interview, as we understand it, consists of a personal contact between two people: the interviewer (reporter) and the interviewee, and its presentation is a blend of the reporter's impressions and the interviewee's ideas and comments. Interviews are regarded as a journalistic staple because of their popularity with the readers who are interested in knowing more about the works and opinions of other people.

An interview can be a pre-arranged informal talk with a dignitary, an artist, a scientist or an informal conversation with a shopkeeper, a vendor, or a follow-up telephone call with someone you have had an interview session or a talk with. The main purpose of an interview is to elicit information on facts, and opinions about issues, situations, or about a person. Some interviews are investigative in nature wherein the interviewer tries to make sure that the information being given is accurate and truthful and the interviewee is not withholding important facts. To achieve this, one must be thorough with the background information of the topic or the person's work and life. A reporter has to prepare the questions according to the focus of the interview to elicit relevant and maximum information in a specified time duration. Research and detailed peparation are therefore essential elements of interviewing.

© NCERT not to be republished

Telephone interviews have become very popular these days because they are a quick way of getting information, but face-to-face interviews are more rewarding. The body language of the interviewee and eye contact bring in the element of personal touch which enables the interviewer to make insightful observations and make her/his write-up more engaging.

Types of Interviews

Interviewing for information goes on all day long in a reporter's life, whether he is working for a newspaper, a magazine that prints news or features, a radio station that presents news, or a television channel. To a lesser or greater degree, every story involves the use of the interview for information.

Interviews can be classified into three groups: for information or facts, for opinions, and for feature writing. These groups have subdivisions. For example, opinion interviews can elicit emotional responses as well. Informational interviews can lead to an analytical presentation of views if the issue so demands. Other subdivisions can be profile interviews and group interviews.

Informational Interview

These interviews seek information based on facts. Their spectrum is as wide as human endeavour — education, sports, politics, science, finance etc. For example, a scientist has done some breakthrough research. The reporter seeks information on how it was done and its results by interviewing him. Generally the five W's and H questions are asked for this type of interview.

Opinion Interview

The opinion interview seeks the opinion of the person/persons concerned with an event or organisation, or it can seek public opinion through factual and open-ended questions. Opinion interviews are linked with a person connected with an incident or event. She/he may be a common man, a politician, a well known personality or an expert. The most commonly asked questions are: What is your opinion about this judgement/or this event/incident? What is your assessment of the whole issue? Do you agree or disagree with this? What options do you suggest? What steps are you going to take now?

It is important for the reporter to remember that opinion interviews may, at times, result in emotional responses. In such situations she/he should be prepared to be sensitive, and ask appropriate questions without hurting the feelings of the respondent or escalating the situation. Some examples of such situations are covering an accident site, or an agitation which threatens to turn violent.

© NCERT not to be republished

Personality / Profile Interview

The personality or profile interview also comes under the category of feature interview. In such interviews the emphasis tends to be not only on what the person says, as how and where and why she/he says it. The profile of the subject is developed in totality. The characteristics, the nuances of speech, dress, appearance, personal traits etc. are also taken into account. This makes the reader feel that she/he has almost met the person interviewed.

Group Interview

The group interview seeks the responses and opinions of different people connected with one story. Facts and opinions are obtained through a series of interviews with a number of people. For example, when the Central Government announces the annual budget, newspapers assign reporters to secure the comments of the concerned authorities and the public. Here the reporter summarises her/his findings in a general lead and then quotes the important observations which the experts have given her/him.

Press Conference

A press conference resembles a group interview but its method is in reverse order. It is generally called by important individuals to give out an important piece of news to the public through journalists/reporters. Interviews begin after announcements are over and reporters are free to ask questions for further enlightenment. Press conferences are held in order to save time and also with the purpose of giving all the journalistic media an even break.

The following interview with the Nobel Prize winner, Padma Bhushan Dr R.K. Pachauri gives us an insight into the causes of and remedies for global warming. Read the interview carefully and discuss which type of interview it is.

© NCERT not to be republished

Spreading the Message

It is early February and Delhi is hit by a cold wave, so it's an irony that I'm here to interview Rajendra Kumar Pachauri about global warming. Dr Pachauri's fifth-floor office in the India Habitat Centre is cluttered with books and files, but is remarkably small for someone who'd just picked up a Nobel Prize on behalf of IPCC, the Inter-government Panel on Climate Change, a UN body that looks at existing research on climate change and makes assessments. Pachauri has been IPCC's Chairman since 2002. From 1981, he has also headed The Energy and Resources Institute (TERI — the T originally stood for Tata), a think tank that's become India's foremost institution on energy, environment and climate change research and policy. With his trimmed salt-and-pepper beard and solemn air, Pachauri, 67, seems to me the quintessential scientist-technocrat.

Environmental experts like Pachauri claim that Planet Earth is steadily warming up because of human activities. Gases, primarily carbon dioxide, emitted while burning fossil fuels like coal, gas and oil, lead to heat being trapped by the atmosphere. That heat causes glaciers to melt, floods, droughts, extinction of species... It's a long, scary list. Pachauri started talking about all these two decades ago, before 'global warming' had really become a common phrase.

In his spare time Pachauri writes poetry in English and opens the bowling in cricket tournaments. He is also the author of several books. Last year, Pachauri's IPCC shared the Nobel Prize for peace with Al Gore for their efforts in getting the world to focus attention on global warming...

READER'S DIGEST : *How did you get introduced to global warming?*

R. K. PACHAURI : *In 1988, I was President of the International Association for Energy Economists. I read a lot of material on climate change then and got very convinced that this is going to be a major problem for the whole globe. But people then thought I was talking nonsense.*

RD: *Why is global warming so alarming? The earth's temperature rose by just 0.75 degrees C in 100 years. It's predicted to rise by 6 degrees in the next 100. There's more daily temperature variation between day and night.*

RKP : *Because it's not a smooth, steady increase that you can say, okay, one summer instead of 45 degrees it's 47 and we can withstand that. A whole lot of other changes are taking place in the climate. There will be more heat waves, droughts, floods, glaciers melting very rapidly, leading to serious water stresses in several parts. About 20 to 30 per cent species will be threatened with extinction with temperature increases of over*

Reprint 2025-26

1.5 to 2.5 degrees. Global warming is visible, is measurable and, we project, will really get worse.

RD : *But Earth has had drastic climate changes before. So how can we be sure global warming is man-made this time?*

RKP : *The evidence is strong. Atmospheric carbon dioxide used to be 280 parts per million (ppm) before industrialisation, it's now over 380 ppm. There is more or less a perfect fit between our scientific models that predicted temperature changes and actual observations. If you look at projections for the future, even if we were to stabilise the concentration of atmospheric gases today, climate change will continue for several decades. So, we will have to adapt to its impacts anyway.*

RD : *It's said that the developed world is primarily responsible for this.*

RKP : *Yes, because you are not dealing with today's emissions. It's the cumulative effect of emissions over time, for which developed countries are increasing their emissions but our contribution to their concentration is still very small.*

RD : *How will India be affected?*

RKP : *Our low-lying coastal areas could get submerged. Sea-level rise is a threat to the Sunderbans. The kinds of events, like the record rainfall you saw in Mumbai in 2005, will happen frequently, with much more intensity. Our glaciers are melting; the flow in our river systems in at least the northern parts will be affected.*

It's already happening and will worsen unless we arrest this change.

RD : *Doesn't taking measures against climate change come at the cost of development?*

RKP : *That's a myth. We have to bring about a transition in our development. Take transportation. Should we follow the North Americans, where one person drives 100 kilometres everyday to get to work? We don't need that. We need better public transport. Technology can make a difference. TERI has a major training complex which uses no power from the grid. We have to come up with solutions where we can become leaders because the rest of the world is also going in the same direction. And if we do it first, we also have a commercial advantage.*

RD : *How do you reverse global warming? Is that possible?*

RKP : *Theoretically, yes. You will have to really bring down your emissions to below zero and find ways by which you can absorb existing carbon dioxide. Technologically, that's entirely possible. It may happen in 30, 40, or 50 years into the future.*

RD : *But it requires political will.*

RKP : *That's where it's so essential to create awareness among the public. Because at least in the democracies of the world, people will put pressure on leaders to do what is expected of them.*

RD : *How can we ordinary citizens help prevent global warming?*

RKP : *Use energy sensibly. Use compact fluorescent lamps. Avoid incandescent bulbs. Make sure your air-conditioner is set at a level where you are not freezing. In most five star hotels, you need a quilt at night, even at the peak of summer. It's ridiculous!*

RD : *How do you yourself lead an environment-friendly life?*

RKP : *I don't do a very good job because I'm on an airplane all the time. So, in that sense I am not a very good model. But I only buy the things I really need. I try to minimise on the use of a car. Even if I step out of my office for two minutes, I switch off the lights. In little ways, I try not be a burden on Mother Earth.*

– an excerpt from an interview by Madhavankutty Pillai
in the *Reader's Digest*

Preparation for Interview

Before the interview, it is essential to do some research on the subject and the person concerned. The research can be done on the person's work, his areas of interest, background, motivational factors — information can be obtained by talking to the people who are associated with that person. You may also go through written records such as articles, previous interviews, books etc. written on or by the person. For these you can go to the library or use the Internet. Always make sure that the information is authentic as it facilitates asking relevant and appropriate questions to elicit information during the interview. Another important preliminary requirement is to set a time and arrange for a venue for the interview.

One must understand that the person has to be interviewed well to elicit the best reponses. Some people are outspoken, some are shy, some others, even though they may have done outstanding, interesting or unusual work, become very formal when it comes to an interview. Your preparation requires understanding the personality type and preparing questions accordingly.

Preparing Questions for the Interview

See गतिविधि/Activity 17 on Page 107

What is the purpose of the interview? What information do you want from the interviewee? With this focus you will be able to prepare the most relevant questions. Keep the readership/ audience in mind as well and, accordingly, prepare the questions. A successful interview depends on the kind of questions you ask. If the questions are interesting, the answers are bound to be interesting too. Always keep the focus of your story in mind while preparing and also while asking your questions.

Unfocussed interviews lead to long talks that usually do not serve any purpose. By writing down questions you want to ask, you will be able to stay on track during the interview. However, remain flexible as you might have to change the questions or their order during the course of the interview.

The first question of the interview sets the tone, so spend some time beforehand thinking about what you want to say. Avoid close-ended questions, or questions where the subject can respond with a 'yes' or 'no'. Instead, ask neutral and open-ended questions that will help you to understand what happened, how it happened and why. Questions that

© NCERT not to be republished

require the subject to describe what happened are most demanding. Questions beginning with 'why' will give an insight into reasons. In between questions beginning with 'who', 'where' and 'when' can be asked. Both types of questions will provide you with a comprehensive picture. Follow-up questions are those that are asked on the spot in response to a particular question to maintain the continuity of the interview. Another type of questions are focused questions which elicit the maximum information. It is advisable to keep your questions short and succinct as long, complex questions usually get curt or ambiguous answers.

One should never start an interview with an inane question as an interview is not a conversation. In a conversation, you exchange information. In an interview, you gather information. The difference is subtle, but important. The questions in an interview should be such that they motivate the interviewee to tell more.

While interviewing avoid making your own statements. Your job is to get information, not to impress with your knowledge. Asking two questions together or clubbing them is to be avoided. Avoid using hyperbole, for example, if you ask a superstar, "How does it feel to be a superstar?" most likely, you will get a modest answer. To elicit maximum response from the subject you need to prepare questions that are accurate, to the point and crystal clear. Interviewing doesn't mean only asking questions but asking questions which will draw out the best response from the interviewee.

Collecting anecdotes while interviewing is particularly important for personality interviews. An anecdote is a story within a story. While interviewing keep your senses — hearing, seeing, tasting, smelling, feeling and thinking — alert. Critically analyse what your subject tells you as there is a subtle difference between fact and opinion. Opinions are value

गतिविधि 21 ◆ Activity 21

अपने स्कूल के लाइब्रेरियन या शारीरिक प्रशिक्षक या प्रयोगशाला सहायक से स्कूल पत्रिका के लिए एक साक्षात्कार लीजिए। इसमें उपलब्ध सुविधाओं, उनके लाभ, विद्यार्थियों की रुचि, तैयारी आदि मुद्दों पर बातचीत करके उसे लिखिए।

Interview the librarian/physical instructor/laboratory assistant of your school for the school magazine. Your interview may focus on the available facilities, their benefits, the interest of students and their preparation. Transcribe the interview.

© NCERT not to be republished

judgements and facts are verifiable. The entire ambience of the place is part of your interviewing. This is where your creativity will help you set the tone or background of the interview.

Develop critical thinking skills — it will help you to understand the statements, assumptions, any kind of bias or ambiguity and gain a clear perspective.

The Process of Interview

- If possible, record the entire interview in a tape recorder. If that is not possible, note down every detail.
- Your interview should begin with greetings and end with a note of thanks. Remain polite and courteous throughout the interview and conduct it confidently.
- You may request the interviewee to give her/his photograph to be published along with the interview. Start your interview with a simple and straightforward question.
- Prepare your questions before you set out for the interview because if you begin the interview by asking questions from your notebook, the interview might be affected and may lack spontaniety. The questions that you have prepared/researched should serve you as a working format and help you to cover every aspect but not restrict or impede your spontaniety.
- Let the interview flow with ease. Do not interrupt when the interviewee is speaking. This will break the speaker's line of thought. Wait for the person to conclude before starting a new question.
- Be a good and attentive listener. You have to make the interview more of a dialogue than a question–answer session. Ask questions that arise out of the interviewee's statements so that the flow and continuity are maintained. Note down all the quotes and sources carefully.
- While doing features and profiles, your observations, ability to appreciate colour and other details will illuminate your story.

'This is off the record' — means that the information being given is not to be published. 'On-background' means you may publish the comments of the subject but don't mention her/his name. You attribute them to a 'source'.

© NCERT not to be republished

Writing the Interview

Once the interview is over, read all the facts that you had gathered about the person before the interview to give an appropriate introduction. Your language must be simple and you should not allow your admiration for the person to break into a hyperbole about her/him.

Write the interview on the basis of what you have recorded or written in your notes. Try to write it as soon as the interview is over so that you remember all the points clearly.

Always re-read the interview. Make sure there are no errors — factual or grammatical. Your language and style should be appropriate and consistent.

An interview can be presented in two ways. One way is to introduce the interviewee, specify the reasons for the interview, highlight the main focus of the interview, then give the whole interview.

Another style is to write it as a feature. In feature writing you include the body language and also the whole ambience of the place. The questions and their answers may not be presented in a conventional style but can be written in a narrative style.

The factual interview, and often the group interview, can be presented in the inverted pyramid style. You write the lead, which summarises the chief news obtained and answers all the Ws. The succeeding paragraphs deal with important questions. In this, avoid giving your own questions and write the interview in such a manner that the answer implies the question that has been asked. Giving direct quotes is also a good idea as it gives authenticity to the matter being reported.

While reporting opinion interviews, put forward facts with opinions and give them prominence as readers want to know what the interviewed person thinks. After transcribing the interview, show the draft to the interviewee for approval. This ensures authenticity and also makes sure that nothing of importance has been left out.

Review

Reviews are an integral part of any newspaper, news magazine or newsletter. A review provides basic information about a new book, a film, or an artistic activity (theatre performance, art exhibition etc.) to keep the readers up-to-date with current events and views on them even if they have not read the book, or seen the film, or were unable to attend the event in person. People read reviews to seek the opinion of somebody who is well informed. A well-balanced review not only informs the reader about the significant features but also motivates them to read the book, or watch the film or theatre performance, or listen to the reviewed music album. Reviews guide the reader by giving relevant inputs so that it becomes easy to make a choice according to one's interest and requirement.

Reviewing is critical appreciation and analysis of printed and audio-visual materials which are meant to be used by the masses from all walks of life. A newspaper or a magazine will include reviews that its readers have interest in. This, in turn, ensures a dedicated readership for any

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

गतिविधि 22 ◆ **Activity 22**

अपने शहर में होने वाली किसी प्रदर्शनी / क्राफ्ट मेला / पुस्तक मेला घूमने जाएँ। वहाँ लगाई गई किताबों/ वस्तुओं/ कलाकृतियों के बारे में जानकारी हासिल कीजिए और लिखिए। वहाँ जाने वाले दर्शकों के विचार, पुस्तकें/ वस्तुएँ आदि की विविधता और प्रदर्शनी की अवधि, सुविधाएँ, शिल्पकारों/ प्रकाशकों के विचार और आपके स्वयं के विचार नोट करें। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए मेले पर एक समीक्षा लिखिए।

Visit an exhibition/a fair/a book fair/a craft fair organised in your city. Collect information about the displayed books/ items/crafts in the exhibition. Note down details such as the viewer's response, kinds of items covered, duration of the exhibition, views of the craftsmen/publishers, other arrangements, and also your own analysis of the exhibition in totality. Write a review keeping in view all the aspects of the exhibition.

newspaper or magazine. In response to some reviews the readers may write letters to the editor offering a different perspective.

In any newspaper, specially the Sunday edition, you will find reviews of books, music, dance, theatre, films, art and other exhibitions. The moot point for any aspiring writer of reviews is that she/he must be well acquainted with the subject that she/he is about to review. You must be a good and versatile reader before you can undertake reviewing books. Similarly, without a knowledge of drama, music and dance, it will not be wise to review the performing arts. One should be familiar with art forms to write about painting or sculpture. So the essence of writing reviews is closely linked to one's interest and knowledge in that particular field. To review a particular branch of the arts selected one must have a definite liking and adequate knowledge in the given field as well as a well-defined point of view. The value of the opinion expressed in a review depends on the extent of the reviewer's knowledge of the subject.

Where reviews of local events (theatrical or musical), or the artistic life of a community are concerned, newspapers and magazines play a very significant role in strengthening the ties between newspapers and their readers.

Reviews are written for readers, not for the writer or the artist or the film-maker whose work is being reviewed. This does not mean that the reviewer should twist and turn information to make the readers happy, but her/his task remains serving the readers.

While reviewing, you should approach the subject under review with an open mind; you should be honest, unifluenced, unbiased in your review. It is a good practice to review your own review to make sure that your assessment is clear, crisp and engaging.

In some cases, you may get only one chance to watch the play or attend the musical concert

© NCERT not to be republished

that you have been assigned to review. Make sure that you take down adequate notes. Record each and every detail: stage setting, ambience, costumes, decor, colours, lighting, dialogues etc. and keep all your senses alert.

Film Review

Writing a film review for a 'specialist' magazine, or for the entertainment page of a local newspaper, differs in terms of its analysis. A special report looks for the salient features of the film, the genre to which it belongs, the production techniques etc; whereas for the entertainment page, a brief synopsis of the film in terms of plot, narrative, characters, special effects and entertainment value is given. Along with this information, it is important to give basic information such as the venues and dates of the film's shows. Classification of the film is of prime importance to the reader — whether it is a family drama, a musical, an adventure story, science-fiction or a mixture of these genres. The review should definitely mention this.

After watching the film that is to be reviewed, it is important to take down notes immediately. This will be of great importance when you actually sit down to write the review. These notes should be detailed enough to bring back to memory the images that you found most appealing.

While writing a film review include all the important aspects of the film. Give a brief outline story of the film. Follow this with details about what you thought of the film. Was the film thought provoking? Did it have lasting images and ideas that caught your attention? What is its theme? Is the script convincing? Is it original or based on any novel or real event? How has the story been treated? Are there any loose ends? Does it make an impact? Besides this the performance of the actors, the music, photography, sound, special effects, dialogues, direction etc. need to be critically evaluated as well. Finally, you must state if you would recommend it for viewing or not.

If you enjoyed a particular scene, say so. Justify your statements with illustrations, explanations or arguments. If you say 'such-and-such' was a funny movie, you need to quote lines or describe a scene illustrating the humour in it. An example is more clearly understood than a simple statement. Whatever you say cannot be absolute. By quoting an example of what you found funny, you allow room for readers to conclude that your sense of humour and theirs may be different. This holds true for a book review also.

Never say that you liked/disliked a certain movie without giving your reasons. Conclude the review by summing up your views briefly.

See गतिविधि/Activity 18 on Page 123

© NCERT not to be republished

The National Award winning film *Iqbal* was a thought provoking film and could capture the interest of all kinds of audiences. A review of the film is given below as an example.

Cast: *Shreyas Talpade, Naseeruddin Shah, Shweta Prasad, Girish Karnad*
Director: *Nagesh Kukunoor*
Genre: *Feel-good drama*
Storyline: *It is about the grit of an 18-year-old boy, with a disability, to find a place in the Indian cricket team.*

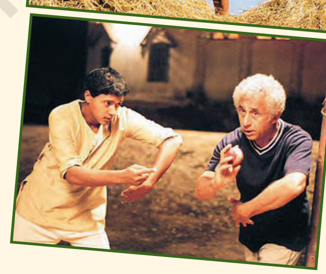

It bowls you over. You can't help but admire Nagesh Kukunoor. There's a certain honesty about Kukunoor's films that makes them instantly likeable. Iqbal *has to be Kukunoor's best work till date and one of the best films of all times. Every frame oozes inspiration, every scene comes alive with candid ingenuity.*

Iqbal *is the story of an 18-year old boy who dreams of making it to the Indian cricket team. The fact that he cannot speak or hear is just a matter of academic interest. It's the attitude with which Kukunoor handles disability without ever making you feel sorry for Iqbal, that takes him beyond all set boundaries of film-making.*

Right from the very first frame, Iqbal *is an authentic film about the true-blue son of the soil who never says die.*

Shreyas Talpade as Iqbal is the find of the year. The young man epitomises innocence, his face speaks volumes, even when he's not talking at all — from enthusiasm to learn the game to the grit to not give up, Shreyas portrays it all with conviction and credibility, with the ease of a veteran.

Shweta Prasad as his bespectacled sister Khadija is endearing, as she holds her own against first-rate performers such as Shreyas and Naseeruddin Shah. Naseer comes up with yet another brilliant portrayal as Mohit, a disillusioned alcoholic, who transforms into a spirited coach, albeit hesitantly.

Even the supporting cast of Iqbal's endearing mother (Prateeksha Lonkar) and disapproving, struggling farmer father Anwar (Yatin Karyekar) come up with wonderful performances. Only Girish Karnad as Guruji seems a little rigid and the character too remains a little ambiguous as you are left wondering if he is Mohit's coach or team-mate or both (given that Mohit and Kapil Dev too call him Guruji but Iqbal finds both of them in a team photograph).

The lingering moments in the film are several. The way the mother, son and daughter hide their passion for the game from the cricket-hating father is delightful just like the bond between Khadija and Mohit after she initially disapproves of his ways. Technically too, Iqbal *is well-framed with a pretty neat background score. The Kay Kay number "Aashayien" tugs at the heart-strings.*

SUDHISH KAMATH

© NCERT
not to be republished

Book Review

In order to write a book review, one must have adequate knowledge of that genre of writing: be it fiction, non-fiction, biography, children's literature or general literature. Always keep in mind that no book stands in isolation. It is a good idea to be well-versed about the author and her/his previous works before you start reviewing her/his new work. Also, one has to be fairly acquainted with the subject of the book to be reviewed. If it is a science fiction, one should have some knowledge of the fundamentals of science before attempting an interpretation of the book. If you want to review a book of art for children, you have to read the history of children's art and place the book under review in the right context. Clearly, background knowledge is indispensable for a reviewer.

You should also not be critical and judgemental of the piece you are reviewing. A good book review is more like explaining and interpreting a work rather than criticising it. In other words, you have to be objective and not be biased either in favour of or against a particular writer. It is said that the reviewer should steer clear of all biases — personal, cultural, religious and gender. The reviewer should assess the book on its merits and should not bring in extraneous factors to praise or criticise it.

A book review is not a summary of a book. Read the book thoroughly. While reading the book note down its main points. Then reflect on such questions: What is the book about? What is the objective of this book? What are the issues that have been dealt with and how have they been dealt with? What is new and original in the book? Analyse how effective the author's arguments, analysis, discourse and presentation are. Comment on the style and the language of the book, how useful it is and for which kind of readership. This means that you have read the book attentively.

It is helpful to include a little background about the author and any general details about the book that might be useful to the reader in your review. For example — Is this the first book that the author has written? Was it written at a particular time? Does the book or the author fit into a particular literary movement? If this is not the first book of the author mention how it compares with other books by her/him.

For a non-fiction book you can tell what special knowledge the author has in relation to the subject of the book. If it is a biography, did the writer ever meet the subject, were they friends or was he assigned the work as a research project?

A brief introduction about the author should be included in a review and this can be a good starting point. The next step is giving your opinion. What do you think about the book? Do you find it entertaining, useful, boring? In this section you can talk about any unusual theme that you might have noticed. Is the author trying to make a specific point? Does she/he succeed? You can talk about the style of writing. Is it a traditional

© NCERT not to be republished

novel or something different? Specific points about the characters or plot can also be made. Are these characters close to real life? Is the story realistic? What impact has it made on you? While mentioning all these aspects keep your comments brief. There is no need to give an in-depth analysis of the text. Do not forget to quote the relevant portions from the book to illustrate your points.

Fiction

Give brief descriptions of the setting, the point of view (who tells the story), the protagonist, and other major characters. If there is a distinct mood or tone, discuss that as well. Give a brief summary of the plot along with the sequence of major events — you may or may not disclose the book's climax or ending.

Non-fiction

For most non-fiction books also the above mentioned points have to be kept in mind, but it requires a more indepth description of what subject area the book covers. Give a general overview of the topic, main points, and arguments. What is the thesis? What are the important conclusions? Don't try to summarise each chapter or analyse every angle. Choose the ones that are most significant and interesting to you. You can write your own opinions, but make sure that you explain and support them with examples.

For reference books it becomes essential to give details about what aspect of the subject is being covered so that a potential reader can be sure that this is the book she/he wants.

Also point out whether the writing is effective, powerful, difficult or easy. What are the strengths and weaknesses of the book? Give your overall impression of the book and a final comment on why people should read it.

The language has to be simple and lucid so that your interpretation and explanation become comprehensible to all readers. Make sure that you have read the proofs carefully before you send your review for publishing.

A good reviewer has to present a balanced and objective analysis of all the interpretations. The review should be left open-ended, rousing the intellectual curiosity of the reader to go deep into the book and come to her/his own conclusions.

गतिविधि 23 — Activity 23

पोर्टफोलियो के लिए हाथ से लिखकर एक छोटी सी पत्रिका तैयार कीजिए।

Prepare a small hand-made magazine for your portfolio.

© NCERT not to be republished

Given below is an example of a book review.

Birds of India — A Literary Anthology*, edited by Abdul Jamil Urfi, Oxford University Press, New Delhi, 2008, pp 416, Rs 650*

JOANNA VAN GRUISEN

I'm not really an anthology person, but reading Abdul Jamil Urfi's anthology has changed my mind. The book is a fascinating collection that includes most of the known authors of the bird world and a few surprises. It contains description, whimsy, revelation, mystery, history, humour, fact, fiction, beauty and more; yet manages to be a homogenous whole.

You do not need to be a dyed-in-the-wool bird lover to appreciate this volume. There is something for everyone, including even those with no interest in watching birds, such as the delightful piece by Zai Whitaker on "survival among birdwatchers".

There are wonderful historical pieces ranging from the Babarnama and Jahangirnama through the nineteenth and twentieth centuries — largely British — writers, such as Jerdon, Hume, EHA and Bates, to our incomparable Salim Ali, even present day 'history' such as the shockingly opulent falcon hunting of houbara described by Mary Anne Weaver. Connecting threads run through these and crisscross with many others.

In addition to Urfi's helpful short biographies on each author, there are absorbing and amusing insights of the writers from their contemporaries. The reader of course gains even more insights into the characters of birds; the wide range of perspective adds understanding to their ecology and conservation. The details and the sheer enjoyment that seeps through the prose spurs the reader on.

I only wish there were an index.

Source: *Outlook*, 3 March 2008

While reviewing, remember

- Before writing a review refer to your notes and focus on the most important issue of the book, film, play, exhibition etc. Also mention other issues and factors.
- Always keep in mind the kind of readership/audience you have. Do not be judgemental in your review. Leave it open-ended for the readers to draw their own conclusions.
- At the head of the review give the title of the book, the author's name, the publisher's name, place of publication, the number of pages and the price — known as four p's.
- Similarly, for a film review, give important information right in the beginning such as the name of the film, director's and producer's names, names of actors, music director and scriptwriter, to capture and retain the reader's attention.
- If you are reviewing a book, in the opening paragraph describe — its genre, the type of story the author has written and the time in history in which it takes place. Do not tell the whole story but describe the main characters and the way the author involves them in his/her plot.
- You may point out any weakness that you might have come across in the book/film/play. However, remember that it is not imperative to criticise.
- Keep in mind the specified word limit according to the requirement of the newspaper, magazine or newsletter.
- Always re-read the review. This will help you bring in clarity, eliminate errors or redundancy, and keep it crisp and to the point.

© NCERT not to be republished

संवाद / Exercises

1. आप कौन सा अखबार पढ़ते हैं और उसमें आपको क्या अच्छा लगता है?
Which newspaper do you read? What do you like about it?

2. कल्पना कीजिए अगर समाचार मीडिया न होता तो दुनिया कैसी होती?
Imagine what the world would be like if there were no news media.

3. 'सचिन का क्रेडिट कार्ड गुम हो गया' – यह समाचार बनने योग्य है या नहीं? क्यों / क्यों नहीं?
'Sachin lost his credit card' — should such an incident be reported? Why/Why not?

4. मौसम हमारी ज़िंदगी को प्रभावित करता है, लेकिन इससे जुड़ी खबरें सिर्फ़ आँकड़ों तक सीमित होकर रह जाती हैं। आप कुछ मौसम बुलेटिन देखिए और सुनिए। अब आप एक रोचक मौसम बुलेटिन तैयार कीजिए।
Weather affects our lifestyle but news related to weather is dull and only statistical. Listen to some weather news, and re-write it in order to make it more lively and interesting.

गतिविधि 24 ◆ Activity 24

आपके आस–पास खुले मेनहोल / दूषित पानी /बिजली की समस्याएँ आए दिन देखने को मिलती हैं। किसी एक समस्या को ध्यान में रखकर अखबार के संपादक के नाम पत्र लिखिए। एक प्रति अपने पोर्टफोलियो में भी चिपकाइए।

You come across open man-holes/stagnant water/ electricity problems in day-to-day life. Keeping in mind any one issue, write a letter to the editor of a newspaper and put one copy in your portfolio.

5. 'राजधानी का सबसे ठंडा दिन' – यह एक समाचार है, इसका शीर्षक बदलकर आकर्षक ढंग से लिखिए।
Here is a news item — 'Coldest Day of the Capital'. Change the headline and rewrite it in a more arresting way.

6. वार्तालाप और साक्षात्कार में क्या अंतर है?
What is the difference between conversation and journalistic interview?

7. हाल में पढ़ी हुई किसी पुस्तक या देखी हुई किसी एक फिल्म की समीक्षा लिखिए।
Write a review of any book or film that you have recently read or seen.

8. किसी पढ़ी हुई कहानी के कथानक, भाषा, प्रस्तुति, संवाद, शैली और पात्रों के आधार पर उसकी समीक्षा कीजिए। उसकी खूबियों और कमियों को स्पष्ट कीजिए।
Review a short story that you have read on the basis of plot, language, presentation, dialogue, style and characters. Bring out its positive and negative aspects.

9. एक साहित्यकार / कलाकार के साक्षात्कार से पहले आप क्या तैयारी करेंगे? उनसे पूछे जाने वाले कुछ सवालों की एक सूची बनाइए?
How will you prepare yourself before interviewing a literary writer or an artist? Make a list of questions that you would like to ask.

© NCERT not to be republished

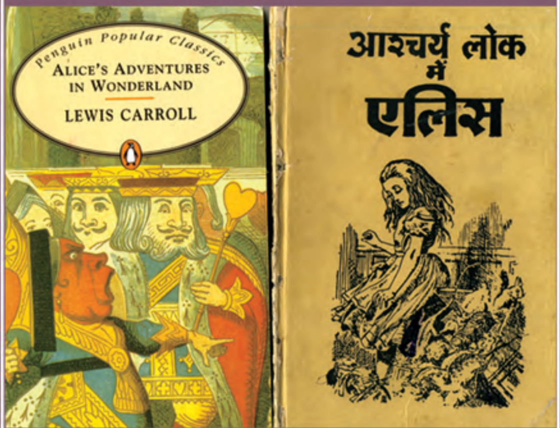

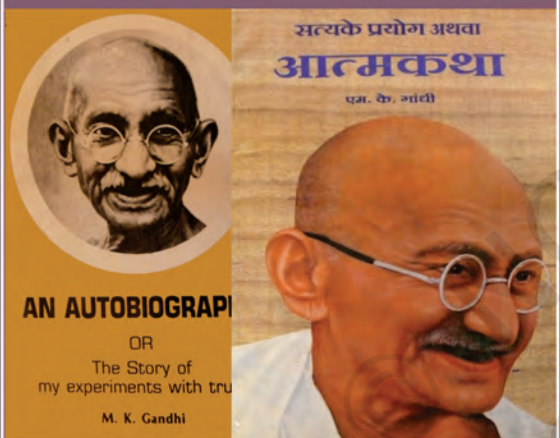

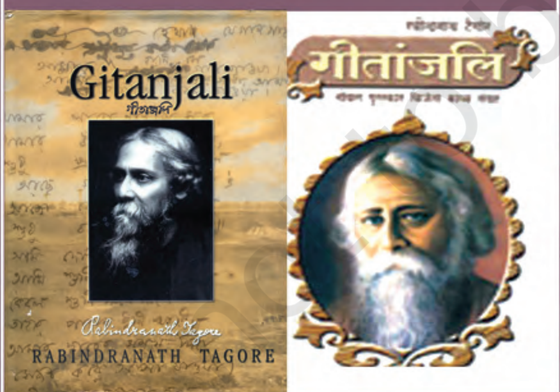

4

अनुवाद

Translation

© NCERT not to be republished

I. अनुवाद – एक संक्षिप्त परिचय

- अनुवाद की भूमिका और प्रासंगिकता
- अनुवाद की संभावनाएँ

II. अनुवाद के विविध रूप

- अनुवाद के अलग-अलग रूपों का एक संक्षिप्त परिचय

I. Introducing Translation

- *Role and Relevance of Translation*
- *Scope of Translation*

II. Types of Translation

- *Introduction to Different Types of Translation*

© NCERT not to be republished

अनुवाद से रू-ब-रू

अनुवाद करना एक सृजनात्मक प्रक्रिया है।

1. भाषा को जानें
   - कक्षा के तीन-चार बच्चे अपनी मातृभाषा, बोली (हिंदी/अंग्रेज़ी के अतिरिक्त) में कुछ कहेंगे।
   - कक्षा के अन्य बच्चे अनुमान से बताएँगे कि वे क्या कह रहे हैं।

2. बातचीत कर जानें
   - अनुमान कैसे लगाया? (किसी शब्द से/ हाव-भाव से)
   - अनुवाद की क्या आवश्यकता थी?
   - कहाँ-कहाँ अनुवाद अनिवार्य हो जाता है?

3. चर्चा कीजिए
   - 'बहुभाषिकता एक संसाधन है'।

कलम रुकती नहीं ...

मनुष्य नश्वर है। विचार भी क्षणिक हैं। जिस तरह विकास के लिए पौधे सिंचाई माँगते हैं, विचार भी फैलाव माँगते हैं। इसके अभाव में दोनों ही मुरझाकर खत्म हो जाएँगे।

— बाबा साहेब भीम राव आंबेडकर

(संघर्ष जीवन और व्यक्तित्व की कसौटी है। उस कसौटी पर खरा उतरने वाला जीवन और व्यक्तित्व यदि नैतिकता से आबद्ध हो तो उसकी पराजय असंभव है। यदि पराजय होगी भी तो क्षणिक ही। ऐसे में डा. आंबेडकर (1891-1956) का जीवन और व्यक्तित्व हर कसौटी के कर्कश पत्थरों से होकर गुज़रा है और वह खरा उतरकर और भी निखरा। संघर्ष ही इनके जीवन का पर्याय बना। जीवन भर अन्याय तथा अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष करते रहे। वे उन सभी की आवाज़ बने जो कमज़ोर, अनपढ़, शोषित, उत्पीड़ित तथा उपेक्षित थे। उनका मुख्य लक्ष्य था कि सभी स्त्री-पुरुषों को मौलिक और मानवीय अधिकार मिलें, क्योंकि सभी समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के हकदार हैं। वे वास्तव में अद्भुत क्रांतिकारी, सच्चे देशभक्त और उत्कृष्ट मानवतावादी थे।)

© NCERT not to be republished

मेरा सारा लेखन बांग्ला में है पर उनके हिंदी अनुवाद छपने के बाद ही मैं भारतीय लेखिका बन पाई। हिंदी में किताबों के छपते ही मैं भारत के कोने-कोने में जानी गई।

–महाश्वेता देवी

प्रत्येक नयी भाषा तुम में नयी आत्मा जोड़ती है।

–चेक कहावत

I. अनुवाद – एक संक्षिप्त परिचय

शाश्वत उत्सुकता, जिज्ञासा मानवता की सबसे बड़ी विशेषता है। दूसरों के बारे में जानना, उन्हें समझना और इस तरह दूसरों के 'दूसरेपन' को दूर कर देना। मानव इतिहास लोगों द्वारा भौगोलिक, सांस्कृतिक सीमाओं को लाँघने की कहानियों से भरा है। व्यापारी, यात्री, तीर्थयात्री, मिशनरी, सैलानी हमेशा एक जगह से दूसरी जगह जाते रहे और लोगों से संपर्क, संवाद करते रहे। औरों को जानने और संवाद करने का अर्थ है – उनकी भाषा को जानना, उस माध्यम को जानना जिसमें वे बोलते, लिखते और अपनी दुनिया की व्याख्या करते हैं। और यहीं अनुवाद के सौंदर्य और हमारे जीवन में उसके महत्त्व का अंदाज़ लग जाता है। जैसे ही हम दूसरी भाषा सीखते हैं, दूसरों के साथ विचारों - भावनाओं का आदान-प्रदान करते हैं और इन सारे अनुभवों को अपनी भाषा में लिखते हैं, व्यक्त करते हैं तभी एक सृजनशील/सकारात्मक प्रक्रिया की शुरुआत हो जाती है। एक तरफ़ हमारी दूरियाँ कम होने लगती हैं, दूसरी तरफ़ हमारा दायरा विस्तृत होने लगता है। अनुवाद की प्रक्रिया वास्तव में हमारे दायरे को बढ़ाती है, मानवता को संपन्न करती है और विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद कायम करती है। अनुवाद को ही इस बात का श्रेय जाता है कि आज राजस्थान में बैठा व्यक्ति सुब्रह्मण्य भारती को राजस्थानी में, बिहार के एक गाँव का विद्यार्थी शेक्सपियर को हिंदी में पढ़ता है, एक फ्रांसीसी या जर्मन धर्मशास्त्र का विद्वान/दार्शनिक भारतीय धर्म ग्रंथों का अध्ययन करता है या दोस्तोव्स्की, फ्रांज काफ्का, कार्ल मार्क्स हमारे घरेलू

© NCERT not to be republished

ज़िंदगी का हिस्सा बन जाते हैं। क्या होता? कल्पना करिए कि अगर टॉलस्टॉय सिर्फ़ रूस तक सीमित रह जाते या रवींद्रनाथ ठाकुर सिर्फ़ बंगाल तक! कहने का मतलब है कि अनुवाद की सुंदर मानवीय प्रक्रिया के ज़रिये हम और भी संपन्न, संवेदनशील और सृजनात्मक बनने की दिशा में आगे बढ़ते हैं। अनुवाद के ज़रिये हम एक भाषा की बात को दूसरी भाषा में उतार देते हैं या ले जाते हैं। बात तो कमोबेश वही रहती है, भाषा बदल जाती है। इस तरह अनुवाद दो भाषाओं का खेल है। अनुवाद करते समय हम दो भाषाओं का प्रयोग एक साथ करते हैं।

अनुवाद वास्तव में 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को चरितार्थ करता है। यह हमारी भाषा का विस्तार करता है, भाषा की भंगिमा को बदलता है। आरंभिक काल से अनुवाद के माध्यम से ही भूमंडलीकरण की प्रक्रिया आरंभ हुई। छोटी से छोटी भाषा यानी जो भाषा बहुत कम लोगों द्वारा बोली जाती है, उस भाषा की किसी कृति का अनुवाद जब दुनिया की अनेक बड़ी भाषाओं में होता है यानी उन भाषाओं में जो बड़ी संख्या में लोग बोलते हैं तो स्वाभाविक रूप से मानव समाज का जनतांत्रीकरण होता है। जैसे बहुत कम लोगों द्वारा बोली जाने वाली अबार भाषा की कृति मेरा दागिस्तान, (रसूल हमज़ातोव) जिसके पाठक दुनिया भर के लोग हैं। इसी तरह भारत में संथाली भाषा की कोई कृति जब पूरे देश में अनूदित होती है तो इससे बड़े स्तर पर जनतांत्रीकरण होता है।

संथाली से हिंदी में रूपांतरित कृति

अनुवाद क्या है

अनुवाद का अर्थ एक भाषा के कथ्य को (किसी भाषा में कथित या लिखित को) किसी दूसरी भाषा में कहना या लिखना होता है। पहली भाषा को **मूल भाषा** और दूसरी को **लक्ष्य भाषा** कहते हैं। ये दोनों शब्द अंग्रेज़ी के Source Language और Target Language के अनुवाद ही हैं। अनुवाद के लिए **तर्ज़ुमा, रूपांतर** और **भाषांतर** शब्द भी प्रचलित हैं। किसी एक भाषा की मूल रचना को केवल अन्य लिपि में प्रस्तुत कर देने को **लिप्यांतरण** कहते हैं। कन्नड के संत कवि वसवेश्वर की पंक्तियों का लिप्यांतरण और उसके तीन भाषाई अनुवाद को देखिए –

उळ्ळवरू शिवालयव माडुवरु
नानेनु माडुवे? बनवनय्या
ऐन्नाकालेकम्भ, देहवे देगुल
सिर होन्न कळसवय्या
कुडल संगमदेव, केळय्या:
स्थावर क्कळिवुंडु
जंगम क्कळिविल्ला

(लिप्यांतरण)

© NCERT not to be republished

गतिविधि 25 ◆ Activity 25

अपनी मातृभाषा में पढ़ी और सुनी अलग-अलग अनूदित रचनाओं (4 - 5) की सूची बनाकर पोर्टफ़ोलियो में लगाइए और साथ ही कक्षा में एक-दूसरे की रचनाओं को मिलाकर एक बड़ी सूची भी बनाइए।

Make a list of 4-5 translated texts from your mother tongue that you have read or are familiar with. Compile these for your portfolio. Now share it with the class to make a comprehensive list.

धनिको बांधशे शिवालयों,
हु शुं बंधावु? गरीब माणस
पग मारा स्तंभो छे,
देह मारूँ देवळ छे,
माथुं मंदिर नो कळश छे
कुडल संगमदेव सांभळो;
स्थावरनो नाश थशे,
जंगम तो अक्षय रहेशे

(गुजराती अनुवाद)

(धनवान बनवाएँगे शिवाले
मैं क्या बनवाऊँ? मैं ठहरा गरीब!
पैर मेरे स्तंभ हैं,
और देह है, मेरी देवल
सिर मंदिर का कलश है
कुडल संगमदेव सुनो
होगा स्थावर का क्षय
और जंगम रहेगा अक्षय।)

(हिंदी अनुवाद)

The Rich
Will make temples of Shiva
What shall I
A poor man
do?
My legs are pillars,
The body the shrine,
The head a cupola
of Gold.
Listen,
O Lord of the meeting rivers,
things standing shall fall,
but the moving
ever shall stay.

(अंग्रेज़ी अनुवाद)

—साभार : देवों की घाटी, भोलाभाई पटेल

अनुवाद की भूमिका और प्रासंगिकता

आज की दुनिया में अनुवाद की माँग और ज़रूरत दोनों बढ़ गई हैं। यह माँग बढ़ी है तो इसीलिए कि दुनिया के

© NCERT not to be republished

देखें गतिविधि/Activity 28 पृष्ठ 193

विभिन्न देश-प्रदेश उद्योग-व्यापार और पर्यटन के मामले में बहुत करीब आ गए हैं और एक भाषा से दूसरी भाषा में अपनी बात पहुँचाने का ज़रिया 'अनुवाद कार्य' ही तो है। जब चीनी-जापानी चीज़ों की बिक्री विश्व-बाज़ार में होती है तो उन चीज़ों के रैपर्स और पैकेट्स पर अंग्रेज़ी और दुनिया की अन्य भाषाओं में उसी चीज़ का नाम, मूल्य और उसके पैक करने की तिथि आदि लिखी होती है। इसी तरह जब कोई चीनी – जापानी – इतालवी – जर्मन – फ्रांसीसी पर्यटक दुनिया के किसी देश के भ्रमण के लिए निकलता है तो बस अपने साथ एक गाइडबुक रखता है जो उसकी अपनी भाषा में होती है। वह गाइडबुक पहले किसी एक भाषा में लिखी होती है। मान लीजिए अंग्रेज़ी में, फिर उसी गाइडबुक का अनुवाद जर्मन, फ्रांसीसी, स्पेनिश, चीनी, जापानी आदि में कर लिया जाता है। एक और उदाहरण लें, जब कोई बड़ी कंपनी आज अपने ब्रांड का विज्ञापन करती है, तो वह विज्ञापन भी पहले तो एक ही भाषा में तैयार किया जाता है, फिर दूसरी भाषाओं में उसी के आधार पर विज्ञापन तैयार किया जाता है, यह भी एक प्रकार का अनुवाद ही है। टी. वी. के परदे पर या अखबार के पन्नों पर हम एक ही विज्ञापन को हिंदी से बांग्ला या हिंदी से तमिल में अनुवाद किया हुआ पाते हैं। और यह तो आपको पता ही है कि कोई विशिष्ट लेखक या पत्रकार आज अपना कॉलम (स्तंभ) किसी एक भाषा में लिखता है, मान लीजिए अंग्रेज़ी में ही, तो वही कॉलम भारत की कई भाषाओं में अनुवाद के ज़रिये छपता है। इसे सिंडीकेटेड कॉलम (स्तंभ) कहते हैं। इस प्रकार, अनुवाद की ज़रूरत कई रूपों में कई प्रकार से है।

दिल्ली की एक सड़क पर चार भाषाओं में लगा मार्ग-संकेत

अनुवाद और अनुवादक

अनुवाद करने के लिए एक से अधिक भाषाओं में समान ज्ञान ज़रूरी है। कम से कम दो भाषाएँ तो अच्छी तरह से अनुवाद करने वाले को आनी ही चाहिए। मसलन, अगर कोई अनुवादक अंग्रेज़ी, बांग्ला और हिंदी ये तीन भाषाएँ अच्छी तरह जानता है, तो वह ज़रूरत पड़ने पर तीनों भाषाओं से अनुवाद कर सकेगा – अंग्रेज़ी से बांग्ला में और अंग्रेज़ी से हिंदी में। इसी तरह वह बांग्ला से अंग्रेज़ी या हिंदी में और हिंदी से बांग्ला और अंग्रेज़ी में अनुवाद कर सकेगा। लेकिन कम से कम दो भाषाएँ तो आनी ही चाहिए, तभी अनुवाद कार्य हो सकेगा। अगर किसी को हिंदी और अंग्रेज़ी आती है तो वह हिंदी से अंग्रेज़ी में और अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद का कार्य कर सकेगा। यहीं यह जान लेना ज़रूरी है कि स्रोत भाषा के साथ ही लक्ष्य भाषा का अच्छा ज्ञान अनुवाद के लिए ज़रूरी होगा। साथ ही भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी की जानकारी भी मददगार होगी क्योंकि विश्व-भर के बाज़ारों में

© NCERT not to be republished

The Answer to your Sealing and Repair Problems

M-Seal does all the Sealing, Joining, Fixing, Building and Patching work in your house – faster, economically and easily. A two component (Resin and Hardener) epoxy formulation in putty consistency and supplied in stick form, it is easy to mould, does not sag and sets like steel. Mix equal quantities

सीलिंग और मरम्मत सम्बन्धी आपकी समस्याओं का समाधान

एम-सील आपके घर के-सीलिंग करने, जोड़ने, जमाने, बनाने और पैच लगाने सम्बन्धी सारे कामों को तेजी से, किफ़ायत से और सरलता से निपटाता है. यह दो तत्वों (रेसिन और हार्डनर) का सुसंगत एपॉक्सी प्रतिपादन है तथा बत्ती के रूप में मिलता है. इसे आसानी से कोई भी आकार दिया जा सकता है, यह बहता-ढलकता नहीं है और इस्पात की तरह मज़बूती से जम जाता है. रेसिन और हार्डनर की समान मात्रा लेकर उन्हें इस तरह गूंथिए कि यह सिलेटी रंग के पदार्थ में बदल जाए. उतना ही पदार्थ लीजिए जितने की जरूरत हो

আপনার যাবতীয় সীলকরা ও মেরামত সমস্যার সমাধান

அடைக்கும் மற்றும் பழுதுபார்க்கும் தொல்லைகளுக்கு தீர்வு.

మీ యొక్క సీలింగ్ మరియు మరమ్మతు సమస్యలకు సమాధానం.

ਮਜ਼ਬੂਤ ਜੋੜਾਂ ਅਤੇ ਮਰਮਤ ਦੀਆਂ ਤੁਹਾਡੀਆਂ ਸਮਸਿਆਵਾਂ ਦਾ ਬਿਹਤਰੀਨ ਹਲ

सीलिंग आणि दुरुस्ती संबंधी तुमच्या समस्यांचे समाधान

એપના સીલ કરવાના અને સમારવાના પ્રશ્નોનો સચોટ જવાબ

एक पदार्थ के विषय में आठ भाषाओं में जानकारी पर्ची

विभिन्न ब्रांड वाली चीज़ों के नाम आज अंग्रेज़ी में यानी जिसे रोमन लिपि कहते हैं उसमें अनिवार्य रूप से लिखे रहते हैं। उस ब्रांड से संबंधित ज़रूरी जानकारी भी अंग्रेज़ी में होती है।

यहाँ इस बात को समझ लेना बेहतर रहेगा कि अनुवाद एक बहुत ही आसान सी प्रक्रिया भी नहीं है। यह सिर्फ़ एक यांत्रिक या तकनीकी प्रक्रिया भी नहीं। यह एक ऐसी भाषाई दक्षता मात्र भी नहीं जिसमें शब्द-कोशों की मदद से एक भाषा के शब्दों को दूसरी भाषा में परिणत कर देना ही काफ़ी हो। दूसरे शब्दों में, अनुवाद के लिए अधिक से अधिक संवेदनशीलता और समानुभूति की आवश्यकता होती है। **एक अच्छा अनुवाद वास्तव में एक अच्छी अभिव्यक्ति है।** अतिशयोक्ति नहीं होगी अगर हम कहें कि जिस व्यक्ति की रचना का अनुवाद किया जा रहा है, वास्तव में अनुवादक का उसके साथ एक आंतरिक संबंध बन जाता है। आज दिनोदिन इस समस्या के प्रति हम संवेदनशील होते जा रहे हैं कि अनुवाद करने के दरम्यान क्या हम वास्तव में आंतरिक संबंध/संवाद कर सकते हैं या नहीं अर्थात् दूसरों के जीवन के सूक्ष्म अनुभवों या सांस्कृतिक रुचियों पर प्रकाश कर पाते हैं या नहीं। यहाँ कहने का उद्देश्य यह है कि हमें इस चुनौती के प्रति सजग रहना चाहिए। मज़े की बात यह है कि जब हम शुद्ध रूप से विज्ञान / तकनीकी विषयों / व्यापार संबंधी दस्तावेज़ों का अनुवाद कर रहे होते हैं तो इसकी अपेक्षाएँ दूसरी होती हैं यानी सावधानी के साथ तथ्यों को लक्ष्य भाषा में पहुँचाना। पर साहित्य, महाकाव्य या दर्शन आदि का अनुवाद करते हुए उससे बहुत कुछ अलग अपेक्षाएँ होंगी।

© NCERT not to be republished

दुभाषिया और अनुवाद

अनुवाद कार्य का एक और पहलू है– इंटरप्रेट करने का। आपने देखा होगा कि किसी सभा में कोई वक्ता किसी एक भाषा में बोल रहा होता है और साथ ही साथ कोई दूसरा व्यक्ति उसकी बातों का 'अनुवाद' करता चलता है। जो यह अनुवाद कर रहा होता है उसे दुभाषिया (इंटरप्रेटर) कहते हैं। दुभाषिया अनुवाद का वह काम भी कर सकता है जो लिखित रूप से अनुवाद का हो यानी वह बोलकर अनुवाद करने के साथ, चाहने पर और वैसी योग्यता होने पर, किसी भाषा से दूसरी भाषा में किसी किताब, टिप्पणी, लेख, भाषण, खबर आदि का भी अनुवाद कर सकता है। पर, ऐसे दुभाषिए भी होते हैं जो केवल बोलकर ही अनुवाद कर पाते हैं और किसी किताब या लेख के अनुवाद का काम हाथ में नहीं लेते हैं। क्योंकि जो अनुवाद छपता है या ई-मेल के ज़रिये अन्यत्र भी भेजा जाता है या फोटोकॉपी कराके वितरित किया जाता है, उसका लिखित रूप तैयार कर पाना दोनों भाषाओं के अच्छे ज्ञान के बिना संभव नहीं होता है। इसीलिए अच्छा अनुवादक उसे ही माना जाता है जो दोनों भाषाओं के समाज में और साहित्य में जाने का भी ज्ञान रखता हो।

एक मामूली सा हिंदी वाक्य ही लें– **मुझे वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है**। हम अंग्रेज़ी में कहेंगे– **आई नीड नॉट गो देअर**। पर, चाहे हिंदी से अंग्रेज़ी में अनुवाद कर रहे हों या अंग्रेज़ी से हिंदी में, संदर्भ के हिसाब से यानी इस हिसाब से कि किस मौके पर यह बात कही जा रही है, वाक्य का शब्द-क्रम बदला जा सकता है। मान लीजिए, यह वाक्य अंग्रेज़ी में लिखे हुए नाटक का एक पात्र संवाद के रूप में कह रहा है और जिससे कह रहा है उससे कुछ झुँझलाहट या गुस्से में यह बात कह रहा है, तो यही वाक्य कुछ इस प्रकार का भी हो सकता है– **ज़रूरत नहीं है मुझे वहाँ जाने की।** अनुवाद में संदर्भ जानने की, अवसर जानने की बड़ी ज़रूरत होती है और यह जानने की भी कि अनुवाद में कौन-से शब्द अधिक स्वाभाविक लगेंगे। मान लीजिए, कोई **आई नीड नॉट गो देअर** *(I need not go there)* का अनुवाद इस प्रकार करता है– **मुझे वहाँ जाने की आवश्यकता नहीं है** या **यह आवश्यक नहीं है कि मैं वहाँ जाऊँ**, तो यह गलत नहीं होगा, बल्कि हो सकता है किसी संदर्भ में यह अधिक ठीक लगे। मसलन, अगर एक संस्कृत शिक्षक यह संवाद किसी नाटक में या अन्यत्र कर रहा हो, तो वहाँ यही अधिक स्वाभाविक लगेगा कि वह कहे कि **मुझे वहाँ जाने की आवश्यकता नहीं है**। पर कहीं पर दो व्यक्ति आपस में रोज़मर्रा की बातें कर रहे हों, तो यही लिखना ज़्यादा ठीक रहेगा कि **मुझे वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है**। ऐसे ही ढेरों उदाहरण हम स्वयं खोज सकते हैं। मसलन 'पुष्प' शब्द को लें। हम जानते हैं कि 'पुष्प' फूल का पर्यायवाची है या पुष्प का पर्यायवाची है फूल। कुछ अन्य पर्यायवाची भी हैं इसके, जैसे 'कुसुम'। यदि हमें अंग्रेज़ी का एक वाक्य किसी नाटक, कहानी, व्याख्यान या भाषण से अनुवाद करने के लिए दिया गया है और वह वाक्य यह है– **ही वाज़ गिवेन**

© NCERT not to be republished

अ वार्म वेल्कम एंड वाज़ प्रेजेंटेड विद अ बुके ऑफ फ्लावर्स *(He was given a warm welcome and was presented with a bouquet of flowers)*, तो यह देखना होगा कि किसका स्वागत किया गया है और कब। तथा मौके के अनुसार, आज के समाज में 'बुके ऑफ फ्लावर्स' के लिए क्या लिखना ठीक रहेगा? मान लीजिए कोई लिखे उनका ज़ोरदार स्वागत किया गया और उन्हें पुष्प-गुच्छ या कुसुम-गुच्छ भेंट किया गया तो यह अस्वाभाविक लगेगा क्योंकि यहाँ बात सिर्फ़ 'फ्लावर' के अनुवाद की नहीं है 'बुके ऑफ फ्लावर्स' की है और यहाँ 'फ्लावर्स' का अनुवाद 'पुष्प' या 'कुसुम' न करके, हम यही लिखना चाहेंगे – **उनका ज़ोरदार स्वागत किया गया और उन्हें फूलों का एक गुलदस्ता भेंट किया गया** या सिर्फ़ यही कि **उन्हें फूल भेंट किए गए**। इसका मतलब यह नहीं कि 'पुष्प' और 'कुसुम' का उपयोग हम कहीं करेंगे ही नहीं, वह हम ज़रूरत के अनुसार करेंगे। मसलन 'फ्लावर कम्पीटीशन' को 'पुष्प-प्रतियोगिता' लिखना ठीक रहेगा, 'फूल-प्रतियोगिता' नहीं। यही बात हम 'चिड़िया', 'पखेरू', 'पंछी', 'पक्षी' आदि शब्दों के साथ भी पाएँगे। अगर 'चिड़िया' के पानी में तैरने का संदर्भ हो तो 'पंछी' या 'पक्षी' लिखना ठीक रहेगा, 'पखेरू' नहीं। संदर्भ यदि आसमान का हो तो हम पखेरू भी लिख सकते हैं – **दो पखेरू आसमान में उड़ रहे थे**। अनुवाद करते समय ही हम अपनी भाषा में गहरे उतरते हैं और मौके के अनुसार कई शब्दों में से किसी एक शब्द को चुनते हैं। इसलिए अनुवाद एक ज़रूरी ही नहीं, दिलचस्प काम भी है।

بول

بول، کہ لب آزاد ہیں تیرے
بول، زباں اب تک تیری ہے

تیرا سُتواں جسم ہے تیرا
بول کہ جاں اب تک تیری ہے

دیکھ کہ آہن گر کی دُکاں میں
تُند ہیں شعلے سُرخ ہے آہن

کھُلنے لگے ہیں قُفلوں کے دہانے
پھیلا ہر اِک زنجیر کا دامن

فیض احمد فیض

Speak, for your lips are free;
Speak, your tongue is still yours,
Your upright body is yours—
Speak, your life is still yours.

बोल के लब आज़ाद हैं तेरे;
बोल, ज़बाँ अब तक तेरी है,
तेरा सुतवाँ जिस्म है तेरा –
बोल, के जाँ अब तक तेरी है।

–फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

हर रोज़ अनुवाद

यह काम तब और दिलचस्प हो उठता है जब हम पाते हैं कि हम हर रोज़ जाने-अनजाने कई तरह के अनुवाद करते हैं। अगर हम ध्यान दें तो पाएँगे कि रोज़-रोज़ के इन अनुवादों में हम कई दिलचस्प प्रयोग करते हैं। अनुवाद के

© NCERT not to be republished

ज़रिये किसी बात को दूसरे तक अच्छी तरह पहुँचाना चाहते हैं। मान लीजिए, आपने अखबार में पढ़ा है या टी.वी. स्क्रीन पर देखा-सुना है कि **मास्टर ब्लास्टर हिट्स अ सेंचुरी** और जिसने शायद न तो अखबार पढ़ा है, न टी.वी. देखा है, वह आपसे पूछता है कि **भाई, मैच में किसने कितने रन बनाए हैं?** सबसे पहले आप कहते हैं – **सचिन ने सेंचुरी बनाई**। यहाँ आपको पता है कि 'मास्टर ब्लास्टर' तो सचिन को ही कहते हैं या फिर उसे 'लिटिल मास्टर' कहते हैं। तो जहाँ क्रिकेट के संदर्भ में 'मास्टर ब्लास्टर' या 'लिटिल मास्टर' शब्द आते हैं, उनकी जगह आप स्वयं 'सचिन तेंदुलकर' का नाम रख देते हैं।

एक और उदाहरण लें, जब हम किसी प्लेटफॉर्म पर ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं और यह एनाउंसमेंट सुनते हैं कि **मुंबई राजधानी इज़ रनिंग लेट बाई टू आवर्स**। तभी कोई ऐसा व्यक्ति जिसने या तो एनाउंसमेंट को ठीक से सुना नहीं है या उसे उतनी अंग्रेज़ी नहीं आती है कि वह एनाउंसमेंट का आशय ठीक से समझ सके, आपसे पूछ बैठता है कि मुंबई राजधानी कब आएगी, तो आप कह उठते हैं–**मुंबई राजधानी दो घंटा लेट है** या **दो घंटे बाद आएगी**। यह भी देखिए कि आजकल हम कितनी तरह से अनुवाद देखते-सुनते भी रहते हैं। हिंदी में यह सूचना प्रसारित हो रही होगी कि **मुंबई राजधानी दो घंटे की देरी से चल रही है**। फिर आप इसी का अनुवाद सुनते हैं। **मुंबई राजधानी इज़ रनिंग लेट बाई टू आवर्स**। कई स्टेशनों पर तो एनाउंसमेंट तीन भाषाओं में सुनाई पड़ता है; जैसे– हावड़ा में हिंदी, बांग्ला, अंग्रेज़ी में।

कभी जब आप चैनल बदल रहे होते हैं, तो किसी न्यूज़ चैनल पर आप अंग्रेज़ी में हेडलाइंस देखते-सुनते हैं, फिर उसी चैनल के हिंदी न्यूज़ बुलेटिन में हेडलाइंस का अनुवाद देखते-सुनते हैं। दो भाषाओं के बीच यह आवाजाही अब आम बात है। अगर कोई आपसे कहे कि **द रोड इज़ क्लोज़्ड फॉर रिपेयर** का अनुवाद कर दीजिए, तो आप तत्काल कर देंगे कि **सड़क मरम्मत के लिए बंद है**, क्योंकि आप दोनों भाषाओं में यह सूचना कई बार, कई जगह पढ़ चुके होते हैं। आज हम घर-बाज़ार में भी कई बार, कई तरह से अनुवाद कर रहे होते हैं। मान लीजिए, आप किसी सुबह अपने घर की पास वाली मार्केट में एक बैनर देखते हैं **मिठास – अ स्वीट शॉप इज़ शॉर्टली ओपनिंग इन युअर एरिया**। तो घर आकर आप

© NCERT not to be republished

हिंदी में बताते हैं – **अरे, जल्दी ही हमारे इलाके में 'मिठास' नाम की एक मिठाई की दुकान खुलने वाली है**। यह अनुवाद आप हिंदी में इसीलिए करते हैं क्योंकि आप घर पर हिंदी में ही बोलते हैं। अगर उस मार्केट में मिठाई की दुकान पहले से मौजूद हो तो आप यह कहते हैं – **अरे, जल्दी ही हमारे इलाके में 'मिठास' नाम से मिठाई की एक और दुकान खुल रही है**। यहाँ 'और' शब्द आपने इसीलिए जोड़ा है कि आपको और घरवालों को पहले से ही यह पता है कि मिठाई की दुकान तो बाज़ार में पहले से ही है, अब एक 'और' खुलने जा रही है।

आप जिस कक्षा में होंगे उसमें संभव है बांग्ला, कन्नड या मलयालम भाषी छात्र भी हों और उनसे कभी–कभार मज़े–मज़े में आप कुछ पूछते हों कि –भई, अमुक बात को कन्नड में कैसे कहेंगे? मान लीजिए इसी बात को कि **आपने भोजन कर लिया है**, तो वह कहेगा **ऊटा माड्डिदिए**। अब आप जब चाहेंगे किसी कन्नड भाषी से यह पूछ सकेंगे 'ऊटा माड्डिदिए' और अगर किसी कन्नड़ भाषी से यह पूछना हो कि **आपका नाम क्या है** तो आप कहेंगे **निम्मा हेसरू ऐन**। इस तरह अनुवाद से भी हम किसी दूसरी भाषा के दरवाज़े अपने लिए खोल पाते हैं। पहले धीरे–धीरे और फिर तेज़ गति से, जब वह भाषा हमने ठीक से सीख ली होती है।

देखें गतिविधि/Activity 29 पृष्ठ 195

II. अनुवाद के विविध रूप

अब तक आप समझ ही गए होंगे कि अनुवाद कई तरह का होता है या कहें कई तरह से किया जाता है। हर तरह का अनुवाद तैयारी की माँग करता है।

साहित्य

मसलन अगर किसी भाषा के साहित्य से आप अनुवाद कर रहे हैं, जैसे किसी कविता, कहानी, लेख, उपन्यास, नाटक आदि का, तो सिर्फ़ वह भाषा जानना पर्याप्त नहीं है। आपको उस भाषा के साहित्य की भी कुछ जानकारी होनी चाहिए, नहीं तो अनुवाद अच्छा नहीं होगा। बांग्ला के दो बड़े कवियों रवींद्रनाथ ठाकुर और जीवनानंद दास को ही लीजिए। दोनों ने बांग्ला में भी लिखा है। पर बांग्ला में दोनों का शब्द–चयन, वाक्य–विन्यास आदि भिन्न हैं। दोनों के काव्य–विषय भी कई बार बहुत अलग तरह के हैं। दोनों की कविता का संगीत और ध्वनियाँ भी भिन्न हैं। हमको अगर इन दोनों की कविता का अनुवाद करना हो या किसी एक का भी, तो बांग्ला भाषा के साहित्य और भाषा के विभिन्न रूपों का ज्ञान होना ज़रूरी है।

Where the mind is without fear and the head is held high;
Where knowledge is free;
Where the world has not been broken up into fragments
by narrow domestic walls;
Where words come out from the depth of truth;
Where tireless striving stretches its arms
towards perfection;
Where the clear stream of reason has not lost its way
into the dreary desert sand of dead habit;
Where the mind is led forward by thee into ever widening
thought and action —
Into that heaven of freedom, my Father,
let my country awake.

– *Gitanjali*, Rabindranath Tagore

चित্ত যেথা ভয়শূন্য, উচ্চ যেথা শির,
জ্ঞান যেথা মুক্ত, যেথা গৃহের প্রাচীর
আপন প্রাঙ্গণতলে দিবসশর্বরী
বসুধারে রাখে নাই খ' ক্ষুদ্র করি,
যেথা বাক্য হৃদয়ের উৎসমুখ হতে
উচ্ছ্বসিয়া উঠে, যেথা নির্বারিত স্রোতে
দেশে দেশে দিশে দিশে কর্মধারা ধায়
অজস্র সহস্রবিধ চরিতার্থতায়—

যেথা তুচ্ছ আচারের মরুবালুরাশি
বিচারের স্রোতঃপথ ফেলে নাই গ্রাসি,
পৌরুষেরে করেনি শতধা; নিত্য যেথা
তুমি সর্ব কর্ম চিন্তা আনন্দের নেতা—
নিজ হস্তে নির্দয় আঘাত করি পিতঃ,
ভারতের সেই স্বর্গে করো জাগরিত।

(১৩০৮)

हो चित्त जहाँ भयशून्य, माथ हो उन्नत,
हो ज्ञान जहाँ पर मुक्त, खुला यह जग हो –
घर की दीवारें बनें न कोई कारा,
हो जहाँ सत्य ही स्रोत सभी शब्दों का,
हो लगन ठीक से ही सबकुछ करने की,
हों नहीं रूढ़ियाँ रचतीं कोई मरुस्थल –
पाए न सूखने इस विवेक की धारा।
हो सदा विचारों-कर्मों की गति फलती,
बातें हों सारी सोची और विचारी,
हे पिता! मुक्त वह स्वर्ग रचाओ हममें,
बस, उसी स्वर्ग में जागे देश हमारा।

(अनुवादक : प्रयाग शुक्ल)

© NCERT not to be republished

जहाँ हृदय भयरहित हो और मस्तक गौरव से ऊँचा उठा हुआ हो।
जहाँ ज्ञान का मार्ग निर्बाध हो।
जहाँ गृहों की संकीर्ण दीवारों द्वारा संसार टुकड़ों में विभाजित न हो।
जहाँ शब्द सत्य ही गहराई से निःसृत होते हों।
जहाँ अथक प्रयास पूर्णता की ओर ले जाता हो।
जहाँ विवेक की स्वच्छ जलधारा कुसंस्कार से शुष्क मरुस्थल में जाकर न सूख गई हो।
जहाँ मन तेरे मार्गदर्शन में सतत विकासोन्मुख के शुष्क मरुस्थल की ओर अग्रसर हो।
मेरे प्रभु! ऐसे दिव्य स्वाधीन से परिपूर्ण वातावरण में मेरा देश जाग्रत हो!

(अनुवादक : रमा तिवारी)

जहाँ चित्त भय शून्य, जहाँ सिर उन्नत
ज्ञान मुक्त; प्राचीर गृहों के, अक्षत
वसुधा का जहाँ न करके खंड-विभाजन
दिन-रात बनाते छोटे-छोटे आँगन;
प्रति हृदय-उत्स से वाक्य उच्छ्वसित होते
हों जहाँ, जहाँ कि अजस्र कर्म के सोते
अव्याहत दिशा-दिशा, देश-देश बहते
चरितार्थ सहस्रों-विध होते रहते;
धारापथ को न विचारों के, ग्रस लेती हो-
जहाँ तुच्छ आचारों की मरु-रेती;
शतधा न जहाँ पुरुषार्थ; जहाँ पर सतत्
सब कर्म-भाव आनंद, तुम्हारे अनुगत;
हे पिता, उसी स्वर्लोक में करो जाग्रत,*
निज-कर निर्दय ठोकर देकर, यह भारत!

(अनुवादक : युगजीत नवलपुरी)

तीनों अनुवादों को ध्यान से पढ़िए। हो सके तो बांग्ला को भी देखिए और अपने बंगाली मित्रों से पूछकर उसका देवनागरी में लिप्यांतरण कीजिए। यह भी देखिए कि हिंदी और अंग्रेज़ी में कहाँ तक ठीक ढंग से ध्वनि, भाषा और कथ्य की रक्षा करते हुए अनुवाद हो पाया है। पाँच-पाँच के समूह में कक्षा में चर्चा करें कि कौन-सा अनुवाद अधिक समझ में आता है और क्यों?

* स्वर्गलोक

© NCERT not to be republished

नीचे एक उपन्यास-अंश दिया जा रहा है जहाँ बारिश के मौसम में गाँव की बदली हुई हरकत करती तसवीर को लेखक ने बारीकी से देखा है–

It was raining when Rahel came back to Ayemenem. Slanting silver ropes slammed into loose earth, ploughing it up like gunfire. The old house on the hill wore its steep, gabled roof pulled over its ears like a low hat. The walls, streaked with moss, had grown soft, and bulged a little with dampness that seeped up from the ground. The wild, overgrown garden was full of the whisper and scurry of small lives. In the undergrowth, a rat snake rubbed itself against a glistening stone. Hopeful yellow bullfrogs cruised the scummy pond for mates. A drenched mongoose flashed across the leaf-strewn driveway.

—God of Small Things, *Arundhati Roy*

वर्षा हो रही थी जब राहेल आयमनम लौटी। तिरछी, रुपहली रस्सियाँ कच्ची मिट्टी को गोलियों की बौछार की तरह खूँदती हुईं उस पर बरस रही थीं। पहाड़ी पर बने पुराने घर ने अपनी ढलवाँ, तिकोनी छत किसी नीची टोपी की तरह कानों को ढँकते हुए पहन रखी थी। दीवारें, जिन पर काई की धारियाँ थीं, नरम हो गई थीं और ज़मीन से ऊपर को चढ़ने वाली सीलन से कुछ-कुछ फूल आई थीं। जंगल बनी बेतरतीब बगिया नन्हे-नन्हे जीवों की खुसफुस और दौड़-भाग से भरी हुई थी। झाड़ियों में दुबका एक धामन अपनी देह एक चमकते हुए पत्थर से रगड़ रहा था। पीले, प्रणयाकांक्षी मेंढक काई-भरे पोखर में संगियों की तलाश करते, तैरते फिर रहे थे। एक भीगा नेवला मकान को जाने वाले, पत्तों से अटे, रास्ते पर कौंधता हुआ निकल गया।

–मामूली चीज़ों का देवता, अनुवादक : नीलाभ

(क्या आप बता सकते हैं कि हिंदी अंश में मूल भाषा की रवानगी कहाँ तक व्यक्त हो पाई है?)

बहुचर्चित किताब 'एलिस इन वंडरलैंड' की जादुई दुनिया को रचने में भाषा की जादूगरी की बड़ी भूमिका रही है। उदाहरण के लिए–

Once more she found herself in a long hall, and close to the little glass table. " Now I'll manage better this time," she said to herself, and began by taking the little golden key, and unlocking the door that led into the garden. Then she set to work nibbling at the mushroom (she had kept a piece of it in her pocket) till she was about a foot high: then she walked down the little passage — then she found herself at last in a beautiful garden, among the bright flower-beds and the cool fountains.

एक बार फिर उसने अपने आपको एक लंबे-से हॉल में शीशे की एक छोटी-सी मेज़ के पास खड़े पाया। "अबकी बार मैं कोई गलती नहीं करूँगी," उसने

© NCERT not to be republished

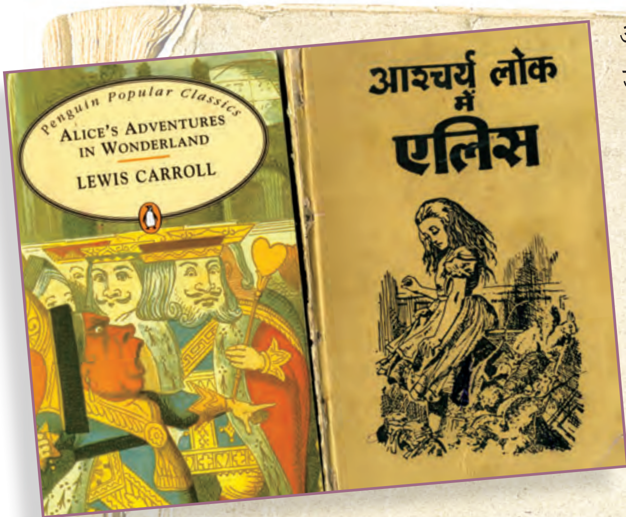

अपने आप से कहा। उसने सोने की चाबी उठाकर वह दरवाज़ा खोल दिया जिसमें से गुज़रकर बाग तक पहुँचा जा सकता था। तब उसने कुकुरमुत्ते को कुतरना शुरू कर दिया (उसने एक टुकड़ा अपनी जेब में बचा रखा था) और जब उसका कद एक फुट हो गया तो वह उस छोटे-से रास्ते पर चलती हुई उस सुंदर बाग में पहुँच गई– रंग-बिरंगे फूलों की क्यारियों और ठंडे फव्वारों वाले बाग में।

–एलिस अजूबों की दुनिया में,
अनुवादक – कृष्ण बलदेव वैद

वहाँ उसने अपने आपको उसी हाल के अंदर पाया जहाँ शीशे वाली मेज़ थी। वह उसने फ़ौरन पहचान ली। वह छोटा-सा दरवाज़ा भी उसने देखा, जिसके पार वही लुभावना बाग था, जिसको देखने के लिए एलिस इतनी लालायित थी। इसके लिए कद को छोटा करना सबसे पहली ज़रूरत थी। जेब से कुकुरमुत्ते के टुकड़े उसने निकाले, उन्हें खाकर वह फिर नन्ही-मुन्ही-सी हो गई।

अब वह बाग में थी। वहाँ उसने देखा, तरह-तरह के फूल खिले हुए हैं, रंगों की जैसे नुमाइश हो। और उनके बीच में वह फौवारा! एलिस मारे खुशी के नाच उठी।

–आश्चर्य लोक में एलिस, अनुवादक : शमशेर बहादुर सिंह

(दोनों अनुवादों में कौन-सा अनुवाद ज़्यादा अच्छा लग रहा है और क्यों? अपने साथी के साथ बैठकर पहचान कीजिए और समूह में बैठकर अपना अनुवाद करने का प्रयास कीजिए।)

वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवाद

इसी तरह तकनीकी अनुवाद में भी हमें तकनीकी शब्दावली की जानकारी होनी चाहिए। मसलन हम किसी संस्था के 'प्रेसिडेंट' के लिए तो 'अध्यक्ष' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं और 'वाइस प्रेसिडेंट' के लिए 'उपाध्यक्ष' शब्द का, पर जब भारत के 'प्रेसिडेंट' या 'वाइस प्रेसिडेंट' का ज़िक्र हो तो हमें 'राष्ट्रपति' और 'उपराष्ट्रपति' ही लिखना होगा। आर्थिक मामलों या प्रशासनिक मामलों में भी तकनीकी शब्दावली का ज्ञान होना ज़रूरी है। इसलिए हमें अनुवाद करते वक्त यह ध्यान भी रखना होता है कि हम जिस चीज़ का अनुवाद कर रहे हैं, वह किस क्षेत्र की है। साहित्य का अनुवाद करने वाला, हो सकता है किसी मेडिकल बुक का अनुवाद न कर पाए। और अगर वह करता है तो फिर उसे कुछ तैयारी करनी

© NCERT not to be republished

पड़ेगी। डॉक्टरों से लेकर उस क्षेत्र के अन्य विशेषज्ञों से उसे बात करनी पड़ सकती है और जो शब्दावली मान्य या प्रचलित है, उसी का सहारा उसे लेना होगा। विज्ञान के विषयों के लिए तो एक वैज्ञानिक शब्दावली ही तैयार की गई है जो उपलब्ध हो सकती है।

अकादमिक अनुवाद

अकादमिक अनुवाद को करने के लिए आपको उन विषयों की जानकारी रखनी पड़ेगी। अन्य विषयों की तरह सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों में अनुवाद पूरी दुनिया के इतिहास और समाज को जानने का बहुत बड़ा जरिया है। अमेरिका में बैठा व्यक्ति भारतीय इतिहास की या फिर हज़ारों साल पहले हड़प्पा और मोहनजोदड़ों के अवशेषों की धड़कन सुन सकता है। उदाहरण के लिए नीचे लिए गए अंश को देखिए–

गतिविधि 26 ◆ Activity 26

नीचे दिए गए दोनों अंशों ('How artefacts are identified' और 'पुरावस्तुओं की पहचान कैसे की जाती है')को ध्यान से पढ़िए। तथ्यों और सूचनाओं को ध्यान में रखते हुए आप इसे अपनी भाषा में रूपांतरित कीजिए।

Read both the extracts given below ('How artefacts are identified' and 'पुरावस्तुओं की पहचान कैसे की जाती है') carefully. Based on the given facts and information, rewrite them in your own language.

How artefacts are identified

Processing of food required grinding, equipment as well as vessels for mixing, blending and cooking. These were made of stone, metal and terracotta. This is an excerpt from one of the earliest reports on excavations at Mohenjodaro, the best-known Harappan site:

> *Saddle querns... are found in considerable numbers... and they seem to have been the only means in use for grinding cereals. As a rule, they were roughly made of hard, gritty, igneous rock or sandstone and mostly show signs of hard usage. As their bases are usually convex, they must have been set in the earth or in mud to prevent their rocking. Two main types have been found: those on which another smaller stone was pushed or rolled to and fro, and others with which a second stone was used as a pounder, eventually making a large cavity in the nether stone. Querns of the former type were probably used solely for grain; the second type possibly only for pounding herbs and spices for making curries. In fact, stones of this latter type are dubbed `curry stones' by our workmen and our cook asked for one from the museum for use in the kitchen.*

(From Ernest Mackay, Further Excavations at Mohenjodaro, 1937)

© NCERT not to be republished

पुरावस्तुओं की पहचान कैसे की जाती है

भोजन तैयार करने की प्रक्रिया में अनाज पीसने के यंत्र तथा उन्हें आपस में मिलाने, मिश्रण करने तथा पकाने के लिए बरतनों की आवश्यकता थी। इन सभी को पत्थर, धातु तथा मिट्टी से बनाया जाता था। यहाँ एक महत्त्वपूर्ण हड़प्पा स्थल मोहनजोदड़ो में हुए उत्खननों पर सबसे आरंभिक रिपोर्टों में से एक रिपोर्ट से कुछ उद्धरण दिए जा रहे हैं–

अवतल चक्कियाँ... बड़ी संख्या में मिली हैं... और ऐसा प्रतीत होता है कि अनाज पीसने के लिए प्रयुक्त ये एकमात्र साधन थीं। साधारणतः ये चक्कियाँ स्थूलतः कठोर, कंकरीले, अग्निज अथवा बलुआ पत्थर से निर्मित थीं और आमतौर पर इनसे अत्यधिक प्रयोग के संकेत मिलते हैं। चूँकि इन चक्कियों के तल सामान्यतया उत्तल हैं, निश्चित रूप से इन्हें ज़मीन में अथवा मिट्टी में जमा कर रखा जाता होगा जिससे इन्हें हिलने से रोका जा सके। दो मुख्य प्रकार की चक्कियाँ मिली हैं। एक वे हैं जिन पर एक दूसरा छोटा पत्थर आगे-पीछे चलाया जाता था जिससे निचला पत्थर खोखला हो गया था, तथा दूसरी वे हैं जिनका प्रयोग संभवतः केवल सालन या तरी बनाने के लिए जड़ी-बूटियों तथा मसालों को कूटने के लिए किया जाता था। इन दूसरे प्रकार के पत्थरों को हमारे श्रमिकों द्वारा 'सालन पत्थर' का नाम दिया गया है तथा हमारे बावर्ची ने एक यही पत्थर रसोई में प्रयोग के लिए संग्रहालय से उधार माँगा है।

–अर्नेस्ट मैके, फर्दर एक्सकेवेशंस एट मोहनजोदड़ो, 1937 से उद्धृत

ऐसा अनुवाद कई मायनों में अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। इसीलिए यहाँ अनुवादक की सृजनात्मकता इनकी रक्षा करने में है। तथ्यों की ठीक-ठीक जानकारी का होना ज़रूरी है और यह कोशिश भी होनी चाहिए कि अनूदित भाषा में उस भाषा की प्रकृति के अनुसार इसका अनुवाद किया जा सके। इसी तरह एक अन्य अंश को देखिए। अगर कोई शिक्षा की दुनिया से अपरिचित होगा तो वह इसकी ठीक प्रस्तुति नहीं कर पाएगा।

Educational theory has ample evidence to the contrary. It is in Class I that the child's basic attitude towards school as a social institution is formed. Indeed, the first few months spent at school have a decisive role in shaping the child's will to take the school seriously as a place, which means well. Systemic inability to distinguish little children from older ones, in terms of nature and requirements, is a major obstacle to Class I reforms. Trained teachers are usually able to regurgitate the common psychological characteristics of adolescents but very few have working knowledge of how a 5-year-old thinks and imagines. The syllabus of teacher training for the primary stage is usually so generalised that trainees end up getting no clear idea about this crucial stage of the school-going child's mind. They operate on the basis of a vague notion of stages of development.

© NCERT not to be republished

लेकिन शिक्षाशास्त्र के सिद्धांत इसके ठीक विपरीत बात करते हैं। उनके अनुसार पहली कक्षा ही एक सामाजिक संस्था के रूप में विद्यालय के प्रति बच्चे के बुनियादी रवैये को आकार देती है। स्कूल में बीतने वाले आरंभिक महीने बच्चों के इस संकल्प को पक्का बनाने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं कि वे विद्यालय को एक संजीदगी के साथ, एक अच्छी जगह के रूप में स्वीकार करेंगे। स्वभाव और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की दृष्टि से छोटे बच्चों और बड़े छात्रों में फ़र्क न कर पाना एक बड़ी व्यवस्थागत कमज़ोरी है जो पहली कक्षा के सुधार के रास्ते में एक बड़ी बाधा को पेश करती है। कई शिक्षित अध्यापक किशोर छात्रों की सामान्य मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को ज़बानी सुना सकते हैं, लेकिन इस बात का व्यावहारिक ज्ञान बहुत कम अध्यापकों में मिलता है कि पाँच साल का बच्चा किस तरह सोचता और कल्पना करता है। प्राथमिक स्तर के लिए अध्यापक प्रशिक्षण की पाठ्यचर्या प्रायः इतनी सपाट होती है कि प्रशिक्षण पूरा कर लेने पर भी अध्यापक को स्कूल में प्रवेश लेने वाले बच्चों की कोमल मानसिक दशा का अंदाज़ नहीं होता।

—एन.सी.ई.आर.टी. न्यूज़ लेटर, कृष्ण कुमार

(मित्रों से बातचीत कर पहचान करें कि कौन सा अंश अनुवाद है।)

देखें गतिविधि/Activity 30 पृष्ठ 203

मीडिया के लिए अनुवाद

मीडिया के लिए अनुवाद में करेंट अफेयर्स की जानकारी होना बहुत लाभदायक होता है। देश-दुनिया की सभी तरह की खबरों को लेकर सजग रहना होता है, तभी अच्छा अनुवाद बन पड़ता है। अगर यह जानकारी न हो कि किस देश-प्रदेश में चुनाव हो रहे हैं या कहाँ किस तरह की सैन्य गतिविधि है, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में किस तरह की हलचल है, तो अचानक किसी खबर, लेख या वृत्तांत का अनुवाद करना कुछ कठिन ही होगा। वैसे तो एक अनुवादक को जितने क्षेत्रों की जानकारी हो उतना ही अच्छा रहता है, तभी उसका शब्द भंडार भी बढ़ता है और वह अपनी भाषा को रचनात्मक बना पाता है। नए प्रयोग कर पाता है। ज़रूरत के मुताबिक कुछ शब्द भी गढ़ पाता है। इसमें सबसे ज़रूरी है तथ्यों तथा वस्तुओं का हू-ब-हू रूपांतरण। कुछ भी न तो छूटे, न जोड़ा जाए।

समाचारों का अनुवाद करते हुए अक्सर सबसे बड़ी गड़बड़ी यह होती है कि अनूदित समाचार को अंग्रेज़ी के वाक्य-विन्यास और शैली में लिखने की कोशिश की जाती है। इससे वाक्य संरचना और शैली बहुत अटपटी और कठिन हो जाती है। वाक्यों का ओर-छोर उलट-पुलट जाता है। इससे हर हालत में बचने की कोशिश करनी चाहिए।

अनुवाद का सबसे महत्त्वपूर्ण सूत्र यह है कि आप जिस समाचार का अनुवाद करने जा रहे हैं, उसे ध्यान से पढ़िए। यह समझने की कोशिश कीजिए कि इस समाचार में क्या

© NCERT not to be republished

कहा गया है? कल्पना कीजिए कि अगर उस समाचार को अपने घर के किसी सदस्य या स्कूल के किसी साथी को बताना हो तो आप कैसे बताएँगे? अनुवाद का सबसे अच्छा तरीका यही है कि अनुवाद के बाद वह अनूदित भाषा का मूल समाचार लगे न कि अनूदित समाचार। ज़ाहिर है कि इसके लिए अनुवाद करते हुए यह सुनिश्चित करना होगा कि अनूदित समाचार उस भाषा के मिज़ाज, शैली, वाक्य-विन्यास और मुहावरों में हो।

समाचारों का अनुवाद करते हुए शब्दशः या मक्खी पर मक्खी बैठाने से हर सूरत में बचना चाहिए। अनुवाद के बाद उस समाचार को उसी भाषा में लिखा हुआ समाचार लगना चाहिए। उस भाषा की स्वाभाविकता और प्रवाह को बनाए रखा जाना चाहिए। शब्द-कोश की मदद लीजिए, लेकिन इस बात का ध्यान ज़रूर रखिए कि उसके लिए सबसे उपयुक्त और अनूदित भाषा में प्रचलित शब्द कौन सा है। अन्यथा अक्सर ऐसा होता है कि शब्द-कोश की मदद से ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है जो न सिर्फ़ वहाँ उपयुक्त नहीं होते हैं बल्कि जिन्हें समझना अंग्रेज़ी जितना ही कठिन होता है।

कई बार कुछ तकनीकी और पारिभाषिक शब्दों के लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिलते या संस्कृतनिष्ठ होने के कारण उतने ही कठिन होते हैं, उस स्थिति में अनुवादक की ज़िम्मेदारी और बढ़ जाती है। उसे न सिर्फ़ उपयुक्त और प्रचलित तकनीकी और पारिभाषिक शब्द खोजने की कोशिश करनी चाहिए बल्कि ज़रूरत हो तो कोष्ठक में मूल अंग्रेज़ी शब्द के साथ-साथ अलग से एक वाक्य में उसका अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश करनी चाहिए।

कुछ उदाहरण

अंग्रेज़ी और हिंदी की वाक्य संरचनाओं में फ़र्क होता है। अनुवाद करते हुए इसका ध्यान न रखने पर वाक्य कुछ इस तरह का बन सकता है–

मुख्यमंत्री जो वित्त मंत्री भी हैं, ने वर्ष 2005-06 का वार्षिक बजट पेश किया। वे आजकल वित्त मंत्री का कामकाज भी सँभाल रहे हैं।

इसी तरह हिंदी की वाक्य संरचना का ध्यान न रखकर अनुवाद करने पर कितनी मुश्किल हो सकती है, इसका एक उदाहरण प्रस्तुत है।

मूल अंग्रेज़ी –

Japanese sailor Kenichi Horie, who has sailed non-stop around the world and crossed the Pacific in a solar-powered boat made of recycled aluminum, is off on his next solo adventure at sea.

© NCERT not to be republished

__कमज़ोर अनुवाद__ – जापानी नाविक केनेची होरी, जिन्होंने बिना रुके दुनिया का चक्कर लगाया है और बेकार अल्युमीनियम को फिर से ढालकर बनी नौका से प्रशांत महासागर को पार किया है, आज अपनी अगली समुद्री यात्रा पर निकल पड़े।

इसकी तुलना में __बेहतर अनुवाद__ का उदाहरण – जापानी नाविक केनेची होरी आज अपने अगले साहसिक समुद्री अभियान पर निकल पड़े। उन्होंने इससे पहले बिना रुके समुद्री रास्ते से दुनिया का चक्कर लगाया है। उनकी नौका बेकार अल्युमीनियम को फिर से ढालकर बनाई गई है। वे इससे पहले प्रशांत महासागर को पार कर चुके हैं।

अनुवाद में अर्थ का अनर्थ होने के कुछ उदाहरण

- 'पुलिस रात भर रेलवे स्टेशन के अंदर और बाहर पेट्रोल छिड़कती रही'। (Police patrolling was intensified in and around the railway station during the night) जब कि इसका सही अनुवाद होना चाहिए – 'रेलवे स्टेशन के अंदर और आसपास रात में पुलिस गश्त बढ़ा दी गई है'।
- 'देश का सबसे बड़ा इस्पात का पौधा (Steel Plant) आंध्र प्रदेश में विशाखापत्तनम में लगाया जा रहा है।' ज़ाहिर है कि यह 'इस्पात का पौधा' न होकर 'इस्पात संयंत्र' या 'कारखाना' होना चाहिए। इसी तरह एक और अनूदित समाचार देखिए–
- 'नौवीं योजना में देश में 9000 गोबर गैस के पौधे (Gobar gas plant) लगाए जाएँगे'। यहाँ एक बार फिर 'गोबर गैस संयंत्र' होना चाहिए न कि 'गोबर गैस के पौधे'।
- 'अमरीका ने पश्चिम एशिया में शांति स्थापना के लिए सड़क का नक्शा (Road map to peace) बनाया है'। इस वाक्य में यह 'सड़क का नक्शा' न होकर 'शांति स्थापना की राह के लिए योजना' तैयार कर ली है।

अनुवाद में भाषा की सरलता के साथ-साथ उसकी गरिमा को भी बनाए रखना ज़रूरी है। याद रखिए अच्छे अनुवाद की सबसे बड़ी कसौटी यह है कि उसे पढ़ने के बाद पाठक को यह बिलकुल न लगे कि वह अनुवाद है।

अनुवाद के बाद आप मूल कॉपी के साथ-साथ अनूदित कॉपी को दोबारा ज़रूर पढ़ें। कहीं कोई ज़रूरी तथ्य तो नहीं छूट गया है। कहीं अर्थ का अनर्थ तो नहीं हो रहा है। अनुवाद से भ्रम तो नहीं हो रहा है। वाक्य-विन्यास दुरूह तो नहीं है। इसे दोबारा लिखें ताकि गलतियों को दूर किया जा सके।

© NCERT not to be republished

एक अन्य उदाहरण देखिए –

अंग्रेज़ी का वाक्य

Ten killed in a road accident.

हिंदी अनुवाद

सड़क दुर्घटना में दस मरे/सड़क दुर्घटना में दस मारे गए/सड़क दुर्घटना में दस स्वर्ग सिधारे/सड़क दुर्घटना में दस भगवान को प्यारे।

गतिविधि 27 ◆ Activity 27

यहाँ अन्य की तुलना में 'सड़क दुर्घटना में दस मारे गए' अंग्रेज़ी वाली खबर के सबसे निकट अर्थ देता है। ऐसे दस अन्य उदाहरण चुनकर लिखें और यह भी बताएँ कि कौन सा अर्थ सबसे उपयुक्त है।

Notice that 'सड़क दुर्घटना में दस मारे गए' is the most appropriate translation of the English sentence. Write ten similar examples and identify which translation is the closest.

बौद्ध धर्म और भारतीय गणित दशमलव पद्धति के प्रचार-प्रसार में अनुवाद की बड़ी भूमिका रही है। भगवत गीता के अनुवाद ने भी भक्ति आंदोलन में बड़ी भूमिका निभाई। संत ज्ञानेश्वर ने ज्ञानेश्वरी नाम से इसका अनुवाद किया था।

© NCERT not to be republished

Understanding Translation

Translation is a creative process.

Group Activity

- *Three or four students from the class should speak a few lines in their mother tongue (other than Hindi/English).*
- *The rest of the class should try to guess what was said.*

Group Discussion

- *How did you guess what was said? (Was it through words or expressions?)*
- *Was there a need for translation? If so, why?*
- *In which situations, do you think, does translation become essential?*

Debate

Multilingualism is a resource.

And the pen writes on...

Translation is not a matter of words only: it is a matter of making intelligible a whole culture.

– Anthony Burgess

You will recollect my having carried on correspondence with you whilst I was temporarily in London. As a humble follower of yours, I send you herewith a booklet which I have written. It is my own translation of a Gujarati writing… I am most anxious not to worry you, but, if your health permits it and if you can find the time to go through the booklet, needless to day I shall value very highly your criticism of the writing. I am also sending a few copies of your letter … which you authorised me to publish. It has been translated in one of the Indian languages also.

– excerpts from a letter from Gandhiji to Leo Tosltoy in 1910

© NCERT not to be republished

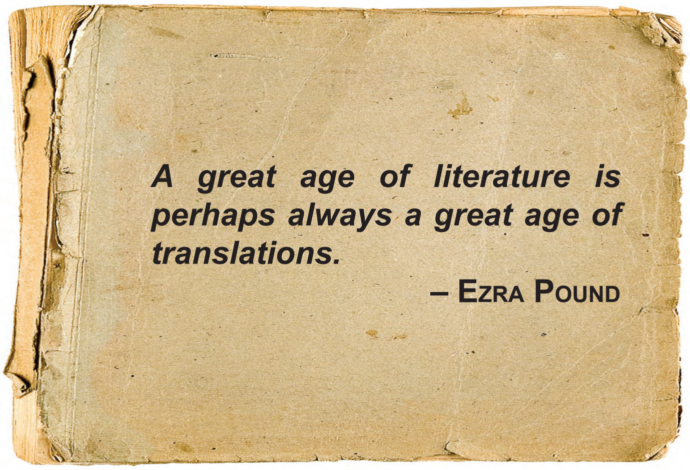

A great age of literature is perhaps always a great age of translations.

– EZRA POUND

I. Introducing Translation

India, as one of the oldest knowledge bases, has a cherished tradition of translation. In a sense the people of our country are natural translators since most people here are at least bilingual. If we speak, for instance, Marathi or Punjabi at home as our mother tongue, we inevitably pick up another language, Gujarati or Tamil or any other language, spoken generally in the region we live in. And then at school, we learn at least three languages. By the time we are adults, we are often familiar with more than two languages, and we develop the skill to shift from one language to another naturally. You can see how newsreaders of some of the popular television channels in India use this faculty so effectively. In order to translate we need to become aware of other languages and then consciously hone and develop our skills in translation.

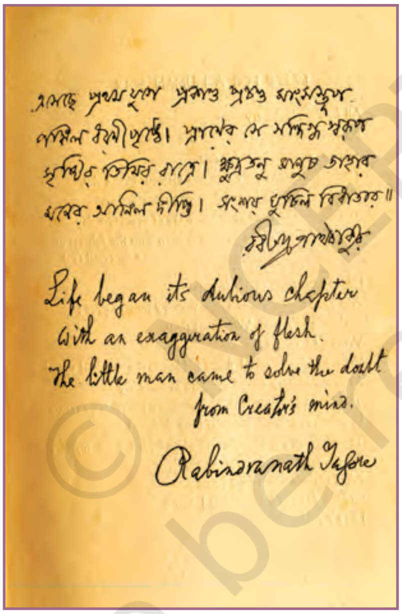

Lines in Bangla and their English translation, both by Rabindranath Tagore

The following extract from Rabindranath Tagore's *Kabuliwala* has been translated from the Bangla into Hindi and English.

আমার পাঁচ বছর বয়সের ছোটো মেয়ে মিনি এক দণ্ড কথা না কহিয়া থাকিতে পারে না। পৃথিবীতে জন্মগ্রহণ করিয়া ভাষা শিক্ষা করিতে সে কেবল একটি বৎসর কাল ব্যয় করিয়াছিল, তাহার পর হইতে যতক্ষণ সে জাগিয়া থাকে এক মুহূর্ত মৌনভাবে নষ্ট করে না। তাহার মা অনেকসময় ধমক দিয়া তাহার মুখ বন্ধ করিয়া দেয়, কিন্তু আমি তাহা পারি না। মিনি চুপ করিয়া থাকিলে এমনি অস্বাভাবিক দেখিতে হয় যে, সে আমার বেশিক্ষণ সহ্য হয় না। এইজন্য আমার সঙ্গে তাহার কথোপকথনটা কিছু উৎসাহের সহিত চলে।

সকালবেলায় আমার নভেলের সপ্তদশ পরিচ্ছেদে হাত দিয়াছি এমন সময় মিনি আসিয়াই আরম্ভ করিয়া দিল, 'বাবা, রামদয়াল দারোয়ান কাককে কৌয়া বলছিল, সে কিচ্ছু জানে না। না?'

আমি পৃথিবীতে ভাষার বিভিন্নতা সম্বন্ধে তাহাকে জ্ঞানদান করিতে প্রবৃত্ত হইবার পূর্বেই সে দ্বিতীয় প্রসঙ্গে উপনীত হইল। 'দেখো বাবা, ভোলা বলছিল আকাশে হাতি শুঁড় দিয়ে জল ফেলে, তাই বৃষ্টি হয়। মাগো, ভোলা এত মিছিমিছি বকতে পারে! কেবলই বকে, দিনরাত বকে।'

Ask any of your friends who can read Bangla to read the passage aloud.

Read the following Hindi and English translations of the extract from *Kabuliwala*.

मेरी पाँच बरस की छोटी बेटी मिनी बिना बोले पल-भर भी नहीं रह सकती। संसार में जन्म लेने के बाद भाषा सीखने में उसने केवल एक वर्ष का समय खर्च किया था। उसके बाद से जब तक वह जागती रहती है, एक पल भी मौन रहकर नष्ट नहीं करती। उसकी माँ बहुत बार डाँटकर उसका मुँह बंद कर देती है, किंतु मैं ऐसा नहीं कर पाता। चुपचाप बैठी मिनी देखने में इतनी अजीब लगती है कि मुझे बहुत देर तक सहन नहीं होता। इसलिए मेरे साथ उसकी बातचीत कुछ उत्साह के साथ चलती है।

सुबह मैंने अपने उपन्यास के सत्रहवें परिच्छेद में हाथ लगाया ही था कि मिनी ने आते ही बात छेड़ दी, "पिताजी, रामदयाल दरबान काक को कौआ कहता था। वह कुछ नहीं जानता। है न?"

संसार की भाषाओं की विभिन्नता के बारे में कुछ बताने से पहले ही वह दूसरे प्रसंग पर चली गई, "देखो पिताजी, भोला कह रहा था कि आकाश में हाथी सूँड से पानी डालता है, उसी से वर्षा होती है। मैया री! भोला कैसी बेकार की बातें करता रहता है! खाली बक-बक करता रहता है, दिन-रात बक-बक लगाए रहता है।"

My five-year-old daughter, Mini, can't stop talking for even a minute. It only took her a year after coming into the world to learn to speak, and ever since she has not wasted a minute of her waking hours by keeping silent. Her mother often scolds her and makes her shut up, but I am unable to do that. When Mini is quiet, it is so unnatural that I cannot bear it. So her chattering gets quite a lot of encouragement from me.

One morning, as I was starting the seventeenth chapter of my novel, Mini came up to me and said, "Father, Ramdoyal the gatekeeper calls a crow a kauva *instead of* kak*. He doesn't know anything, does he?"*

Before I had a chance to enlighten her about the multiplicity of languages in the world, she brought up another subject, "Guess what, Father, Bhola says it rains when an elephant in the sky squirts water through its trunk. What nonsense he talks! He teases me, he teases me all day long."

See गतिविधि/Activity 25 on Page 166

A pooling and sharing of knowledge is indeed possible only when special efforts are made to cross language boundaries. The best tool employed for this purpose is translation which deserves special attention in our multilingual context.

In many Indian languages, we have a great legacy of translations from various classical languages such as Persian, Arabic, Sanskrit on the one

© NCERT not to be republished

hand and from foreign modern languages such as Russian, German, French, on the other. Also, translations amongst Indian languages themselves have made the significant works of one language available in other languages as well. Thanks to translations we have been able to access and read such great writers as Rabindranath Tagore, Prem Chand and Subramaniam Bharati in our own languages. Sometimes these translations have happened through link languages such as English and Hindi. For example, Kalidasa's *Abhigyanashakuntalam* is read the world over. This has been made possible because of its translation into many languages. Given below is an excerpt from *Abhigyanashakuntalam* (Act IV) and its translations in Hindi and English.

शकुन्तला–(गतिभङ्गं रूपयित्वा) को णु क्खु एसो णिवसणे मे मज्जइ। (को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते।) (इति परावर्तते।)

कण्वः–वत्से!

यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां
तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।
श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति
सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते।।14।।

शकुन्तला– (चलने में रुकावट का अनुभव करती हुई-सी) अरे! यह कौन मेरा अंचल पकड़कर खींचे जा रहा है? (पीछे घूमकर देखती है)

कण्व–वत्से! कुशा के काँटे से छिदे हुए जिसके मुँह को अच्छा करने के लिए तू उस पर हिंगोट का तेल लगाया करती थी वही तेरे हाथ के दिए हुए मुट्ठी भर साँवे के दानों से पला हुआ तेरा पुत्र के समान प्यारा हरिण मार्ग रोके खड़ा है। ।।14।।

SHAKUNTALA (stumbling): *Oh, oh! Who is it that keeps pulling at my dress, as if to hinder me? (she turns around to see).*

KANVA: *It is the fawn whose lip, when torn by kusha-grass, you soothed with oil; the fawn who gladly nibbled corn held in your hand; with loving toil you have adopted him, and he would never leave you willingly.*

(Translated by ARTHUR W. RYDER)

It may be pointed out here how Kalidasa's well-known play, Abhigyanashakuntalam, *demonstrates the coexistence of many language groups in the same geographical area. This play was written in Sanskrit and also uses Saurasheni, Maharastri and Magadhi, clearly showing how multilinguality was a given fact portrayed realistically in a literary text.*

© NCERT not to be republished

Here is an extract from Premchand's *Shatranj ke Khiladi (The Chess Players)* from a collection of his short stories which have been translated from the Hindi to English. Read the extract and its translation carefully and identify the sentences/words that convey the meaning but are not literal translations. Discuss in class.

प्रातःकाल दोनों मित्र नाश्ता करके बिसात बिछाकर बैठ जाते, मुहरे सज जाते, और लड़ाई के दाँवपेंच होने लगते। फिर खबर न होती थी कि कब दोपहर हुई, कब तीसरा पहर, कब शाम! घर के भीतर से बार-बार बुलावा आता कि खाना तैयार है। यहाँ से जवाब मिलता-चलो, आते हैं, दस्तरखान बिछाओ। यहाँ तक कि बावरची विवश होकर कमरे ही में खाना रख जाता था, और दोनों मित्र दोनों काम साथ-साथ करते थे।

Early morning it begins. The two cronies finish breakfast, spread open the chessboard, arrange the chessmen, and the war manoeuvres start. And that's it — time stops — no noon, no afternoon, no evening. Summons after summons from inside the house — "Your meal's ready." To which they reply, "All right, coming, spread the tablecloth." And, of course, it always ends up with the cook depositing the food in the room, and the two friends simultaneously messing and chessing.

(Translated by Nandini Nopany and P Lal)

Translation is a faculty that brings us closer to alien cultures and societies not only through their literatures but also their films and other electronic media — through subtitling and dubbing. A lot of news that we get through newspapers, radio and television, too, is translated from various languages for it to be comprehensive.

Translation also opens a window to the world as we get to know the works of great writers, critics, scientists and other intellectuals from various regions and countries. The following extracts are examples of translations of writings from different parts of the world.

It once occurred to a certain king, that if he always knew the right time to begin everything; if he knew who were the right people to listen to, and whom to avoid, and, above all, if he always knew what was the most important thing to do, he would never fail in anything he might undertake.

And this thought having occurred to him, he had it proclaimed throughout his kingdom that he would give a great reward to any one who would teach him what was the right time for every action, and who were the most necessary people, and how he might know what was the most important thing to do.

– an extract from 'Three Questions' by Leo Tolstoy
(Translated from the Russian)

© NCERT not to be republished

The following is a Hindi translation of the preceding passage.

'तीन प्रश्न' से...

एक समय एक राजा को विचार आया कि अगर उसे यह मालूम हो जाए कि किसी काम को शुरू करने का ठीक समय कौन सा है; यदि उसे मालूम हो कि किन लोगों की बात सुननी चाहिए और किनकी नहीं; और सबसे महत्वपूर्ण यदि उसे हमेशा मालूम हो जाए कि सबसे ज़रूरी कार्य कौन सा है, वह किसी भी कार्य में असफल नहीं होगा।

और इस विचार के आते ही उसने अपने राज्य में ऐलान करवा दिया कि जो कोई उसे काम करने का सही समय, और सबसे ज़रूरी लोग कौन हैं, और कौन सा कार्य सबसे महत्त्वपूर्ण है बताएगा, उसे बहुत इनाम दिया जाएगा।

Haiku

An old pond!
A frog jumps in —
The sound of water.

– Matsuo Basho

एक पुराना तालाब!
एक मेंढक उसमें कूदा —
पानी की आवाज़।

Right at my feet—
and when did you get here,
Snail?

– Issa

मेरे पैरों के एकदम पास–
और कब तुम यहाँ पहुँचे,
घोंघा?

(Translated from the Japanese)

Here is a passage from *Alice in Wonderland* by Lewis Carroll followed by the Hindi translation.

"Take some more tea," the March Hare said to Alice , very earnestly.

"I've had nothing yet," Alice replied in an offended tone, "so I can't take more."

"You mean, you can't take less," said the Hatter: "it's very easy to take more than nothing."

"Nobody asked your opinion," said Alice.

"Who's making personal remarks now?" the Hatter asked triumphantly.

Alice did not quite know what to say to this; so she helped herself to some tea and bread-and-butter, and then turned to the Dormouse, and repeated her question. "Why did they live at the bottom of a well?"

© NCERT not to be republished

The Dormouse again took a minute or two to think about it, and then said, "It was a treacle-well."

"There's no such thing!" Alice was beginning very angrily, but the Hatter and the March Hare went "sh!sh!" and the Dormouse sulkily remarked, "If you can't be civil, you'd better finish the story for yourself."

"और चाय लोगी?" मार्च खरगोश ने तपाक से ऐलिस से पूछा।

"जब मैंने अभी तक पी ही नहीं," ऐलिस नाराज़ होकर बोली, "तो और कैसे ले सकती हूँ।"

"तुम्हारा मतलब है कि तुम कम नहीं ले सकतीं," टोपवाले ने उसे समझाया, "और लेना तो आसान है, खासतौर पर जब तुमने कुछ भी नहीं लिया हो तो।"

"आपकी राय मुझे नहीं चाहिए।" ऐलिस ने कहा।

"तुम तो जाती हमलों के खिलाफ़ थीं।" टोपवाला विजयी आवाज़ में बोला।

ऐलिस को कोई जवाब नहीं सूझा तो उसने कुछ चाय और मक्खन टोस्ट ले लिया और चूहे की तरफ़ रुख करके उसने फिर पूछा, "वे कुएँ में क्यों रहती थीं?"

चूहे ने एक-दो मिनिट की सोच के बाद कहा, "वह गुड़ का कुआँ था।"

"मैं नहीं मानती।" ऐलिस ने गुस्से में कहना शुरू किया ही था कि टोपवाले और मार्च खरगोश ने 'शश-शश' से उसे चुप करवा दिया, और चूहे ने कहा, "अगर तुम टोकने से बाज नहीं आ सकतीं तो खुद ही खत्म कर लो इस कहानी को।"

(अनुवाद – कृष्णबलदेव वैद)

With the explosion of information and the ever-expanding information technology in contemporary times, the big question that looms over us is how to access diverse knowledge and how to convey in the target language the human sensitivities of the original. Indeed, in a country such as India where there are multiple languages, each language is a rich storehouse of knowledge and literary traditions.

What is Translation?

Translation essentially implies transference of material from one language to another. Since each language carries within itself its own culture and temper, the process of translation demands that the translator be adequately equipped with (i) knowledge of what is called the source language as well as the target language, and (ii) knowledge of the culture of each of the languages to be able to comprehend the source language and then find appropriate equivalent words/phrases in the target language. A literal translation, word for word, can be 'faithful' but not beautiful; in fact, at times, a literal translation may even distort the meaning. For example,

© NCERT not to be republished

> ***What I like best is when I do my own poems into English. I find the task gripping to the point of intoxication. In the act of translating into an alien language, I seem to find a new flavour in what I had written originally in Bengali. It is almost like a bride's reception at her husband's home — after the wedding is over…The bride must meet and must make friends with the community to which she must belong henceforth.***
>
> **— Rabindranath Tagore**

while a person can be as wise as an 'owl' in English, in Hindi, an owl (*ullu*) is considered to be stupid!

The translator has to understand the context and the culture within which certain words are used and then work out a way to translate them in a suitable manner. This may require not just lexical meanings from dictionaries but also research into the cultures of the source and the target languages. Metaphors, proverbs, symbols, idioms, on the one hand, and, on the other, abuses, kinship terms etc. are all markers of culture. They pose a big challenge to the translator since their meaning is embedded in specific cultures.

Here are some examples of metaphors and phrasal verbs in Hindi and English.

काला बाजार	–	*black market*
कौड़ियों के मोल	–	*as cheap as dirt*
रँगे हाथों पकड़े जाना	–	*to get caught red-handed*
थककर चूर होना	–	*dead tired*
शीत युद्ध	–	*cold war*
भाग जाना	–	*to abscond*
संक्षेप में	–	*in short*
लालन-पालन	–	*to bring up*
की हैसियत से	–	*by virtue of*

Choose any two phrases from this list and find their equivalents in your mother tongue. Share them with your class.

Humour and even colours can be culture specific. What is celebratory in one culture can be mournful in another. An English bride, for example, dresses in white, while white may be perceived as the colour of mourning in some cultures. It is the translator's job to know such cultural differences and render the translation accordingly.

One thing common amongst different kinds of translation is its main function, that is, to build bridges and create a dialogue between different languages, different cultures. In Arabic, the word for translation is *tarjuman* — the process of mediation between languages. Translation, then, expands the knowledge sphere for humanity and makes room for diversity of cultures through understanding, caring and accommodation of diversity

© NCERT not to be republished

of cultures. Here is an extract from a text originally written in Urdu. (Ask any of your friends who can read Urdu to read the passage aloud.) The writer, Ismat Chugtai, is widely read in many languages today.

چوتھی کا جوڑا

آج کتنی آس بھری نگاہیں کبریٰ کی ماں کے متفکر چہرے کو تک رہی تھیں۔ چھوٹے عرض کی ٹول کے دو پاٹ تو جوڑ لیے گئے تھے، مگر ابھی سفید گزی کا نشان بیونتنے کی کسی کو ہمت نہ پڑتی تھی۔ کاٹ چھانٹ کے معاملے میں کبریٰ کی ماں کا مرتبہ بہت اونچا تھا۔ ان کے سوکھے سوکھے ھاتھوں نے نہ جانے کتنے جہیز سنوارے تھے۔ کتنے چھٹی چھوچھک تیار کیے تھے اور کتنے ھی کفن بیونتے تھے...

عصمت چغتائی

चौथी का जोड़ा से ...

आज कितनी आस-भरी निगाहें कुबरा की माँ के मुतफ़क्किर चेहरे को तक रही थीं। छोटे अर्ज़ की टूल के दो पाट तो जोड़ लिए गए, मगर अभी सफ़ेद गज़ी का निशान ब्योंतने की किसी को हिम्मत न पड़ती थी। काट-छाँट के मामले में कुबरा की माँ का मरतबा बहुत ऊँचा था। उनके सूखे-सूखे हाथों ने न जाने कितने दहेज़ सँवारे थे, कितने छठी-छूछक तैयार किए थे और कितने ही कफ़न ब्योंते थे।.....

–इस्मत चुगताई

That day many expectant eyes were riveted on the thoughtful face of Kubra's mother. The two short pieces of cloth had been strung together, but no one would dare to apply the scissors at this point. As far as cutting and measuring cloth was concerned, Kubra's mother's skill was usdisputed. No one knew how many dowries she had prepared with her shrunken hands, how many suits she had stitched for new mothers and their babies, and how many shrouds she had measured and ripped.

– an extract from 'The Wedding Suit' by Ismat Chugtai
(Translated from the Urdu by M. Asaduddin)

Translation — Its Role and Relevance

Thanks to the vibrant linguistic plurality around us, most of us are at least bilingual. As a result we are actually natural translators, shifting easily from one language to another. We may dream in one language, converse in another and write in yet another language. But, indeed, with globalisation and the world shrinking, one or two languages may just become too dominating to allow others to survive. If we make concerted efforts to understand the different cultures/language groups, there may be hope for their survival through the respect accorded to each for its rich

© NCERT not to be republished

literary and cultural traditions that have evolved over centuries. One of the most effective ways of building such cross-cultural bridges has been translation, i.e. making the rich storehouse of knowledge of one language accessible to the other.

Jawaharlal Nehru in his book *Discovery of India* (*Hindustan ki Kahani*) has written about the importance of languages. An extract from the text with its translation in Hindi is given below.

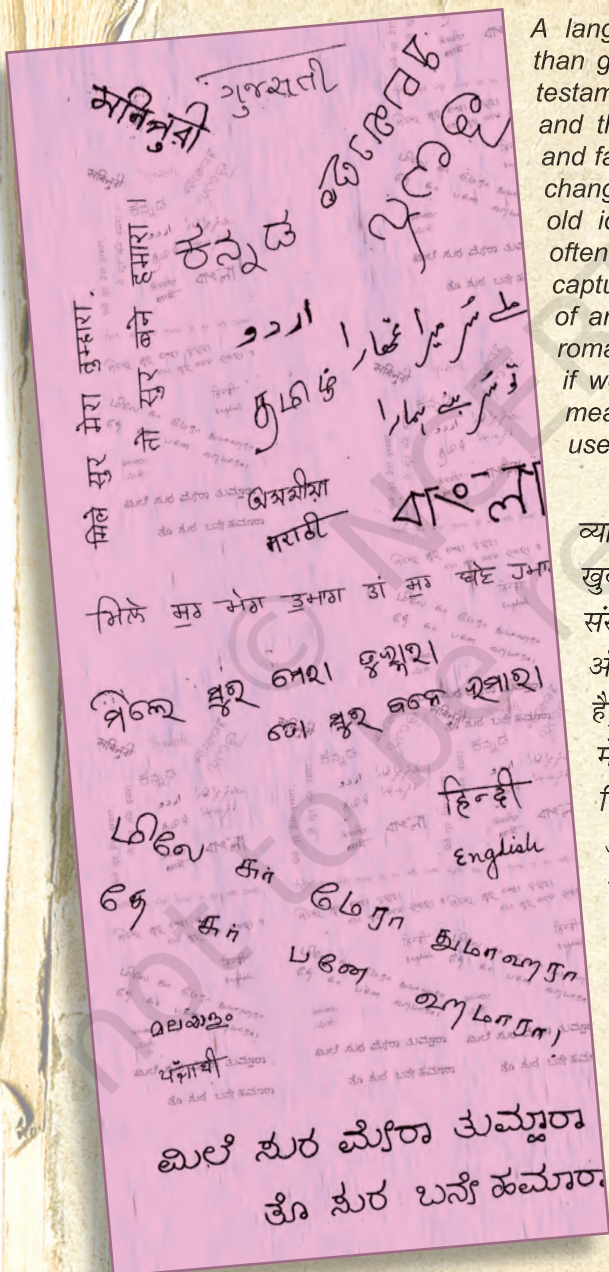

A language is something infinitely greater than grammar and philology. It is the poetic testament of the genius of a race and a culture, and the living embodiment of the thoughts and fancies that have moulded them. Words change their meanings from age to age and old ideas transform themselves into new, often keeping their old attire. It is difficult to capture the meaning, much less the spirit, of an old word or phrase. Some kind of a romantic and poetical approach is necessary if we are to have a glimpse into that old meaning and into the minds of those who used the language in former days.

व्याकरण और भाषा-शास्त्र के मुकाबले में भाषा खुद कहीं बड़ी चीज़ है। यह एक जाति और संस्कृति की प्रतिभा की कवित्वमय विरासत है और जिन विचारों और कल्पनाओं ने उन्हें ढाला है, उनका जीता-जागता रूप है। शब्द युग-युग में अपने अर्थ बदलते रहते हैं और पुराने विचार नए विचारों में तबदील हो जाते हैं, अगरचे अकसर वे अपना पुराना भेस कायम रखते हैं, किसी पुराने लफ़्ज़ या मुहावरे के मानी पकड़ना मुश्किल हो जाता है और उस भाव के बारे में तो कहा ही क्या जाए! अगर हम उस पुराने मानी की झलक लेना चाहते हैं और उन लोगों के दिमाग में पैठना चाहते हैं, जिन्होंने उस भाषा को गुज़रे दिनों में इस्तेमाल किया था, तो हमें भावुक और कवित्वमय निगाह रखना ज़रूरी है।

स्रोत—सस्ता साहित्य मंडल

© NCERT not to be republished

For a meaningful exchange of ideas and an effective sustenance of cross-cultural dialoguing, honing translation skills is the most natural device. An example of the 'dialoguing' between Sanskrit and Persian is demonstrated in Dara Shikoh's masterpiece translation of the Upanishads from Sanskrit into Persian, *Sirr-e-Akbar* (The Great Secret), completed in 1657 with the help of several pundits from Varanasi. Not only is this translation an evidence of the 'interaction' between two classical languages, it also shows how two cultures were engaged in understanding each other through the translation of seminal texts into each other's languages. Translations of this kind contributed significantly towards building a composite culture in the Indian subcontinent.

While it is important for the translator to have adequate language competence to be able to translate effectively, it is important to note that the process of translation in itself leads to language learning.

The process of translation brings one into a very intimate relationship with at least two languages. The role of translation in language learning is immense. Language conservation and then linguistic proficiency, as we discussed earlier, are surely the crux of all translation activities.

As linguists tell us, thanks to extensive translation in some languages, linguistic changes result from the influence of one language on the other. Sometimes this influence is so pronounced that even the structure of these languages may change due to constant translations from one into the other. Also, if some terms are so culture specific that translation is not possible, the scope of the target language expands through the introduction of new words transferred from the source language as new words and phrases may also get created within the target language to translate such terms. For example, words such as *pucca, sahib* etc. have become part of the English language.

गतिविधि 28 **Activity 28**

रास्ते में लगे कुछ मार्गदर्शन बोर्ड, सूचना बोर्ड, विज्ञापन बोर्ड आदि का हिंदी से अंग्रेज़ी और अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद कीजिए और अपने साथी के साथ बैठकर एक-दूसरे के अनुवाद को मिलकर ठीक कीजिए।

Translate the text from a few signboards, road maps or hoardings that you come across, from Hindi to English and from English to Hindi. In pairs discuss your translations and improve upon them.

© NCERT not to be republished

In business transactions too, cross-cultural dialoguing plays a vital role. Unless one has mastered the art of communication with the help of interpretation and translation, it may not be possible to build business relationships with other cultures. Whether for entertainment or even advertising or commerce, it is through translation and cultural understanding that the process of reaching out can be achieved. To be competent in this field, one has to equip oneself with linguistic and translation skills.

Understanding Translation

At the outset, let us understand the literal meaning of the word 'translation' as it is used in some languages. Different cultures, no doubt, may conceptualise translation differently at different times. For instance, the word 'translation' in English comes from the Latin word 'transferee' which means 'carrying something across'. This is indicative of the linguistic and cultural borders which need to be crossed for something to be taken from one side to the other.

In Sanskrit a translator is a *bhasantarakari*, meaning 'other language maker'. Clearly this recognises, in the process of translation, the 'difference' of language (which is the carrier of culture), along with the idea of making something anew by the translator. But there are other words for translation in Sanskrit. *Chayanuharanam* suggests that translation is 'reflection', thus emphasising similarity between the two texts; and then there is also the word, *anuvadah* meaning 'saying after'. Derived from Sanskrit, the word used for translation in Hindi too is *anuvad*, suggesting both, the primacy of the source text and also the recreation of another.

In Hungarian, Finnish and some other languages the word for translation points towards the 'difference' between the source and the target text. The Finnish word kaannos*, used for translation, literally means 'a turn or a turning' which shows how the translated text is thought to be taking a turn from the basic text. It is very interesting that the slang connotation of the Finnish verb* kaantaa *is 'to steal'. Does this imply that translation is to be seen as a theft of some substance from some source? To add to this perspective, let us remember that the classical god of translators was Hermes who was also the god of thieves!*

This brings us to a very significant juncture in our study of what is translation. When someone said that translation can be seen as stealing something from the 'original', a very important question throws itself up: Is the process of translation creative or just a replication or a copy?

© NCERT not to be republished

Creativity and Translation

To translate, inevitably means a reconstruction of the text. Translation, therefore, calls for a lot of creativity to first decode an existent text for its comprehension and internalisation, and then recode it into a new text in another language. The new text is a re-creation that has to stand in total autonomy, free of the 'original' text and complete in itself. Walter Benjamin has said that translation is "afterlife".

Linguistic transformation, we must remember, implies to a large extent a cultural transformation too. This is similar to saying that a lot can be lost in translation and a lot can also be gained in translation. Each language bears within itself its own cultural baggage. That is why when the source text is translated into another language, it is necessary that the culture of the target language be negotiated. With adequate sensitivity and knowledge of the cultures of both the languages, the translator becomes a mediator who creates the scope and means to transfer the meaning and experience of the 'original' text into another language. Translation, said someone, is a cross-cultural transmission skill, a creative endeavour to build another linguistic structure to accommodate and contain what is otherwise quite foreign to it.

Since translation is filtered through the consciousness of the translator, it does indeed acquire the translator's vision as well and gets transformed into something new, broadening the scope of the original and offering at times another view of the same thing. Literary translation is not merely a technical skill, but also an art form, not subservient to the original. The translator, thus, has to be equipped with adequate preparation and creativity along with the linguistic skills to be able to transcreate a text.

Read the following excerpt and its translation from *Themes in Indian History — Part III* for Class XII. Do you think the translator has been

गतिविधि 29 — Activity 29

अपनी पसंद की किसी कहानी को अपने ढंग से किसी अन्य भाषा में लिखें।

Choose a story that you like. Now translate it into another language.

© NCERT not to be republished

able to translate the nuances of the researcher's record? Underline the words/phrases that you feel would have been difficult to translate.

"I am simply returning my father's* karz, *his debt"

During my visits to the History Department Library of Punjab University, Lahore, in the winter of 1992, the librarian, Abdul Latif, a pious middle-aged man, would help me a lot. He would go out of his way, well beyond the call of duty, to provide me with relevant material, meticulously keeping photocopies requested by me ready before my arrival the following morning. I found his attitude to my work so extraordinary that one day I could not help asking him, "Latif Sahib, why do you go out of your way to help me so much?" Latif Sahib glanced at his watch, grabbed his namazi topi *and said, "I must go for* namaz *right now but I will answer your question on my return." Stepping into his office half an hour later, he continued...*

"मैं तो सिर्फ़ अपने अब्बा पर चढ़ा हुआ कर्ज़ चुका रहा हूँ"

मैं 1992 की सर्दियों में पंजाब यूनिवर्सिटी, लाहौर के इतिहास विभाग के पुस्तकालय में जाया करता था। वहाँ अब्दुल लतीफ़ नामक एक धर्मनिष्ठ अधेड़ सज्जन मेरी बहुत मदद किया करते थे। जितना उनके लिए करना ज़रूरी था, उससे भी आगे जाकर वे मुझे आवश्यक सामग्री मुहय्या करा देते थे और मेरी अनुरोध की हुई फ़ोटोकॉपियाँ अगली सुबह मेरे पहुँचने के पहले ही बड़े कायदे से तैयार रखते थे। मेरे काम के प्रति उनका यह रवैया मुझे इतना अनोखा लगता था कि एक दिन मैं अपने को रोक नहीं पाया और पूछ ही बैठा, "लतीफ़ साहब, आप ज़रूरत से ज़्यादा आगे बढ़-बढ़कर मेरी इतनी मदद क्यों करते हैं?" अपनी घड़ी पर नज़र डालकर उन्होंने लपककर अपनी नमाज़ी टोपी उठाई और कहा, "अभी तो मुझे तुरंत नमाज़ के लिए जाना है। पर लौटकर मैं आपके सवाल का जवाब ज़रूर दूँगा।" आधे घंटे बाद अपने दफ़्तर में लौटते ही उन्होंने बात आगे बढ़ाई...

© NCERT not to be republished

Creativity and the Question of Faithfulness in Translation

Translation should seek maximum readability. The translated text should remain within the confines of faithful rendering. What has to be ideally achieved in the translated text is the perfect compromise between accuracy and a 'creative' reproduction of the same. When a classical text gets translated into a modern language, this can be considered to be its renewal, in that it becomes comprehensible to contemporary readers by getting charged with idioms and metaphors that are accessible. Though

the reference point for such texts is the original old text, there is no doubt that without a severance from the original, the new text does not yield adequate joy of reading. The new translated texts come out of the aesthetics of translation and offer pleasure and a sense of beauty.

Does the passion for creativity make the translator a traitor who refuses to be 'faithful' to the original? Does such a translator run away with her/his own creativity? This translator may re-create a text that bears no resemblance with the source text. The interpretations, interpolations and assumptions used by the translator in the reconstructed text can lead it to a completely altered state, thus fitting in with the Italian saying, *traduttori traditori* meaning that the translator is a traitor!

When the translator is engaged in the process of a creative translation, there is indeed a possibility of her/him using a huge range of imaginative and cultural resources available for the reconstitution of the text. But a thorough research into the original resources for a full understanding of the source text should indeed be *a priori*. Some liberties, however, may be taken by the translator to make the translation more readable. For the target text to become a rich experience for the reader, the translator's own linguistic skills and imaginative power are of great use. This kind of a translation is truly an experience in tight-rope walking!

Read the poem in English given below and compare its two translations in Hindustani and Hindi given after the poem.

Voyaging at Ten

Between awesome
expanses
of deep blue oceans
and the greying sky
I stood
a speck in God's creation
leaning on the rails
of the deck
sailing from Mombasa
to Bombay...
a journey with a
beginning and an end
and no middle

A storm
a swarm of sharks
or whales

failure of
the engines of *Amra*
or a mere giving way
of the railing

Blue death;

Anything,
a trivial something
or a grave lapse

I cannot swim
The shores are not
in sight...

— Sukrita

© NCERT not to be republished

एक आबी कब्र

बेकारण नीला समुंदर
कनपटी से सफ़ेद होते
आसमान के दरम्यान
मैं खड़ी थी
एक नुक्ते की तरह
बेपनाह इस कायनात में
कोहनियाँ टेके हुए
रेलिंग पे मैं
बहती मोम्बासा से बोम्बे
की तरफ़
इक सफ़र पर
जिसका एक आयाज़ था
और आखिर भी
लेकिन दरम्यान कुछ भी नहीं

एक तुफान
झुंड कोई शार्कस का
या व्हेल्स का
फेल हो जाए जो
इंजन आमरा का
या ये रेलिंग ही
चटक जाए अगर

एक आबी कब्र-बस

कुछ तो हो
कुछ भी सही
कोई मामूली या
कोई गैर-मामूली सा कुछ

तैर भी सकती नहीं मैं

और साहिल
वो नज़र आता नहीं

(अनुवाद – गुलज़ार)

दस वर्ष की यात्रा

गहरे नीले समुंदर के विश्मयकारी विस्तार
और भूरे आसमान के बीच
मैं खड़ी थी
ईश्वर की सृष्टि में एक कण
डेक की रेलिंग पर झुकी हुई
जो मोम्बासा से बोम्बे के लिए
खुली थी
एक यात्रा जिसका आरंभ और अंत तो था
मगर कोई मध्या नहीं

एक तुफान
शार्क और व्हेल मछलियों का एक झुंड

आमरा की इंजन का फेल होना
या सिर्फ़ रेलिंग का टूटना

नीली मृत्यु
कुछ भी
मामूली-सा कुछ
या फिर एक गंभीर चूक

मैं तैर नहीं सकती
और किनारे कहीं दिखते नहीं

(अनुवाद – सविता सिंह)

Compare the language of both the translations and discuss the question of 'correctness', 'faithfulness' and 'creativity' in relation to the above two versions. Give examples to substantiate your points. Try to translate this poem in your own way.

© NCERT not to be republished

The Question of 'Originality'

While we discuss the creativity and autonomy of the 'recreated' texts, we must also remind ourselves why Indian literary history does not lay undue stress on 'originality'. This gets illustrated by the fact that we see multiple creative translations/adaptations over time and space of the same texts in new avatars over and over again in Indian culture. The best examples lie in what is evidenced as different renderings of the two great epics from India, the *Mahabharata* and the *Ramayana*: Tulsidas in Hindi, Ezhuthacchan in Malayalam, Krittivas in Bengali, Kambar in Tamil, and Pampa in Kannada have rendered the *Ramayana* in their own way, and their versions have been accepted by the reading public in their respective language areas, in spite of variations, omissions, additions, interpolations etc. Either in totality or in portions and episodes, these texts are transmitted and recreated in different Indian languages, orally as well as in the written form, through interpretative, adaptive and transformative translations. This has been done in different literary genres and styles at different times. Some of the renderings become more original than what may be called the 'original' i.e. the source text! And, in one of the oral traditions of storytelling, called the Pandavani tradition of Chhattisgarh, the well-known tribal artist Teejan Bai musically narrates and enacts through dance the story of the Pandavas from the *Mahabharata*, constantly innovating and interpreting in accordance with the need of her audience.

> *A linguistic transformation can lead, at times, to a total cultural conversion. For example, when Godavarish Mishra translated Charles Dicken's* A Tale of Two Cities *(1859) into Oriya, he took a lot of liberty with the original text and created an adaptation called* Athara sa Satara *(1817). Instead of the French Revolution of 1789, the context of the novel was converted into that of the uprising organised in Orissa against the British in 1817.*

The borders between 'translation' and 'creative writing' blur easily! For example, Agha Hashr Kashmiri adapted the text of *King Lear* and wrote *Safed Khoon*. This eminent Urdu playwright of the Parsi theatre was given the title of 'Shakespeare of India.' He wrote several original plays and translated many from the English. Extracts of *Safed Khoon* (adapted version of *King Lear*) and its transliteration are given below. You have already read the original extract from *King Lear* in Unit II and can refer to it once again.

खाकान : मरहबा, ऐ मेरी नूरदीदा! तू मेरी उम्मीदों से भी बढ़कर सआदतमंद और फ़रमाबरदार है। (ज़ारा की तरफ़ इशारा करके) हाँ, बोल ऐ गुंचा-ए-आरज़ू। अब तेरी गुल अफ़शानी का इंतेज़ार है बोल के लब आज़ाद हैं तेरे।

ज़ारा : अब्बा जान! मैं क्या अर्ज़ करूँ।

© NCERT
not to be republished

अताअत मुझ से कहती है के तू चुप रह नहीं सकती। मगर मेरा ये कहना है के मैं कुछ कह नहीं सकती।

खाकान : क्यों बात करने में क्या बुराई है। आखिर खुदा ने ज़बान किस लिए अता फ़रमाई है?

ज़ारा : उसकी खुदाई और यकताई का इकरार करने के लिए और ज़रूरत के वक्त अपनी ज़रूरियात का इज़हार करने के लिए।

ज़माने की राहत अगर चाहिए।
तो बातें करनी सोचकर चाहिए।
कहे एक सुन ले जब इंसान दो।
के हक ने ज़बान एक दी कान दो।

(लिप्यंतरण – अनीस आज़मी)

Khaqan : Marhaba ae meri noordeeda! Tu meri ummeedon se bhi badhkar saadatmand aur farmabardar hai. (Zara ki taraf ishara kar ke) Han, bol ae ghuncha-e-arzoo. Ab teri gulafshani ka intizar hai bol ke lab aazad hain tere.

Zara : Abbajan, Main kya arz karoon.
ata-at mujh se kehti hai ki tu chup rah nahin sakti.
Magar mera yeh kahna hai ki main kuchh kah nahin sakti.

Khaqan : Kyon baat karne mein kya buraee hai.
Akhir khuda ne zuban kis liye ata farmai hai?

Zara : Uski khudaee aur yaktai ka iqrar karne ke liye
aur zarurat ke wqat apni zaroriat ka izhaar karne ke liye.
Zamane ki rahat agar chahiye.
To batein karni soch kar chahiye.
Kahe ek sun le jab insaan do.
Ki haq ne zuban ek di kaan do.

In which language do you think it has been adapted from the English text? Discuss in class. What makes you think so?

Translation and Transliteration

Translation produces a written or spoken text in a different language while retaining the original meaning. Transliteration transcribes something into another alphabet to represent letters and words written in one alphabet using the corresponding letters of another.

Following is the poem, *Achchamillai,* by Subramania Bharati in Tamil along with its translation and transliteration.

© NCERT not to be republished

அச்சமில்லை

அச்சமில்லை அச்சமில்லை
அச்சமெ ன்பதில்லையே.
இச்சகத்து உளோரெலாம்
எதிர்த்து நி ன்ற போதினும்,
அச்சமில்லை அச்சமில்லை
அச்சமென்பதில்லையே.
துச்சமாக எண்ணி நம்மை
தூறு செய்த போதினும்,
அச்சமில்லை அச்சமில்லை
அச்சமெ ன்பதில்லையே
அச்சமென்பதில்லையே.

Translation

No Fears

No fears, no fears, no fears!
Even if the whole world
stands against us.
No fears, no fears, no fears!
Even if we are scorned
and reviled,
No fears, no fears, no fears!

Transliteration

Achchamillai

Achchamillai achchamillai
achchamenbadillaiye.
IchchagathulMõrelam
edirttu ninra pothinum,
Achchamillai achchamillai
Achchamillai achchamillai
achchamenbadillaiye.
Tuchchamaga enni nammai
turu seyida pothinum,
Achchamillai achchamillai
achchamenbadillaiye.

Creative Writing in English and Translation

"Oh! Is it a translation? I thought it was an original!"

The above exclamation can perhaps be reversed in the case of the following passage: "Oh! Is it an original? I thought it was a translation!"

> *"But Moorthy will not come tonight. Vasudev has finished his meal, and has washed his hands, and as he comes out Gangadhar is there with his son and his brother-in-law, and they all look towards the valley, where there is nothing but a well-like silence and the scattered whiffs of fireflies. From behind the Bebbur jungle comes the mournful cry of jackals, and from somewhere beyond the Puppur mountains comes the grunt of a cheetah or tiger, and the carts are already seen to pull up the Mena Ghats. Everybody goes from this side to that, and Rachanna swears he has seen the light and Madanna says he has seen it, too, and they all rise up…"*

Read the above passage carefully. Do you think it is a translation? Or is it an original piece of writing in English? Notice that it sounds like a translation because the use of English language here clearly demonstrates how the idiom, the rhythm, the style as well as the mode of this writing belongs to a culture somewhat alien to the 'English sensibility' that is usually seen in original writing in English. This is because the English language here has 'accommodated' Kannada language and its culture and tone. This passage is from Raja Rao's novel *Kanthapura* written originally in English in 1937 when the author said in the Preface to his novel: "We cannot write like the English. We should not. We can write only as Indians. We have grown to look at the large world as part of us… The tempo of Indian life must be infused into our English expression…" In such an act of writing, inevitably, translation gets infused into the process of creative writing in English in India. Clearly, there is a blurring of lines between 'creative writing' and 'translation' in such cases.

© NCERT not to be republished

This writing, then, may be perceived as yet another type of translation! The process of translation combines with the act of writing in the very 'original' making of a novel, a short story, a poem etc.

II. Types of Translation

There are different registers of language and vocabulary for translation in different areas such as law, science, technology, medicine etc. One needs to be conversant with the nuances and the culture of the target language for literary translation. For legal, technical, medical translation one needs to know the terms and vocabulary specific to the field. Also, translation of news is a constant feature, both in the print as well as in the electronic media. Translation is an important faculty used by interpreters who mediate between two individuals who do not know each other's language.

Translation in Print and Electronic Media

For the translation of news from different regions/states and countries, a large number of translators are employed by newspapers, radio, television etc. This kind of translation is generally a very 'free' translation, since the purpose is to communicate the news rather than look at the aesthetics of expression. Here, faithfulness to the content is considered more important. The authenticity of the news is verified and then transferred in another language for another community or society.

It is not easy to get authentic reports or facts unless one is able to use the locally specific information which is found usually in indigenous tongues and, many a time, one discovers howlers in newspapers in reports of news picked up from the local language. Due to bad translation, the story may get distorted and misrepresented. A news reporter, therefore, has to first of all select news from as wide a range of languages as possible and then a proper translation of the same must be done to convey the same appropriately to the readers.

For the overall development of the modern society, mass communication plays a vital role — through quick dissemination of information pertaining to different aspects of life to a wider public. In this respect, the different media such as newspapers, magazines, radio and television aim at collecting information and news from as many countries/states/regions and societies as possible, to attempt to inform, educate and persuade people towards certain action or change.

For dubbing, sub-titling as well as for voice-overs in films and television, sensitive and good translation faculties are essential. For effective dubbing, the translated dialogue is synchronised with the lip movements and

© NCERT not to be republished

gestures of the actor in the film. The aim is to make the audience feel as if they are listening to actors actually speaking in the target language. Recent technology, interestingly, has developed a method of digital alteration of lip movement as well. As for sub-titling, translation of the source language dialogue into the target language is supplied in the form of synchronised captions, usually at the bottom of the screen. This has to be done carefully so that there is minimum disturbance to the source text. This kind of translation remains as close to the original as possible. Have you watched any film/song sequence dubbed in a different language? How was the experience? Was there any line that you would have translated differently?

For lack of competent and good quality translation skills, messages can get completely distorted and, at times, clumsy. It has been seen how a highly serious, even tragic, content can sometimes turn comic due to a bad representation of the same in translation! Thus, for the electronic media, it is crucial that more and more competent translators become available.

Translators as Interpreters

In our country, in some institutions, members from different language groups work together. To facilitate communication and useful discussions, a large number of interpreters and translators are employed there. On-the-spot, spontaneous translation is imperative for them.

An interpreter has to be necessarily a strong bilingual/multilingual person who has the skill to instantly translate for conversations to proceed. Political, cultural and any other kind of exchange between ambassadors, leaders and representatives of different countries in different departments thus depends on interpreters to be able to negotiate, converse and understand each other.

See गतिविधि/Activity 27 on Page 182

गतिविधि 30 ◆ Activity 30

कुछ फ़िल्मों के अपनी पसंद के किन्हीं पाँच डॉयलॉग का अनुवाद करें। फिर पाँच-पाँच के समूह में अपने अनुवाद पर बातचीत कीजिए यह देखते हुए कि संवादों की संप्रेषणीयता कहाँ तक अनूदित भाषा में आ पाई है।

Translate any five dialogues from films of your choice. In groups of five share your translations and discuss how far the translations have been able to communicate the original meaning.

© NCERT not to be republished

Parts of advertisements in Hindi and English to spread awareness

Advertising and Translation

For the world of commerce and marketing, advertising is an essential component as a form of mass communication. It is a powerful tool for the flow of information from the seller to the buyer as it influences and persuades people to act or believe. There are many special and specific reasons for using advertising in its several forms. Announcing a new product or service, expanding the market to include new buyers, announcing a modification or a price change, educating customers, challenging competition, recruitment of staff and attracting investors are a few such reasons. In the process of creating advertisements for all these reasons, choice of expression and language are of crucial importance. An advertisement created in one language for a particular region may not be effective in another region due to both, a difference of language as well as culture. It would have to be translated accordingly, for the purpose of communication to be served.

Governments too, at times, have to issue the same announcements in different languages to promote tourism or serve public interests and create awareness amongst people on various issues. Advertising gives the public the right to choose between many options, many brands. Again, for these options to become real options, people need to understand the message of the advertisement effectively. For this the right language and cultural communication has to be established by the advertiser. The language, to be properly understood, may have to be a dialect. Television, radio, the Internet etc. have evolved as very popular means of advertising and have an impact on both the literate as well as the illiterate population of the country.

The use of advertising for the transmission of information dates back to ancient Greece and Rome, when criers and signs were used to carry information for advertising goods and services. This practice was continued even during the middle ages.

© NCERT not to be republished

Scientific and Technical Translation

With the rapid advancement of science and technology, new words for new concepts, inventions and techniques have come into existence. Even dictionaries are not able to keep pace with the growth of vocabulary. There are serious problems of translating scientific and technical literature due to the lack of appropriate equivalents in different languages. Coining, borrowing and transliteration of words and terms is being adhered to in translation of such work. To remain up-to-date with knowledge production in these fields, and to carry on with scientific research more meaningfully, a lot of translation activity is encouraged. Scientific and technical translation is also a prerequisite for acquisition of technology as well as for the knowledge of its operation.

In science and technical translation, the language of translation has to be direct, precise and clear. Also, there has to be a standardisation of terms and concepts. The style must be impersonal and simple. The register used should be scientific with neither any rhyme scheme or deviation of meaning as in literary translation. The translator must have good command of both the subject matter and the language to be able to translate well.

Medical Translation

If you take a bottle of one of your prescribed medicines, you will see various types of information on it — the dosage, frequency of use, storage instructions, side effects, warnings etc. — often in more than one language. Translation is required for distribution of medicines and medical devices in different regions and countries. In many countries, where the medicines have to be sold, translation of all information listed above is mandatory. The translators of such materials must be highly aware of the source and target languages and cultures as well as the subject they will translate. Such translations have to meet all local as well as international regulatory guidelines.

Pharmaceutical and medical translation requires complete attention to detail and indepth subject-matter expertise because poor translation can lead to misinterpretation and great risk to peoples' health.

Academic Translation

For academic translation you have to be well-versed in the subject. Keen observation and attention to detail is a must. Following is an example from *Themes in Indian History,* Part II, for Class XII. The information recorded by Ibn Battuta in Arabic has become widely available for readers from different disciplines and cultures because of translation. This is true of academic exercises in general.

© NCERT not to be republished

See गतिविधि/Activity 26 on Page 177

On Horse and on Foot

This is how Ibn Battuta describes the postal system:

> *In India the postal system is of two kinds. The horse post, called* uluq, *is run by royal horses stationed at a distance of every four miles. The foot-post has three stations per mile; it is called* dawa, *that is one-third of a mile... Now, at every third of a mile there is a well-populated village, outside which are three pavilions in which sit men with girded loins ready to start. Each of them carries a rod, two cubits in length, with copper bells at the top. When the courier starts from the city he holds the letter in one hand and the rod with its bells on the other; and he runs as fast as he can. When the men in the pavilion hear the ringing of the bell they get ready. As soon as the courier reaches them, one of them takes the letter from his hand and runs at top speed shaking the rod all the while until he reaches the next* dawa. *And the same process continues till the letter reaches its destination. This foot-post is quicker than the horse-post; and often it is used to transport the fruits of Khurasan which are much desired in India.*

घोड़े पर और पैदल

डाक व्यवस्था का वर्णन इब्न बतूता इस प्रकार करता है –

> *भारत में दो प्रकार की डाक व्यवस्था है। अश्व डाक व्यवस्था जिसे* उलुक *कहा जाता है, हर चार मील की दूरी पर स्थापित राजकीय घोड़ों द्वारा चालित होती है। पैदल डाक व्यवस्था के प्रति मील तीन अवस्थान होते हैं; इसे* दावा *कहा जाता है, और यह एक मील का एक-तिहाई होता है... अब, हर तीन मील पर घनी आबादी वाला एक गाँव होता है जिसके बाहर तीन मंडप होते हैं जिनमें लोग कार्य आरंभ के लिए तैयार बैठे रहते हैं। उनमें से प्रत्येक के पास दो हाथ लंबी एक छड़ होती है जिसके ऊपर ताँबे की घंटियाँ लगी होती हैं। जब संदेशवाहक शहर से यात्रा आरंभ करता है तो एक हाथ में पत्र तथा दूसरे में घंटियों सहित छड़ लिए वह क्षमतानुसार तेज़ भागता है। जब मंडप में बैठे लोग घंटियों की आवाज़ सुनते हैं तो वे तैयार हो जाते हैं। जैसे ही संदेशवाहक उनके पास पहुँचता है, उनमें से एक उससे पत्र लेता है और वह छड़ हिलाते हुए पूरी ताकत से दौड़ता है, जब तक वह अगले* दावा *तक नहीं पहुँच जाता। पत्र के अपने गंतव्य स्थान तक पहुँचने तक यही प्रक्रिया चलती रहती है। यह पैदल डाक व्यवस्था अश्व डाक व्यवस्था से अधिक-तीव्र होती है; और इसका प्रयोग अकसर खुरासान के फलों के परिवहन के लिए होता है, जिन्हें भारत में बहुत पसंद किया जाता है।*

© NCERT not to be republished

Legal Translation

For legal translation, the translator has to have a thorough knowledge of legal terms and be aware of the specificity of legal language because certain terms have specific connotations. For example, in a classroom an assignment means a task allotted to the students whereas in legal terms it

refers to transfer of ownership. The assignment of copyright by an author or composer to a third party would mean that this party now has control and ownership over the copyright i.e. sale or reproduction of the artist's work. Find two terms that you use commonly that have different meanings in different contexts.

Prohibition of employment of children in factories, etc. *— No child below the age of fourteen years shall be employed to work in any factory or mine or engaged in any other hazardous employment.*	***कारखानों आदि में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध*** *— चौदह वर्ष से कम आयु के किसी बालक को किसी कारखाने या खान में काम करने के लिए नियोजित नहीं किया जाएगा या किसी अन्य परिसंकटमय नियोजन में नहीं लगाया जाएगा।*

Article 24 of the Constitution of India. It is an example of an exact translation from the English to Hindi.

Machine Translation

In today's context, at the global level too, machine translation has become a flourshing industry. There is a great demand for a large number of expert translators, and technology is required to assist in translating enormous volumes of documents, though, of course, machine translation cannot be a substitute for human input.

Rapid and large volumes of translation are now becoming possible with the advent of new technologies. With adequate human resources and technological development, machine translation can facilitate massive translations. Once equipped with such necessary digital tools as bilingual dictionaries, thesaurus, software for 'translation memory' etc., machine translation will offer easy opportunities for exchange and transmission of knowledge. The machine can take on the intra-lingual translation of large bodies of knowledge available in many languages for a much faster overall progress and development of humanity.

Literary Translation

Literary translation presents its own challenges, some of which we have discussed earlier in this chapter. The translator translates a poem, a short story or any other form of literature because she/he is 'moved' and 'touched' by it in the original language and wishes to carry it to another language, to recreate that experience for others alien to the original language of the text. To do this, a mere transference of 'content',

© NCERT not to be republished

> *I do not hesitate to read ... all good books in translation. What is really best in any book is translatable—any real insight or broad human sentiment.*
>
> — **Ralph Waldo Emerson**

theme or 'meaning' of the original will not suffice. An effective translation attempts carrying across to the other language the very flavour, the tone, mood, emotional content and the thought pattern of the source text. This process demands a sensitive and very close reading of the original text, comprehension of the use of metaphor, idiom and its cultural content and then the transference of that material through a creative use of the target language and its resources.

Kamleshwar's *Partitions* is a novel that fictionalises mythologies and histories. All along, it underscores the unnatural division of people and land.

In his author's note, Kamleshwar writes "this novel was born out of a constant ferment within my mind..." Here is an excerpt from the novel *Kitne Pakistan* originally written in Hindi.

उसका पूरा कस्बा, उसके कस्बे का अपना मोहल्ला, मोहल्ले की कई खिड़कियाँ भी उसे मौन हसरत से देखती दिखाई दी थीं। कभी-कभी बरसात के दिनों में लौटते हुए पाँवों के निशान दिखाई पड़ जाते थे। ज़्यादा बारिश हुई तो निशान पहले तो भरी आँख की तरह डबडबाते थे, फिर देखते-देखते मिट जाते थे। वापस गए पैर फिर नज़र नहीं आते थे। कुछ आँखें थीं, जो कहना तो बहुत कुछ चाहती थीं, पर उन्होंने कभी कुछ कहा नहीं था। कहीं कोई काजल लगी आँख उलझी थी। किसी खिड़की में हल्की-सी कोई परछाईं। किसी में इशारा करती कोई उँगली। कहीं शरमा के लौटते हुए अधूरे अरमान और कहीं किसी मजबूरी की कोई दास्तान...

अजीब दिन थे।
नीम के झरते हुए फूलों के दिन।
कनेर में आती पीली कलियों के दिन।
न बीतनेवाली दोपहरियों के दिन।
और फिर एक के बाद एक, लगातार बीतते हुए दिशाहीन दिन...

© NCERT not to be republished

Given below is its translation in English.

It seemed almost as if his entire kasbah *with its many windows gazed at him in silent supplication. Sometimes, the impressions of retraced steps could be made out in the dust after a light shower; heavy rains filled up these little depressions with water as though they were tear-laden eyes that would dry up with time and disappear forever. Some eyes longed to say so much; but not a word did they utter. Here, a* kajal*-rimmed eye beckoned; there, a silhouette stood framed by a window; a gesturing finger or shamefaced yearnings, homeward-bound, driven by a tale born of despair...*

Those were strange times.
Days passed like neem flowers drifting to the ground.
Days that resembled yellow kaner *blossoms.*
Days that seemed like endless afternoons.
And then came days bereft of any direction...

– an extract from *Partitions*
(Translated by Ameena Kazi Ansari)

No translation is a mundane task but literary translation is particularly creative. It is a creative and challenging endeavour that yields nearly the same pleasure of creation as that of creative writing. That is why many creative writers have also been great translators.

In the re-creation of the original, in fact, another 'original' is born because the new text has to stand on its own with its own appeal. Only then will it acquire a special attraction. To strike a blend of beauty, readability and 'fidelity' is what the translator has to strive for. Sometimes the translator only focuses on the shell and not the kernel of the original and, what is achieved then is a literal and word-for-word translation but not literary translation that tries to capture varied nuances present in the language of the original text. A translation may end up being an adaptation due to the difficulty of the task. Ayappa Panikkar, the great Malayalam poet, rightly emphasised on total 'interiorisation' of the original text before attempting its translation.

Each type of translation has its own register to follow. While literary translation may use figurative language and words with unbridled connotations of meaning, scientific translation attempts to use words which are precise and free from alternative meanings. There is no emotion in scientific translation. Medical and legal translation too demand simple and accurate transmission of information and not a play of language and meaning. While all kinds of translations are challenging, it is literary translation that accords the translator the maximum range of creativity to totally transform the 'original' into becoming a powerful experience in yet another language.

© NCERT not to be republished

संवाद / Exercises

1. अनुवाद हमारी भाषा का विस्तार करता है, कैसे?
   How does translation enrich our language?

2. किसी अंग्रेज़ी समाचार को हिंदी में अपने शब्दों में लिखिए।
   Rewrite in English any news story given in Hindi.

3. आपको कब और क्यों अनुवाद की आवश्यकता महसूस होती है?
   When and why do you feel the need for translation?

4. बहुभाषी होना आपके जीवन में किस प्रकार सुविधा प्रदान करता है?
   How does being multilingual prove useful to you?

5. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –
   - रोशनाई फीकी है।
   - चेहरा फीका है।
   - चाय फीकी है।
   - मौसम फीका है।

   चारों वाक्यों में 'फीका' अलग-अलग अर्थों में आया है। इनका अंग्रेज़ी में अनुवाद करें।
   Read the following sentences.
   - This train runs from Delhi to Guwahati.
   - Water runs from tap to tub.
   - He runs in the field.
   - She runs a dance school in the evening.

   The word 'runs' has been used in different contexts. Translate these sentences into Hindi.

6. 'Flying planes can be dangerous' — इस वाक्य के कितने अर्थ निकल सकते हैं?

7. खेलों से जुड़े बीस शब्द चुनिए और लिखिए। अपनी मातृभाषा या अंग्रेज़ी में अनुवाद कीजिए।
   Write twenty words from the field of sports — now translate these into your mother tongue or Hindi.

8. आप सामान खरीदते हैं, कइयों की पैकिंग में कुछ सूचनाएँ दी हुई होती हैं, वे कई भाषाओं में होती हैं, ऐसा करने के क्या फायदे हैं?
   On most of the items that we purchase the instructions are given in many languages. How does this help us?

9. अनुवाद दुनिया को समझने की एक खिड़की है। अपने विचार लिखिए।
   Translation has opened a window to the world. Give your views.

© NCERT
not to be republished

10. *अनुमान से बताएँ कि इस चित्र में आदमी क्या कह रहा है?*
What is your interpretation of the following picture? What is the man saying? Write in Hindi or in English.

The Knowledge Commission of the Government of India has recommended the setting up of a National Translation Mission. This is in recognition of the value of translation towards building bridges amongst the multiple communities flourishing within their own language and cultural worlds. This is also to facilitate exchange of literature and knowledge between them and the world outside.

© NCERT not to be republished

अपनी बात
In my words

© NCERT
not to be republished